सामुद्रिकशास्त्र

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

श्रीसमुद्रेण प्रोक्तम्

सामुद्रिकशास्त्रम्

श्रीयुत पण्डित घनश्यामदास हमीरपुरीय साहाय्येन अर्गलपुर निवासि
राधाकृष्ण मिश्रेण कृतया

सान्वय हिन्दीटीकया सहितम्

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

स्त्रीणां नृणां यत्र शुभाशुभानि चिह्नानि सम्यक् प्रतिपादितानि ।
तद्वयस्ति सामुद्रिकमङ्कितं वै शास्त्रं बुधेशरवलोकनीयम् ।।

स्त्रीपुरुषों के शरीर के समस्त शुभाशुभ लक्षण विस्तारपूर्वक जिसमें वर्णित हैं, ऐसा अपूर्व मनोहर यह 'सामुद्रिकशास्त्र' अत्यन्त शुद्ध सान्वय हिन्दीटीका सहित 'श्रीवेंकटेश्वर' स्टीम् यन्त्रालय में नवीन छपकर तैयार है। यह शास्त्र ज्योतिर्विदों को परमोपकारक है। पहिले यह समग्रशास्त्र मिलना अति कठिन था जहां तहां विरल जगह खण्ड खण्ड था। सम्पूर्ण एकत्र मिलने में नहीं आता था। अब यह शास्त्र महत्परिश्रम से समग्र सांगोपांग एकत्र तैयार किया गया है सो इस शास्त्र का आनन्द अवलोक से विद्वज्जनों को प्रतीत होगा। विद्वानों को ज्योतिषशास्त्र का बहुत भी अवगाहन करने से जो फलादेश सामर्थ्य नहीं होती वह इससे अति शीघ्र ही हो जाती है।

विद्वज्जनकृपाकांक्षी—
खेमराज श्रीकृष्णदास
'श्रीवेङ्कटेश्वर' स्टीम् प्रेस, बम्बई

श्रीः

सामुद्रिकशास्त्रविषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठांक
मंगलाचरण। लक्ष्मीसहित विष्णु के लक्षण देख समुद्र का ध्यान करना	१
विष्णु से लक्ष्मी का कभी वियोग न होना, नेत्रों के शुभाशुभ लक्षण युक्त का वर्णन, पृथ्वी की प्रसिद्धि निरूपण सामुद्रिकशास्त्र कथन का प्रयोजन	२
यह विचारकर समुद्र का सामुद्रिक रचना फिर उसका नारदादि कृत विस्तार। इसकी पृथ्वी में प्रसिद्धि और दुर्बोधत्व ऐसे भोजादि कृत ग्रन्थ	३
तिन खण्डितों को देख और दूसरे संपूर्ण ग्रन्थ देख सामुद्रिक का करना, अंग उपांगो का वर्णन, पहिले जन्म के शुभाऽशुभलक्षणों का देखना	४
बाहिर भीतर के भेद से लक्षणों का भेद, मुख्यता से मनुष्यों का शरीर लक्षण वर्णन, मनुष्यों के भौंरी आदि का कथन, कल्पवृक्षवत् शरीर वर्णन	५
पादतल आदि उपांग कथन, पादतल अंगुली पर्यंत उपांग वर्णन	६
...ष्ठ से केशपर्यन्त उपांग वर्णन, तलुवा से केशपर्यन्त उपांग जानना, राज्यसंपत्ति देनेवाले पादतल से लक्षण	६
पादतल से शुभाऽशुभ लक्षण	७
...थेली की रेखाओं के शुभाऽशुभ फल, अंगूठे का ...भाऽशुभ लक्षण	८
...गुलियों के लक्षणों का फल, पैर की अंगुलियों ... अशुभ लक्षण, पैर की तर्जनी का फल	९
...ध्यमा से कनिष्ठिका तक अंगुलियों के ...भाऽशुभ लक्षणों का फल	१०
नखों का शुभाशुभ लक्षण, चरण पृष्ठ के शुभ लक्षण, टखनों के शुभाशुभ लक्षण	११
चरण की बगली के लक्षण, पिंडली के लक्ष्मीदायक लक्षण	१२
सिंह आदि की सी तुल्य और मोटी आदि पिंडली के शुभाशुभ फल, राजाओं के रोमों का निरूपण	१३
रोमों का शुभाऽशुभ फल, हाथी आदि की सी जानु होने का फल	१३
जानु के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	१४
जंघा के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	१४
कमर के शुभाऽशुभ लक्षण उष्ट्र आदि की तुल्य कमर का फल	१५
गुदा के शुभाऽशुभ लक्षण अण्डकोश के लक्षणों से राजयोग, अण्डकोशों के शुभाशुभ लक्षण	१६
इन्द्रिय के शुभाशुभ लक्षण इन्द्रिय के छोटे आदि लक्षणों का फल	१७
मोटी नसें आदि लक्षणोंवाली इन्द्रिय होने का फल,इंद्रियकी सुपारीके लक्षणों से राजयोगादि	१८
इंद्रिय की सुपारी के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	१९
वीर्य के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	२०
अल्पकाल और चिरकाल मैथुन करनेवाले का निरूपण, मूत्र की धार के लक्षणों से राजयोगादि। राजा आदि के मूत्र का लक्षण	२१
मूंगे और लाल कमलरङ्ग समरुधिर का फल मध्यमाधम पुरुषों के रुधिर का ज्ञान	२२
पेडू के अशुभ लक्षण, नाभि के चौड़ापन आदि	

विषय	पृष्ठांक
लक्षण का फल नाभि के कमलाकार आदि लक्षणों का फल, विषम आदि सलवटों का फल	२२
कोख के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल पसवाड़ों के लक्षणों से राजयोग	२३
पसवाड़ों के अशुभ लक्षणों का फल, पेट के लक्षणों से चक्रवर्ती आदि योग	२४
पेट के अशुभ और शुभ लक्षणों का फल	२५
एकादि सलवटों से मृत्यु योगादि बलिरहित, और सरल बलिवाले पुरुष का निरूपण	२६
छाती के लक्षणों से राजा आदि होने का कथन दरिद्रता करनेवाली छाती के लक्षण, राजाओं की छाती का निरूपण छाती के लक्षणों से धनवान आदि होने का निरूपण स्तनों के शुभाऽशुभ लक्षण	२७
कन्धों की सन्धियों का मोये आदि लक्षणों का फल, कन्धों के लक्ष्मीदायक लक्षण, कन्धों के शुभाशभ लक्षण	२८
धनिक निर्धन की कोखों के लक्षण, घोटू तक लम्बी भुजाओं का फल	२८
राजा आदि से हाथों का निरूपण पूरीरेखा युक्त पहुंचेका फल,पहुंचे की सन्धियों से राजा आदि होना	२९
राजा आदि को हस्तपृष्ठ का निरूपण, हथेली के निचाई आदि लक्षणों का फल	३०
लालरङ्ग आदि युक्त हथेली से धनिक आदि होना, बहु रेखावाली आदि हथेली से अल्पायु आदि होना स्त्री पुरुष के दाहिने बायें हाथ लक्षण कथन, कर रेखाओं से स्त्री पुरुषों का जीवितादि प्राप्ति	३१
हथेली की रेखाओं से धनिक होना, करतल रेखाओं का सुन्दर होना, सरबती रंग आदि की सी रेखाओं के फल	३१
फैली आदि रेखाओं के फल गोत्रादि की रेखाओं का फल, छोटी आदि रेखाओं से छोटा वंशादि होना	३२
शास्त्रों से आयु का ज्ञान	३३
रेखाओं से ऋद्धि सिद्धियुक्त आदि का होना, ऊर्ध्वरेखा का फल	३४

विषय	पृष्ठांक
वनकनकाढ्य करना, काकपद फल पहुंचे की तिहरी दुहरी यवमाला का फल इकहरी आदि यवमालाओं का फल	३६
आयु की रेखा से धर्म में तत्पर होना, राजा होना पुरुष के स्त्रियें आदि की इयत्ता	३७
पुरुष के अच्छी बुरी स्त्री होने का निरूपण,पुत्री का और भ्राताओं की इयत्ता	३७
अल्पमृत्यु आदि की इयत्ता, हाथ में मछली आदि के चिह्न होने का फल	३८
हथेली में ऊंचा पर्वत आदि रेखा होने का फल, श्रीवत्स आदि चिह्नों का निरूपण	३१
हथेली में त्रिकोण आदि रेखाओं का फल	३१
हथेली में दंडसहित छत्रादि चिह्न होने का फल, ब्राह्मण के हाथ में यज्ञस्तम्भादि चिह्नों का फल, अँगुष्ठा के जड़ में यवचिह्न होने का फल	४१
तिलड़ी आदि यवमाला का फल, अंगुष्ठ के नीचे काकपद फल	४२
हाथी की रेखाओं का शुभाऽशुभ कथन, धनवानों के अंगुष्ठ का वर्णन, भाग्यवान् आदि पुरुषों का वर्णन, छः अंगुलिवाले का वर्णन	४३
कनिष्ठिकादि अंगुलियों में छिद्र होने का फल	४३
राजादि कर-नखों का वर्णन, दीर्घादि नखों के फल	४४
पृष्ठ का वर्णन	४५
ह्रस्वग्रीवादि का वर्णन, महिषग्रीवादि का वर्णन,ठोढी का शुभाऽशुभ वर्णन	४६
जावड़ों का शुभाऽशुभ कथन, श्मश्रु आदि का निरूपण, मूछों का भेद	४७
कपोलों का वर्णन, मुखलक्षणों से राजा आदि होना	४७
अभाग्य पुरुषादि मुख लक्षण, पापी आदि पुरुषों का मुख वर्णन	४८
बिंबादि सदृश ओष्ठों से धनिकादि होना मोटे आदि ओष्ठों से युक्त का वर्णन	४९
कुन्दकली आदि के समदन्तों का वर्णन, सराबि सम दन्तवाले का वर्णन,दन्तगणना से भोगी आदि होना राजदन्तादि निरूपण	५०

विषय	पृष्ठांक
लाल आदि जिह्वा से मिष्टान्नभोजी आदि होना	५१
सफेद आदि जिह्वावाले निरूपण, तालुके लक्षणों से पराक्रमी आदि होना	५१
तालु के अशुभ लक्षण, घण्टिका का शुभाऽशुभ निरूपण, सुखी पुरुषों का हसित वर्णन,मध्यम पुरुषों का हास्य वर्णन	५२
बड़ी आयुवाली की नासिका वर्णन, ऊंची नाकवाला आदि का वर्णन, राजादि नासिका वर्णन	५३
सुकडी नासिका आदि का वर्णन, योगी आदि पुरुषों की छींक, संख्या का वर्णन,मंगलकारी छींकका वर्णन	५४
धनवानों का नेत्रों का वर्णन, नेत्र लक्षणों से चक्रवर्ती आदि होना, नेत्र लक्षणों से राजादि होना	५५
नेत्र लक्षणों से मध्यम पुरुषादि वर्णन, सीधे मनवाले आदि का वर्णन	५६
दृष्टि के लक्षणों से लक्ष्मी हीनादि होना, दृष्टिदोष से अन्धा आदि होना	५६
उल्लूकी सी आंखवाले आदि का वर्णन, बहुतकाले आंख के तारावाले आदि का वर्णन,मुख आदि की मुख्यतयावर्णन	५७
वाफनों के लक्षणों से चिरकाल जीवी आदि होना,द्विमात्र निमेषादि का वर्णन	५८
थोड़े पलक लगनेवाले नेत्रों आदि का वर्णन,मात्रा संज्ञा रुदन लक्षणों से राजपाल होना, अश्रुपात का शुभाशुभ वर्णन	५९
भृकुटि लक्षणों से धनिकादि होना भृकुटि लक्षणों से धनसंतानयुक्त युक्त आदि होना	६०
राजा के कानों का वर्णन, कर्णलक्षणों से सुखी आदि होना, चिपके कानोंवाले आदि का वर्णन	६०
चौड़ा ऊंचा आदि मस्तकवाले का वर्णन	६१
मस्तक की रेखाओं से अधमादि होना मस्तक की रेखाओं से आयु का वर्णन	६२
सौ वर्ष की आयुवालों के तिर्यगादि रेखा होना, अशीतिवर्षादि की आयु होने का वर्णन	६३
भृकुटियों के ऊपर की रेखाओं का फल श्रीवत्स और धनुषचिह्न का निरूपण	६४
राजादि के मस्तक का वर्णन, दो मस्तकवाले आदि का वर्णन	६४
राजादि के केशों का वर्णन, स्त्री पुरुषों का अंगवर्णन,पहिले आयु की परीक्षा करना	६५
बाहिर भीतर लक्षणों को जानना क्षेत्रसंज्ञा कथन	६६
संहननादि संज्ञा संहित का वर्णन, बड़ी आयुवाले निरूपण	६६
सुख दुःख भोगनेवाले का वर्णन	६७
सप्तसारों का फलकथन, चिकनी आदि चर्म वाले का निरूपण, रक्तसार आदि पुरुषों का निरूपण	६८
शुक्रसारवाले आदि का वर्णन अनूकूल कहना, सिंहादि के से आचरण होने का फल	६९
वानरादिक से आचरण तथा छः प्रकार स्नेह संज्ञा का फल जानना	६९
प्रिय बोलना और जीभ की चिकनाई आदि होने का फल, उन्मान कथन शरीर के तोल का फल चिकनापन जानना	७१
आयाम संज्ञा पुरुकी लम्बाई का निरूपण टकने आदि की लम्बाई का निरूपण	७२
गर्दन आदि की लम्बाई से लेके उत्तमादि पुरुषों की आयुतकवर्णन, समयादि के अनुमानसे पुरुषों का उत्तमादि होना, राम और बलि के दुखी होने का कारण मान संज्ञा मानयुक्त शरीरवाला आदि का वर्णन तिर्यग्मानादि संज्ञा का वर्णन परिणाह से उत्तम होना	७३
संक्षेप से मान कथन, तलुवे आदि की लम्बाई, चौड़ाई आदि का वर्णन; अनामिकादि अंगुलियों का आयामादि निरूपण, जंघादिका दैर्घ्य प्रमाण निरूपण	७५
कुचों आदि की लम्बाई का प्रमाण, भुजा की लम्बाई का प्रमाण	७६
करांगुली आदि उपांगों की लम्बाई का प्रमाण फिर अंगमान कहना	७७
स्त्री पुरुष योग्यता दशक्षेत्रों का निरूपण पहले क्षेत्र से दशवें तक जुदा जुदा वर्णन	७८

विषय	पृष्ठांक
क्षेत्र वश से दश दशा होना, पुरुषों की दश प्रकृतियों का निरूपण	७८
पृथ्वीप्रकृतिवाले से आकाश प्रकृति वालेतक वर्णन	७९
मनुष्य प्रकृतिवाले से चतुष्पद प्रकृतिवाले तक वर्णन, दश प्रकृति कथन के अनंतर मिश्र लक्षण कथन	८०
ऐश्वर्यादि का होना बड़ी आयुवाले होने से वैतरण नामवाले होने तक वर्णन	८१
दुन्दुबकनाम वाले का वर्णन, सत्त्व रजोगुणों का वर्णन	८२
तमोगुणवाले का वर्णन, तमोगुण की अधिकता वाले रजोगुण का वर्णन,देह में शुभ अशुभ लक्षण जान तिनका फल कथन लम्बे आदि पुरुषों का बुद्धिमान् आदि होना	८२
दन्तुर आदि पुरुषोंको मूर्ख आदि होने में अचरज	८३
सुनेत्रवाले से मांसल पुरुषपर्यंत वर्णन बहुधा सुखी होना दाहने तिल आदि चिन्ह होने का फल नख आदि में सचिक्कणता न होने का फल	८४
बत्तीस लक्षणोंवाले का निरूपण, लक्ष्मी को प्राप्त होना, उच्चपद को प्राप्त होना धनवान होना	८५
नेत्र आदि बड़े होने का फल, राजा के चौड़े छोटे अंगों का होना, शब्द आदि की गंभीरता का फल, पुरुष के खरगोश आदि भेद	८६
खरगोश की संज्ञावाले से घोड़े की संज्ञावाले तक वर्णन	८६
पुरुष की धन्य कथन, भौंरी आदिक लक्षण कथन, भौंरी का त्रिविधपना और शुभाशुभ वर्णन	८७
त्वचा में उत्पन्न भौंरी और लक्ष्मी हाथ में आने का वर्णन, सम्पूर्ण पृथ्वी का राजा होना, हथेली के साथियों से शिर के चूडावर्त चक्रतक वर्णन	८८
भौंरी के अशुभ फल	८९
मयूर के समान चाल से हरिण की समान चाल तक वर्णन	९०
चाल का शुभाऽशुभनिरूपण, छाया का निरूपण	९०
छाया का शुभाऽशुभनिरूपण	९१
सूर्य की तुल्य छाया से ले स्फटिकमणि की तुल्य छाया तक वर्णन, समान सम्पत्तिवाली छाया का वर्णन	९२
सारसकी बोली से ये चकवाकी सी बोली तक के फल, दरिद्रियों की और दुष्टों की बोली का निरूपण भेद का वर्णन, कपूरकी सी गन्ध से मछली की सी गन्ध होने तक के फल	९४
शरीर के रङ्ग का तीन भेद और शुभाऽशुभ वर्णन, कलपुष्पादि के सदृशरंग होने का फल, सत्व का गम्भीर कहना और मनुष्यों को लक्ष्मी दुर्लभ न होना	९४
त्वचादि में सत्त्व होने से सत्व के तुल्य गुण होने तक वर्णन	९५
सत्त्व की मुख्यता से ले लक्ष्मी न स्थिर रहने तक वर्णन	९६
सत्त्व की अधिकता और सत्त्वाले का वर्णन, पुरुष लक्षण सदृश स्त्रियों के लक्षण होना, स्त्रियोंके शुभाशुभ फल कथन	९७
तलुवे की रेखा से वक्षस्थल पर्यन्त उपांगों का वर्णन	९७
चूचियों से ले बालों तक उपांगों का वर्णन	९८
तलुवे के शुभाशुभ फल	९९
अभागिनी से ले धनिक पति को प्राप्त होनेवाली तक वर्णन, तलुवे में कुत्ता आदि के चिन्ह होने का फल	१००
पैर के अंगूठे का शुभाऽशुभ निरूपण पैर की अंगुलियों का शुभाऽशुभ निरूपण	१०१
चाल से स्त्री का शुभाऽशुभ वर्णन	१०२
पैर की बीच अंगुली छोटी होने का फल, कन्यापन में व्यभिचारिणी होना, नखों का शुभाऽशुभ फल वर्णन, रानीपन होना	१०२
पृष्ठ के अशुभ लक्षणों का फल, टकनों के शुभाऽशुभ फल, पांव के शुभाऽशुभ फल	१०३
पिंडली के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	१०४
रोमावली आदि पिंहली होने का फल घुटनों के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	१०५

विषय	पृष्ठांक
स्त्री की जांघ के शुभाऽशुभ फल	१०६
कमर अच्छी बुरी होना स्त्री के कूलों का शुभाऽशुभ वर्णन	१०७
कमर के पिंडों का शुभाऽशुभ होने का फल प्रथम बायें पगकरि चलने का फल	१०७
योनि के शुभ लक्षण	१०८
पुत्रवती होना, दाहिनी और ऊंची योनि से ले धन पैदा करनेवाली तक वर्णन थोड़े रोमवाली योनि से ले सूखी योनि तक वर्णन	१०९
चूल्हे की सी योनि से शंखसी योनि तक वर्णन	११०
संकड़ी योनि से ले ढीलीयोनि तक वर्णन योनि के भाल का निरूपण	१११
पेडू के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	११२
नाभि का शुभाऽशुभ लक्षण	११२
कुक्षि के शुभाऽशुभ लक्षण, मुलायम पांसुओं का फल, खरदरी पांसुओं का फल	११३
स्त्री का रानी होना, रानी के पेट का वर्णन घड़े सरीखेवाली पेटवाली से ले चौड़ापेटवाली तक वर्णन	११४
मध्यस्थल का मुष्टि में आने का पूर्ण तीन सलवट होने के फल	११५
रोमलता से शुभाऽशुभ लक्षण स्त्रियों के हृदय का शुभाऽशुभ लक्षण	११६
छाती का शुभाऽशुभ निरूपण गोल आदि कुचों का फल	११७
ऊंचे कुचों से ले घड़े के तुल्य कुचों तक वर्णन	११८
कुच मिलने से कुचों की नोकों तक वर्णन,नोकों से व्यभिचारिणी होना	११९
कंधों के लक्षणों से भोगवती और नटखट होना, कंधों के लक्षणों से बांझ और दुःखवती होना, शुभकन्धों से सौभाग्यवती होना	११९
कन्धों के अशुभ लक्षणों से दरिद्रिणी होना	
कांखों के शुभाऽशुभ लक्षण	१२०
भुजाओं के शुभाऽशुभ लक्षण हाथों का सौंदर्य वर्णन	१२१
स्त्रियों की हथेली का शुभाऽशुभ फल हथेली में रेखा होने तक फल	१२२
प्रसंग से हस्तरेखाओं का कहना, हथेली में पूर्ण तीन रेखा होने का फल मच्छी आदि की सी रेखा होने का फल स्त्रियों में श्रेष्ठ होना	१२३
भर्तृघ्नी रेखा से ले कछुवे की रेखा तक वर्णन	१२४
ध्वजा की रेखा से ऊंट की रेखाओं तक का फल स्त्रियों के अंगूठे अंगुलियों का शुभाऽशुभ फल	१२४
शुभनखों का वर्णन, अशुभ नखों का धनहीन, और व्यभिचारिणी होना	१२५
पीठ के शुभाऽशुभ फल	१२६
घेंटी के शुभाऽशुभ लक्षण स्त्रियों के कण्ठ के लक्षण	१२७
ग्रीवा के शुभाऽशुभ लक्षण, ठोढी और हनुके शुभाऽशुभ लक्षण	१२८
सुन्दर कपोलों का वर्णन, मुख के शुभलक्षण	१२९
मुख के अशुभ, ओष्ठों के शुभलक्षण	१३०
ओष्ठों के शुभाऽशुभ लक्षण	१३१
स्त्रियों के दांतों के शुभाऽशुभ लक्षरों का फल	१३२
दांतो के अशुभ लक्षणों के फल, जीभ के शुभ लक्षण	१३२
जीभ के अशुभ लक्षण, तालु के शुभाऽशुभ लक्षण	१३३
तालु के अशुभ लक्षण, घेंटी का शुभाऽशुभ होना, हँसने का शुभाऽशुभ लक्षण,नासिका के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	१३४
छींक का शुभांऽशुभ निरूपण, शुभ नेत्रों का वर्णन शुभाशुभ लक्षणों का फल नेत्रों के अशुभ लक्षण, काणी स्त्री का वर्णन	१३६
वाफनोंक शुभाशुभ लक्षण, स्त्रियों के रोने का निरूपण, भृकुटियों के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	१३८
कानों के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	१३८
स्त्रियों के चन्द्रसमान ललाट का फल, ललाट के शुभाऽशुभ लक्षण मांग के शुभ लक्षण	१३९
केशों के अशुभ लक्षण	१४१

विषय	पृष्ठांक
व्यंजन के लक्षण कथन और व्यञ्जनसंज्ञा, मशकादिका ज्ञान, मशकादिक से चिन्ह से रानी होना	१४२
बायें कपोल के बांये कुचतक मशकादि चिन्ह होने का फल	१४२
योनि और नाक और नाक की लफनी में और नाभि के नीचे मशकादि चिन्ह होने का फल	१४३
टकने में और बांये हाथ में मशकादि चिन्ह होने का फल, मशकादि शुभाऽशुभ होना स्त्रियों की प्रकृति के भेद तिनके फल	१४४
चिकने नख रोम त्वचा होने का फल, कोमल त्वचा और कमल के से पैरोंवाली का और बड़े नेत्रवालीका वर्णन	१४५
निद्रावती का वर्णन, पित्तप्रकृतिवाली आदि का	१४६
वातप्रकृतिवाली का वर्णन	१४७
स्वप्न देखनेवाली ले देवप्रकृतिवाली तक वर्णन	१४७
विद्याधरस्वभाववाली से राक्षसी स्वभाववाली तक वर्णन	१४८
भयंकरी से ले खरके स्वभाववाली तक वर्णन	१४९
कुटिलगामिनी का वर्णन, सिंहप्रकृतिवाली का वर्णन, मंडूक, कुक्षिवाली से ले स्त्रीस्वामिनी तक वर्णन	१५०
शिर के शुभाऽशुभ लक्षण, केशों के शुभ लक्षण	१५०
रानी तथा आठ पुत्र जननेवाली से ले स्त्री भाग्यवाली तक वर्णन	१५१
रक्तनेत्रादिवाली का वर्णन	१५२
गोलमुख गोलकुचवाली आदि का वर्णन पद्मिन्यादि चार भेदों का कथश्र पद्मिनी हस्तिनी और शंखिनीका वर्णन	१५३
चित्रिणी का वर्णन, भूरे हाथ पांववाली से ले काले आंखवाली तक वर्णन	१५४
लम्बे कुचवाली स्त्री से ले लालमुखी तक वर्णन	१५५
कुठारी से ले पिशाचिनी तक वर्णन	१५६
आंखचलानेवाली से ले त्याज्य स्त्री तक वर्णन	१५७
विघ्न देनेवाली स्त्री से दांतकाटनेवाली तक वर्णन	१५८
काकमुखी आदि का वर्णन	१५९
पर्वत, नामकी स्त्रीसे मृगी व०	१५९
कामिनी के मृगोआदि तीन भेद लक्षणों से स्त्री का हरिणी घोड़ा हथिनी होना, हरिणी आदि स्त्रियों की हरिण घोड़ा हाथी ऐसे नरों के साथ प्रीति होना, कामिनी का वर्णन, नेत्रों की अवस्था का होना	१६०
वीर्यरज की अधिक न्यूनता का फल, स्त्रियों का स्नेहादि पुरुषों के सम जानना, दुश्चारिणी और प्रशंसा योग्यस्त्रियों का वर्णन	१६१
शीलयुक्त स्त्री का शुभ होना, स्वरूप और गुणों का एकत्र निवास रङ्ग की प्रशंसा योग्य होना, शुभरङ्गका निरूपण	१६२
स्त्रियों के शुभाऽशुभ रंग का वर्णन, चांदनी के से रंगवाली का वर्णन, बिना सुगन्ध स्त्री शुभ न होना का लक्षण कथन, चम्पे आदिकीसी गंधवाली प्रशंसनीय होना गंध के शुभाऽशुभ लक्षणों का फल	१६४
बाईं दाहिनी हथेली से ले पृष्ठ के वंशतक चक्रादि चिन्ह होने का फल	१६५
भौंरों के शुभ अशुभलक्षणों का फल, भौंरी लक्षणों से विधवादि होना	१६५
मस्तक में भौंरी होने का फल, पीठ अथवा टुंडी में भौंरी होने का फल	१६६
पराक्रमरहित स्त्री जानना, स्वर के शुभ लक्षणों का फल	१६७
स्वर के अशुभ लक्षणोंका फल, राजाओं की रानी की चाल का वर्णन	१६८
बैलकी सी चालवाली से हरिणकीसी चालवाली तक वर्णन और छायालक्षण	१६९
छाया से स्त्री का सौंदर्यवर्णन	१७०
प्रशंसायोग्यछाया से दुर्लभा स्त्री का व	१७१
कवि के वृत्तान्तों का प्रारम्भ	१७२
कविवृत्तान्त की समाप्ति	१७३

इति सामुद्रिकशास्त्रविषयानुक्रमणिका

श्रीगणेशाय नमः

सामुद्रिकशास्त्रम्

सान्वयहिन्दीटीकासमेतम्

श्रीपतिनाभिप्रभवः कनकच्छायः प्रयच्छतु शिवं वः ।
कल्पादिसृष्टिहेतुः पद्मासनसंश्रितो देवः ॥१॥

अन्वयार्थौ—(पद्मासनसंश्रितो देवः ब्रह्मा वः शिवं प्रयच्छतु) कमलासनपै स्थित जो देव अर्थात् आदिदेव ब्रह्मा सो तुमको कल्याण देओ (कथंभूतो देवः—श्रीपतिनाभिप्रभवः) कैसे हैं वह देव कि, श्रीपति जो हैं विष्णु तिनकी नाभिकमल से उत्पन्न (पुनः कथंभूतः—कनकच्छायः) फिर कैसे हैं वह देव कि, सुवर्ण की सी है कांति जिनकी (पुनः कथंभूतः देवः—कल्पादिसृष्टिहेतुः) फिर कैसे हैं वह देव कि, कल्प के आदि में जो सृष्टि हुई उसके कारण हैं॥१॥

स्फुरदेकलक्षणमपि त्रैलोक्यलक्षणं वपुर्यस्याः ।
अविकलशब्दब्रह्म ब्राह्मी सा देवता जयति ॥२॥

अन्वयार्थौ—(सा ब्राह्मी देवता जयति) सो ब्राह्मी देवता अर्थात् सरस्वती देवी सर्वोत्कर्षकरिके जयवती हो अर्थात् जयकारी हो (कथंभूता सा ब्राह्मी देवता—अविकलशब्दब्रह्म स्फुरदेकलक्षणमपि) सो कौनसी देवी है कि, विकलतारहित शब्दरूप ब्रह्म और देदीप्यमान है मुख्यलक्षण जिसमें ऐसा (यस्याः त्रैलोक्यलक्षणं वपुः) जिसका त्रैलोक्यरूप लक्षण शरीर है॥२॥

पुरुषोत्तमस्य लक्ष्म्या समं निजोत्सङ्गमधिशयानस्य ।
शुभलक्षणानि दृष्ट्वा क्षणं समुद्रः पुरा दध्यौ ॥३॥

अन्वयार्थौ—(समुद्रः पुरुषोत्तमस्य शुभलक्षणानि दृष्ट्वा क्षणं पुरा दध्यौ) समुद्र जो है सो पुरुषोत्तम कहिये विष्णु तिनके शुभलक्षणों को देख करके क्षणमात्र पहिले ध्यान किया (कथंभूतस्य पुरुषोत्तमस्य-लक्ष्म्या समं निजोत्संगमधिशयानस्य)

कैसे हैं वह पुरुषोत्तम कि लक्ष्मी के साथ अपनी गोद में शेष शय्या पर शयन करते हैं।।३।।

भोक्ता त्रिखण्डभूमेर्भङ्क्ता मधुकैटभादिदैत्यानाम् ।
रूपवशीकृतयाऽसौ क्षणमपि न वियुज्यते लक्ष्म्या ।।४।।

अन्वयार्थौ—(त्रिखण्डभूमेः भोक्ता) तीन खण्ड पृथ्वी उसका भोगनेवाला (च पुनः मधुकैटभादिदैत्यानां भक्ता) और मधुकैटभ आदि दैत्यों के मारनेवाला (असौ रूपवशीकृतया लक्ष्म्या क्षणमपि न वियुज्यते) ऐसे यह विष्णु रूपकरिके वश भई लक्ष्मी तिससे क्षणमात्र भी अलग नहीं होते हैं।।४।।

इहेक्षणलक्षणयुतं तदपरमपि हन्त भजति श्रीः ।
विपरीतलक्षणयुतस्त्रिजगत्यपि किङ्करो भवति ।।५।।

अन्वयार्थौ—(इह ईक्षणलक्षणयुतं तत् अपरम् अपि हन्त श्रीः भजति) इस लोकमें नेत्रों को लक्षणयुक्त अन्य पुरुष को भी यह हर्ष की बात है कि, उसको लक्ष्मीजी भजती हैं अर्थात् उसके भी निवास करती हैं और (च पुनः—विपरीतलक्षणयुतः पुरुष त्रिजगति अपि किंकरः भवति) जो विपरीत लक्षण अर्थात् अशुभलक्षणयुक्त जो पुरुष हैं सो तीनों लोको में दास होता है।।५।।

अथ चेह मध्यलोके सकलेष्वपि सत्सु जन्तुजातेषु ।
मर्त्यः प्रधानजातो यदाख्यया मर्त्यलोकोऽयम् ।।६।।

अन्वयार्थौ—(अथ च इह मध्यलोके सकलेषु अपि जन्तुजातेषु सत्सु अयं मर्त्यः प्रधानजातः) इसके अनन्तर इस मध्यलोक में सब जीवजंतुओं के समूह होते संते मनुष्य प्रधान हुआ और (याख्यया अयं मर्त्यलोकः प्रसिद्धः) जिसके नामकरिके यह मर्त्यलोक विख्यात है।।६।।

उत्पत्तिः स्त्रीमूला तस्या अपि ततः प्रधानमेषापि ।
क्रियते लक्षणमतयोर्यदि त देह स्याज्जनोपकृतिः ।।७।।

अन्वयार्थौ—(उत्पत्तिः स्त्रीमूला ततः तस्या अपि एषा अपि प्रधानम्) कि है मूल अर्थात् जड़ उत्पत्ति जिसकी उससे यह भी प्रधान है (यदि अनयोः लक्षणं क्रियते तत् इह जनोपकृतिः स्यात्) जो इन दोनों के लक्षण करे जायँ तो इस लोक में सबका उपकार होय ।।७।।

इत्थं विचिन्त्य सुवरे स्वहृदि समुद्रेण सम्यगवगम्य ।
नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं रचयाञ्चक्रे तदादि तथा ।।८।।

अन्वयार्थौ—(समुद्रेण इत्थं सुवरे स्वहृदि विचिन्त्य सम्यक् च अवगम्य) समुद्र ने श्रेष्ठ अपने हृदय में विचार ऐसा करके और अच्छे प्रकार समझिके (नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं तथा तदादि रचयांचक्रे) मनुष्य और स्त्री के हैं लक्षण जिसमें ऐसा शास्त्र है और आदि में मनुष्य के हैं लक्षण जिसमें सो रचा अर्थात् बनाया॥८॥

तदापि नारदलक्षकवराहमाण्डव्यषण्मुखप्रमुखैः ।
रचितं क्वचित्प्रसङ्गात्पुरुषस्त्रीलक्षणं किञ्चित् ॥९॥

अन्वयार्थौ—(नारदलक्षकवराहमाण्डव्यषण्मुखप्रमुखैः प्रसङ्गात पुरुषस्त्रीलक्षणं किंचित् क्वचित् रचितम् (तब भी नारद मुनि जाननेवाले और वराह मांडव्य स्वामिकार्तिक आदिकों ने प्रसङ्ग से पुरुष और स्त्री के लक्षणों को करके युक्त कुछ कुछ शास्त्र कहीं बनाया ॥९॥

तदनन्तरमिह भुवने ख्यातं स्त्रीपुंसलक्षणज्ञानम् ।
दुर्बोधं तन्महदिति जडमतिभिः खण्डतां नीतम् ॥१०॥

अन्वयार्थौ—(तदनन्तरम् इह भुवने स्त्रीपुंसलक्षणज्ञानं ख्यातम् अतिदुर्बोधं तत् महत् जडमतिभिः खण्डतां नीतम्) ताके पीछे इस लोकमें स्त्रीपुरुष के लक्षणों का ज्ञान प्रगट हुआ। उससे वह बड़े जानके के कठिन होने से जड़बुद्धियों ने खंडित कर दिया॥१०॥

श्रीभोजनृपसुमन्तप्रभृतीनामग्रतोऽपि विद्यन्ते ।
सामुद्रिकशास्त्राणि प्रायो गहनानि तानि परम् ॥११॥

अन्वयार्थौ—(श्रीभोजनृपसुमन्तप्रभृतीनाम् अपि अग्रतः सामुद्रिक शास्त्राणि विद्यन्ते) श्रीमान् भोज और सुमन्त आदि राजाओं के आगे भी सामुद्रिक शास्त्र थे (प्रायः तानि परं गहनानि सन्ति) परन्तु वे बहुधाकरिके अत्यन्त कठिन और गूढ़ थे॥११॥

खण्डीकृतानि च पुनः पिण्डीकृत्याखिलानि तान्यधुना ।
सामुद्रिकं शुभाशुभमिह किंचिद्वच्मि संक्षेपात् ॥१२॥

अन्वयार्थौ—(पुनः खंडीकृतानि अखिलानि तानि पिण्डीकृत्य इह शुभाशुभं सामुद्रिकं किंचित् संक्षेपात् अधुना वच्मि) फिर वे जो संपूर्ण खंडित हो गये थे तिन्हें इकट्ठे करके इस लोक में शुभ और अशुभ लक्षणों का जो सामुद्रिक शास्त्र उसे संक्षेप से कुछ एक अब कहता हूँ॥१२॥

सामुद्रमङ्गलक्षणमिति सामुद्रिकमिदं हि देहवताम् ।
प्रथममवाप्य समुद्रः कृतवानिति कीर्त्यते कृतिभिः ।।१३।।

अन्वयार्थौ—(समुद्रः प्रथमम् अवाप्य इदं सामुद्रिकं देहवतां शुभाशुभम् अङ्गलक्षणम् इदं शास्त्र कृतवान् तत् अधुना कृतिभिः कीर्त्यते) समुद्र ने पहिले मनुष्यों के अंग का शुभाशुभ लक्षण इस सामुद्रिक शास्त्र को किया तो अब उसी को पण्डित कहते हैं।।१३।।

उरू जठरमुरः स्थलबाहुयुगं पृष्ठमुत्तमाङ्गं च ।
इत्यष्टाङ्गानि नृणां भवन्ति शेषाण्युपाङ्गानि ।।१४।।

अन्वयार्थौ—(उरू-जठरम्-उरःस्थलं-बाहुर्युगं-पृष्ठम्, उत्तमाङ्गं च नृणाम् इति अष्टाङ्गानि भवन्ति तथा शेषाणि उपाङ्गानि भवन्ति) दो जाँघ-पेट-छाती, दो भुजा, पीठ, शीश मनुष्यों के ये आठ अंग मुख्य हैं जिनमें और बाकी उपअंग है अर्थात् छोटे अंग हैं।।१४।।

पूर्वभवान्तरजनितं शुभशुभमिहापि लक्ष्यते येन ।
पुरुषस्त्रीणां सद्भिर्निगद्यते लक्षणं तदिह ।।१५।।

अन्वयार्थौ—(येन पूर्वभवान्तरजनितं शुभाशुभलक्षणम् इह अपि लक्ष्यते तत् इह पुरुषस्त्रीणां लक्षणं सद्भिः निगद्यते) जिससे पहिले जन्म के उत्पन्न शुभाशुभ लक्षण जो देखे जायँ सो ही पुरुष स्त्रियों के लक्षण पण्डितों करिके कहे जाते हैं।।१५।।

देहवतां तद्बाह्याभ्यन्तरभेदेन जायते द्विविधम् ।
वर्णस्वरादि बाह्यं पुनरन्तः प्रकृतिसत्त्वादि ।।१६।।

अन्वयार्थौ—(देहवतां तत् लक्षणं बाह्याभ्यन्तरभेदेन द्विविधं जायते वर्णस्वरादि बाह्यं पुनः प्रकृतिसत्त्वादि अन्तः) शरीर के वे ही लक्षण बाहर और भीतर के भेद से दो प्रकार के होते हैं सो वर्ण और स्वर को आदि लेकर बाह्य लक्षण कहाते हैं और प्रकृति सत्त्व आदि वे अन्तर के लक्षण हैं।।१६।।

आद्यं तदाश्रयतया निखिलेष्वपि लक्षणेषु शारीरम् ।
मनुजानां तस्मादिह वक्ष्यामि तदेव मुख्यतया ।।१७।।

अन्वयार्थौ—(निखिलेषु अपि लक्षणेषु तदाश्रयतया आद्यं शारीरं तस्मात् इह मनुजानां मुख्यतया तदेव वक्ष्यामि) संपूर्ण लक्षणों में उसके आश्रय करिके आदि में शरीर से ही सबंध रखता है उससे मनुष्यों के मुख्य उसी शरीर के लक्षण कहता हूं।।१७।।

शरीरावर्तगतिच्छायास्वरवर्णवर्णगन्धसत्त्वानि ।
इत्यष्टविधं हयवत्पुरुषस्त्रीलक्षणं भवति ॥१८॥

अन्वयार्थौ—(शरीरावर्तगतिच्छायास्वरवर्णवर्णगन्धसत्त्वानि हयवत् इति अष्टविधं पुरुषस्त्रीलक्षणं भवति) शरीर में आंवर्त कहिये, भौंरी १ गति कहिये चाल २ छाया कहिये कान्ति ३ स्वर कहिये बोलना ४ वर्ण कहिये रंग ५ वर्ण कहिये अक्षर ६ गंध कहिये सुगंध दुर्गंध ७ सत्त्व कहिये पराक्रम ८ इस प्रकार जैसे आठ प्रकार के लक्षण घोड़े के होते हैं तैसे ही पुरुष और स्त्रियों के भी होते हैं॥१८॥

इह तावदूद्ध्र्वमूलो नरकल्पतरुर्भवेदधः शाखः ।
पादतलात्तदिदानीं शारीरं लक्षणं वक्ष्ये ॥१९॥

अन्वयार्थौ—(इह तावत् उद्ध्र्वमूलः नरकल्परुः अधः शाखः भवेत् तत् इदानीं पादतलात् शारीरं लक्षणं वक्ष्ये) इस ग्रंथ में उर्ध्व से मूल तक मनुष्य का शरीर कल्पवृक्षके समान नीची शाखावाला है सो पांव के तलुवा अर्थात् नीचे से शरीररूप वृक्ष के लक्षणों को कहता हूं॥१९॥

आदौ पदस्य तलमथ रेखांगुष्ठांगुलीनखं पृष्ठम् ।
गुल्फौ पाली जङ्घायुगलं रोमाणि जानुयुगम् ॥२०॥

अन्वयार्थौ—इसके आदि में पांव का तलुआ और रेखा अंगूठा अंगुली नख पांव की पीठ गुल्फौ अर्थात् टखने पाली अर्थात् गढेले जंगायुगलम् अर्थात् दोनों पिंडली रोमाणि अर्थात् रोंगटे जानुयुगम् अर्थात् दोनों जाँघ जानो॥२०॥

उरू तथा कटितटस्फिग्युग्मं तदनु पायुरथ मुष्कौ ।
शिश्नस्तन्मणिरेतोमूत्रं शोणितमथो बस्तिः ॥२१॥

अन्वयार्थौ—ऊरू दोनों जाँघ। कटितट कमर का किनारा। स्फिग्युग्मं दोनों कोख। तदनु पायुः—तिसके पीछे गुदा। मुष्कौ—अंडकोश। शिश्नः—इन्द्री। तन्मणिः—इन्द्री की सुपारी। रेतः—धातु मूत्र। शोणितम् रुधिर। बस्ति पेडू जानो॥२१॥

नाभिः कुक्षी पार्श्वे जठरं मध्यं ततश्च वलयोस्मिन् ।
हृदयमुरः कुचचूचुकयुग्मं जत्रुद्वयं स्कन्धौ ॥२२॥

अन्वयार्थौ—नाभिः टूंडी। कुक्षी दोनों कोख। पार्श्वे—पांसू। जठरं मध्यं पेट का बीच। वलयः—पेट की सलवट। हृदयं-छाती। उरः-कलेजा । कुच-चूँची। चूचुक्युग्मं दोनों चूंचीको नोंकें। जत्रुद्वयं-कंधे की दोनों हसली। स्कन्धौ-दोनों कंधा जानो॥२२॥

अंसौ कक्षे बाहू पाणियुगं तस्य मूलपृष्ठतलम् ।
मीनाद्याकृतिरेखांगुलीकं नखाः क्रमशः ।।२३।।

अन्वयार्थौ—अंसौ-कंधे। कक्षे-दोनों कांख। बाहू-दोनों भुजा। पाणियुगम्-हाथ। तस्य मूलम्-उसकी कलाई। पृष्ठतलं हथेलीकी पीठ। मीनाद्याकृतिः मछली की सी सूरत। रेखा-लकीर। अंगुली । नख ये क्रम से जानो।।२३।।

पृष्ठं कृकाटिकाथ ग्रीवा चिबुकं सकूर्चहनुगण्डम् ।
वदनोष्ठदशनरसना तालु ततो घण्टिका हसितम् ।।२४।।

अन्वयार्थौ—पृष्ठं-पीठ। कृकाटिका-गलेका गट्टा। ग्रीवा-मर्दन। चिबुकं-ठोडी। सकूर्च-बालसहित। हनुगण्ड-गालोंकी हड्डियाँ। वदनमुख ओष्ठ-होठ। दशन-दांत। रसना-जीभ। तालु-तलुवा । घण्टिका-गलेकी घण्टी हसितं हँसना जानो।।२४।।

नासाक्षुतमक्षियुगं पक्ष्माणि ततो निमेषरुदिते च ।
भ्रूशङ्खकर्णभालं तल्लेखा मस्तकं केशाः ।।२५।।

अन्वयार्थौ—नासा-नाक। क्षुतं-छींक। अक्षियुगं-दोनों आंखें। पक्ष्माणि-आँखो की चाफनी। निमेष-पलक। रुदित-रोना। भ्रूशंख-भौहैं और कनपटी। कर्ण-कान। भाल-ललाट। तल्लेखा-उसकी लेखालिखावट। मस्तकं-माथा। केशाः-बाल जानो।।२५।।

इत्यापादतलकेशप्रान्तमिहानुक्रमेण शारीरम् ।
अङ्गोपांगविभक्तं लक्षणविद्भिर्नृणां ज्ञेयम् ।।२६।।

अन्वयार्थौ—(इति आपादतलकेशप्रान्तम् इह अनुक्रमेण शारीरम् अंगोपांगविभक्तं लक्षणविद्भिः नृणां ज्ञेयम् इति) पाँवके तलुवे से लेकर बालों के अन्त तक यह क्रम से शरीर के अंग उपअंग के जुदे जुदे लक्षण मनुष्यों के जानने चाहिये।।२६।।

अस्वेदमुष्णमरुणं कमलोदरकान्ति मांसलं श्लक्ष्णम् ।
स्निग्धं समं पदतलं नृपसंपत्तिं दिशति पुंसाम् ।।२७।।

अन्वयार्थौ—(अस्वेदम् उष्णम् अरुणं कलोदरकान्ति मांसलं श्लक्ष्णं स्निग्धं समम् एतादृशं पदतलं पुंसां नृपसंपत्तिं दिशति) पसीनारहित, गरम रहे, लाल होय, कमल के उदरकी सी कांति होय, मांस पुष्ट होय, चिकना होय, एक सा बराबर होय, ऐसा पैर का तलुवा जो होय तो मनुष्यों को राजा की संपत्ति का देनेवाला होय।।२७।।

पाचरस्यापि चरणतलं यस्य कोमलं तत्र ।
पूर्णस्फुटोद्भूर्ध्वरेखा स भवेद् विश्वम्भराधीशः ॥२८॥

अन्वयार्थौ—पांव से चलनेवाले का भी पादतल जिसका कोमल होय तहां पूरी प्रगट उद्र्ध्वरेखा होय तो ऐसा पांवों के तलुवेवाला संपूर्ण पृथ्वी का मालिक होय॥२८॥

वंशच्छिदे कुपादं द्विजहत्यायै विपक्वमृत्सदृशम् ।
पीतमगम्यारतये कृष्णं स्यान्मद्यपानाय ॥२९॥

अन्वयार्थौ—(कुपादं वंशच्छिदे भवति) जो पाँव का तलुवा बुरा मैला होय तो कुल का नाश करनेवाला हो और (विपक्वमृत्सदृशं द्विजहत्यायै भवति) जो पकी हुई मट्टी के तुल्य होय तो द्विजहत्या का करनेवाला होय और (अगम्यारतये पीतं भवति) जो पीला होय तो जिनसे रत नहीं चाहिये जैसे—बहिन-भानजी-पुत्री-गुरुस्त्री आदि उनसे रति करे और (मद्यपानाय कृष्णं स्यात्) जो काला होय तो मदिरा पीनेवाला होता है॥२९॥

पाण्डुरमभक्ष्यभक्षणकृते तलं लघु दरिद्रतायै स्यात् ।
रेखाहीनं कठिनं रूक्षं दुःखाय विस्फुटितम् ॥३०॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पादतलं पांडुरम् अभक्ष्यभक्षणकृते लघु दरिद्रतायै स्यात्) जिसके पांव का तलुवा पोतामाटी के रंग के तुल्य होय सो जो खाने योग्य वस्तु नहीं उसके खानेवाला होय और जो छोटा हलका होय तो दरिद्री होता है (रेखाहीनं कठिनं रूक्षं विस्फुटितं दुःखाय स्यात्) और जो रेखाहीन और कड़ा होय और रूखा फटा खुरदरा होय तो ऐसे पांव के तलुवेवाला दुःखी रहै॥३०॥

तलमन्तः संक्षिप्तं स्त्रीकार्ये मृत्युमादिशति पुंसाम् ।
रोगाय विगतमांसं मार्गाय ज्ञेयमुत्कटम् ॥३१॥

अन्वयार्थौ—(पुंसां पादतलम् अन्तः संक्षिप्तम्) जिस पुरुष का पांव का तलुवा बीच में खाली होय तो (स्त्रीकार्ये मृत्युम् आदिशति) स्त्री के कार्य में मरे और (विगतमांसं पादतलं रोगाय भवति) जो पांव का तलुवा मांसरहित सूखा दुबला होय तो रोगी रहे और (उत्कंटकं मार्गाय ज्ञेयम्) जो खुरदरा होय तो मार्ग का चलनेवाला होय॥३१॥

रेखाः शंखच्छत्राङ्कुशकुलिशशशिध्वजादिसंस्थानाः ।
अच्छिन्ना गम्भीराः स्फुटास्तले भागधेयवताम् ॥३२॥

अन्वयार्थौ—(भागधेयवतां तले रेखाः शंख-छत्र-अंकुश-कुलिश-शशि-ध्वजादि संस्थानाः अच्छिन्ना गंभीराः स्फुटाः भवंति) भाग्यवानों की हथेली में जो शंख छत्र अंकुश वज्र चंद्रमा ध्वजादि के आकार पूरी गहरी प्रगट रेखा होय तो वह पुरुष भाग्यशाली होता है॥३२॥

ताः शंखाद्यकृतयः परिपूर्णा मध्यभेदतो येषाम् ।
श्रीभोगभाजनं ते जायन्ते पश्चिमे वयसि ॥३३॥

अन्वयार्थौ—(येषां ताः शंखाद्याकृतयः रेखाः मध्यभेदतः सहिताः परिपूर्णाः ते पश्चिमे वयसि श्रीभोगभाजनं जायन्ते) जिनके शंख आदि स्वरूप की रेखा मध्यभेद के सहित परिपूर्ण होयँ तो वे पुरुष पिछली अवस्थामें लक्ष्मी और अनेक प्रकार के भोगनेवाले (पात्र) होते हैं॥३३॥

ता गोधासैरिभजंबुकमूषककाककंकसमाः ।
रेखाः स्युर्यस्य तले तस्य न दूरेऽतिदारिद्रचम् ॥३४॥

अन्वयार्थौ—गोधा-सैरिभ-जंबुक-मूषक काक-कंकसमाः रेखाः यस्य पाणितले स्युः तस्य दारिद्रचम् अतिदूरे न) गौ भैंसा गीदड मूषक कौवा ककपक्षी इनके स्वरूप के तुल्य जिसके हाथ की हथेली में रेखा होयँ तो उससे दरिद्र बहुत दूर नहीं रहे अर्थात् दरिद्र उसे घेरे रहते हैं॥३४॥

वृत्तो भुजगफणाकृतिरुतुंगो मांसलः शुभांगुष्ठः ।
सशिरो ह्रस्वश्चिपिटोऽचकोऽविपुलः स पुनरशुभः ॥३५॥

अन्वयार्थौ—(यस्य अंगुष्ठः वृत्तः भुजगफणाकृतिः उत्तुंगः मांसलः भवति स शुभः) जिस पुरुष का अंगूठा गोल सर्प की फणा के आकार और ऊंचा मांस का भरा हुआ होय तो ऐसा शुभ है और (सशिरः ह्रस्वः चिपिट अचक्रः अविपुलः एतादृशः स पुनः अशुभो भवति) जिसके अँगूठे में नसें दीखें और छोटा चपटा चक्ररहित चोड़ा हो तो ऐसा फिर अशुभ होता है॥३५॥

श्लक्ष्णा वृत्ता मृदवो घना दलानीव पद्मस्य ।
ऋजवोंऽगुलयः स्निग्धा सेभसंख्यान्वितं दधति ॥३६॥

अन्वयार्थौ—यस्य अंगुलयः श्लक्ष्णाः वृत्ताः मृदयः घनाः पद्मस्य दलानि इव ऋजवः स्निग्धाः भवंति स इभसंख्यान्वितं दधति) जिस पुरुष की अंगुली सचिक्कण और गोल कोमल घनी कमल के दल के आकार सूधी खरदरी न हो चिकनी होयँ तो वह पुरुष हाथियों की गिनतियों को धारण करे है॥३६॥

विरलाश्चिपिटाः शुष्का लघवो वक्राः खटाः पदांगुलयः ।
यस्य भवन्ति शिरालाः स किङ्करत्वं करोत्येव ।।३७।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पदांगुलयः विरलाः चिपिटाः शुष्काः लघवःवक्राः खटाः शिराला एतादृशाः भवंति स किंकरत्वं करोत्येव) जिस पुरुष के पैर की अंगुली छिरछिरी चपटी सूखी छोटी टेढी हलके आकार और नसें निकली हुई, ऐसी होयँ तो वह दासपदवी के करे नौकर बने रहें।।३७।।

स्त्रीसम्भोगानाप्नोत्यंगुष्ठदीर्घया प्रदेशिन्या ।
प्रथममशुभं च गृहिणीमरणं वा ह्रस्वया च कलिम् ।।३८।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्य अंगुष्ठदीर्घया प्रदेशिन्या स्त्रीसम्भोगान् आप्नोति) जिस पुरुषके पैरकी अंगुली अंगूठे के पास की तर्जनी अंगूठेसे बड़ी होय तो वह स्त्री के संभोग को प्राप्त होय और (ह्रस्वया प्रथमम् अशुभं पुनः गृहिणीमरण कलिमाप्नोति) जो अंगूठे से छोटी होय तो पहले अशुभ है फिर स्त्री के मरण और कलह को अर्थात् दुःख को प्राप्त होता है।।३८।।

आयतया मध्यमया कार्यविनाशो ह्रस्वया दुःखम् ।
घनया समया पुत्रोत्पत्तिः स्तोकं नृणामायुः ।।३९।।

अन्वयार्थौ—(पुरुषस्य आयतया मध्यमया कार्यविनाशो भवति) जिस पुरुष के पैर की बीच की मध्यमा अंगुली बड़ी लंबी होय तो कार्य को नाश करे और (तथा ह्रस्वया दुःखं भवति) छोटा होय तो दुःख होय और (घनया समया पुत्रोत्पत्तिः नृणां स्तोकम् आयुः भवति) बहुत पासपास बराबर होय तो पुत्रों की उत्पत्ति थोड़ी होय और उस पुरुष की आयु भी थोड़ी हो।।३९।।

यस्यानामा दीर्घा स प्रज्ञाभाजनो मनुजः ।
ह्रस्वा स्याद्यस्य पुनः स कलत्रवियोजितो नित्यम् ।।४०।।

अन्वयार्थौ—जिस पुरुष की अनामिका अंगुली मध्यमा से बड़ी हो वह बुद्धिमान् होता है और यदि वही अधिक छोटी हो तो सदा स्त्रीवियोगी रहता है।।४०।।

दीर्घा कनिष्ठिकापि स्याद्यस्य स्वर्णभाजनं स नरः ।
यदि सापि पुनर्लघ्वी परदारपरायणः सततम् ।।४१।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्य कनिष्ठिका दीर्घा स्यात् स नरः स्वर्ण भाजनं भवति) जिस पुरुष की कनिष्ठिका अंगुली बड़ी होय तो वह पुरुष स्वर्ण का पात्र

अर्थात् धनवान् होय (यदि सा अपि पुनः लघ्वी स पुरुष परदारपरायणः सततं भवति) जो वही अंगुली बहुत छोटी होय तो वह पुरुष पर स्त्री में सदा रत होय।।४१।।

यस्य प्रदेशिनीतः कनिष्ठिका स्याद् ध्रुवं स्थूला ।
शिशुभावे तस्य पुनर्जननी पंचत्वमुपयाति ।।४२।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्य प्रदेशिनीतः ध्रुवं कनिष्ठिका स्थूला भवेत्) जिस पुरुष की प्रदेशिनी अंगुली से कनिष्ठिका निश्चय मोटी होय (तस्य पुनः जननी शिशुभावे पंचत्वम् उपयाति) उसकी माता लड़कपन में ही मृत्यु को प्राप्त होय।।४२।।

विमलाः प्रवालरुचयः स्निग्धाः कूर्मोन्नता नखाः श्लक्ष्णाः ।
मुकुराकाराः सूक्ष्माः सौख्यं यच्छंति मनुजानाम् ।।४३।।

अन्वयार्थौ—(विमलाः प्रवालरुचयः स्निग्धाः कूर्मोन्नताः श्लक्ष्णाः मुकुराकाराः सूक्ष्मा एतादृशाः पादनखाः मनुजानां सौख्यं यच्छन्ति) निर्मल मूंगे के रंग चिकने कछुवे की पीठ के समान ऊँचे चमकदार दर्पण के आकार पतले जिस पुरुष के पांव के नख ऐसे होयँ तो वह सुख के देनेवाले हैं।।४३।।

स्थूलैर्नखैर्विदीर्णैः शूर्पाकारैश्च दीर्घनखैः ।
असितैः सितैर्दरिद्रा भवन्ति तेजोरुचारहितैः ।।४४।।

अन्वयार्थौ—(स्थूलैः विदीर्णैः शूर्पाकारैं दीर्घनखैः असितैः तेजोरुचारहितैः एतादृशैःपादनखैः मनुजाः दरिद्रा भवन्ति) मोटे फटे हुए सूप के आकार लंबे काले श्वेत प्रकाश और कांतिरहित जिस मनुष्य के पांव के नख ऐसे हों तो वे दरिद्री होते हैं।।४४।।

मांसोपचितं स्निग्धं गूढशिरं कोमलं चरणपृष्ठम् ।
रोमस्वेदै रहितं स्थूलं कमठोन्नतं शस्तम् ।।४५।।

अन्वयार्थौ—(मांसोपचितं स्निग्धं गूढशिरं कोमलं रोमस्वदैः रहितं स्थूलं कमठोन्नतम् एतादृशं नरस्य पापपृष्ठं शस्तम् (मांस से भरा चिकना जिसमें नसें नहीं चमकें, नरम रोम और पसीनेरहित चौड़ा कछुवे की पीठ के समान ऊँची जिस मनुष्य की पांव की पीठ अर्थात् थापी होय तो बहुत श्रेष्ठ अर्थात् कल्याण के देनेवाली होती है।।४५।।

अन्तर्गूढा गुल्फाः सरोजमुकुलोपमाः श्रियं ददते ।
सूकरवत्ते विषमाः शिथिलाः प्रथयन्ति वधबंधौ ।।४६।।

अन्वयार्थौ—(अन्तर्गूढाः सरोजमुकुलोपमा एतादृशा गुल्फाः श्रियं ददते) जिस पुरुष के टकने मांस में दबे हुए और कमल की कली के तुल्य हों तो लक्ष्मी के देनेवाले हैं और (शिथिलाः सूकरवत् विषमा ते गुल्फा वधबन्धौ (प्रथयन्ति) जो गुलगुले और सूकर के ऐसे रोमदार खुरदरे हों तो वे टकने मारना बांधना अर्थात् कैद के देनेवाले होते हैं।।४६।।

महिषसमानैर्गुल्फैश्चिपिटैर्वा दुःखसंयुताः पुरुषाः ।
तैरपि रोमोपगतैर्नित्यमपत्येन परिहीनाः ।।४७।।

अन्वयार्थौ—(महिषसमानैः वा चिपिटैः गुल्फैः पुरुषा दुःखसंयुताः भवन्ति) जिस पुरुष के टकने भैंसे के से आकार और चिपटे होंय तो दुःख के देनेवाले होते हैं और (रोमोपगतैः अपि गुल्फैः पुरुषा नित्यम् अपत्ये परिहीनाः भवन्ति) जो वे ही टकने रोमसहित होंय तो सदा संतानरहित करें अर्थात् संतान नहीं होय।।४७।।

कन्दः पादांबुरुहस्य यस्य भवेद्वर्तुला पार्ष्णिः ।
तं नरमनुरागादिव नियतं रमयति रमा रामा ।।४८।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पार्ष्णिः पादांबुरुहस्य कन्दः इव वर्तुला भवेत्) जिस पुरुष की चरण कमल की बगली कन्द के तुल्य नरम गोलाकार होय तो (रमा रामा त नरम् अनुरागात् इव नियतं रमयति) लक्ष्मी और स्त्री उस पुरुष को प्रीति से निश्चय रमावे अर्थात् भोगे।।४८।।

समपार्ष्णिःसुखसहितो दीर्घायुःस्यान्नरो महापार्ष्णिः ।
स्वल्पायुरल्पपार्ष्णिः प्रोन्नतया विनिर्जयो भवति ।।४९।।

अन्वयार्थौ—(समपार्ष्णिः पुरुषः सुखसहितः च पुनः महापार्ष्णिः दीर्घायुः स्यात्) जिस पुरुष के बराबर बगली होय वह सुखसहित रहे और जो बड़ी बगली होय तो बड़ी आयुवाला होय और (अल्पपार्ष्णिः स्वल्पायुः) जो छोटी बगली होय तो थोड़ी आयु होय और (प्रोन्नतया नरः विनिर्जयो भवति) जो ऊँची बगली होय तो विजयी होय अर्थात् जीतवाला होय।।४९।।

पिशितान्तर्गतनलिका कुरङ्गजङ्घोपमा श्रियं पुंसाम् ।
प्रविरलमृदुतररोमा दत्ते क्रमवर्तुला जङ्घा ।।५०।।

अन्वयार्थौ—(यस्य जंघा पिशितान्तर्गतनलिका भवति तथा कुरंग जंघोपमा सा पुंसां श्रियं दत्ते) जिसकी पिंडली की नली मांस में घुसी हो और हिरण की जांघ के तुल्य होय तो उस पुरुष को लक्ष्मी की देनेवाली होती है और (यस्य जंघा

प्रविरलमृदुतररोमा क्रमवर्तुला पुंसांश्रियं दत्ते) जिसकी पिंडली में दूर दूर थोड़े नरम रोम होये और क्रम से गोलाई लिये होंय तो उस पुरुष को लक्ष्मी की दाता-अर्थात् लक्ष्मी देती है।।५०।।

लक्ष्मीं दिशति केसरिमीनव्याघ्रोपमा नृणाम् ।
जङ्घा ऋक्षसदृशा वधबन्धौ निःस्वतां प्रायः ।।५१।।

अन्वयार्थौ—(केसरिमीनव्याघ्रोपमा जंघा नृणा लक्ष्मी दिशति) सिंह मछली बघेरा इनकी तुल्य जो पिंडली हो तो मनुष्यों को लक्ष्मी देती है और (ऋक्षसदृक्षा जंघा प्रायः वधबन्धौ निःस्वतां दिशति) जो रीछ की सदृश जंघा होय तो बहुधा बंधन मरण और दरिद्रता आदि मनुष्यों को देनेवाली होती है।।५१।।

स्थूला दीर्घा मार्गं वितरत्युद्बद्धपिण्डिका जङ्घा ।
श्वभ्रृगालकरभरासभवायसजंघोपमा त्वशुभा ।।५२।।

अन्वयार्थौ—(स्थूला दीर्घा उद्बद्धपिण्डिका जंघा मार्गं वितरति) मोटी और लम्बी और बंधा हुआ है पिण्ड जिसका ऐसी पिण्डली मार्ग चलानेवाली होती है और (श्वभ्रृगालकरभरासभवायसजंघोपमा जंघा तु अशुभा भवति) कुत्ता-गीदड-ऊंट-गधा कौवा इनकी तुल्य जो पिण्डली होय तो अशुभ होती है।।५२।।

ललितानि स्निग्धानि भ्रमरश्यामानि देहरोमाणि ।
जायन्ते भूमिभुजां मृदूनि विलसन्ति सूक्ष्माणि ।।५३।।

अन्वयार्थौ—(भूमिभुजां ललितानि स्निग्धानि देहरोमाणि जायन्ते तथा मृदूनि सूक्ष्माणि रोमाणि विलसंति) राजाओं के शरीर में सुन्दर चिकने भौंरे के समान काले और नरम पतले ऐसे रोम शोभायमान होते हैं।।५३।।

सुभगो रोमयुतः स्याद्विद्वान्घनरोमसंयुतो मनुजः ।
उद्वृत्तरोमभिः पुनरङ्गैर्बहुभिश्च वित्तसंकलितः ।।५४।।

अन्वयार्थौ—(रोमयुतः मनुजः सुभगः स्यात्) रोमसंयुक्त पुरुष सुन्दर होता है और (घनरोमसंयुतः मनुजः विद्वान् भवति) बहुत रोमसंयुक्त पुरुष पंडित होता है और (पुनः उद्वृत्तरोमभिः बहुभिः अंगैः मनुजः वित्तसंकलितः भवति) गुच्छे के गुच्छे अंग में ऐसे बहुत रोम होंय तो वह पुरुष धनवान् होता है।।५४।।

रोमैकै नृपतेर्द्वंद्वं श्रोत्रियधनाढचबुद्धिमताम् ।
आदीन्येतानि पुनर्निःस्वानां मूर्धजेष्वेवम् ।।५५।।

अन्वयार्थौ—(नृपतेः रोमैकैकं भवति) राजा के एकएक रोम होते हैं और (श्रोत्रियधनाढचबुद्धिमतां द्वंद्वं भवति) वेदपाठी और धनवान् के और विद्वानों के

रोम दो दो तक होते हैं फिर (पुनः एवम् आदीनि एतानि निःस्वानां मूर्द्धजेषु एवं ज्ञेयम्) इनको आदि लेकर दरिद्रियों के रोमों में अधिकता ऐसे ही जाननी चाहिये।।५५।।

रोमरहितः परिव्राट् स्यादधमः स्थूलरूक्षखररोमा ।
पापः पिङ्गलरोमा निःस्वः स्फुटिताग्ररोमापि ।।५६।।

अन्वयार्थौ—(रोमरहितः परिव्राट् स्यात्) रोमरहित पुरुष संन्यासी वैरागी होय और (स्थूलरूक्षखररोमा पापः स्यात्) मोटे रूखे खुरदरे रोमवाला नीच होता है और (पिङ्गलरोमा पापः स्यात्) भूरे रोमवाला पापी होता है और (स्फुटिताग्ररोमा अपि निःस्वः स्यात्) फूटा फटा है अग्र जिसका ऐसे रोमवाला दरिद्री होता है।।५६।।

कुञ्जरजानुर्मनुजो भोगयुतः पीनजानुरवनीशः ।।
संश्लिष्टसंधिजानुर्वर्षशतायुर्भवेत्प्रायः ।।५७।।

अन्वयार्थौ—(कुञ्जरजानुः मनुजः भोगयुतो भवति) हाथी की सी जानु जिसकी ऐसा पुरुष भोग करनेवाला होय और (पीनजानुः अवनीशो भवति) मोटी जानुवाला राजा होय और (संश्लिष्टसंधिजानुःप्रायः वर्षशतायुर्भवति) छिपी और मिली है संधि जिसकी ऐसी जानुवाला बहुधा सौ वर्ष की आयुवाला होय।।५७।।

निम्नैः स्त्रीपरवशगः शशिवृत्तैर्गूढमांसलै राज्यम् ।
दीर्घैर्महद्भिरायुः सुभगत्वं जानुभिः स्वल्पैः ।।५८।।

अन्वयार्थौ—(निम्नैः स्त्रीपरवशगो भवति) गहिरि है जानु जिसकी ऐसा पुरुष स्त्री के वश में होय और (शशिवृत्तैः गूढमांसलैः राज्यं भवति) चन्द्रमा के तुल्य गोल और बहुत मोटे जानुवाला राज्य का कर्ता होय और (दीर्घैः महद्भिः जानुभिः आयुर्भवति) लंबी जानुवाला बड़ी आयुवाला होता है और (स्वल्पैः जानुभिः सुभगत्वं भवति) छोटी जानुवाला सुन्दर स्वरूपवान् होता है।।५८।।

दिशति विदेशे मरणं मनुजानां जानु मांसपरिहीनम् ।
कुम्भनिभं दुर्गततां तालफलाभं तु बहुदुःखम् ।।५९।।

अन्वयार्थौ—(मांसपरिहीनं जानु मनुजानां विदेशे मरणं दिशति) मांसरहित जानु अर्थात् सूखी पतली मनुष्यों को परदेश में मृत्यु देती है। और (कुम्भनिभं जानु दुर्गततां दिशति) घड़े के तुल्य जानु दरिद्रता को देती है और (तालफलाभं जानु बहुदुःखं दिशति) तालफल के तुल्य जानु बहुत दुःख देनेवाली होती है।।५९।।

जानुद्वितयं हीनं यस्य सदा सेवते स वधबंधौ ।
इदमेव यस्य विषमं स पुनः प्राप्नोति दारिद्रचम् ।।६०।।

अन्वयार्थौ—(यस्य जानुद्वितयं हीनं भवति, स वधबंधौ सदा सेवते) जिसकी दोनों जानु बलहीन होंय सो पुरुष वध और बंधन को सदा सेवन करे और (यस्य इदम् एव जानु विषमं भवति स पुनः दारिद्रचं प्राप्नोति) जिसकी जानु ऊंची नीची होय सो फिर दरिद्रता को प्राप्त होय।।६०।।

ऊरू यस्य समांसौ रंभास्तंभभ्रमं वितन्वाते ।
कोमलतनुरोमचितौ स जायते भूपतिः प्रायः ।।६१।।

अन्वयार्थौ—(यस्य उरू समांसौ रंभास्तंभभ्रमं वितन्वाते कोमलतनुरोमचितो एतादृशौ ऊरू भवतः स प्रायः भूपतिः जायते) जिसकी जांघ बहुत मांससे भरी केले के थंभ के भ्रम को करती होयँ और नरम और छोटे रोमों करिके युक्त होयँ तो ऐसी जांघवाला पुरुष बहुधा राजा होता है।।६१।।

स्निग्धावूरू मृदुलौ क्रमेण पीनौ प्रयच्छतो लक्ष्मीम् ।
विकटौ स्त्रीवल्लभतां गुणिनां सहितौ कृतौ भवतः ।।६२।।

अन्वयार्थौ—(यस्य ऊरू स्थिग्धौः मृदुलौ क्रमेण पीनो भवतः तो लक्ष्मीं प्रयच्छतः) जिसकी दोनों जांघें सचिक्कण और नरम क्रम से मोटी होंय तो लक्ष्मीको देनेवाली होती हैं और (यस्य ऊरू विकटो भवतः स्त्रीवल्लभतां दिशतः) जिनकी वेही जांघें चौड़ी होयँ तो वह स्त्री का प्यारा होय और (गुणिनां सहितौ कृतौ भवतः) गुणवान् पुरुषों की जांघें रानों से मिली हुई होती हैं।।६२।।

स्थूलाग्रौ मध्यनतौ स्यातां मार्गानुसंधिनौ पुंसाम् ।
कठिनौ चिपिटौ विपुलौ निर्मांसौ दुर्भगत्वाय ।।६३।।

अन्वयार्थौ—(यस्य ऊरू स्थूलाग्रौ मध्यनतौ पुंसां मार्गानुसंधिनौ स्याताम्) जिसकी जांघे आगे से मोटी और बीच में झुकी हुई होंय तो उस पुरुषको मार्ग चलानेवाला करती हैं और (यस्य ऊरू कठिनौ चिपिटौ विपुलौ निर्मांसौ दुर्भगत्वाय भवतः) जिसकी जांघे कडी और चिपटी चौड़ी मांस रहित होंय तो वह पुरुष कुरूप अर्थात् बुरी सूरत का होता है।।६३।।

यस्य कटिः स्याद्दीर्घा पीना पृथुला भवेत्स वित्ताढचः ।
सिंहकटिर्मनुजेन्द्रः शार्दूलकटिश्च भूनाथः ।।६४।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्य कटिः दीर्घा पीना पृथुला स्यात्स वित्ताढचो भवति) जिस पुरुष की कमर लंबी मोटी चौड़ी होय वह धनवान् होता है। और (यः

सिंहकटिः स मनुजेन्द्रो भवति) जिसकी सिंह के समान कमर होय वह पुरुष राजा होता है (च पुनः यः शार्दूलकटिः स भूनाथो भवति) और जिसकी बघेरे की तुल्य कमर होय वह पृथ्वी का स्वामी होता है॥६४॥

रोमाकटिर्दरिद्रो ह्रस्वकटिर्दुर्भगो मनुजः ।
शुनमर्कटकरभकटिर्दुःखी सङ्कटकटिः पापः ॥६५॥

अन्वयार्थौ—(यस्य कटिः रोमशा स दरिद्रो भवति) जिसकी कमर रोम सहित होय वह पुरुष दरिद्री होय और (यस्य कटिःह्रस्वा स मनुजः दुर्भगो भवति) जिसकी कमर छोटी होय सो पुरुष दुर्भग अर्थात् बुरी सूरत का होय और (यः शुनमकटकरभकटिः स दुःखी स्यात्) जिसकी कमर कुत्ता, वानर ऊँटकी तुल्य होय तो वह दुःखी रहे और (संकटकटिः पुरुषः पापः स्यात्) सुकड़ी कमरवाला पुरुष पापी होता है॥६५॥

मण्डूकस्फिङ् नृपतिः सिंहस्फिङ् मण्डलद्वयाधिपतिः ।
घनमांसस्फिग्धनवान्व्याघ्रस्फिङ्मण्डलाधिपतिः ॥६६॥

अन्वयार्थौ—(मंडूकस्फिक् मनुजः नृपतिर्भवति) जिसका मेंढक का सा कमर का पिण्ड होय वह पुरुष राजा होता है और (यदि सिंहस्फिक् पुरुषः मंडलद्वयाधिपतिर्भवति) जो सिंह का सा कमर का पिंड होय तो दो छोटे देशों का राजा होय और (घनमांसस्फिक् पुरुषः धनवान् भवति) बहुत मांस का भरा हुआ कमर का पिंड होय वह पुरुष धनवान् होय और (व्याघ्रस्फिक् पुरुषः मंडलाधिपतिर्भवति) जो बघेरेकी सी कमर का पिंड होय तो देश का राजा होता है॥६६॥

उष्ट्रप्लवंगमस्फिग्धनधान्यविवर्जितः पुमान्नियतम् ।
पीनस्फिङ् ना निःस्वो ह्यूर्ध्वस्फिग्व्याघ्रमृत्युः स्यात् ॥६७॥

अन्वयार्थौ—(उष्ट्रप्लवंगमस्फिक् पुरुषः नियतंधनधान्यविवर्जितो भवति) जो ऊँट बन्दर की तुल्य स्फिक् होय तो वह पुरुष निश्चय धनधान्य से हीन रहे और (पीनस्फिक ना निःस्वो भवति) जो मांस की भरी स्फिक् होय तो वह पुरुष दरिद्री और (ऊर्ध्वस्फिक् पुरुषः व्याघ्रमृत्युः स्यात्) जिसका ऊंचा कमर का पिण्ड होय उस पुरुष की बघेरे से मृत्यु जानना चाहिये॥६७॥

युतमांसो गम्भीरः सुकुमारः संवृत्तः शोणः ।
पायुः शुभो नराणां पुनरशुभो भवति विपरीतः ॥६८॥

अन्वयार्थौ—(नराणां पायुः युतमांसैः गंभीरः सुकुमारः संवृतः शोणः शु भवति) मनुष्यों की जो गुदा मांस से भरी और नरम मिली हुई लाल होय तो शु है और (पुनः विपरीतः अशुभो भवति) जो वे ही लक्षण गड़बड़ और प्रकार से हो तो अशुभ होते हैं॥६८॥

मुष्काः स्वयं प्रलम्बा जायन्ते सुपरिनिष्ठिता यस्य ।
स भवति भर्ता नियतं भूमेः सप्ताब्धिवलयायाः ॥६९॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्य मुष्काः स्वयं प्रलम्बाः सुपरिनिष्ठिताः जायन्ते जिस पुरुष के अण्डकोश आपसे ही लंबे और अच्छी बनावट के होंय तो (सप्ताब्धिवलयायाः भूमेः नियतं भर्त्ता भवेत्) सो सात समुद्रकी भूमि का निश्च पालन करनेवाला अर्थात् मालिक होय॥६९॥

श्लक्ष्णैः समैर्नृपत्वं चिरमायुर्भवति लम्बितैर्वृषणैः ।
जलमरणमद्वितीयैर्मनुजानां कुलविनाशोऽपि ॥७०॥

अन्वयार्थौ—(समैः श्लक्ष्णैः वृषणैः पुरुषः नृपत्वम् आप्नोति) जिसके अंडको बराबर सुंदर होंय वह पुरुष राजा होय और (लंबितैः वृषणैः चिरमायुर्भवति) ज लंबे वृषण होंय तो बड़ी आयुवाला होय और (अद्वितीयैः वृषणैः मनुजानां जलमर कुलविनाशोपि स्यात्) जो एक ही वृषण होय तो उस मनुष्य का जल से मरण औ कुल का नाश करनेवाला होय॥७०॥

स्त्रीलोलत्वं विषमैः प्राक्पुत्रो दक्षिणोन्नतैर्वृषणैः ।
वामोन्नतैश्च तैरपि दुःखेन समं भवति दुहिता ॥७१॥

अन्वयार्थौ—(विषमैः वृषणैः स्त्रीलोलत्वं भवति) जो ऊंचे नीचे वृषण होंय त स्त्री में चंचलता रहे और (दक्षिणोन्नतैर्वषणैः प्राक्पुत्रो भवति) जो दाहिना वृष ऊंचा होय तो पहिले ही पुत्र होय और (तैः अपि वामौन्नतैर्वृषणैः दुःखेन समं दुहित भवति) जो बाईं ओर का वृषण ऊंचा होय तो दुःख के साथ अर्थात् कठिनता से पुत्र होय॥७१॥

निःस्व शुष्कस्थूलै रम्यै रमणीरतास्तुरङ्गसमैः ।
पुनरर्द्धाद्वैर्वृषणैर्भवंति न चिरायुषः पुरुषाः ॥७२॥

—**अन्वयार्थौ**—(शुष्कस्थूलैः वृषणैः निःस्वो भवति) जो सूखे और मोटे वृष होंय तो दरिद्री होय और (तुरंगसमैः रम्यैः वृषणैः नराः रमणीरता भवंति) ज घोड़े के से सुंदर वृषण हों तो मनुष्य स्त्री के भोगनेवाले होते हैं और (पु

अर्द्धार्द्धैर्वृषणैः पुरुषाः चिरायुषः न भवन्ति जो प्रमाण से आधे वृषण होंय तो वे पुरुष बड़ी आयुवाले नहीं होते हैं।।७२।।

शिश्नमनिम्नसमुन्नतमदीर्घमलघु च सुसंयुतं मृदुलम् ।
उष्णं धनधान्यवतामश्लथमृजुवर्तुलं विशिरम् ।।७३।।

अन्वयार्थौ—(यस्य शिश्नम् अनिम्नसमुन्नतम् अदीर्घम् अलघु च सुसंयुतं मृदुलम् उष्णम् अश्लथम् ऋजु वर्तुलं विशिरं धनधान्यवताम् एतादृशं भवति) जिसकी इंद्री गहरी ऊंची न बड़ी न छोटी कोमल और अच्छी गरम शिथिल नहीं सूधी और गोल जिसमें नसें नहीं दीखती होयँ ऐसी धन्यधान्यवाले पुरुषों की इंद्री होती है।।७३।।

स्थूलग्रन्थिरतिसुखी केशनिगूढो महीपतिः शिश्नम् ।
व्याघ्रहयसिंहतुल्यो भोगी स्यादीश्वरः प्रायः ।।७४।।

अन्वयार्थौ—(यस्य शिश्नः स्थूलग्रंथिः स अतिसुखी भवेत्) जिसकी इंद्री की मोटी गांठि अर्थात् बड़ी सुपारी होय तो अतिसुखी होय और (यस्य शिश्नः केशनिगूढः स महीपतिर्भवति) जिसकी इंद्री ऐसी छोटी बादामीसी होय जो बालों में छिप जाय सो राजा होता है (यस्य शिश्नः व्याघ्रहयसिंहतुल्यो भवति स प्रायः भोगी च पुनः ईश्वरः स्यात्) जिसकी इंद्री बघेरा घोड़ा सिंह इनकी इन्द्री के तुल्य बड़ी होय तो निश्चय भोगी और समर्थ होय।।७४।।

स्पष्टशिरं निचितत्वग्घीनं चेन्मेहनं कृशं विमलम् ।
लघु मृदु सुरभि परिमलं पुंसां सौभाग्य वित्तकरम् ।।७५।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्य एतादृशं मेहनं भवति स्पष्टशिरं निचितत्वग्हीनं कृशं विमलं लघु मृदु सुरभिपरिमलं सौभाग्यवित्तकरं भवति) जिन पुरुषों की इन्द्री ऐसी होय कि नसें दीखती होंय, दृढचर्म होय, निर्बल, लटी, दुबली, स्वच्छ, छोटी, नरम अच्छी गंधवाली जो होय तो अच्छा भाग्य और धन के करनेवाली होती है।।७५।।

लिङ्गे लघुनि धनाढ्यो निरपत्यो वा शिरायुतेऽल्पसुतः ।
दक्षिणविनते पुत्री वामनते कन्यकाजनकः ।।७६।।

अन्वयार्थौ—(लिङ्गे लघुनि सति धनाढ्यो भवति(जो इंद्री छोटी होय तो धनवान् होय और (लिङ्गे शिरायुते सति निरपत्यः वा अल्पसुतः भवति) जिसकी इंद्री में से नसें निकली होंय तो संतानरहित वा थोड़े पुत्रवाला होय और) लिङ्गे दक्षिणविनते सति स पुत्रो भवति) जिसकी इंद्री दाहिनी ओर झुकी होय वह

पुत्रवाला होय और (लिङ्गे वामनते सति कन्यकाजनको भवति) जो इंद्री ब ओर को झुकी होय तो पुत्री का पिता होय अर्थात् कन्या की संतानवा होय॥७६॥

यः समचरणनिषण्णो गुल्फौ न तु शेफसा परिस्पृशति ।
स सुखी ज्ञेयो यदि पुनरवनितलं प्रायशो दुःखी ॥७७॥

अन्वयार्थौ—(यः पुरुषः समचरणनिषण्णः सन् शेफसा गुल्फौ न तु परिस्पृश स सुखी ज्ञेयः) जो पुरुष बराबर पैरों के बैठने से इंद्री करिके टकनों को न छुए व सुखी होय और (यदि पुनः अवनितलं परिस्पृशति स प्रायशः दुखी भवति) जो इं करिके धरती को स्पर्श करे सो निश्चय दुःखी होता है॥७७॥

स्थूलोऽधोविनतः स्यात्तीक्ष्णाग्रो दीर्घ उन्नतः शिथिलः ।
समलो धनहीनानां शिश्नो भुग्नः सदोन्मिषितः ॥७८॥

अन्वयार्थौ—(धनहीनानां पुरुषाणां शिश्नः स्थूलः अधोविनतः तीक्ष्णाग्रः दी उन्नतः शिथिलः समलः भुग्नःसदा उन्मिषितः स्यात्) धनहीन पुरुषों की इंद्री मोट नीचे को झुकी हुई, सीधा है अग्रभाग जिसका, लम्बी-ऊंची-ढ़ीली-मैलसहित-टे सदा सुकड़ी सी रहे तो निर्धन पुरुषों की इन्द्री ऐसी होती है॥७८॥

स्थूलशिरेण विशालाच्छिद्रवता प्रजननेन दारिद्रयम् ।
अतिकोमलेन लभते नरः प्रमेहादिना मरणम् ॥७९॥

अन्वयार्थौ—(स्थूलशिरेण विशालच्छिद्रवता प्रजननेन दारिद्रयं भवति) मो है नसें जिसमें, और जिसकी इंद्री का बड़ा मुख होय ऐसी इंद्रीवाला दरिद्र होय औ (अतिकोमलेन प्रजननेन प्रमेहादिना नरः मरणं लभते) बहुत ही नरम जिसकी इं होय तो प्रमेहादि रोग से उस पुरुष का मरण होय॥७९॥

हरितांजनाभरेखो महामणिर्जायते समोत्तानः ।
मन्थानकपुष्पनिभो यस्य स भर्ता भुवो भवति ॥८०॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्य शिश्नस्य महामणिः हरितांजनाभरेखः समोत्ता मन्थानकपुष्पनिभः जायते स भुवो भर्ता भवति) जिस पुरुष की इन्द्रीकी सुपारी नीलेथोथे के रंग की सी रेखा होय और बराबर ऊंची रुई के पुष्प के समान होय पुरुष पृथ्वी का स्वामी अर्थात् राजा होय॥८०॥

मणिभिर्धनिनो रक्तैः स्मेरजपापुष्पसन्निभैर्भूपाः ।
श्लक्ष्णैः स्निग्धैः सुखिनो मध्योत्तानैश्च पशुमन्तः ॥८१॥

अन्वयार्थौ—(नराः शिश्नस्य रक्तैर्मणिभिः धनिनो भवन्ति) जिस पुरुष

इन्द्री की सुपारी लाल होय और (स्मेरजपापुष्पसन्निभैःभूपा भवन्ति) खिले हुए गुडहर के फूल के समान रंग जिस इंद्री की सुपारी का होय सो राजा होय और (नराः श्लक्ष्णैः स्निग्धैः मणिभिः सुखिनो भवन्ति) जिस पुरुष की चिकनी और अच्छी सुपारी होय तो सुखी होय और (मध्योत्तानैः पशुमन्तो भवन्ति) जिसकी बीच में सुपारी ऊँची होय तो पशुवाला होय।।८१।।

कलधौतरजतमुक्ताफलप्रवालोपमा महामणयः ।
येषां भवन्ति दीप्तास्ते सप्तजलधिभूमिभर्तारः ।।८२।।

अन्वयार्थौ—(येषां महामणयः कलधौतरजतमुक्ताफलप्रवालोपमा दीप्ता भवन्ति) जिनकी इंद्री की सुपारी सोने चांदी मोती मूंगे के रंग के समान चमकदार होंय (ते सप्तजलधिभूमिभर्त्तारो भवंति) वे पुरुष सात समुद्र सहित भूमि के स्वामी अर्थात् पालन करानेवाले राजा होंय।।८२।।

दारिद्रचजुषः परुषैः परुषाभैर्विपाण्डुरैर्मणिभिः ।
मध्योच्चैर्बहुकन्या जायन्ते दुःखिनः स्फुटितैः ।।८३।।

अन्वयार्थौ—(नराः परुषैः मणिभिः दारिद्रचजुषो भवंति) जिन पुरुषों की इंद्री की सुपारी खरदरी कड़ी हो तो दरिद्री होंय और (परुषाभैः विपाण्डुरैर्मणिभिः मध्योच्चैर्बहुकन्या भवंति) खरदरी जो चीज है वैसी आभा चमक तथा पोतामाटी की सी रंग के समान सुपारी बीच में ऊंची होय तो बहुतसी पुत्री होयँ और (स्फुटितैर्दुःखिन जायन्ते) फूटी फटीसी दरार होय तो दुःखी रहैं।।८३।।

विद्रुमहेमोपमया महामणौ रेखया नरो धनवान् ।
दौर्भाग्यवान् शबलया धूसरया जायते निस्स्वः ।।८४।।

अन्वयार्थौ—(नरः महामणौ विद्रुमहेमोपमया रेखया धनवान् भवति) जिस पुरुष की इंद्री की सुपारी में मूंगे और सुवर्णकी सी चमकदार रेखा होंय तो धनवान् होय और (शबलया धूसरया दौर्भाग्यवान् निःस्वो जायते) अनेक रंग और धूसर के रंग की सी रेखा होयँ तो अभागी और दरिद्री होय।।८४।।

रेतसि पुष्पसुगन्धिनि राजा यज्वा नरः सुरागन्धे ।
मधुगन्धे बहुवित्तः सुखधनवान् मीनगन्धे स्यात् ।।८५।।

अन्वयार्थौ—(पुरुषस्य रेतसिपुष्पसुगंधिनिसति राजा स्यात्) जिस पुरुष के वीर्य में फूल की सी सुगन्ध होय तो राजा होय और (रेतसि सुरागंधे सति यज्वा भवेत्) जिसके वीर्य में मदिराकी सी गंध होय तो यज्ञ करनेवाला होय और (रेतसि मधुगंधे सति नरः बहुवित्तः स्यात्) जिसके वीर्य में शहदकी सी गंध होय तो वह

पुरुष धनवाला होय और (रतसि मीनगंधे सति सुखधनवान् भवेत्) जिसके वीर्य में मछली की सी गंध होय तो सुखी और धनवान् होय।।८५।।

सुरभिद्रव्यसुगन्धे श्रियोऽन्यगन्धे तु दारिद्रचम् ।
लाक्षागन्धे पुत्र्यो नैःस्वे भोगी पुनः पिशितगंधे ।।८६।।

अन्वयार्थौ—(सुरभिद्रव्यसुगंधे सति श्रियो भवंति) जिसके वीर्य में सुगंधयुक्त वस्तुकी सी जो गंध होय तो लक्ष्मी और शोभा होय और (अन्यगन्धे सति दारिद्रचंभवति) जो और किसी प्रकार की गंध होय दरिद्री होय (और लाक्षागंधे सति पुत्र्यो भवंति) जो लाख की सी गंध होय तो पुत्री होय और (पुनः पिशितगंधे सति नैःस्वे भोगी स्यात्) जो मांसकीसी गंध होय तो दारिद्रच भोगनेवाला होय।।८६।।

जम्बूवर्णेन सुखी दुग्धवर्णेन रेतसा नृपतिः ।
धूम्रेण दुःखसहितः स्याद् दुःस्थः श्यामवर्णेन ।।८७।।

अन्वयार्थौ—(जम्बूवर्णेन रेतसा नरः सुखी भवति) जामुन का सा ऊदा रंग जो वीर्य का होय तो वह पुरुष सुखी होय (और दुग्धसवर्णेन रेतसा नरः नृपतिर्भवति) जो दूध के रंग का सा वीर्य होय तो वह पुरुष राजा होय और (धूम्रवर्णेन रेतला नरः दुःख सहितो भवति) जोधुयेंकासा रंग वीर्यका होय तो वह पुरुषः दुःख सहनेवाला होय और (श्यामवर्णेन रेतसा नरः दुःस्थः स्यात्) जो काला रंग वीर्य का हो तो वह पुरुष दुःख से डोलनेवाला होय।।८७।।

यस्य च्यवते रतो लघुमैथुनगामिनो बहुस्निग्धम् ।
दीर्घायुः संपत्तिं पुत्रानपि विन्दते स पुमान् ।।८८।।

अन्वयार्थौ—(लघुमैथुनगामिनः यस्य बहुस्निग्धं रेतः च्यवते) थोड़ी देर मैथुन करनेवाले पुरुष का जो बहुत चिकना वीर्य गिरे तो (स पुमान् दीर्घायुः सम्पत्तिं पुत्रान् अपि विन्दते) सो पुरुष बड़ी आयु और सम्पत्ति तथा पुत्रों को पावे।।८८।।

न पतति शुक्रं स्तोकं चिरमैथुनसंगतस्यापि ।
दारिद्रचं सोऽल्पायुर्बहुकन्याजनकतां भजते ।।८९।।

अन्वयार्थौ—(चिरमैथुनसंगतस्यापि यस्य स्तोकं शुक्रं न पतति) बहुत देर तक मैथुन करनेवाले पुरुष का जो थोड़ा भी वीर्य नहीं गिरे तो (स दारिद्रचम् अल्पायुः बहुकन्याजनकतां भजते) सो पुरुष दरिद्र थोड़ी आयु और बहुत कन्याओं की उत्पत्ति करनेवाला होय।।८९।।

द्वित्रिचतुर्धाराभिः प्रदक्षिणावर्तगामि मूत्रं स्यात् ।
पिङ्गलवर्णं नृपतिः सुखिनो वलितैकधाराद्यम् ॥९०॥

अन्वयार्थौ—(यस्य प्रदक्षिणावर्तगामि मूत्रं पिङ्गलवर्णं त्रिचतुर्धाराभिः स्यात्) जिस पुरुष के मूत्र की धार दाहिनी ओर को झुकी हुई पीले रंग करिके दो तीन चार धार से होय तो (नृपतिः भवति तथा वलितैकधाराद्य सुखिनो भवन्ति) सो राजा होय और जो मिली हुई धाराओं से होय तो सुखी होय॥९०॥

कृतशब्दसेकधारं नृपस्य मूत्रं द्विधारमाद्ये च ।
निःशब्दं बहुधारं तदपि दरिद्रस्य विज्ञेयम् ॥९१॥

अन्वयार्थौ—(नृपस्य मूत्रम् एकधारं कृतशब्दं भवति) राजा का मूत्र एक धारा से शब्दसहित होता है और (दरिद्रस्य तत् अपि मूत्रम् आद्ये द्विधारं तथा निःशब्दं बहुधारं विज्ञेयम्) दरिद्री का मूत्र आदि में दो धार शब्दसहित पीछे बहुत धारवाला जानिये॥९१॥

स्निग्धं प्रवालतुल्यं यस्याङ्गे भवति शोणितं न चिरम् ।
स वहेत् स्वकीयभुजया मनुजो निखिलाब्धिमेखलां वसुधाम् ॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्यांगे शोणित प्रवालतुल्यं न चिरं स्निग्धं भवति) जिस पुरुष के अंग में रुधिर मूँगे के रंग के समान बहुत चिकना होय तो (स मनुजः स्वकीयभुजया निखिलाब्धिमेखलां वसुधां वहेत्) सो पुरुष शीघ्र अपनी भुजाओं करिके समुद्र सहित संपूर्ण पृथ्वी को भोगे॥९२॥

रुधिरं यस्य शरीरे रक्ताम्बुजवर्णसंमितं भवति ।
भुजवल्लिकङ्कणरणत्कारा तमनुसरति राज्यश्रीः ॥९३॥

अन्वयार्थौ—(यस्य शरीरे रुधिरं रक्ताम्बुजवर्णसंमितं भवति) जिसके शरीर में रुधिर लाल कमल के रंग के तुल्य हो तो (भुजवल्लिकंकणरणत्कारा राज्यश्रीः तमनुसरति) भुजारूपी बेली में जो कंगन तिसका जो रणत्कारशब्द जिसके ऐसी जो राज्यलक्ष्मी स्त्री सो मिलती हैं॥९३॥

किंचित् पीतं शोणं शोणितमिह भवति मध्यमे पुंसि ।
ईषत्कृष्णं रक्तं तत्तु जघन्ये परिज्ञेयम् ॥९४॥

अन्वयार्थौ—(इह मध्यमे पुंसि शोणितं किञ्चित् पीतं शोणं भवति) इस लोक में मध्यम पुरुष के शरीर में रुधिर कुछ पीला कुछ लाल होता है और (जघन्ये पुंसि तत् रक्तम् ईषत् कृष्णं परिज्ञेयम्) अधम पुरुष का लाल और कुछ काला होता है॥९४॥

शक्ता बस्तिः पुंसां विस्तीर्णा मांसलोन्नता स्निग्धा ।
शुक्ता विकटा कठिना दारिद्रचं दिशति वा बहुदुःखम् ।।९५।।

अन्वयार्थौ—(पुंसां वस्तिः शक्ता विस्तीर्णा मांसलोन्नता स्निग्धा शुक्ता विकटा कठिना बहु दुःखं वा दारिद्रचं दिशति) जिस पुरुषों का पेडू ठीक, चौड़ा, मांस का भरा, ऊंचा, चिकना, लम्बा, चौड़ा, कड़ा जो होय तो बहुत दुःख वा दरिद्र के देनेवाला होता है।।९५।।

श्वशृगालकरभसैरिभतुल्या बस्तिर्नता भवति येषाम् ।
संकीर्णक्लिन्ना ते धनहीनाः स्युर्नराः प्रायः ।।९६।।

अन्वयार्थौ—(येषां नराणां बस्तिः श्वशृगालकरभसांरेभतुल्या नत संकीर्ण-क्लिन्ना भवति ते नराः प्रायः धनहीनाः स्युः) जिन पुरुषों का पेडू कुत्ता, गीदड़, ऊंट, भैंस इनके तुल्य झुका हुआ, सिकुड़ा, लिवलिबा होय तो वे पुरुष बहुधा धनहीन होते हैं अर्थात् धन न होय।।९६।।

पृथुरुच्चस्था नाभिगभीरा चाण्डाकृतिः सौख्यम् ।
विदधाति धनं मेधां मनुजानां दक्षिणावर्त्ता ।।९७।।

अन्वयार्थौ—(येषां मनुजानां नाभि पृथुः उच्चस्था अतिगम्भीरा च पुनः अण्डाकृतिः दक्षिणवर्ता सौख्यं मेधां धनं विदधाति) जिन पुरुषों की टूंडी चौड़ी ऊंची बहुत गहरी अंडे की सूरत और दाहिनी ओर झुकी हुई जो हो तो सुख, बुद्धि, धन को देनेवाली होती है।।९७।।

शतपत्रकर्णिकाभा नाभि स्याद्यस्य मनुजमात्रस्य ।
प्राप्तोति सपदि स पुमान् ससुवर्णां सार्णवामवनिम् ।।९८।।

अन्वयार्थौ—(यस्य मनुजमात्रस्य नाभिः शतपत्रकर्णिकाभा स्यात्) जिस पुरुषमात्र की टूंडी कमल के फूलकी सी आभा चक्राकारवाली हो तो (स पुमान् सपदि ससुवर्णा साणवाम् अवनिं प्राप्नोति) सो पुरुष शीघ्र ही सोनेसहित समुद्रसहित पृथ्वी को प्राप्त होय।।९८।।

पुंसां नाभिर्दीर्घा यथाक्रमं पार्श्वयोस्तदूर्ध्वमधः ।
दीर्घा पुरीश्वरत्वं गोस्वामित्वं सदा तनुते ।।९९।।

अन्वयार्थौ—(येषां पुंसां नाभिः दीर्घा यथाक्रमं पार्श्वयोः ऊर्ध्वम् अधः भवति) जिस पुरुष की टूंडी वड़ी जैसे क्रम से पसलियों के बीच में ऊँची नीची होय (सा नाभिः पुरीश्वरत्वं च पुनः गोस्वामित्वं सदा तनुते) सो पुरुष को नगरी का स्वामी और गउओं का अधिकारी सदा करे है।।९९।।

विषमवलिर्मध्यंस्था नैःस्वं शूलं करोति नीचस्था ।
तुङ्गा स्वल्पा क्लेशं वामावर्ता नृणां शाठ्यम् ॥१००॥

अन्वयार्थौ—(येषां पुंसां मध्यस्था विषमवलि नृणां नैःस्वं शूलं करोति) जिन पुरुषों के बीच में स्थित विषम सलवट १-३-५ आदि होयँ तो मनुष्यों को दरिद्र और शूल को करे और (नीचस्था वलिः तुङ्गा स्वल्पा क्लेशं करोति) जो सलवट कुछ बीच से नीची ऊंची छोटी वा खंडित होय तो दुःख को करे और (वामावर्ता बलिः नृणां शाटचं करोति) जो बाईं ओर को झुकी हुई सलवट होय तो मनुष्यों को मूर्खता करे॥१००॥

क्षोणिपतिस्तनुकुक्षिः शूरो भोगान्वितश्च समकुक्षिः ।
धनहीन उच्चकुक्षिर्मायावी स्याद्विषमकुक्षिः ॥१०१॥

अन्वयार्थौ—(तनुकुक्षिः क्षोणिपतिर्भवति) छोटी कोखवाला राजा हो और (समकुक्षिः शूरः च पुनः भोगान्वितो भवति) बराबर कोखवाला बलवान् और भोगी होय और (उच्चकुक्षिः धनहीनो भवति) ऊंची कोखवाला धनहीन होय और (विषमकुक्षिः मायावी स्यात्) कुछ ऊंची नीची कोखवाला कपटी छल करनेवाला होय॥१०१॥

कुक्षिर्यस्य गभीरा विनिपातं स लभते नरः प्रायः ।
उत्ताना यस्य पुननारीवृत्तन जीवते सोऽपि ॥१०२॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्य कुक्षिः गभीरा भवति) जिस पुरुष की कोख गहरी होय (स नरः प्रायः विनिपातं लभते) सो पुरुष निश्चय गिरने को प्राप्त होय। कहीं से गिर पड़े और (पुनः यस्य कुक्षिः उत्ताना भवति) जिसकी कोख ऊंची होय (सः अपि नारीवृत्तेन जीवति) तो पुरुष स्त्री से जीविका करे अर्थात् उसका स्त्री से जीवन होय॥१०२॥

पार्श्वे मांसोपचिते प्रदक्षिणावर्तरोमणी मृदुनी ।
यस्य भवेतां वृत्त नियतं जगतीपतिः स स्यात ॥१०३॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पार्श्वे मांसोपचिते भवेतां च पुनः प्रदक्षिणावतरोमणी मृदुनी भवतः) जिसके पसवाड़े मांस से भरे होयँ और उनमें दाहिनी ओर को नरम नरम रोंगटे होय और (यस्य पार्श्वे वृत्ते भवेतां स जगतीपतिः नियतं स्यात्) जिसके पसवाड़े गोल होंय सो पृथ्वीपति निश्चय होय॥१०३॥

निम्नैर्भोज्यवियुक्ताः पार्श्वैः पिशितोज्झितैर्धनविहीनाः ।
स्थूलास्थिभिः पुमांसः कुटिलैः पुरुषाः परप्रेष्याः ॥१०४॥

अन्वयार्थौ—(निम्नैः पार्श्वैः पुरुषाः भोज्यवियुक्ताः भवन्ति) नीचे पसवाड़ेवाले पुरुष अनेक प्रकार के भोजन से रहित होते हैं और (पिशितोज्झितैः पार्श्वैः धनहीनाः भवति) जिसके मांसरहित पसवाड़े होंय वे धनहीन होते हैं और (स्थूलास्थिभिः कुटिलैः पार्श्वैः पुमांसः परप्रेष्याः भवंति) जिसके मोटी हड्डियोंवाले टेढे पसवाड़े होंय तो वे पुरुष दूसरे के दूत बने जैसे हलकारे होते हैं।।१०४।।

जठरं यस्य समं स्यादभितः स पुमान्महार्थाढ्यः ।
सिंहनिभं यस्य पुनः प्राप्नोति स चक्रवर्तित्वम् ।।१०५।।

अन्वयार्थौ—(यस्य जठरम् अभितः समं स्यात् स पुमान् महार्थाढ्यो भवति) जिसका पेट सब प्रकार से बराबर होय सो पुरुष बहुत धनवाला हो और (पुनः यस्य जठरं सिंहनिभं स्यात् स नरः चक्रवर्तित्वं प्राप्नोति) जिसका पेट सिंह की तुल्य होय, सो पुरुष चक्रवर्ती राजा होय।।१०५।।

भेकोदरो नरपतिर्वृषभमयः परदारभोगी च ।
वृत्तोदरः सुखी स्यान्मीनव्याघ्रोदरः सुभगः ।।१०६।।

अन्वयार्थौ—(भेकोदरः नृपतिर्भवति) मेंढक के तुल्य पेटवाला राजा होय और (वृषभमयः परदारभोगी स्यात्) बैल के तुल्य पेटवाला परस्त्रीभोगी होय और (वृत्तोदरः सुखी स्यात्) गोल पेटवाला सुखी होय और (मीनव्याघ्रोदरः सुभगः स्यात्) मछली और बघेरे के तुल्य पेटवाला सुन्दर भाग्यवान् होय।।१०६।।

पिठरजठरो दरिद्रो घटजठरो दुर्भगः सदा दुःखी ।
भुजगजठरो भुजिष्यो बहुभोजी जायते मनुजः ।।१०७।।

अन्वयार्थौ—(पिठरजठरः नरो दरिद्रो भवति) हंडिया के सा पेटवाला पुरुष दरिद्री होय और (घटज ठरो दुर्भगः तथा सदा दुःखी स्यात्) घड़ेके से पेटवाला पुरुष कुरूपी और सदा दुःखी रहे और (भुजगजठरः मनुजः भुजिष्यः च पुनः बहुभोजी जायते) सर्प के से पेटवाला पुरुष टहलुवा और बहुभोजी अर्थात् बहुत खानेवाला होय।।१०७।।

श्ववृकोदरो दरिद्रः शृगालतुल्योदरो दरोपेतः ।
पापः कृशोदरः स्यान्मृगभुक्सदृशोदरश्चौरः ।।१०८।।

अन्वयार्थौ—(श्ववृकोदरः पुरुषः दरिद्रः स्यात्) कुत्ता और भेड़िया कासा पेटवाला पुरुष दरिद्रः होय और (शृगालतुल्योदरः दरोपेतः स्यात्) गीदड़ के तुल्य पेटवाला डरपोकना होय और (कृशोदरः पापः स्यात्) दुर्बल पतले पेटवाला पापी

होय और (मृगभुक्सदृशोदरः चौरः स्यात्) चीते के से पेटवाला चोर होता है॥१०८॥

जायेत यस्य मध्यं मुशलोदरसोदरं तनुत्वेन ।
स पुमान्नृपतिर्ज्ञेयो विपर्ययो भवति विपरीते ॥१०९॥

अन्वयार्थौ—(यस्य उदरं मध्यं तनुत्वेन मुशलोदरसोदरं जायेत स पुमान् नृपतिर्ज्ञेयः) जिसका पेट बीच में पतला मूशल के आकार होय सो पुरुष राजा जानिये (विपरीते सति विपर्ययो भवति) और किसी प्रकार से उल्टा होय तो दरिद्री और विपरीत को करे॥१०९॥

प्रहरणमरणं रमणीभोगानाचार्यपदमनेकसुतताम् ।
एकद्वित्रिचतुर्भिः क्रमेण वलिभिः पुमाँल्लभते ॥११०॥

अन्वयार्थौ—(पुमान् क्रमेण एकद्वित्रिचतुर्भिः बलिभिः प्रहरणमरण रमणीभोगान् तथा आचार्यपदम् अनेकसुततां लभते) पुरुषक्रम से १-२-३-४ वलि अर्थात् सलवटों करिके शस्त्र से मरना और स्त्री से भोग और आचार्यपद और अनेक पुत्रों को प्राप्त होता है॥११०॥

अवलिर्नृपतिः सुखभाक्परदाररतो हि नूनं स्यात् ।
सरलवलिः पापरतो नित्यमगम्याभिगमनमनाः ॥१११॥

अन्वयार्थौ—(अवलिः पुरुषः नृपतिः तथा सुखभाक्) वलिरहित पुरुष राजा होय और सुख भोगनेवाला और (परदारतः नूनं स्यात्) पराई स्त्री में निश्चय करिके सुख पाने और (सरलवलिः पापरतः) जिसकी सीधी सलवटें होय वह पापकर्म करे और (नित्यम अगम्याभिगमनमनाः भवति) जिनसे भोग करना उचित नहीं उनसे नित्य भोग करने में जिसका मन होय॥१११॥

अभ्युन्नतेन मांसोपचितेन सुसंहतेन भूमिभुजः ।
हृदयेन महार्थजुषः पृथुना दीर्घायुषः पुरुषाः ॥११२॥

अन्वयार्थौ—(अभ्यन्नतेन मांसोपचितेन सुसंहतेन हृदयेन भूमिभुजो भवन्ति) ऊँचाई लिये मांस से भरा हुआ, अच्छी बनावट की ऐसी छाती जो होय तो राजा होय और (पृथुना हृदयेन पुरुषाः महार्थजुषः च पुनः दीर्घायुषो भवंति) जो चौड़ी छातीवाले पुरुष होयं तो बड़े धनवाले और बड़ी आयुवाले होयँ॥११२॥

स्थूलशिरापरिकलितं खररोमसमन्वितं पुंसाम् ।
हृदयं पुनः सकंपं निःस्वत्वं शश्वदाददते ॥११३॥

अन्वयार्थौ—(स्थूलशिरापरिकलितं खरारोमसमन्वितं पुनः सकंपं हृदयं पुंसां

शश्वत् निःस्वत्वम् आददते) मोटी नसों से मिली हुईं, खरदरे बालो से युक्त कंपसहित जो छाती होयं तो पुरुषों को सदा दरिद्रता को देनेवाली होती है॥११३॥

पृथुलं भवत्युरःस्थलमचलशिलाकठिनमुन्नतं नृपतेः ।
मृगनाभीपत्रलतासमानमुरो रोमराजिचितम् ॥११४॥

अन्वयार्थौ—(नृपतेः उरःस्थलं पृथुलम् अचलशिलाकठिनम् उन्नतं भवति) राजा की छाती चौड़ी पर्वत की शिला के तुल्य कड़ी ऊंची होती है। (च पुनः उरः मृगनाभीपत्रलतासमानं रोमराजिचितं भवति) फिर वही छाती मृगनाभीपत्रलताके तुल्य बालों की लकीरें करिके व्याप्त होती है॥११४॥

उरसा घनेन धनवान्पीनेन भटस्तथोर्ध्वरोम्णा स्यात् ।
निःस्वस्तनुना विषमेणाकालमृतिरकिंचनश्च नरः ॥११५॥

अन्वयार्थौ—(घनेन उरसा धनवान् तथा पीनेन ऊर्ध्वरोम्णा उरसा भटः स्यात्) बहुत कड़ी छातीवाला धनवान् और मांस की भरी हुई ऊपर से रोमयुक्त ऐसी छातीवाला योद्धा अर्थात् शूरवीर होता है और (तनुना उरसा निःस्वः स्यात्) छोटी छातीवाला दरिद्र होय और (विषमेण उरसा अकालमृतिः स्यात्) ऊंची नीची छातीवालों की अकालमृत्यु होती है और (च पुनः नरः अकिंचनो भवति) वह मनुष्य धनरहित अर्थात् दरिद्र होय॥११५॥

वृत्ताः स्तनाः प्रशस्ताः सुस्निग्धाः कोमलाः समाः पुंसाम् ।
विषमाः परुषा विकटाः प्रायो दुःखाय जायन्ते ॥११६॥

अन्वयार्थौ—(वृत्ताः सुस्निग्धाः कोमलाः समाः पुंसांस्तना प्रशस्ताः सन्ति) गोल बहुत चिकने नरम और बराबरवाले पुरुषों के स्तन अच्छे होते हैं और (विषमाः परुषाः विकटाः प्रायः दुःखाय जायंते) ऊंचे नीचे कठोर भयानक बहुधा दुःख देनेवाले होते हैं॥११६॥

मांसोपचितैर्भूपाः सुभगाः स्युश्चूचुकैरपि द्वन्द्वैः ।
पीनैः सुखिनो विषमायतैः सदा निःस्वताभाजः ॥११७॥

अन्वयार्थौ—(मांसोपचितैः अपि चूचुकैः द्वंद्वैः सुभगाः भूपाः स्युः) मांस से भरी हुई दोनों कुचों की नोकवाले श्रेष्ठ राजा होते हैं और (पीनैः सुखिनो भवंति) मोटेपन से सुखी होते हैं और (विषमायतैः सदा निःस्वताभाजः स्युः) जो वे ही कुच ऊंचे नीचे लंबे होंय तो निर्धन अर्थात् सदा दरिद्र होते हैं॥११७॥

पीनेन धनाधिपतिर्जत्रयुगेनोन्नतेन भोगी स्यात् ।
विषमोन्नतेन दुःखी नतास्थिबन्धेन धनहीनः ॥११८॥

अन्वयार्थौ—(पीनेन जत्रुयुगेन धनादिपतिर्भवति) मोटी दोनों संधि होयँ तो धनवान् होय और (उन्नतेन भोगी स्यात्) जो ऊँची होय तो भोगनेत्रवाला होय और (विषमोन्नतेन दुःखी स्यात्) जो ऊंची और नीची होय तो दुःखी होय और (नतास्थिबंधेन धनहीनः स्यात्) जो झुके हुए हड्डियों के बंधन होंय तो निर्धन अर्थात् दरिद्री होय ॥११८॥

स्कन्धावनुक्रमतो मूले पीनौ समुन्नतौ किञ्चित् ।
वृषककुदसमौ ह्रस्वो लक्ष्मीं दृढसंहतिं वहतः ॥११९॥

अन्वयार्थौ—(अनुक्रमात् मूले पीनौ किंचित् समुन्नतौ वृषककुदसमौ ह्रस्वौ स्कन्धौ चेत लक्ष्मी दृढसंहतिं वहतः) जो क्रम से जड़ में मोटे ऊंचे बैल की टांटि के तुल्य छोटे कंधे होंय तो लक्ष्मी के अचल समूह को देते हैं अर्थात् बहुत लक्ष्मी के देनेवाले होते हैं॥११९॥

हुडवद्दीर्घौ स्कंधौ निर्मांसौ भारवाहकौ पुंसाम् ।
कुटिलौ कृशावतितनू खेदकरौ रोमशौ बहुशः ॥१२०॥

अन्वयार्थौ—(पुंसां हुडवद्दीर्घौ निर्मांसौ स्कन्धौ भारवाहकौ भवतः) जो बैल के से बड़े मांसरहित जिन पुरुषों के कंधे होंय वे बोझे के ढोनेवाले होंय और (कुटिलौ अतिकृशौ बहुशः रोमशौ खेदकरो भवतः) जो टेढ़े बहुत पतले, छोटे, बहुत बालों से युक्त होंय तो खेद अर्थात् दुःख के करनेवाले होते हैं॥१२०॥

भुग्नौ मांसविहीनावंशौ नतरोमशौ कृशौ यस्य ।
निर्लक्षणेन लक्ष्म्या नामापि न श्रुतं तेन ॥१२१॥

अन्वयार्थौ—(यस्य अंसौ भुग्नौ मांसविहीनौ नतौ रोमशौ कृशौ भवतः) जिसके कंधे टेढ़े झुके हुए बिना मांस के रोमवाले दुबले पतले होंय तो (निर्लक्षणेन तेन लक्ष्म्या नाप अपि न श्रुतम्) वे अभागे पुरुष लक्ष्मी का नाम भी न सुनें कि लक्ष्मी कैसी होती है॥१२१॥

अत्युच्छ्रितौ यदंसौ किंचिद्बाह्वोः समुन्नतिं दधतः ।
सुश्लिष्टसंधिबन्धौ वपुषोर्धनिशूरयोः स्याताम् ॥१२२॥

अन्वयार्थौ—(यस्य सुश्लिष्टसंधिबंधौ अत्युच्छ्रितौ अंसौबाह्वोः किंचित् समुन्नतिं दधतः) जिसके अच्छे मिले हुए जोडबंध कन्धे बाहु से कुछ एक ऊँचे होंय तो

(धनिशूरयोः वपुषोः एतादृशौ स्कंधौ स्यातामू) धनी और शूरवीरों के शरीर में ऐ
कंधे होते हैं॥१२२॥

मृदुतनुरोमे कक्षे प्रस्वेदमलोज्झिते सुरभिगन्धी ।
पीनोन्नते धनवतामतोऽन्यथा वित्तहीनानाम् ॥॥१२३॥

अन्वयार्थौ—(मृदुतनुरोमे प्रस्वेदमलोज्झिते सुरभिगंधी पीनोन्नते एतादृशौ क
धनवतां स्याताम्) कोमल पतले रोंगते, पसीने और मल करिके रहित, सुंद
गंधवाली और मोटी ऊंची कांखें धनवानों की होती हैं और (वित्तहीनानाम् अत
अन्यथा स्यातात्) इससे अन्यथा निर्धनों की होती है॥१२३॥

बाहू वामविवलितौ वृत्तावाजानुलंबिनौ पीनौ ।
पाणी फणछत्राङ्कौ करिकरतुल्यौ समौ नृपतेः ॥१२४॥

अन्वयार्थौ—(वामविवलितौ वृत्तौ आजानुलंबिनौ पीनौ बाहू तथ
फणछत्रांकौ करितुल्यौ समौ नृपतेः पाणी स्याताम्) बाईं ओर को फिरी हुई गोल
घोंटू तक लंबी लटकती हुई मोटी बाहें और फण छत्र के आकार और हाथी की सूं
के समान ऐसे हाथ राजा के होते हैं॥१२४॥

गोपुच्छाकृति पीनं हीनं खररोमबहुलरोमभिर्दीर्घम् ।
निर्मग्नशिरासन्धि प्रशस्यते भुजयुगं पुंसाम् ॥१२५॥

अन्वयार्थौ—(गोपुच्छाकृति पीनं हीनं खररोम बहुलरोमभिर्दीर्घ, निर्मग्न-
शिरासंधि पुंसां भुजयुगं प्रशस्यते (गऊ की पूंछ के आकार मोटी खरदरे रोम औ
बहुत से रोमों करिके हीन और बड़ी, जिनकी नसों की संधि डूबी हुई ऐसे पुरुषों की
दोनों भुजा प्रशंसनीय हैं॥१२५॥

दुष्टः प्रोद्बद्धभुजो बहुरोमा बहुभुजिष्यः स्यात् ।
विषमभुजश्चौर्यरतिः समपीनभुजो नरो दुःस्थः ॥१२६॥

अन्वयार्थौ—(प्रोद्बद्धभुजः दुष्टः स्यात्) खूब गठीली फूली हुई भुजावाला
दुःखदाई होय और (बहुरोमा बहुभुजिष्यः स्यात्) बहुत रोमों की भुजावाला होय
तो उसके बहुत नौकर चाकर होंय और (विषमभुजः चौर्यरतः स्यात्) ऊंची नीची
भुजावाला चोरी में तत्पर रहे और (समपीनभुजः नरो दुःस्थः स्यात्) बराबर
मोटी भुजावाला पुरुष एक जगह न ठहरे फिरता रहे॥१२६॥

पाणी नृपतेः श्लक्ष्णौ निःस्वेदो मांसलौ तथा च्छिद्रौ ।
अरुणावकर्मकठिनाबुष्णौ दीर्घांगुली स्निग्धौ ॥१२७॥

अन्वयार्थौ—(श्लक्ष्णौनिः स्वेदौ मांसलौ तथा अच्छिद्रौ अरुणौ अकर्मकठिनौ उष्णौ दीर्घांगुली स्निग्धौ नृपतेः पाणी स्याताम्) अच्छे चमकदार पसीने रहित मांस से भरे हुए और छिद्ररहित लालवर्णवाले बिना काम करे कड़े रहें गरम बड़ी बड़ी अंगुली चिकने राजा के ऐसे हाथ होते हैं।।१२७।।

विस्तीर्णौ ताम्रनखौ स्यातां कपिवत्करौ धनाढ्यस्य ।
शार्दूलवद्विरूक्षौ विकृतौ निःस्वस्य निर्मांसौ ।।१२८।।

अन्वयार्थौ—(विस्तीर्णौ ताम्रनखौ कपिवत्करौ धनाढ्यस्य स्याताम्) लम्बे चौड़े लाल नखवाले, बन्दर के से हाथ जिसके ऐसे हाथ धनवाले के होते हैं और (शार्दूलवत् विरूक्षौ विकृतौ निर्मांसौ निःस्वस्य स्याताम्) बघेरे केसे बुरे सूखे से बिना मांस के होय तो ऐसे हाथ दरिद्री के होते हैं।।१२८।।

रेखाभिः पूर्णाभिस्तिसृभिः करमूलमङ्कितं यस्य ।
धनकाञ्चनरत्नयुतं श्रीः पतिमिव भजति लुब्धेव ।।१२९।।

अन्वयार्थौ—(यस्यकरमूलं पूर्णाभिः रेखाभिः तिसृभिः अंकितं स्यात्) जिसका पहुँचा पूरी तीन रेखा करिके युक्त होय तो (लुब्धा इव श्रीः धनकांचनरत्नयुतं पतिमिव भजति) उसको लोभी हो करिके लक्ष्मी धन कांचन रत्नयुक्त पति की नाईं भजे हैं।।१२९।।

करमूलैश्च निगूढैः सुदृढं सुश्लिष्टसन्धिभिर्भूपाः ।
निःस्वा श्लथैः सशब्दैः पाणिच्छेदान्वितैर्हीनाः ।।१३०।।

अन्वयार्थौ—(निगूढैः सुदृढं सुश्लिष्टसंधिभिः करमूलैर्भूपाः भवंति) छिपे हुए बहुत कड़े मोटे अच्छे प्रकार मिली हुई संधिवाले पहुँचे वा पंजे से युक्त राजा होते हैं और (श्लथैः निःस्वाः भवन्ति) शिथिलता से दरिद्री होते हैं और (सशब्दैः पाणिच्छेदान्वितैः हीनाः भवन्ति) ढीले और शब्द से युक्त होंय तो हीन होते हैं।।१३०।।

अवहस्तं करपृष्ठं विस्तीर्णं पीनमुन्नतं स्निग्धम् ।
विनिगूढशिरं परितः क्षोणिपतेः फणिफणाकारम् ।।१३१।।

अन्वयार्थौ—(अवहस्तं विस्तीर्णं पीनम् उन्नतं स्निग्धं परितः निगूढशिरं फणिफणाकारं करपृष्ठं क्षोणिपतेः भवति) अच्छा चौड़ा मोटा ऊंचा चिकना जिसके छोर चारों ओर से मांस में डूबे हुए और साँप के फण के आकार हाथ की पीठ ऐसी राजाओं की होती है।।१३१।।

मणिबन्धसमं निम्नं निर्मांसं रोमसंचितं सशिरम् ।
करपृष्ठं निःस्वानां रूक्षं पुरुषं विवर्णं स्यात् ।।१३२।।

अन्वयार्थौ—(मणिबंधसमं निम्नं निर्मांसं रोमसंचितं सशिरं रूक्षं परुषं वि करपृष्ठं निःस्वानां स्यात्) पहुँचे की बराबर नीची बिना मांस के रोमों से युक्त न समेत रूखी कड़ी बुरे रंग की हाथ पीठ ऐसी दरिद्रियों की हो है।।१३२।।

सुवृत्तनिम्नेन धनी पाणितलेनोन्नतेन दानरुचिः ।
निम्नेन जनकवित्तत्यक्तो विषमेण धनहीनः ।।१३३।।

अन्वयार्थौ—(सुवृत्तनिम्नेन पाणितलेन धनी भवति) गोल निचाई लिये हथे से धनी होता है और (उन्नतेन दानरुचिर्भवति) ऊंची हथेली से दान में रु करनेवाला होता है और (निम्नेन जनकवित्तत्यक्तो भवति) नीची हथेली से पि के धन करिके छोड़ा हुआ होता है और (विषमेण धनहीनो भवति) ऊंची नी हथेली से धनहीन होता है।।१३३।।

अरुणेनाढ्यः पीतेनागम्यस्त्रीरतिः करतलेन ।
सितासितेन दरिद्रो नीलेनापेयपायी स्यात् ।।१३४।।

अन्वयार्थौ—(अरुणेन करतलेन आढ्यः स्यात्) लाल हथेली से धनवान् हो है और (पीतेन अगम्यस्त्रीरतिः स्यात्) पीली हथेली से जिनसे भोग उचित न उनसे भोग की इच्छा रहे और (सितासितेन दरिद्रः स्यात्) सफेद और का हथेली से दरिद्री होता है और (नीलेन अपेयपायी स्यात्) नीली हथेली से पी योग्य नहीं उसका पीनेवाला अर्थात् मदिरा का पीनेवाला होता है।।१३४।।

बहुरेखापरिकलितं पाणितलं भवति यस्य मनुजस्य ।
यदि वा रेखाहीनं सोऽल्पायुर्दुःखितो निःस्वः ।।१३५।।

अन्वयार्थौ—(यस्य मनुजस्य पाणितलं बहुरेखापरिकलितं भवति यदि रेखाहीनं सः अल्पायुः च पुनः दुखितो निःस्वो भवति) जिस मनुष्य की हथेली ब रेखाओं से युक्त होय अथवा रेखा न होय सो थोड़ी आयु और दुःखी दरिद्री हो है।।१३५।।

अधुना मीनाद्याकृतिरेखाणां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये ।
वामकरे नारीणां दक्षिणहस्ते नराणां तु ।।१३६।।

अन्वयार्थौ—(अधुना नराणां दक्षिणहस्ते तथा नारीणां वामकरे मीनाद्याकृ रेखाणां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये) अवामनुष्यों के दाहिने हाथ और स्त्रियों के बांये हाथ

जो मछली के आकार रेखा हैं उनके लक्षण प्रगट करता हूं।।१३६।।

जीवितमरणं लाभालाभं सुखदुखमिह जगत्यखिलम् ।
कररेखाभिः प्रायः प्राप्नोति नरोऽथवा नारी ।।१३७।।

अन्वयार्थौ—(नरः अथवा नारी इह जगति अखिलं जीवितमरणं लाभालाभं सुखदुःखं प्रायः कररेखाभिः प्राप्नोति) मनुष्य वा स्त्री इस जगत् में जीना मरना लाभ हानि सुख दुःख संपूर्ण बहुधा करिके हाथ की रेखा ही से पाता है।।१३७।।

अन्तर्मुखेन मीनद्वयेन पूर्णेन पाणितलमध्यम् ।
यस्याङ्कितं भवेदिह स धनी स चाप्रदो मनुजः ।।१३८।।

अन्वयार्थौ—(यस्य मनुजस्य पाणितलमध्यम् अंतर्मुखेन पूर्णेन मीन द्वयेन अंकितं भवेत् स इह धनी सः अप्रदो भवन्ति) जिस मनुष्य की हथेली के बीच भीतर को है मुख जिनका ऐसी पूर्ण दो मछली करिके युक्त रेखा होंय वह पुरुष धनवान् तो होय परन्तु देनेवाला न होय।।१३८।।

अच्छिन्ना गम्भीरा पूर्णा रक्ताब्जदलनिभा मृदुला ।
अन्तर्वृत्ता स्निग्धा कररेखा शस्यते पुंसाम् ।।१३९।।

अन्वयार्थौ—(पुंसां करतले अच्छिन्ना गंभीरा पूर्णा रक्ताब्जदलनिभा मृदुला अन्तर्वृत्ता स्निग्धा कररेखा शस्यते) पुरुष के हाथ में टूटी गहरी न होय और लाल कमल की पत्ती के बराबर नरम भीतर से गोल चिकनी ऐसी हाथ की रेखा होय तो वे श्रेष्ठ हैं।।१३९।।

मधुपिङ्गाभिः सुखिनः शोणाभिस्त्यागिनोगभीराः स्यु ।
सूक्ष्माभिर्धीमन्तः समाप्तमूलाभिरथ सुभगाः ।।१४०।।

अन्वयार्थौ—(मधुपिङ्गाभिः रेखाभिः सुखिनो भवन्ति) सरबती रंगकी सी आभा जिस रेखा की होय तो ऐसी रेखा से सुखी होय और (शोणाभिः रेखाभिः त्यागिनः च पुनःगभीराः स्युः) लाल रंग की रेखाओं से दानी और गंभीर होय और (सूक्ष्माभिः धीमन्तो भवंति) पतली रेखाओं से बुद्धिमान् होय और (अथ समाप्तमूलाभिः रेखाभिः सुभगाः स्युः) जड़ से लगाय पूरी रेखा होंय तो ऐसी रेखाओं से सुन्दर और रूपवान् होय।।१४०।।

पल्लविता विच्छिन्ना विषमाः परुषाः समास्फुटिरूक्षाः ।
विक्षिप्ताश्च विवर्णा हरिताः कृष्णाः पुनरशुभाः ।।१४१।।

अन्वयार्थौ—(पल्लविताः विच्छिन्नाः विषमाः परुषासमास्फुटितरूक्षाः विक्षिप्ताः च पुनः विवर्णाः हरिताः कृष्णाः पुनः अशुभाः भवन्ति) फैली हुई टूटी

ऊंची नीची खरदरी बराबर फटी हुई रूखी बिखरी और बुरे रंग की हरी काली ऐसी रेखाओं के लक्षण अशुभ होते हैं।।१४१।।

पल्लवितायां क्लेशश्छिन्नायां जिवितस्य सन्देहः ।
विषमायां धननाशः परुषायां कदशनं तस्याम् ।।१४२।।

अन्वयार्थौ—(पल्लवितायां तस्यां क्लेशो भवति) पत्तेयुक्त शाखा के तुल्य फैली रेखावाले को दुःख होय और (छिन्नायां तस्यां जीवितस्य संदेहो भवति) फटी हुई रेखावाले को जीने का संदेह होय और (विषमायां तस्यां धननाशो भवति) ऊंची नीची रेखा से धन का नाश होय और (परुषायां तस्यां कदशनं भवति) खरदरी रेखा से बुरा भोजन होता है।।१४२।।

आपाणिमूलभागान्निः सृत्यांगुष्ठतर्जनीमध्ये ।
आद्या भवन्ति तिस्रो गोत्रद्रव्यायुषां रेखाः ।।१४३।।

अन्वयार्थौ—आपाणिमूलभागात् निःसृत्य अंगुष्ठतर्जनीमध्ये आद्या स्तिस्रः रेखाः गोत्रद्रव्यायुषां भवन्ति) हाथ के मूलभाग से निकलकर अंगूठा और तर्जनी के वीच में पहिले ही तीन रेखा क्रम से जो होय तो ऐसी रेखा गोत्र द्रव्य आयु की होती है।।१४३।।

विच्छिन्नाभिस्ताभिः स्वल्पानि भवन्ति कुलधनायूंषि ।
रेखाभिर्दीर्घाभिर्विपरीताभिर्भवति विपरीतम् ।।१४४।।

अन्वयार्थौ—(विच्छिन्नाभिस्ताभिः रेखाभिः स्वल्पानि कुलधनायूंषि भवन्ति) फटी टूटी रेखाओं से थोड़ी संतान और थोड़ा ही धन और थोड़ी आयु होती है और (दीर्घाभिः विपरीताभिः रेखाभिः विपरीतं भवति) बड़ी पूरी रेखा होय फटी टूटी विपरीत न होंय तो बहुत संतान बहुत धन और बहुत आयुवाला होता है।।१४४।।

मणिबंन्धान्निर्गच्छति रेखायस्य प्रदेशिनीमूलम् ।
बहुबन्धुजनाकीर्णतस्य पुनर्जायतेऽभिजनम् ।।१४५।।

अन्वयार्थौ—(यस्य रेखा मणिबन्धात् प्रदेशिनीमूलं निर्गच्छति पुनः तस्य बहुबन्धुजनाकीर्णम् अभिजनं जायते) जिसके पहुँचे से रेखा प्रदेशिनी अर्थात् अंगूठे के पास की तर्जनी अंगुली की जड़ तक जाय सो उस पुरुष के बहुत भाई और बहुत मनुष्य का कुल होय।।१४५।।

लघ्व्या पुनर्नराणां लघुरिह दीर्घोऽथ दीर्घया वंशः ।
परिभिन्नो विज्ञेयः प्रतिभिन्नया च्छिन्नया छिन्नः ।।१४६।।

अन्वयार्थौ—(पुनः नराणां लघ्व्या रेखया वंशः लघुः) फिर मनुष्यों की छोटी रेखा से वंश छोटा होता है और (दीर्घया रेखया वंशः दीर्घः) बड़ी रेखा से वंश बड़ा होय और (प्रतिभिन्नया परिभिन्नः छिन्नया छिन्नः विज्ञेयः) टूटी फूटी रेखा से वंश बिखरा हुआ होय और कटी हुई रेखा से वंश भी कटा हुआ विशेषकरि जानिये।।१४६।।

रेखाकनिष्ठिकाया ज्येष्ठामुल्लंघ्य यस्य याति परम् ।
अच्छिन्ना परिपूर्णा स नरो वत्सरशतायुः स्यात् ।।१४७।।

अन्वयार्थौ—(यस्य कनिष्ठिकाया अच्छिन्ना परिपूर्णा रेखा ज्येष्ठाम् उल्लघ्यं परं याति स नरः वत्सरशतायुः स्यात्) जिस मनुष्य की कनिष्ठिका अंगुली के बराबर पूरी रेखा ज्येष्ठा अर्थात् बीच की अंगुली को उलांघि जाय तो उस मनुष्य की सौ वर्ष की आयु होय।।१४७।।

यावन्मात्राश्छेदाज्जीवितरेखाः स्थिरा भवन्ति नृणाम् ।
अपसृत्युवोऽपि तावन्मात्रा नियतं परिज्ञेयाः ।।१४८।।

अन्वयार्थौ—(नृणां जीवितरेखाः छेदात् यावन्मात्राः स्थिराः भवन्ति) मनुष्यों के जीने की रेखा टूटी हुई जितनी स्थिर होंय तो (तावन्मात्राः अप मृत्यवः अपि नियतं परिज्ञेयाः) उतनी ही अपमृत्यु निश्चय करि जानने योग्य हैं।।१४८।।

पुंसामायुर्भागे प्रत्येकं पंचविंशतिः शरदाम् ।
कल्प्याः कनिष्ठिकांगुलिमूलादिह तर्जनीपरतः ।।१४९।।

अन्वयार्थौ—(पुंसाम् आयुभगि प्रत्येकं शरदां पंचविंशतिः कनिष्ठिकांगुलिमूलात् इह तर्जनीपरतः कल्प्या) मनुष्यों की आयु के भाव में हर एक अंगुली के नीचे तक पच्चीस वर्ष और कनिष्ठिका के मूल से तर्जनी तंक कल्पना करनी चाहिये।।१४९।।

रेखा मणिबन्धाद्यदि यात्यंगुष्ठप्रदेशिनीमध्यम् ।
ऋद्धियुतं ख्यापयति विज्ञानविचक्षणे पुरुषम् ।।१५०।।

अन्वयार्थौ—(यदि रेखा मणिबन्धात् अंगुष्ठप्रदेशिनीमध्यं याति) जो रेखा पहुँचे से अँगूठा और तर्जनी के बीच में जाय तो (तदा ऋद्धियुत विज्ञानविचक्षणं पुरुषं ख्यापयति) वह ऋद्धिसिद्धि युक्त विशेष ज्ञान में चतुर पुरुष को जनाती है।।१५०।।

चेदंगुष्ठं गच्छति सैव ततो वितनुते महीशत्वम् ।
यदि सैव तर्जनीं वा साम्राज्यं मंत्रिपदमथवा ।।१५१।।

अन्वयार्थौ—(चेत सा एव रेखा अंगुष्ठं गच्छति तर्हि महीशत्वं वितनुते) सो वही रेखा जो अंगूठे तक जाय तो पृथ्वी का राजा होय और (यदि सा एव रेखा तर्जनीं वा गच्छति तर्हि साम्राज्यम् अथवा मन्त्रिपदं ददाति) जो वही रेखा तर्जनी तक जाय तो राजाओं का राजा अथवा मन्त्रि के पद को देती है।।१५१।।

निष्क्रान्ता मणिबन्धात्प्राप्ता यदि मध्यमांगुलीं रेखा ।
नृपतिं सेनाधिपतिं सा कुरुते वा तमाचार्यम् ।।१५२।।

अन्वयार्थौ—(यदि मणिबन्धात् निष्क्रान्ता रेखा मध्यमांगुलीं प्राप्ता) जो मणिबन्ध से निकलकर रेखा बीच की अंगुली तक जाय (तर्हि नृपतिं सेनापतिं कुरुते वा तम् एव पुरुषम् आचार्यं कुरुते) तो उसे राजा तथा राजा का सेनापति अर्थात् फौज का मालिक करे अथवा उसी पुरुष को आचार्य अर्थात् गुरु करे।।१५२।।

न च्छिन्ना न स्फुटिता दीर्घतरा विगतपल्लवा पूर्णा ।
ऊर्ध्वा रेखा कुरुते सहस्रजनपोषमेकोऽपि ।।१५३।।

अन्वयार्थौ—(यस्य ऊर्ध्वरेखा न छिन्ना न स्फुटिता तथा दीर्घतरा विगतपल्लवा पूर्णा भवति एकः अपि स सहस्रजनपोषं कुरुते) एक ही जो ऊर्ध्व रेखा टूटी फूटी न होय और लम्बी चौड़ी बड़ी और शाखा न लगी होय पूरी होय तो वह हजार मनुष्यों का पालन करनेवाला होय।।१५३।।

सा ब्राह्मणस्य रेखे वेदकरी क्षत्रियस्य राज्यकरी ।
वैश्यस्य महार्थकरी सौख्यकरी भवति शूद्रस्य ।।१५४।।

अन्वयार्थौ—(सा एव ऊर्ध्वा रेखा ब्राह्मणस्य वेदकरी—क्षत्रियस्य राज्यकारी—वैश्यस्य महार्थकरी—शूद्रस्य सौख्यकरी भवति) सो वही ऊर्ध्व रेखा जो ब्राहण के होय तो वेदपाठी और क्षत्रिय के होय तो राज्य की करनेवाली और वैश्य के होय तो बहुत धन की करनेवाली और शूद्र के होय तो सुख को करनेवाली होती है।।१५४।।

करमूलान्निर्याता यदि रेखाऽनामिकांगुलीमेति ।
विदधाति सार्थवाहं सार्थाढ्यं तं नृपतिमान्यम् ।।१५५।।

अन्वयार्थौ—(यदि ऊर्ध्वा रेखा करमूलान्निर्याता तथा अनामिकांगुलीम् एति तदा तं सार्थवाहं सार्थाढ्यं नृपतिमान्यं विदधाति) जो वही ऊर्ध्वरेखा हाथ की जड़ से निकलकर अनामिका अंगुलीतक जाय तो सौदागर साहूकार करे अथवा धनीराजाओं करिके पूजने योग्य होय ।।१५५।।

निष्क्रान्ता पाणितलात्प्राप्नोति कनिष्ठिकांगुलीं रेखा ।
धनकनकाढ्यं श्रैष्ठिमिह कुरुते सा यशोनिष्ठम् ॥१५६॥

अन्वयार्थौ—(या रेखा पाणितलान्निष्क्रान्ता कनिष्ठिकांगुलीं प्राप्नोति सा इह धनकनकाढ्यं श्रैष्ठिं यशोनिष्ठं कुरुते) जो रेखा हथेली से निकलकर कनिष्ठिका अंगुली तक जाय तो वह उस पुरुष को सुवर्ण से युक्त यश के काम में लगे हुए सेठ को करे अर्थात् सेठजी होय ॥१५६॥

आलिखितं काकपदं धनरेखायां तु सदृशतो यस्य ।
अर्जयति धनानि पुनस्तत्क्षणमपि स व्ययं कुरुते ॥१५७॥

अन्वयार्थौ—(यस्य धनरेखायाम् आलिखितं सदृशतः काकपदं भवति स धनानि अर्जयति पुनः तत्क्षणम् अपि स व्ययं कुरुते) जिसकी धन रेखामें काकपद के तुल्य लिखा हुआ होय सो बहुत धनको इकट्ठा करे फिर उसी समय शीघ्र खर्च करे ॥१५७॥

त्रिपरिक्षेपा व्यक्ता यवमाला भवति यस्य मणिबन्धे ।
नियतं महार्थपतिश्च सार्वभौमो नराधिपतिः ॥१५८॥

अन्वयार्थौ—(यस्य मणिबन्धे त्रिपरिक्षेपा व्यक्ता यवमाला भवति स नियतं महार्थपतिः तथा सार्वभौमः नराधिपतिः) जिसके मणिबंध में तिहरी प्रकट जौमाला होय सो निश्चय बड़े धन का पति और सार्वभौम अर्थात् सब पृथ्वी का राजा होय ॥१५८॥

करमूले यवमाला द्विपरिक्षेपा मनोहरा यस्य ।
मनुजः स राजमंत्री विपुलमतिर्जायते मतिमान् ॥१५९॥

अन्वयार्थौ—(यस्य करमूले द्विपरिक्षेपा मनोहरा यवमाला भवति स मनुजः राजमन्त्री विपुलमतिर्मतिमान् जायते) जिलके करमूल में दुहरी सुन्दर जौमाला होय तो वह पुरुष राजा का मन्त्री बड़ी बुद्धिवाला और बुद्धिमान् अर्थात् चतुर होय ॥१५९॥

सुभगैकपरिक्षेपा यवमाला यस्य पाणिमूले स्यात् ।
स भवति धनधान्ययुतः श्रेष्ठिजनपूजितो मनुजः ॥१६०॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पाणिमूले सुभगा एकपरिक्षेपा यवमाला स्यात् स मनुजः धनधान्ययुतः श्रेष्ठिजनपूजितो भवति) जिसके हाथके मूल में सुन्दर इकहरी जौमाला होय सो पुरुष धनधान्य हरिके युक्त उत्तम पुरुषों अर्थात् सेठों करिके पूजित होय ॥१६०॥

यदि तिस्रोऽपरमाला मणिबंधादुभयतो विनिस्सृत्य ।
परिवेष्टयन्ति पृष्ठं तदधिकतममिह फलं ज्ञेयम् ॥१६१॥

अन्वयार्थौ—(यदि मणिबन्धात् उभयतः विनिः सृत्यः तिस्रः अपर मालाः पृष्ठ परिवेष्टयंति इह तत् अधिकतमं फलं ज्ञेयम्) जो मणिबन्धसे दोनों और निकलक और जौमाला हाथ के पीठ को ढक लेय तो इससे अधिक फल जानन चाहिये ॥१६१॥

इह ताभिः पूर्णाभिः पूर्णां प्राप्नोति संपदं सदसि ।
मध्याभिर्वा मध्यां ह्रस्वभिर्वा पुमान् ह्रस्वाम् ॥१६२॥

अन्वयार्थौ—(इह ताभिः पूर्णाभिः पुमान् सदसि पूर्णां संपदं प्राप्नोति ताभिर्मध्याभिः वा मध्यां संपदं प्राप्नोति तथा ह्रस्वाभिः ह्रस्वा संपदं प्राप्नोति) वह जौमाला पूरी होय तो उस पुरुष को पूरी संपदा मिले और जौमाला कुछ बहुत थोड़ी होय तो मध्य संपदा मिलै और जो थोड़ी ही जौमाला होय तो थोड़ी संपद प्राप्त होय ॥१६२॥

आयुर्लेखानामांगुलिमूलान्तर्गता भवेदूर्ध्वा ।
यस्य व्यक्ता रेखा स धर्मनिरतो नरः सततम् ॥१६३॥

अन्वयार्थौ—(यस्य आयुर्नाम रेखा अंगुलिमूलान्तर्गता ऊर्ध्वं व्यक्ता स नर सततं धर्मनिरतो भवति) जिसकी आयु की ऊर्ध्वरेखा अंगलियोंकी जड़ तक जाय औ प्रकट होय सो पुरुष सदा धर्म में तत्पर होय अर्थात् धर्म के काम में लग रहै ॥१६३॥

यदि रेखा सर्वांगुलिसमस्तपर्वान्तिरे स्थिता व्यक्ता ।
स्पष्टो यवोऽपि पुंसा महीयतां तन्महीशत्वम् ॥१६४॥

अन्वयार्थौ—(यदि रेखा सर्वांगुलिसमस्तपर्वान्तिरे स्थितां व्यक्ता तथा य अपि स्पष्टः महीयतां पुंसां तन्महीशत्वं भवति) जो रेखा सब अंगुलियों के सब पर्व अर्थात् टुकडों पर प्रकट होय और जौ भी प्रकट होय तो वह पुरुष पूजनीय पुरुषों पृथ्वी का राजा होय ॥१६४॥

रेखाः कनिष्ठिकायुर्लेखामध्ये नरस्य यावंत्यः ।
तावन्त्यो महिलाःस्युर्महिलायाःपुनरपि मनुष्याः ॥१६५॥

अन्वयार्थौ—(यस्य नरस्य कनिष्ठिकायुर्लेखयोः मध्येः यावन्त्यः रेखाः स् तावन्त्यः महिलाः स्युः महिलायाः पुनः अपि मनुष्याः स्युः) जिस पुरुष की कनिष्ठ अंगुली की आयु की रेखा के बीच में जितनी रेखा होयँ उतनी ही स्त्री अथवा विव होने चाहिये और स्त्री के होयँ तो उतने ही पुरुष जानिये ॥१६५॥

रेखाभिर्विषमाभिर्विषमा समाभिरथ सुदीर्घाभिः ।
सुभगा सूक्ष्माभिः स्यात्स्फुटिताभिर्दुर्भगा नारी ॥१६६॥

अन्वयार्थौ—(विषमाभिः रेखाभिः विषमा अथ दीर्घाभिः समाभिः सुभगा सूक्ष्माभिः स्फुटिताभिः दुर्भगा नारी भवति) विषम अर्थात् कहीं थोड़ा कहीं बहुत रेखाओं से विषम स्त्री होती है और बड़ी बराबर रेखाओं से अच्छे चलनवाली होती है और पतली छोटी फटी रेखाओं से कुचालिनी स्त्री होती हैं॥१६६॥

मूलेऽङ्गुष्ठस्य नृणां स्थूला रेखा भवन्ति यावन्त्यः ।
तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिः पुत्रिकास्ताभिः ॥१६७॥

अन्वयार्थौ—(नृणाम् अंगुष्ठस्य मूले यावन्त्यः स्थूला रेखाः भवन्ति तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्मामिः ताभिः पुत्रिकाः स्युः) मनुष्यों के अंगूठे की जड़ में जितनी मोटी रेखा होयँ उतने ही पुत्र होते हैं और पतली रेखाओं में उतनी ही पुत्रियां होती हैं॥१६७॥

यावन्त्यो मणिबन्धायुर्लेखान्तः प्रतीक्षिताः स्थूलाः ।
तावत्संख्याकान्वै भ्रातॄन् सूक्ष्माः पुनर्भगिनीः ॥१६८॥

अन्वयार्थौ—(यावन्त्यः रेखाः मणिबंधात् आयुर्लेखांतः स्थूलाः प्रतीक्षितास्तावत्संख्याकान्भ्रातॄन्वदन्ति पुनः ता रेखाः सूक्ष्माः भगिनीः वदन्ति) जितनी रेखा पहुँचे के और आयुरेखा के बीच में मोटी दीखें उतनी ही गिनती के भाई कहे जायँ फिर वे ही रेखा जो पतली होयँ तो बहिनें होयँ ॥१६८॥

रेखाभिश्छिन्नाभिर्भिन्नाभिर्भाविमृत्यवो ज्ञेयाः ।
यावन्त्यस्ताः पूर्णा नियतं जीवन्ति रेखाभिः ॥१६९॥

अन्वयार्थौ—(यस्य आयुर्लेखाभिः छिन्नाभिर्भिन्नाभिर्भाविमृत्यवो ज्ञेयाः यावन्त्यस्ताः पूर्णाः ताभिः रेखाभिः नियतं जीवन्ति) जितनी आयु की रेखा टूटी होयँ उतनी ही होनहार अल्पायु जानिये और जो वही रेखा पुरी होंय तो निश्चय करिके उन पूरी सेवाओं से उतने ही वर्ष तक आयु होय अर्थात् निश्चय जीवै॥१६९॥

मीनो मकरः शङ्खः पद्मो वान्तर्मुखः सदा फलदः ।
पाणौ बहिर्मुखो यदि तस्य फलं पश्चिमे वयसि ॥१७०॥

अन्वयार्थौ—यदि पाणौ मीनः मकरः शंखः वा पद्मः अंतर्मुखः तदा सदा फलदः भवति—यदि बहिर्मुखः तस्य फलं पश्चिमे वयसि भवति) जो हाथ में मछली मगर शंख वा कमल हाथ के भीतर मुख किये होयँ तो सदा फल के देनेवाले होते हैं और

जो वे ही बाहर मुख किये होयँ उसका फल पिछली अवस्थामें होय।।१७०।।

मीनांकः शतभागी सहस्रभागी सदैव मकराङ्कः ।
शंखांको लक्षपतिः कोटिपतिर्भवति पद्माङ्कः ।।१७१।।

अन्वयार्थौ—(मीनाङ्कः शतभागो स्यात्—मकराङ्कः सदैव सहस्रभाग स्यात्, शंखाङ्कः लक्षपतिर्भवति, पद्माङ्कः कोटिपतिर्भवति) मछली के चिह्नवाल सौका धनी होय और कमल के चिह्नवाला सदा हजार का धनी होय और शंख चिह्नवाला लक्षपति होय और कमलके चिह्नवाला करोड़पति होय।।१७१।।

छिन्नैर्भिन्नैः स्फुटितैरव्यक्तैः किमपि नास्ति फलमेतैः ।
रहितैः सुमुखाः पाणौ प्रायोऽमी सार्वभौमानाम् ।।१७२।।

अन्वयार्थौ—(पाणितले एतैश्छिन्नैर्भिन्नैः स्फुटितैः अव्यक्तैः रहितैः किमपि फलं नास्ति प्रायः अभी सार्वभौमानाम् सुमुखा जायन्ते) जो हाथकी हथेली में वे ही चिह्न टूटे फूटे निर्मल न दीखें तो इनसे कुछ फल नहीं है, बहुधा ये ही चिह्न राज महाराजाओं के सीधे सुमुख होते हैं ।।१७२।।

शैलः प्रांशुः पाणेर्यस्य तले विस्फुटः स्फुरति ।
स पुमान् प्रायो राज्यं लभते निजभुजसहायोऽपि ।।१७३।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पाणेः तले प्रांशुः शैलः विस्फुटः स्फुरति, निजभुज सहा अपि सः पुमान् प्रायः राज्यं लभते) जिसकी हथेली में ऊंचा पर्वत प्रकट होय व पुरुष अपनी भुजाओं के बल से भी बहुधा राज्य को पाता है।।१७३।।

स्यू रथवाहनकुञ्जरवाजिवृषाद्याः स्फुटाः करे येषाम् ।
परसैन्यजयनशीलास्ते सैन्याधिपतयः पुरुषाः ।।१७४।।

अन्वयार्थौ—(येषां करे रथवाहनकुंजरवाजिवृषाद्याः स्फुटाः स्युः ते पुरुष परसैन्यजयनशीलाः सैन्याधिपतयः भवन्ति) जिनके हाथ में रथ पालकी हाथी घो बैल आदि के आकार प्रकट दिखाई देवें वे पुरुष पराई सेना के जीतनेवाले, सेना स्वामी अर्थात् फौज के मालिक होते हैं।।१७४।।

उडुपो वा वेडी वा पोतो वा यस्य करतले पूर्णः ।
धनकाञ्चनरत्नानां पात्रं सांयात्रिकः स स्यात् ।।१७५।।

अन्वयार्थौ—(यस्य करतले उडुपः वा वेड़ी वा पोतः पूर्णः भवति धनकाञ्चनरत्नानां पात्रं सांयात्रिकः स्यात्) जिसके हाथ की हथेली में डोंगा बेड़ा नाव पूरी होय वह पुरुष धन सुवर्ण और रत्नों का पात्र अर्थात् जहाजी सौदा नावों का व्यापारी माल भरनेवाला होय ।।१७५।।

श्रीवत्साभा सुखिनां चक्राभा भूभुजां करे रेखा ।
वज्राभा विभववतां सुमेधसां मीनपुच्छाभा ॥१७६॥

अन्वयार्थौ—(सुखिनां करे श्रीवत्साभा भवति, भूभुजां करे चक्राभा भवति, विभववतां करे वज्राभा भवति, सुमेधसां करे मीनपुच्छाभा भवति) सुखी पुरुषों के हाथ में श्रीवत्सचिह्न के आकार रेखा होती है और राजाओं के हाथ में चक्र के आकार रेखा होती है और ऐश्वर्यवाले के हाथ में वज्र की रेखा होती है और उत्तम बुद्धिवालों के हाथ में मछली की पूँछ के आकार रेखा होती है॥१७६॥

वापीकूपजलाद्यैर्धर्मपरः स्यात्त्रिकोणरेखाभिः ।
सीरेण नरः कृषिमानुलूखलप्रभृतिभिर्यज्वा ॥१७७॥

अन्वयार्थौ—(त्रिकोणरेखाभिः वापीकूपजलाद्यैर्धर्मपरः स्यात् सीरेण नरः कृषकः स्यात् उलूखलप्रभृतिभिः श्रीमान् यज्वा भवति) जो त्रिकोण रेखा होय तो बावड़ी कुँवा तालाब आदि के बनानेवाला और धर्म में तत्पर होय, जो हलकी तुल्य रेखा होय तौ खेती करनेवाला होय और जो ओखली आदिकी तुल्य रेखा होयँ तो धनवान् और यज्ञ करनेवाला होय ॥१७७॥

करवालांकुशकार्मुकमार्गणशक्त्यादयः करे यस्य ।
नियतं स क्षोणिपतिर्वीरः शत्रुभिरजेयः स्यात् ॥१७८॥

अन्वयार्थौ—(यस्य करे करवांलांकुशकार्मुकमार्गणशक्त्यादयो रेखाः भवंति स पुरुषः नियतं क्षोणिपतिर्भवति स वीरः शत्रुभिः अजेयः स्यात्) जिसके हाथ में तलवार और अंकुश वा धनुषबाण के आकार जो रेखा होय तो वह पुरुष निश्चय राजा होय और उस वीर पुरुष को शत्रु भी नहीं जीत सकते हैं॥१७८॥

जायन्ते श्रीमन्तः प्रासादैर्दामभिः स्फुटं मनुजाः ।
निधिनायकाः कमंडलुकलशस्वस्तिकपताकाभिः ॥१७९॥

अन्वयार्थौ—(प्रासादैर्दामभिः रेखाभिः मनुजातः स्फुटं श्रीमन्तो जायन्ते तथा कमंडलुकलशस्वस्तिकपताकाभिः मनुजाः निधिनायकाः जायन्ते) मंदिर और मालारूप रेखाओं करिके मनुष्य धनवाले होते हैं और कमंडलु कलश सथियाँ ध्वजा के आकार रेखा होय तो वे पुरुष नवनिधिके नायक अर्थात् मालिक होते हैं॥१७९॥

यस्य सदण्डं छत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठितं पाणौ ।
सोऽम्बुधिरशनावसनां भुनक्ति भूमिं भुजिष्योऽपि ॥१८०॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पाणौ सदण्डं छत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठितं भवति, स भुजिष्य: अपि अम्बुधिरशनावसनां भूमिं भुनक्ति) जिसके हाथ में दंडसहित छत्र और दो चमर प्रतिष्ठित होयँ सो पुरुष दासभी होय तो समुद्र ही है रशना और वसन जिसके ऐसी पृथ्वी का भोगनेवाला होता है।।१८०।।

विप्रस्य यस्य यूपो वेदनिभं ब्रह्मतीर्थमपि हस्ते ।
विश्वाधिपतिर्नियतं स भवेदथवाऽग्निहोत्री सः ।।१८१।।

अन्वयार्थौ—(यस्य विप्रस्य हस्ते यूप: वेदनिभं ब्रह्मतीर्थम् अपि स: नियत विश्वाधिपति: अथवा स: अग्निहोत्री भवेत्) जिस ब्राह्मण के हाथ में यज्ञस्तंभ और वेद के तुल्य और ब्रह्मतीर्थ के आकार रेखा होय तो वह पुरुष निश्चय जगत् का पति अथवा अग्निहोत्री होता है।।१८१।।

भाग्येन भवन्ति यवा: पुंसश्चांगुष्ठपर्वसु स्पष्टा: ।
पोषविशेषनिमित्तात्कर्मकृतं यशस्तुरङ्गी स्यात् ।।१८२।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पुंस: अंगुष्ठस्य पर्वसु यवा: भाग्येन स्पष्टा: भवंति पोषविशेषनिमित्तात्कर्मकृतं यश: तथा तुरंगी स्यात्) जिसके अँगूठे के पोरुवे में जौ का चिह्न भाग्यवश करिके प्रकट होय तो वह पालन करने के विशेष कारण से कर्मजन्य यंशवाला और घोड़े युक्त होता है।।१८२।।

सुतवन्त: श्रुतवन्तो जायन्तेऽङ्गुष्ठमूलगैस्तु यवै: ।
मध्यगतैर्धनकाञ्चनरत्नाढ्या भोगिन: सततम् ।।१८३।।

अन्वयार्थौ—(अंगुष्ठमूलगै: यवै: श्रुतवन्तो जायन्ते तथा मध्यगतै: यवै धनकांचनरत्नाढ्या: सततं भोगिनो भवंति) जिसके अंगूठे की जड़ में जौका चिह्न होय वह पुत्र और शास्त्रवाला होय और जिसके अंगूठे के बीच में जौका चिह्न होय वह धन सुवर्ण रत्नों करिके आढ्य और सदा भोगनेवाला होता है।।१८३।।

यस्य सदण्डं छत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठिंत पाणौ ।
सोऽम्बुधिरशनावसनां भुनक्ति भूमिं भुजिष्योऽपि।।१८०।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पाणौ सदण्डं छत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठितं भवति, स भुजिष्य: अपि अम्बुधिरशनावसनां भूमिं भुनक्ति) जिसके हाथ में दंडसहित छ और दो चमर प्रतिष्ठित होयँ सो पुरुष दास भी होय तो समुद्र ही है रशना औ वसन जिसके ऐसी पृथ्वी का भोगनेवाला होता है।।१८०।।

विप्रस्य यस्य यूपो वेदनिभं ब्रह्मतीर्थमपि हस्ते ।
विश्वाधिपतिर्नियतं स भवेदथवाऽग्निहोत्री सः ।।१८१।।

अन्वयार्थौ—(यस्य विप्रस्य हस्ते यूपः वेदनिभं ब्रह्मतीर्थम् अपि सः नियतं विश्वाधिपतिः अथवा सः अग्निहोत्री भवेत्) जिस ब्राह्मण के हाथ में यज्ञस्तंभ और वेद के तुल्य और ब्रह्मतीर्थ के आकार रेखा होय तो वह पुरुष निश्चय जगत् का पति अथवा अग्निहोत्री होता है॥१८१॥

भाग्येन भवन्ति यवाः पुंसश्चांगुष्ठपर्वसु स्पष्टाः ।
पोषविशेषनिमित्तात्कर्मकृतं यशस्तुरङ्गी स्यात् ॥१८२॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पुंसः अंगुष्ठस्य पर्वसु यवाः भाग्येन स्पष्टाः भवंति पोषविशेषनिमित्तात्कर्मकृतं यशः तथा तुरंगी स्यात्) जिसके अँगूठे के पोरुवें में जौका चिह्न भाग्यवश करिके के प्रगट होय तो वह पालन करने के विशेष कारण से कर्मजन्य यशवाला और घोड़े युक्त होता है॥१८२॥

सुतवन्तः श्रुतवन्तो जायन्तेऽङ्गुष्ठमूलगैस्तु यवैः ।
मध्यगतैर्धनकाञ्चनरत्नाढ्या भोगिनः सततम् ॥१८३॥

अन्वयार्थौ—(अंगुष्ठमूलगैः यवैः सुतवन्तः श्रुतवन्तो जायन्ते तथा मध्यगतैः यवैः धनकांचरत्नाढ्याः सततं भोगिनो भवंति) जिसके अंगूठे की जड़ में जौ का चिह्न होय वह पुत्र और शास्त्रवाला होय और जिसके अंगूठे के बीच में जौ का चिह्न होय वह धन सुवर्ण रत्नों करिके आढ्य और सदा भोगनेवाला होता है॥१८३॥

त्रिपरिक्षेपा मूलेंऽगुष्ठगता भवति यस्य यवमाला ।
द्विपसुसमृद्धः स पुमान्राजा वा राजसचिवो वा ॥१८४॥

अन्वयार्थौ—(यस्य अंगुष्ठगता मूले यवमाला त्रिपरिक्षेपा भवति स पुमान् द्विपसुसमृद्धः राजा वा राजसचिवो भवति) जिसके अंगूठे की जड़ में जौ माला की तिलड़ी होय सो पुरुष हाथियों की ऋद्धि समेत राजा वा राजमंत्री होता है॥१८४॥

यस्य द्विपरिक्षेपा सैव नरो राजपूजितः स स्यात् ।
यस्यैकपरिक्षेपा यवमाला सोऽपि वित्ताढ्यः ॥१८५॥

अन्वयार्थौ—(यस्य सा एव यवमाला द्विपरिक्षेपा स नरः राजपूजितः स्यात् यस्य यवमाला एकपरिक्षेपा स अपि वित्ताढ्यः स्यात्) जिसके वही जौमाला दुलड़ी होय सो पुरुष राजा का पूजनीय होय और जिसके जौमाला एक होय सो धनी होता है॥१८५॥

यस्यांगुष्ठाधस्तात्काकपदं भवति विस्पष्टम् ।
स नरः पश्चिमकाले शूलेन विपद्यते सद्यः ।।१८६।।

अन्वयार्थौ—(यस्य नरस्य अंगुष्ठाधस्तात्काकपदं विस्पष्टं भवति स नरः सद्य पश्चिकाले शूलेन विपद्यते) जिस पुरुष के अंगूठे के नीचे कौवे के आकार का चिह्न प्रकट होय सो मनुष्य पिछली अवस्था में शूल से शीघ्र ही मर जाय।।१८६।।

अव्यक्ताः स्युस्तनवः खण्डा रेखाः करे स्थिता यस्य ।
तिग्मांशोरिव रजनी श्रीस्तस्य पलायते सततम् ।।१८७।।

अन्वयार्थौ—(यस्य करे रेखाः अव्यक्ताः खण्डाः तनवः स्थिताः स्युः तस्य श्री सततं तिग्मांशोः रजनी इव पलायते) जिसके हाथ की रेखा स्वच्छ नहीं होय खंडित होय और बहुत पतली होय उसके लक्ष्मीजी सदा नहीं रहे, भागी जाती है जैसे सूर्य से रात्रि भागी जाती है।।१८७।।

एवमपरापि पाणौ शुभसंस्थाना शुभावहा रेखा ।
किंबहुना मनुजानामशुभा पुनरशुभसंस्थाना ।।१८८।।

अन्वयार्थौ—(एवं मनुजानां पाणौ अपरापि शुभसंस्थाना रेखा शुभा वहा बहुना किं पुनः अशुभसंस्थाना रेखा अशुभा) ऐसे ही मनुष्यों के हाथ में और भी शुभ रेखा शुभ की करनेवाली होती हैं, बहुत कहने से क्या है फिर अशुभ रेखा अशुभ होती है।।१८८।।

ऋजुरंगुष्ठः स्निग्धस्तुङ्गो वृत्तः प्रदक्षिणावर्त्तः ।
अंगुष्ठेऽपि धनवतां सुघनानि समानि पर्वाणि ।।१८९।।

अन्वयार्थौ—(धनवताम् अंगुष्ठः अपि ऋजुः स्निग्धः तुंगः वृत्तः प्रदक्षिणावर्तो भवति च पुनः धनवताम् अंगुष्ठे अपि सुघनानि वा समानि पर्वाणि भवंति) धनवानों का अंगूठा सीधा चिकना ऊंचा गोल दाहिनी ओर झुका हुआ होता है और धनवानों के अंगूठे में भी कठिन और बराबर पोरुवे होते हैं।।१८९।।

सततं भवन्ति वलिताः सौभाग्यवतां सुमेधसां सूक्ष्माः ।
पाण्यंगुलयः सरला दीर्घा दीर्घायुषां पुंसाम् ।।१९०।।

अन्वयार्थौ—(सौभाग्यवतां सुमेधसां पुंसां पाण्यंगुलयः सततं वलिता भवन्ति यथा दीर्घायुषां पुंसां सरला वा दीर्घा भवन्ति) भाग्यवान् और बुद्धिमान् पुरुषों के हाथ की अंगुली निरंतर मिली हुई होती हैं और बड़ी आयुवाले पुरुषों की अंगुली सूधी और बड़ी होती हैं।।१९०।।

नियतं कनिष्ठिकांगुलिरनामिकापर्व उल्लङ्घ्य ।
यद्यधिकतरा पुंसां धनमधिकं जायते प्रायः ॥१९१॥

अन्वयार्थौ—(यदि पुंसां कनिष्ठिकांगुलिः नियतम् अनामिकापर्व उल्लंघ्य अधिकतरा भवति तेषां प्रायः अधिकं धनं जायते) जो पुरुष की कनिष्ठिका (छोटी अंगुली) निरन्तर अनामिका अंगुली के पोरुवे को उलांघि करि अधिक हो तो बहुधा धन अधिक होय॥१९१॥

दीर्घायुरंगुलीभिः सौभाग्ययुतः सुदीर्घपर्वाभिः ।
विरलाभिः कुटिलाभिः शुष्काभिर्भवति धनहीनः॥१९२॥

अन्वयार्थौ—(दीर्घाभिः अंगुलीभिः दीर्घायुर्भवति च पुनः दीर्घपर्वाभिः अंगुलीभिः सौभाग्ययुतः स्यात् तथा विरलाभिः कुटिलाभिः शुष्काभिः अंगुलीभिः धनहीनो भवति) लम्वी अंगुलियों करिके बड़ी आयुवाला होय और बड़े पोरुवों की अंगुली से भाग्यवान् होय और छीदी टेढी सूधी पतली अंगुलियों से धनहीन अर्थात् दरिद्री होता है॥१९२॥

स्थूला धनोज्झितानां शस्त्रयुतानां बहिर्नताः पुंसाम् ।
ह्रस्वांगुल्याश्चिपिटाश्चेटानां हन्त जायन्ते ॥१९३॥

अन्वयार्थौ—(धनोज्झितानां पुंसां स्थूला भवन्ति शस्त्रयुतानां पुंसां बहिर्नताः भवन्ति हंत चेटानां पुंसां ह्रस्वाः चिपटाः अंगुल्यो भवंति) धनरहित पुरुषों की अंगुली मोटी होती हैं और हथियार के पुरुषों की अंगुली बाहर को झुकी होती हैं और बड़े खेद की बात है कि दासों की अंगुली छोटी और चपटी होती है॥१९३॥

अंगुष्ठांगुलयो वा संख्यान्यूनाधिकाः स्फुटं यस्य ।
धनधान्यैः परिहीनः सोऽल्पायुर्भूतले भवति ॥१९४॥

अन्वयार्थौ—(यस्य अंगुष्ठांगुलयः वा स्फुटं संख्यान्यूनाधिकाः भवंति स भूतले धनधान्यैः परिहीनः अल्पायुर्भवति) जिसके अंगूठे की अंगुली प्रगट कमती बढ़ती जैसे पांच से छठी संख्या हो तो पृथ्वी में धनधान्य करके हीन और थोड़ी आयुवाला होता है॥१९४॥

छिद्रं मिथः कनिष्ठानामामध्यप्रदेशिनीनां स्यात् ।
वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशो नरस्य सुखम् ॥१९५॥

अन्वयार्थौ—(यस्य कनिष्ठानामामध्यप्रदेशिनीनां मध्ये यदि छिद्रं स्यात् तस्य नरस्य वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशः सुखं भवति) जिसकी कनिष्ठिका में छिद्र होय

तो बूढेपन में सुख होय और अनामिका में छिद्र होय तो तरुणाई में सुख होय और मध्यमा प्रदेशिनी के बीच में जो छिद्र होय तो बालकपन में सुख होवे।।१९५।।

विद्रुमरुचयः श्लक्ष्णाः पाणिनखाः कच्छपोन्नताः स्निग्धाः ।
सशिखाः क्रमेण विपुलाः पर्वार्धमिता महीशानाम् ।।१९६।।

अन्वयार्थौ—(महीशानां पाणिनखाः विद्रुमरुचयः श्लक्ष्णाः कच्छपोन्नताः स्निग्धाः सशिखाः विपुलाः क्रमेण पर्वार्द्धमिता भवन्ति) राजाओं के हाथों के नख मूँगे के से रंग और चिकने कछुवे के पीठ के तुल्य ढलाववाले चमकदार बड़े बड़े पोरुवे के आधे तक होते हैं।।१९६।।

दीर्घाः कुटिलारूक्षाः शुक्लनिभा यस्य करनखा विशिखाः।
तेजोमृजाविहिनाः स हीयते धान्यधनभोगैः ।।१९७।।

अन्वयार्थौ—(यस्य पुरुषस्य करनखाः दीर्घाः कुटिलाः रूक्षाः शुक्लनिभाः तेजोमृजाविहीनाः विशिखाः भवन्ति स धान्यधनभोगैः हीयते) जिस पुरुष के हाथ के नख बड़े टेढे रूखे सफेद तेजकरिके और स्वच्छता से हीन चमत्कारहित ऐसे होंय सो धन धान्य के भोग से हीन होते हैं।।१९७।।

पुष्पयुतैर्दुःशीलाः श्वेतैः श्रमणास्तुषोपमैः क्लीबाः ।
परतर्कका विवर्णैश्चिपिटैः स्फुटितैर्नखैर्निःस्वाः ।।१९८।।

अन्वयार्थौ—(पुष्पयुतैर्नखैः दुःशीला भवन्ति तथा श्वेतैः श्रमणास्तुषोपमैः क्लीबाः भवंति वा विवर्णैः परतर्ककाः चिपिटैः स्फुटितैः निःस्वा भवन्ति) पुष्पयुक्त छींटेवाले नखों से दुःशील अर्थात् कुटिल स्वभाव के होते हैं और सफेद नखों से भिखारी होते हैं और जिनके भूसी के समान नख होयँ, वे नपुंसक होते हैं और बुरे रंगवाले नख पराई तर्क करनेवाले होते हैं और चिपटे टूटे फटे नखों से धनहीन अर्थात् दरिद्री होते हैं।।१९८।।

अपसव्यकरयोर्नखेषु सितबिन्दवश्चरणयोर्वा ।
आगन्तवः प्रशस्ताः पुरुषां भोजराजमतम् ।।१९९।।

अन्वयार्थौ—(पुरुषाणाम् अपसव्यसव्यकरयोः वा चरणयोर्नखेषु आगन्तवः सितबिन्दवः प्रशस्ताः इति भोजराजमतम्) मनुष्यों के बायें वा दायें हाथ के वा पांव के नखों में आये हुए सफेद बूँद अच्छे होते हैं यह भोजराज का मत है।।१९९।।

कच्छपृष्ठो राजा हयपृष्ठो भोगभाजनं भवति ।
धनसंपत्तिसुसेनाधिपतिः शार्दूलपृष्ठोऽपि ॥२००॥

अन्वयार्थौ—(कच्छपपृष्ठः राजा भवति हयपृष्ठः भोगभाजनं भवति शार्दूलपृष्ठः अपि धनसंपत्तिसुसेनाधिपतिर्भवति) कछुवे की सी पीठवाला राजा होय और घोड़े की सी पीठवाला भोग का पात्र अर्थात् भोगी होय और बघेरेकी सी पीठवाला धन और संपत्ति युक्त सेना का स्वामी होता है॥२००॥

लभते शिरालपृष्ठो निर्धनतां भुग्नवशपृष्ठोऽपि ।
कष्टं रोमशपृष्ठः पृथुपृष्ठो बन्धुविछेदम् ॥२०१॥

अन्वयार्थौ—(शिरालपृष्ठः भुग्नवंशपृष्ठः अपि निर्धनतां लभते रोमशपृष्ठः कष्टं लभते पृथुपृष्ठं बंधुविच्छेदं लभते) नसीली पीठवाला वा टेढ़ी पीठवाला निर्धनता को पाता है और रोमयुक्त पीठवाला कष्ट अर्थात् दुःख पाता है। मोटी पीठवाला भाइयों से नाश को प्राप्त होता है॥२०१॥

नियतं कृकाटिका चेद् रोमशिरासंयुता नराणां सा ।
कुरुते कुटिला विकटा विसंकटा रोगदारिद्रचम् ॥२०२॥

अन्वयार्थौ—(रोमशिरासंयुता कुटिला विकटा विसंकटा कृकाटिका यस्य भवति सा एव कृकाटिका नियतं नराणां रोगदारिद्रचं कुरुते) रोम भी हों, नसें भी हों, टेढी ऊंची सकडी नारि और पीठ की संधि जिसकी होयँ सोई कृकाटिका निश्चंय मनुष्यों को रोग और दरिद्री करती है॥२०२॥

ह्रस्वग्रीवः शस्तो वृत्तग्रीवः सुखी धनी सुभगः ।
कम्बुग्रीवस्तु भवेदेकातपवारणो नृपतिः ॥२०३॥

अन्वयार्थौ—(ह्रस्वग्रीवः शस्तः स्यात् वृत्तग्रीवः सुखी धनी सुभगः स्यात् कम्बुग्रीवः एकातपवारणो नृपतिर्भवति) छोटी नारिवाला श्रेष्ठ होता है और गोली नारिवाला सुखी धनवान् सुन्दर होता है। तीन रेखावाली शंख की सी नारिवाला एकच्छत्रधारी राजा होता है॥२०३॥

महिषग्रीवः शूरो लम्बग्रीवोऽपि घस्मरः सततम् ।
पिशुनो वक्रग्रीवः शस्तविनाशो महाग्रीवः ॥२०४॥

अन्वयार्थौ—(महिषग्रीवः शूरः स्यात लम्बग्रीवः अपि सततं घस्मरः स्यात् वक्रग्रीवः पिशुनः स्यात महाग्रीवः शस्तविनाशः स्यात्) भैंसे की सी नारिवाला शूर अर्थात् योधा होय और लम्बी नारिवाला निरंतर बहुत खानेवाला होय और टेढी नारिवाला चुगली खानेवाला होय और बड़ी नारिवाला श्रेष्ठ बात को नाश करता

है॥२०४॥

रासभकरभग्रीवो दुःखी स्याद्दांभिको बकग्रीवः ।
शुष्कशिरालग्रीवश्चिपिटग्रीवश्च धनहीनः ॥२०५॥

अन्वयार्थौ—(रासभकरभग्रीवः दुःखी स्यात् बकग्रीवः दांभिकः स्यात् चिपिटग्रीवः शुष्कशिरालाग्रीवः च धनहीनः स्यात) गधा और ऊंट की सी नारिवाला दुःखी होय और बकुलांकी सी नारिवाला पाखंडी होय और चपटी सूखीसी नसों की नारिवाला धनहीन होता है॥२०५॥

पुण्यवतामिह चिबुकं वृत्तं मांसलमदीर्घलघु मृदुलम् ।
अतिकृशदीर्घस्थूलं द्विधाग्रभागं दरिद्राणाम् ॥२०६॥

अन्वयार्थौ—(इह पुण्यवतां चिबुकं वृत्तं मांसलम् अदीर्घलघु मृदुलं भवति तथा अतिकृशदीर्घस्थूलं द्विधाग्रभागं चिबुकं दरिद्राणां भवति) इस संसार में पुण्यवानों की ठोढी गोल मांस से भरी न बड़ी न छोटी नरम सुडोल होती है और पतली दुबली बड़ी और दो भागवाली अर्थात् गढ़ेलेदार ऐसी ठोढ़ी दरिद्रियों की होती है॥२०६॥

हनुयुगलं सुश्लिष्टं चिवुकोभयपार्श्वसंस्थितं पुंसाम् ।
दीर्घं चक्रं शस्तं पुनरशुभं भवति विपरीतम् ॥२०७॥

अन्वयार्थौ—(पुंसां चिवुको भयपार्श्वसंस्थितं हनुयुगलं दीर्घं चक्रं सुश्लिष्टं शस्तं पुनः विपरीतम् अशुभं भवति) पुरुष की ठोढी के दोनों और स्थित दोनों जाबड़े अच्छे प्रकार मिले हुए बड़े और गोल श्रेष्ठ होते हैं फिर वे ही जो विपरीत होय तो अशुभ होते हैं॥२०७॥

कूर्चं प्रलम्बमुज्ज्वलमस्फुटिताग्रं निरन्तरं मृदुलम् ।
स्निग्धं पूर्णं सूक्ष्मं मेचकमपि शस्यते पुंसाम् ॥२०८॥

अन्वयार्थौ—(पुंसां प्रलंबम् उज्वलम् अस्फुटिताग्रं निरंतरं मृदुलं स्निग्धं पूर्ण सूक्ष्मं मेचकम् अपि कूर्च शस्यते) पुरुष के लंबे निर्मल जिनकी नोक फटी नहीं अतिनिबिड नरम चिकने पूरे महीन काले चमकदार दाढी के बाल हों तो अच्छे होते हैं॥२०८॥

परदाररताश्चौराः श्मश्रुभिररुणैर्नटा नखैः स्थूलैः ।
रूक्षैः सूक्ष्मैः स्फुटितैः कपिलैः केशान्विता बहुशः ॥२०९॥

अन्वयार्थौ—(अरुणैः श्मश्रुभिः परदाररताश्चचौराः भवति तथा स्थूलैः रूक्षै सूक्ष्मै स्फुटितैः कपिलैः नखैः बहुशः केशान्विता नटा भवंति) लाल दाढी मूछों के

पुरुष पराई स्त्री के भोगनेवाले चोर होते हैं और मोटे, रूखे, पतले, टूटे फूटे, कंजा के रंग के नखों से बहुत से बालों करिके युक्त नट होते हैं॥२०९॥

सांतर्द्वितीयदशमिह शुक्रो द्व्येकोऽधिकः क्रमेण नृणाम् ।
तदयं श्मश्रुविभेदस्तद्विकृतिः षोडशे वर्षे ॥२१०॥

अन्वयार्थौ—(नृणांक्रमेणतदयंश्मश्रुविभेदः सातर्द्वितीयदशं व्येकोऽधिक इह शुक्रो भवेत् च पुनः षोडशे वर्षे तद्विकृतिः स्यात्) मनुष्यों को कम करिके मूछों का भेद है सो बीस वर्ष के भीतर वा २१ वर्ष भीतर जो मूछें निकलें तो वीर्य को उत्पन्न करनेवाली होती हैं और जो सोलह वर्ष के भीतर निकलें तो वीर्य को रोग करनेवाली होती हैं॥२१०॥

सुखिनः समुन्नतैः स्युः परिपूर्णा भोगयुताश्चमांसयुतैः ।
सिंहद्विपेन्द्रतुल्यैर्गण्डैर्नराधिपा नरा धन्याः ॥२११॥

अन्वयार्थौ—(समुन्नतैः गण्डैः नराः सुखिनो भवन्ति) ऊंचे गंडस्थल होने से मनुष्य सुखी होते हैं और (मांसयुतैः गण्डैः परिपूर्णा भोगयुताः स्युः) मांस के भरे गंडस्थल से भरे पूरे भोगी होते हैं और (सिंहद्विपेन्द्र तुल्यैः गंडैः धन्याः नराधिपाः स्युः) सिंह वा हाथी के समान गण्डस्थल होने से उत्तम पुरुष राजा होते हैं॥२११॥

निम्नौ यस्य कपोलौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ।
पापास्ते दुःखजुषो भाग्यविहीनः परप्रेष्याः ॥२१२॥

अन्वयार्थौ—(यस्य कपोलौ निम्नौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ते पापाः दुःखजुषः भाग्यविहीनाः परप्रेष्याः भवंति) जिसके कपोल नीचे मांसरहित छोटी मूछों छौर रोमों करिके युक्त होयँ वे पापी दुःख पानेवाले अभागी और पराये दूत अर्थात् नौकर होते हैं॥२१२॥

वर्तुलमभीरु सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं समं सुरभि वदनम् ।
सिंहेभनिभं राज्यं संपूर्णं भोगिनां चेति ॥२१३॥

अन्वयार्थौ—(यस्य वदनं वर्तुलम् अभीरु सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं समं सुरभि सिंहेभनिभं राज्यं स्यात्) जिसका मुख सब ओर से गोल, डरावना नहीं, छोटा, चिकना, दर्शनीय, बराबर, सुगंध लिये, सिंह और हाथी के तुल्य हो तो वह राज्य करनेवाला होता है और (च पुनः संपूर्ण भोगिनामपि भवति) भोगियों का भी ऐसा ही संपूर्ण मुख होता है॥२१३॥

जननीमुखानुरूपं मुखकमलं भवति यस्य मनुजस्य ।
प्रायो धन्यः स पुमानित्युक्तमिदं समुद्रेण ।।२१४।।

अन्वयार्थौ—(यस्य मनुजस्य मुखकमलं जननीमुखानुरूपं भवति सः पु प्रायः धन्यो भवति समुद्रेण इतीदमुक्तम्) जिस मनुष्य का मुखकमल माता के का सा होय सो पुरुष बहुधा करिके धन्य होता है यह समुद्र ने इस प्रकार है।।२१४।।

दौर्भाग्यंवतां पृथुलं पुंसां स्त्रीमुखमपत्यरहितानाम् ।
चतुरस्रं धूर्तानामतिह्रस्वं भवति कृपणानाम् ।।२१५।।

अन्वयार्थौ—(दौर्भाग्यवतां पुंसां मुखं पृथुलं भवति) अभागे पुरुषों का चौड़ा भाड़ सा होता है और (अपत्यरहितानां स्त्रीमुखं भवति) संतान रहित पु का मुख स्त्री का सा होता है और (धूर्तानां मुखं चतुरस्रंभवति) दगाबाज माय पुरुषों का मुख चौकोर होता है और (कृपणानां मुखम् अति ह्रस्वं भवति) लो और कंजूसों का मुख बहुत छोटा होता है।।२१५।।

भीरु मुखं पापानां निम्नं कुटिलं च पुत्रहीनानाम् ।
दीर्घं निर्द्रव्याणां भाग्यवतां मण्डलं ज्ञेयम् ।।२१६।।

अन्वयार्थौ—(पापानां भीरु मुखं भवति) पापियों का डरपोक मुख होत और पुत्रहीनानां मुखं निम्नं च पुनः कुटिलं भवति) पुत्रहीनों का मुख नीचा अ टेढा होता है और (निर्द्रव्याणां मुखं दीर्घं भवति) धनहीनों का मुख लंबा होत और (भाग्यवतां मुखं मण्डलं ज्ञेयम्) भाग्यवानों का मुख गोल हो है।।२१६।।

रासभकरभप्लवगव्याघ्रमुखाः दुःखभागिनः पुरुषाः ।
जिह्ममुखाःविकृतमुखाः शुष्कमुखाःहयमुखाःनिःस्वाः।।२१७।।

अन्वयार्थौ—(रासभकरभप्लवगव्याघ्रमुखाः पुरुषाः दुःखभागिनो भवंति ग ऊंट, बंदर, बघेरे के से मुखवाले पुरुष दुःख भोगनेवाले होते हैं और (जिह्ममु विकृतमुखाः शुष्कमुखाः हयमुखाः निःस्वाःभवन्ति) टेढे मुख, बुरे मुख, सूखे घोड़े मुखवाले दरिद्री होते हैं।।२१७।।

बिम्बाधरो धनाढ्यः प्रज्ञावान् पाटलाधरो भवति ।
प्रायो राज्यं लभते प्रवालवर्णाधरस्तु नरः ।।२१८।।

अन्वयार्थौ—(बिम्बाधरः धनाढ्यः स्यात्) कुंदुरूके से लाल रङ्ग होठोंवाला धनवान् होता है और (पाटलाधरः प्रज्ञावान्) स्यात् गुलाब के

होठवाला बुद्धिमान् होता है और (प्रवालवर्णाधरः नरः प्रायः राज्यं लभते) मूंगे के रंग के से चमकदार होंठवाला पुरुष निश्चय राज्य को पाता है॥२१८॥

यस्याधरोत्तरोष्ठौ व्यंगुलमानौ सुकोमलौ मसृणौ ।
मृदुलौ समसृक्काणौ स जायते प्रायशो धनवान् ॥२१९॥

अन्वयार्थौ—(यस्य अधरोत्तरोष्ठौ द्वयंगुलमानौ सुकोमलौ मसृणौ मृदुलौ समसृक्काणौ प्रायशः स धनवान् जायते) जिसके होठ ऊपर नीचे के नाप में दो अंगुल के नरमाई लिये और चिकने, बराबर किनारे के होयँ सो बहुत धनवान् होता है॥२१९॥

पीनोष्ठः सुभगः स्याल्लंबोष्ठो भोगभाजनं मनुजः ।
अतिविषमोष्ठो भीरुर्लघ्वोष्ठो दुःखितो भवति ॥२२०॥

अन्वयार्थौ—(पीनोष्ठः सुभगः स्यात्) मोटे होंठवाला अच्छे चलन का होता है और (लम्बोष्ठः मनुजः भोगभाजनं स्यात्) लम्बे होंठवाला मनुष्य भोगों का पात्र होता है और (अतिविषमोष्ठः भीरुः स्यात्) बहुत छोटे बड़े होठोंवाला डरपोक होता है और (लघ्वोष्ठः दुखितो भवति) छोटे होंठवाला दुःखी होता है॥२२०॥

रूक्षैः कृशैर्विवर्णैः प्रस्फुटितैः खंडितैरतिस्थूलैः ।
ओष्ठैर्धनसुखहीना दुःखयुताः प्रायशः प्रेष्याः ॥२२१॥

अन्वयार्थौ—(रूक्षैः कृशैर्विवर्णैः प्रस्फुटितैः खंडितैः अतिस्थूलैः ओष्ठैः धनसुखहीनाः दुःखयुताः प्रायशः प्रेष्याः भवन्ति) रूखे पतले, बुरे रंग के फटे हुए खंडित और मोटे होठों से धन और सुख से हीन और दुःखी बहुधा दूत अर्थात् हरकारे होते हैं॥२२१॥

कुन्दमुकुलोपमाः स्युर्यस्यारुणपीडिकासमा सुघनाः ।
दशनाः स्निग्धाः श्लक्ष्णास्तीक्ष्णा दंष्ट्राः स वित्ताढचः ॥२२२॥

अन्वयार्थौ—(यस्य दशनाः कुंदमुकुलोपमाः अरुणपीडिकासमाः सुघनाः स्निग्धा सुतीक्ष्णाः द्रंष्ट्राः स्युः स वित्ताढचः भवति) जिसके दांत कंद की कली के तुल्य या लाल फुन्सी के समान, बहुत घने चिकने स्वच्छ और तेज डाढों से युक्त होय सो धनवान् होता है॥२२२॥

धनिनः खरद्विपरदा निःस्वा भल्लूकवानररदाः स्युः ।
निंद्याः कारालविरलद्विपंक्तिशितिविषमरूक्षरदाः॥२२३॥

अन्वयार्थौ—(खरद्विपरदाः धनिनो भवन्ति) गधे और हाथी के से लंबे

दांतवाले धनी होते हैं और (भल्लूकवानररदाः निःस्वा भवन्ति) रीछ और बंदर से दांतवाले दरिद्री होते हैं और (करालविरलद्विपंक्तिशितिविषमरूक्षरदाः निंद्य स्युः) भयंकर और जुदे जुदे दो पांतवाले काले, ऊंचे, नीचे, रुखे दांतवाले निं अर्थात् बुराई करने योग्य होते हैं॥२२३॥

द्वात्रिंशता नरपतिर्दशनैस्तैरेकविरहितैर्भोगी ।
स्यात्त्रिंशता तनुधनोऽष्टाविंशत्या सुखी पुरुषः ॥२२४॥

अन्वयार्थौ—(द्वात्रिंशता दशनैः पुरुषः नरपतिर्भवति) बत्तीस दांतवाले पु राजा होते हैं और एकविरहितैः दशनैः भोगी स्यात्) जो वे ही दांत ३१ होयँ भोगी होय और (त्रिंशता दशनैः तनुधनः स्यात्) ३० दांतवाला थोड़े धनवाला हो और (अष्टाविंशतिदशनैः सुखी स्यात्) २८ दांतवाला सुखी होता है॥२२४॥

दारिद्र्यदुखभाजनमेकोनत्रिंशता सदा दशनैः ।
उर्द्ध्वमधस्तात्तैरपि विहीनसंख्यैर्नरो दुःखी ॥२२५॥

अन्वयार्थौ—(एकोनत्रिंशता दशनैः सदा दारिद्र्यदुःखभाजनं भवति) दांतवाला सदा दरिद्री और दुःख का भाजन होता है और (ऊर्ध्वम् अधस्तात् विहीनसंख्यैः दशनैः स पुरुषः दुःखी स्यात्) ऊपर नीचे से वे ही दाँत संख्या से कम होयँ सो पुरुष दुःखी होता है॥२२५॥

स्यातां द्विजावधः प्राक् द्वादशमे मासि राजदन्ताख्यौ ।
शस्तावूर्ध्वावशुभौ जन्मन्येवोद्गतौ तद्वत् ॥२२६॥

अन्वयार्थौ—(द्विजौ द्वादशमे मासि प्राक् अधः स्यातां तौ राजदंताख्यौ शस्तौ १२ महीने के भीतर नीचे के दो दाँत निकले तो राजन्त कहावें। ये शुभ हैं अ (ऊर्ध्वौ अशुभौ) जो ऊपर को निकलें तो अशुभ हैं और (तद्वत् जन्मनि एव उद्ग अशुभौ) जो एक साथ जन्म से ही निकलें तो वे भी अशुभ हैं॥२२६॥

सर्वे भवन्ति दशनाः पूर्णे वर्षद्वये जनिप्रभृति ।
आसप्तमदशमान्तं नियतं पुनरुद्गमं यान्ति ॥२२७॥

अन्वयार्थौ—(जनिप्रभृति वर्षद्वये पूर्णे सति सर्वे दशनाः भवन्ति) जन्म लेकर दो वर्ष तक पूरे होने पर सब दांत होते हैं और (आसप्तमदशमान्तं नि पुनः उद्गमं यान्ति) सातवें वर्ष से दशवें वर्ष के अंत तक निश्चय फिर उत्पन्न ह हैं॥२२७॥

रसना रक्ता दीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनुसमा येषाम् ।
मिष्टान्नभोजिनस्ते यदि वा त्रैविद्यवक्तारः ॥२२८॥

अन्वयार्थौ—(येषां रसना रक्ता दीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनुसमा भवति ते मिष्टान्नभोजिनो भवंति) जिनकी जीभ लाल बड़ी छोटी नरम, पतली, बराबर होय मीठे के खानेवाले होते हैं और (यदि वा त्रैविद्यवक्तारो भवंति अथवा तीनों वेदों के वक्ता (कहनेवाले) होते हैं।।२२८।।

सङ्कीर्णाग्रा स्निग्धा रक्ताम्बुजपत्रसन्निभा रसना ।
न स्थूला न च पृथुला यस्य स पृथ्वीपतिर्मनुजः ।।२२९।।

अन्वयार्थौ—(यस्य रसना संकीर्णाग्रा स्निग्धा रक्ताम्बुजपत्रसन्निभा न स्थूला न च पृथुला स मनुजः पृथ्वीपतिर्भवति) जिस मनुष्य की जीभ के आगे का भाग सुकड़ा होय और चिकना लाल कमल के फूल की पंखड़ी अर्थात् पत्ते के समान न मोटी न चौड़ी होय सो मनुष्य पृथ्वीपति अर्थात् राजा होय।।२२९।।

शौचाचारविहीनाः सितजिह्वाः सन्ततं भवंति नराः ।
धनहीनाः शितिजिह्वाः पापोपगताः शबलजिह्वाः ।।२३०।।

अन्वयार्थौ—(सितजिह्वाः नराः सन्ततं शौचाचारविहीनाः भवन्ति) सफेद जीभवाले मनुष्य शौच आचार से सदा भ्रष्ट होते हैं और (शितिजिह्वाः धनहीनाः भवंति) काली जीभवाले मनुष्य धनहीन होते हैं और (शबलजिह्वाः पापोपगताः युः) कवरी चित्र विचित्र रंग की जीभवाले मनुष्य पापयुक्त होते हैं।।२३०।।

सूक्ष्मा रूक्षा परुषा स्थूला पृथुला मलान्विता यस्य ।
जिह्वा पीता स पुमान् मूर्खो दुःखाकुलः सततम् ।।२३१।।

अन्वयार्थौ—(यस्य जिह्वा सूक्ष्मा रूक्षा परुषास्थूला पृथुलामलान्विता पीता भवति स पुमान् मूर्खः सततं दुःखाकुलो भवति) जिसकी जीभ पतली रुखी कठोर मोटी चौड़ी मलसंयुक्त पीली होय सो पुरुष मूर्ख और सदा दुःख से व्याकुल रहता है।।२३१।।

रक्ताम्बुजतालुदरो भूमिपतिर्विक्रमी भवति मनुजः ।
वित्ताढ्यः सिततालुर्गजतालुर्मण्डलाधीशः ।।२३२।।

अन्वयार्थौ—(रक्ताम्बुजतालुदरोमनुजः विक्रमी भूमिपतिर्भवति) लाल कमल के समान जिसके तलुवे का बीच होय वह पुरुष पराक्रमी पृथ्वी का राजा होता है और (सिततालुः वित्ताढ्यो भवति) सफेद तलुवेवाला धनवान् होता है और (गजतालुः मंडलाधीशः स्यात्) हाथी के से तलुवेवाला मंडल का स्वामी होता है।।२३२।।

रूक्षं शबलं परुषं मलान्वितं न प्रशस्यते तालु ।
कृष्णं कुलनाशकरं नीलं दुःखावहं पुंसाम् ॥२३३॥

अन्वयार्थौ—(रूक्षं शबलं पुरुषं मलान्वितं पुंसां तालु न प्रशस्यते) रूखा, विचित्र, टेढा, मलयुक्त पुरुषों का तालुवा अच्छा नहीं होता है और (कृष्णं कुलनाशकरं भवति काला तालुवा कुल के नाश करनेवाला होता है और तालु पुंसां दुःखावहं भवति) नीला तालुवा पुरुष को दुःख देनेवाला है॥२३३॥

अरुणस्तालुर्गुणिनस्तीक्ष्णाग्रा घंटिका शुभा स्थूला ।
लम्बा कृष्णा कठिना सूक्ष्मा चिपिटा नृणां न शुभा ॥२३४॥

अन्वयार्थौ—(अरुणस्तालुः गुणिनो भवति) लाल तालुवा गुणवान् का हो और (तीक्ष्णाग्रा नृणां घंटिका शुभा भवति) पैनी नोंक की मनुष्यों की घंटी होती है और (स्थूला लंबा कृष्णा कठिना सूक्ष्मा चिपिटा न शुभा भवति) लंबी, काली, कड़ी, छोटी, चिपटी शुभ नहीं होती है॥२३४॥

हसितमलक्षितदशनं किञ्चिद्विकसितकपोलमतिमधुरम् ।
पुंसां धीरमकम्पं प्रायेण स्यात् प्रधानानाम् ॥२३५॥

अन्वयार्थौ—(अलक्षितदशनं किंचिद्विकसितकपोलम् अतिमधुरं धीरम् अ हसितं प्रायेण प्रधानानां पुंसां स्यात्) नहीं दीखें दांत जिसमें कुछ विकसित क बहुत मीठा, धीरयुक्त, कांपने से रहित हँसना बहुधा प्रधान (मुखिया) पुरु होता है॥२३५॥

उत्कंपितांसशिरः संमीलितलोचनं निपतदश्रु ।
विकृतस्वरमुद्धूतं मध्यानामसकृदन्ते स्यात् ॥२३६॥

अन्वयार्थौ—(उत्कम्पितांसकशिरः संमीनितलोचनं निपतदश्रु विकृत अंते असकृत उद्धूतं हास्य मध्यमानां स्यात्) कंपते है कंधे और शिर जिसमें मूं है नेत्र और गिरते हैं आंसू जिसमें विकृत स्वरवाला बारबार अन्त में भारी हास्य मध्यम पुरुषों का होता है॥२३६॥

चतुरंगुलप्रमाणा स्थूलपुटाऽन्तस्तनुच्छिद्रा ।
न च प्रपीनाऽवलिता चिरायुषां भोगिनां नासा ॥२३७॥

अन्वयार्थौ—(चतुरंगुलप्रमाणा स्थूलपुटा अन्तस्तनुच्छिद्रा न च प्र अविलता नासा चिरायुषां भोगिनां च स्यात्) चार अंगुल प्रमाण लंबी, भीतर छोटा छिद्र, बहुत मोटी न होय और सुकड़ी न होय, ऐसी नाक बड़ी आ

भोगी पुरुष की होती है॥२३७॥

उन्नतनासः सुभगो गजनासः स्यात्सुखी महार्थाढ्यः ।
ऋजुनासो भोगयुतश्चिरजीवी शुष्कनासः स्यात् ॥२३८॥

अन्वयार्थौ—(उन्नतनासः सुभगः स्यात्) ऊंची नाकवाला बहुत अच्छे चलनवाला होता है और (गजनासः सुखी च पुनः महार्थाढ्यःस्यात्) हाथीकीसी नाकवाला सुखी और बहुत धनवान् होता है और (ऋजुनासः भोगयुक्तः स्यात्) सीधी नाकवाला भोगयुक्त होता है और (शुष्कनासः चिरजीवी स्यात्) सूखी नाकवाला बहुत काल तक जीता है॥२३८॥

तिलपुष्पतुल्यनासः शुकनासो भूपतिर्मनुजः ।
आढ्योऽग्रवक्रनासो लघुनासः शीलधर्मपरः ॥२३९॥

अन्वयार्थौ—(तिलपुष्पतुल्यनासः पुनः शुकनासः मनुजः भूपतिः स्यात्) तिलके फूल के समान नाकवाला और तोते की सी नाकवाला मनुष्य राजा होता है और (अग्रवक्रनासः आढ्यः स्यात्) अग्रभाग में टेढ़ी नाकवाला धनवान् होता है और लघुनासः शीलधर्मपरः स्यात्) छोटी नाकवाला शीलधर्म में तत्पर होता है॥२३९॥

क्रमविस्तीर्णसमुन्नतनासा महीशितुर्भवति ।
द्वेधा स्थिताग्रभागातिदीर्घह्रस्वा च निःस्वस्य ॥२४०॥

अन्वयार्थौ—(क्रमविस्तीर्णसमुन्नतनासामहीशितुर्भवति) क्रम से फैली हुई उठी नाक राजा की होती है और (द्वेधा स्थिताग्रभागातिदीर्घह्रस्वा च निःस्वस्य) दो प्रकार से जिसका आगे का भाग स्थित होय और बहुत लंबी अथवा बहुत छोटी नाकवाला दरिद्र होता है॥२४०॥

कुञ्चत्या चौर्यरतिर्नासिकया चिपिटया युवतिमृत्युः ।
छिन्नानुरूपया स्यादगम्यरमणीरतः पापः ॥२४१॥

अन्वयार्थौ—(कुंचत्या नासिकया चौर्यरतिः) सुकड़ती हुई नाकवाला चोरी में प्रीति करनेवाला होता है और (चिपिटया नासिकयायुवतीमृत्युः स्यात्) चपटी नाकवाले की स्त्री से मृत्यु होती है और (छिन्नानुरूपया नासिकया अगम्यरमणीरतः पापः स्यात्) कटीसी सूरत की नाकवाला जिनसे भोग उचित नहीं तिन स्त्रियों से भोग करनेवाला पापी होता है॥२४१॥

विकृता मध्यविहीना स्थूलाग्रा पिच्छिला सदुःखस्य ।
दक्षिणवक्रा नासा अभक्ष्यभक्षकक्रूरयोर्ज्ञेया ॥२४२॥

अन्वयार्थौ—(विकृता मध्यविहीना स्थूलाग्रा पिच्छिला नासा सद्दुः भवति) बुरी, बीच में हीन, आगे से मोटी और रपटनी ऐसी नाकवाला पुरुष द्ध होता है और (दक्षिणवक्रा नासा अभक्ष्यभक्षकक्रूरयोः ज्ञेया) दाहिनी ओर से नाकवाला नहीं खाने योग्य वस्तु को खानेवाला और क्रूर होता है॥२४२॥

निर्ह्रादि सानुनादं सकृत्क्षुतं भोगिनां धनवतां द्विः ।
दीर्घायुषां प्रयुक्तं सुसंहितं त्रिर्भवति पुंसाम् ॥२४३॥

अन्वयार्थौ—(भोगिनाम् सकृत् सानुनादं निर्ह्रादि धनवतां द्विः क्षुतंभव भोगी पुरुष की नाक से वारबार शब्दवाली एक छींक होती है और धनवानों क छींक होती है और (दीर्घायुषां पुंसां ससंहितं प्रयुक्तं त्रिः क्षुतं भवति) बड़ी आयु पुरुषों की एक साथ करी हुई तीन छींक होती हैं॥२४३॥

स्खलितं लघु च नराणां क्षुतं चतुर्भवति भोगवताम् ।
ईषदनुनादसहितं करोति कुशलं निरन्तरं पुंसाम् ॥२४४॥

अन्वयार्थौ—(भोगवतां नराणां स्खलितं तथा लघु चतुः क्षुतं भवति) भ पुरुषों की कुछ खाली कुछ भरी और हलकी छींक होती है और (ईषदनुनादस क्षुतं पुंसां निरंतरं कुशलं करोति) थोड़े शब्दयुक्त जो छींक है सो पुरुषों को निर कुशल करे हैं अर्थात् मङ्गलकारी होती है॥२४४॥

नेत्रे निर्मलनीलस्फटिकारुण्ययुते ईषत्स्निग्धे ।
स्यातामंतर्मेचककृशान्तशोणे दृशौ धनिनः ॥२४५॥

अन्वयार्थौ—(निर्मलनीलस्फटिकारुण्ययुते ईषत्स्निग्धे नेत्रे तथा अन्तर्मेच शान्तशोणे दृशौ धनिनः स्याताम्) जिस पुरुष के दोनों नेत्र निर्मल और स्फटिक केसे रंगके लालयुक्त कुछ चिकने बीच में चमकदार काले और छोटे लाल हैं कोर जिनके ऐसे नेत्र धनवानों के होते हैं॥२४५॥

हरितालाभैर्नयनैर्जायन्ते चक्रवर्तिनो नियतम् ।
नीलोत्पलदलतुल्यैर्विद्वांसो मानिनो मनुजाः ॥२४६॥

अन्वयार्थौ—(हरितालभैर्नयनैः मनुजाः चक्रवर्तिनो जायन्ते) हरिताल के के से नेत्रवाले पुरुष निश्चय चक्रवर्ती होते हैं और (नीलोत्पलदलतुल्यैः न मनुजाः मानिनः विद्वांसो भवन्ति) नीलकमल के दल के समान नेत्रवाले गर्ववाले और पंडित होते हैं॥२४६॥

लाक्षारुणैर्नरपतिर्नयनैर्मुक्तासितैः श्रुतज्ञानी ।
भवति महार्थः पुरुषो मधुकांचनलोचनैः पिङ्गैः ॥२४७॥

अन्वयार्थौ—(लाक्षारुणैः नयनैः नरपतिर्भवति) लाख के से लाल रंग के नेत्रवाला राजा होता है और (मुक्तासितैः नयनैः श्रुतज्ञानी भवति) मोती के से सफेद रंग के नेत्रवाला शास्त्रज्ञानी होता है (पिंगैः मधुकांचनलोचनैः पुरुषः महार्थो भवति) पीले और शहद सोने के से रंगके नेत्रवाला पुरुष बहुत धनवान् होता है।।२४७।।

सेनापतिर्गजाक्षश्चिरजीवी जायते सुदीर्घाक्षः ।
भोगी विस्तीर्णाक्षः कामी पारावताक्षोऽपि ।।२४८।।

अन्वयार्थौ—(गजाक्षः सेनापतिः स्यात्) हाथी के से नेत्रवाला सेनापति होता है और (सुदीर्घाक्षः चिरजीवी जायते) बहुत बड़े नेत्रवाला बहुत समय तक जीवै है और (विस्तीर्णाक्षः भोगी स्यात्) लम्बे चौड़े नेत्रवाला भोगी होता है और (पारावताक्षः अपि कामी स्यात्) कबूतर के से नेत्रवाला कामी होता है।।२४८।।

श्यावदृशां सुभगत्वं स्निग्धदृशां भवति भूरिभोगित्वम् ।
स्थूलदृशां धीमत्त्वं दीनदृशां धनविहीनत्वम् ।।२४९।।

अन्वयार्थौ—(श्यावदृशां सुभगत्वं भवति) धूमले नेत्रवाला अच्छा होता है और (स्निग्धदृशां भूरिभोगित्वं भवति) चिकने नेत्रवाला बड़ा भोगी होता है और (स्थूलदृशां धीमत्त्वं भवति) मोटे नेत्रवाला बुद्धिमान् होता है और (दीनदृशां धनविहीनत्वं भवति) दीनदृष्टिवाला धनहीन होता है।।२४९।।

नकुलाक्षमयूराक्षा जायन्ते जगति मध्यमाः पुरुषाः ।
अधमा मण्डूकाक्षाः काकाक्षा धूसराक्षाश्च ।।२५०।।

अन्वयार्थौ—(नकुलाक्षमयूराक्षाः पुरुषाः जगति मध्यमाः जायन्ते) नौले और मोरके से नेत्रवाले पुरुष को जगत् में मध्यम कहते हैं और (मंडूकाक्षाः तथा काकाक्षाः धूसराक्षाः अधमाः जायन्ते) मेंढक कउवे और धूसर रंगके नेत्रवाले अधम होते हैं।।२५०।।

बहुवयसो धूम्राक्षाः समुन्नताक्षा भवन्ति तनुवयसः ।
विष्टब्धवर्तुलाक्षाः पुरुषा नातिक्रामन्ति तारुण्यम् ।।२५१।।

अन्वयार्थौ—(धूमाक्षाः बहुवयसो भवंति) धूमले नेत्रवाले बहुत आयु के होते हैं और (समुन्नताक्षाः तनुवयसो भवंति) ऊंची आँखवाले थोड़ी आयु के होते हैं और (विष्टब्धवर्तुलाक्षाः पुरुषाः तारुण्यं नातिक्रामन्ति) अकड़े और गोल नेत्रवाले पुरुष तरुणाई नहीं उलाँघते अर्थात् तरुणाई के पहले ही मर जाते हैं।।२५१।।

ऋजु पश्यति सरलमनाः पश्यंत्यूर्ध्वं सदैव पुण्याढ्याः।
पश्यत्यधः सपापस्तिर्यक्पश्यति नरः क्रोधी ॥२५२॥

अन्वयार्थौ—(सरलमनाः ऋजु पश्यति) सीधे मनवाला सीधा देखता है (पुण्याढ्याः सदैव उद्ध्वं पश्यंति) पुण्यवान् सदा ऊपर को देखते हैं और (सप अधः पश्यति) पापी नीचे को देखता है और (क्रोधी नरः तिर्यक् पश्यति) क्रो मनुष्य तिरछा देखता है॥२५२॥

सततमबद्धो लक्ष्म्या विघूर्णते कारणं विना दृष्टिः।
यस्य म्लाना रूक्षा स पापकर्मा पुमान् नियतम् ॥२५३॥

अन्वयार्थौ—(यस्य दृष्टिः कारणं विना विघूर्णते स सततं लक्ष्म्या अब भवति) जिसकी दृष्टि विना प्रयोजन घूमें सो पुरुष सदा लक्ष्मीहीन होता है (यस्य दृष्टिः म्लाना रूक्षा स पुमान् नियतं पापकर्मा भवति) जिसकी दृष्टि मलि और सूखी सी होय सो पुरुष निश्चय पापकर्म का करनेवाला हो है॥२५३॥

अंधः क्रूरः काणः काणादपि केकरो मनुजात् स्यात्।
काणात्केकरतोऽपि क्रूरतरः कातरो भवति ॥२५४॥

अन्वयार्थौ—(अंधः काणः क्रूरो भवति) अंधा और काणा क्रूर होता है (काणात् अंपि मनुजात् केकरः क्रूरः स्यात्) काणे से भी अधिक दृष्टि फेरनेवा मनुष्य क्रूर होता है और (काणात् केकरतः अपि कातरः क्रूरतरो भवति) काणे दृष्टि फेरनेवाले से अधिक आँख चुरानेवाला बड़ा क्रूर अर्थात् खोटा हो है॥२५४॥

अहिदृष्टिः स्याद्रोगी बिडालदृष्टिः सदा पापी स्यात्।
दुष्टो दारुणदृष्टिः कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियो भवति ॥२५५॥

अन्वयार्थौ—(अहिदृष्टिः रोगी स्यात्) सर्पकी सी दृष्टिवाला रोगी होता (बिडालदृष्टिः सदा पापी स्यात्) बिलाव की सी दृष्टिवाला सदा पापी होता और (दारुणदृष्टिः दुष्टः स्यात्) भयकारी दृष्टिवाला दुष्ट होता है (कुक्कुटदृष्टिः दुष्टः कलिप्रियो भवति) मुरगेकी सी दृष्टिवाला लड़ाई करनेवा होता है॥२५५॥

अतिदुष्टा घूकाक्षा विषमाक्षाः दुःखिताः परिज्ञेयाः।
हंसाक्षा धनहीनाः व्याघ्राक्षाः कोपना मनुजाः ॥२५६॥

अन्वयार्थौ—(घूकाक्षाः अतिदुष्टाः भवंति) उल्लूकी सी आँखोवाले बड़े दु

अर्थात् दु:ख देनेवाले होते हैं और (विषमाक्षा: दु:खिता परिज्ञेया:) छोटी बड़ी आंखोंवाले दु:खी जानने और (हंसाक्षा: धनहीना: भवंति) बघेरे की सी आँखोंवाले पुरुष क्रोधी होते हैं।।२५६।।

नियतं नयनोद्धार: पुंसामत्यन्तकृष्णताराणाम् ।
भूरिस्निग्धदृश: पुनरायु: स्वल्पं भवेत्प्राज्ञ: ।।२५७।।

अन्वयार्थौ—(अत्यन्तकृष्णताराणां पुंसां नियतं नयनोद्धारो भवति) बहुत काली आँख के तारावाले मनुष्य की आँखें निश्चय निकाली जायँ अर्थात् आँखें बनाई जायँ और (भूरिस्निग्धदृश: पुंस: आयु: स्वल्पं पुन: प्राज्ञ: भवेत्) बहुत चिकनी आँखवाले पुरुष की आयु थोड़ी होती है फिर भी पंडित होय।।२५७।।

अतिपिङ्गलैर्विवर्णैर्भ्रान्तैर्लोचनैश्चलैरशुभ: ।
अतिहीनारुणरूक्षै: सजलै: समलैर्नरा नि:स्वा: ।।२५८।।

अन्वयार्थौ—(अतिपिंगलै: विवर्णै: विभ्रान्तै: चलैर्लोचन: नर: अशुभ: भवति) बहुत बुरे रंग के भ्रान्त चलायमान नेत्रों से पुरुष अशुभ होता है और (अतिहीनारुणरूक्षै: सजलै: समलै: लोचनै: नरा: नि:स्वा: भवंति) बहुत हीन छोटे लाल रूखे जल से भरे मैलसहित नेत्रवाले पुरुष दरिद्री होते हैं।।२५८।।

इह वदनमर्द्धरूपं वपुषो यदि का समनुरूपमिदम् ।
तत्रापि वरा नासा ततोऽपि मुख्ये दृशौ पुंसाम् ।।।२५९।।

अन्वयार्थौ—(इह वपुष: अर्द्धरूपं वदनं यदि वा इदं समनुरूपं तत्रापि नासा वरा तत: अपि पुंसां मुख्ये दृशौ भवत:) इस शरीर में आधा रूप तो मुख है यदि वह मुख बराबर है उस मुख से भी नाक श्रेष्ठ है और नाक से भी पुरुषों के नेत्र मुख्य होते हैं।।२५९।।

सुदृढै: कृष्णैर्नयनच्छेदस्थै: पक्ष्मभिर्घनै: सूक्ष्मै: ।
सौभाग्यं चिरमायुर्लभते मनुजो धनेशत्वम् ।।२६०।।

अन्वयार्थौ—(मनुज: सुदृढै: कृष्णै: नयनच्छेदस्थै: घनै: सूक्ष्मै: पक्ष्मभि: सौभाग्यं चिरम् आयु: धनेशत्वं च लभते) मनुष्य सुदृढ काले नेत्रों के छेदों में स्थित घने पतले पक्ष्म (बरौनी) से अच्छा भाग्य बहुत काल की आयु और धन का स्वामी होता है।।२६०।।

पक्ष्मभिरधमा विरलै: पिङ्गै: स्थूलैर्विवर्णैश्च ।
पक्ष्मततिविरहिता: पुनरगम्यनारीरता: पापा: ।।२६१।।

अन्वयार्थौ—(विरलैः पिंगैः स्थूलैः विवर्णैः पक्ष्मभिः अधमा भवन्ति) वि
पीली, मोटी, बुरी रंग की बरौनीवाले पुरुष अधमः होते हैं और (
पक्ष्मततिविरहिताः पुरुषाः अगम्यनारीरताः पापाः भवंति) फिर बरोनी की प
रहित पुरुष जो स्त्री भोगनेयोग्य नहीं तिन स्त्रियों को भोगनेवाले और पापी
हैं।।२६१।।

अनिमेष इष्टरहितः पुरुषः स्यादेकमात्रनिमिषोऽपि ।।
नियतं द्विमात्रनिमिषः परजन्माश्रित्य जीवितं तस्य।।२६२।।

अन्वयार्थौ—(अनिमेषः एकमात्रनिमिषः अपि पुरुषः इष्टरहितः स्यात्)
निमेषवाला और एक मात्रा में निमेष लगानेवाला पुरुष इष्टों से रहित होता है
(द्विमात्रनिमिषः यः पुरुषः तस्य नियतं परजन्माश्रित्य जीवितम्) दो मात्रा
जितना समय लगे उतने समय में निमेषवाला पुरुष निश्चय दूसरे मनुष्य के आस
रहे।।२६२।।

धनिनस्त्रिमात्रमेषास्तथा चतुर्मात्रनिमिषवंतोऽपि ।
न तु पंचमात्रनिमिषश्चिरायुषो भोगिनो धनिनः ।।२६३।।

अन्वयार्थौ—(त्रिमात्रनिमिषाः तथा चतुर्मात्रनिमिषवंतः अपि धनिनो भवं
तीन मात्रा में तथा चार मात्रा में पलक लगानेवाले धनी होते हैं
(पंचमात्रनिमिषाः चिरायुषः भोगिनः धनिनो न तु भवन्ति) जिसका पांचमात्रा
पलक लगै वह बड़ी आयुवाले और भोगी धनी नहीं होते हैं।।२६३।।

नयननिमेषैरल्पैर्मध्यैर्दीर्घैश्च जायते पुंसाम् ।
आयुः स्वल्पं मध्यं सुदीर्घमथानुपूर्विकया ।।२६४।।

अन्वयार्थौ—(पुंसाम् अल्पैः मध्यैदीर्घैः नयननिमेषैः आयुः स्वल्पं मध्यं सु
आनुपूर्विकया जायते) जिन पुरुषों के नेत्र थोड़े पलक लगनेवाले हों उनकी
थोड़ी होती है, मध्यम हो तो मध्यमायु और जो बहुत देर में पलक लगनेवाले हैं
तो उनकी दीर्घ आयु होती है, इस क्रम से आयु जाननी चाहिये।।२६४।।

जानु प्रदक्षिणीकृत्य यावत् करो घण्टिकामादत्ते ।
तदिदमिह समयमानं मात्राशब्देन जानीयात् ।।२६५।।

अन्वयार्थौ—(यावत् करः जानु प्रदक्षिणीकृत्य घंटिकाम् आदत्ते, त
समयमानम् इह मात्राशब्देन जानीयात्) हाथ जितनी देर में जानु तक फिरके
की घंटी को पकड़े उतने ही समय को यहाँ मात्रा जान लेना।।२६५।।

मन्दरमन्थानकमथ्यमानजलराशिघोषगंभीरम् ।
बालस्य यस्य रुदितं स महीं महीयान् संपालयति ॥२६६॥

अन्वयार्थौ—(यस्य बालस्य रुदितं मंदरमंथानकमथ्यमानजलराशिघोष गंभीरं स्यात स महीयान् महीं संपालयति) जिस बालक का रोना मंदरपर्वत से मथे जाते समुद्र के शब्द के तुल्य गंभीर हो वह महान् पृथ्वी का पानेवाला होता है॥२६६॥

बाष्पाम्बुविनिर्मुक्तं स्निग्धमदीनरोदनं शस्तम् ।
रूक्षं दीनं घर्घरमश्रु पुनर्दुःखदं पुंसाम् ॥२६७॥

अन्वयार्थौ—(पुंसां विनिर्मुक्तं बाष्पाम्बु स्निग्धम् अदीनरोदनं शस्तम्) पुरुष के छोड़े हुए आंसू चिकने गरीबों के से नहीं, ऐसा रोनेवाला श्रेष्ठ होता है और (पुनः रूक्षं दीनं घर्घरम् अश्रु दुःखदं भवति) रूक्षे गरीबी के जिसमें घर्घर शब्द के आंसू निकलें वह दुःख का देनेवाला होता है॥२६७॥

बालेन्दुनते वित्तं दीर्घे पृथुलोन्नते श्यामे ।
नासावंशविनिर्गतदले इव भ्रूदले दिशतः ॥२६८॥

अन्वयार्थौ—(बालेन्दुनते दीर्घे पृथुलोन्नते श्यामे नासावंशविनिर्गतदले इव भ्रूदले वित्तं दिशतः) बालचंद्रमासी झुकी हुई, बड़ी, चौड़ी, ऊंची, काली और नाक के बांशे से निकली भौंहें बहुत धन को देती हैं॥२६८॥

नृणामयुते स्निग्धे मृदुतनुरोमान्विते भ्रुवौ श्यामे ।
हीने स्थूले सूक्ष्मे खरपिङ्गलरोमके न शुभे ॥२६९॥

अन्वयार्थौ—(नृणां भ्रुवौ अयुते स्निग्धे मृदुतनुरोमान्विते शस्ते) मनुष्यों की भौंहें मिली न होंय चिकनी और नरम छोटे रोमों से युक्त हों तो श्रेष्ठ होती हैं और (हीने स्थूले सूक्ष्मे खरपिंगलरोमके न शुभे) हीन, मोटी, छोटी, खरदरी तथा पिंगलवर्ण के रोमोंवाली भौंहें शुभ नहीं है॥२६९॥

ह्रस्वान्ता बहुदुःखानामगम्ययोषाजुषां च मध्यनताः ।
स्तोकायुषामतिनता विषमाः खण्डा भ्रुवो दरिद्राणाम्॥२७०॥

अन्वयार्थौ—(बहुदुःखानां पुरुषाणां भ्रुवः खंडा ह्रस्वांता भवंति) बहुत दुःखी पुरुषों की भौंह के खंड अर्थात् टूक छोटे छोरवाले होते हैं और (अगम्ययोषाजुषां भ्रुवः खंडा मध्यनता भवंति) अगम्य स्त्रियों के गमन करनेवालों की भौंह के टुकड़े बीच में झुके हुए होते हैं और (स्तोकायुषां भ्रुवः खंडा अतिनताः भवंति) थोड़ी आयुवालों की भौंह के खंड बहुत झुके हुए होते हैं और (दरिद्राणां भ्रुवः खंडाः

विषमाः भवंति) दरिद्रियोकी भौंह के खंड ऊंचे होते हैं।।२७०।।

धनवन्तः सुतवन्तः शिखरैः पुरुषाः समुन्नतैर्विशदैः ।
निम्नैः पुनर्भवन्ति द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः ।।२७१।।

अन्वयार्थौ—(पुरुषाः समुन्नतैः विशदैः शिखरैः धनवन्तः सुतवन्तो भवन्ति) पुरुष अच्छी और ऊंची भौंहों करिके धन और संतानवाले होते हैं (पुनः निम्नैः शिखरैः द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः भवन्ति) और नीची भौंहों से धन, सुख तथा सन्तान से रहित होते हैं।।२७१।।

परिपूर्णकर्णपाली पिप्पलिकाद्यवयवः सुसंस्थानः ।
लघुविवरो विस्तीर्णः कर्णः प्रायेणभूमिभुजाम् ।।२७२।।

अन्वयार्थौ—(श्लोकेऽस्मिन् क्रमान्वयः) परिपूर्ण हैं कान के अङ्ग जिसमें ऐसे पिप्पलिका को आदि अवयव अच्छे सुडौल बने हुए, छोटे छेदवाले ऐसे बड़े कान बहुधा राजाओं के होते हैं।।२७२।।

आद्ये प्रलम्बकर्णः सुखी स्वभावपीनमृदुकर्णः ।
मतिमान्मूषककर्णश्चमूपतिः शङ्खकर्णः स्यात् ।।२७३।।

अन्वयार्थौ—(प्रलंबकर्णः स्वभावपीनमृदुकर्णः आद्ये सुखी स्यात्) लम्बे कानवाला और स्वभाव करिके नरम तथा मोटे कानोंवाला पहिली ही अवस्था में सुखी होता है और (मूषककर्णः मतिमान् भवेत्) मूसे के से कानवाला बुद्धिमान् होता है और (शंखकर्णः चमूपतिः स्यात्) शंख के से कानोंवाला सेना का पति अर्थात् स्वामी होता है।।२७३।।

चिपिटश्रवणैर्भोगीदीर्घायुर्दीर्घरोमभिः श्रवणैः ।
अतिपीनैरतिभोगी श्रवणैर्जननायको भवति ।।२७४।।

अन्वयार्थौ—(चिपिटश्रवणैः भोगी भवति) मनुष्य चिपके से कानों से भोगी होता है और (दीर्घरोमभिः श्रवणैः दीर्घायुर्भवति) बड़े बड़े रोमोंवाले कानों से बड़ी आयुवाला होता है और (अतिपीनश्रवणैः अतिभोगी तथा जननायको भवति) बहुत मोटे कानों से अतिभोगी और मनुष्यों का स्वामी होता है।।२७४।।

ह्रस्वैर्निःस्वा कर्णैर्निर्मांसैः पापमृत्यवोज्ञेयाः ।
व्यालंबिभिः शिरालैः क्रूराः स्युः प्रायशःकुटिलैः ।।२७५।।

अन्वयार्थौ—(ह्रस्वैः कर्णैः नराः निःस्वा भवन्ति) छोटे कानों से मनुष्य दरिद्री होते हैं (तथा निर्मांसैः पापमृत्यवः ज्ञेयाः) मांसरहित कानों से पाप से मरनेवाले होते हैं और (व्यालंबिभिः शिरालैः तथा कुटिलैः कर्णैः प्रायशः क्रूराः

स्युः) लम्बे नसीले और कुटिल अर्थात् टेढे कानों से बहुधा क्रूर अर्थात् खोटे होते हैं॥२७५॥

येषां पृथुलाः क्षुद्राः कर्णाः स्युः कर्णशष्कुलीहीनाः ।
स्वल्पायुषो दरिद्रा विलोक्यमाना विरूपास्ते ॥२७६॥

अन्वयार्थौ—(येषां कर्णाः पृथुलास्ते पुरुषाः स्वल्पायुषः स्युः) जिनके कान चौड़े होयँ वे पुरुष स्वल्पायु होते हैं और (येषां कर्णाः क्षुद्राः ते दरिद्रा भवंति) जिनके कान ओछे हों वे दरिद्री होते हैं और (येषां कर्ण शष्कुलीहीनाः ते पुरुषाः विलोक्यमानाः भवन्ति) बीच की नसों से हीन कानोंवाले पुरुष कुरूप होते हैं॥२७६॥

यदि विपुलमूर्ध्वमधिकमुन्नतमर्द्धेन्दुसम्मितं राज्यम् ।
प्रदिशत्याचार्यपदं शुक्तिविशालं नृणां भालम् ॥२७७॥

अन्वयार्थौ—(यदि विपुलम् ऊर्ध्वम् अधिकम् उन्नतम् अर्द्धेन्दुसंमितं नृणां भालं राज्यं प्रदिशति) मनुष्य का लिलार चौड़ा ऊंचा और आधे चंद्रमा के आकार का हो तो राज्य देनेवाला होता है और (शुक्तिविशालं नृणां भालम् आचार्यपदं प्रदिशति) सीपीकी नाईं चमकदार और बड़ा मनुष्य का लिलार होय तो आचार्यको देनेवाला होता है॥२७७॥

स्वल्पैर्धर्मप्रवणा धनहीनाः संवृतैस्तथा विषमैः ।
निम्नैः केवलबन्धनवधभाजः क्रूरकर्माणः ॥२७८॥

अन्वयार्थौ—(स्वल्पैः भालैः धर्मप्रवणाः भवंति) छोटे लिलारवाले धर्म में तत्पर होते हैं और (संवृतैः तथा विषमैः भालैः धनहीनाः भवंति) ढ़के वा औंधे तथा ऊंचे नीचे लिलारवाले धनहीन होते हैं और (निम्नैः भालैः केवलबंधनवधभाजः क्रूरकर्माणो भवंति) नीचे लिलारवाले केवल कैद मार इनके पानेवाले और क्रूरकर्म अर्थात् खोटे काम करनेवाले होते हैं॥२७८॥

भालस्थलस्थिताभिः शिराभिरधमाः सदैव पापकराः ।
अभ्युन्नताभिराढ्यास्ताभिरपि स्वस्तिकाकृतिभिः ॥२७९॥

अन्वयार्थौ—(भालस्थलस्थिताभिः शिराभिः अधमाः सदैव पाप कराः भवन्ति) लिलार में स्थित नसें करिके जो यूक्त होय तो नीच और सदा पाप करनेवाले होते हैं और (अभ्युन्नताभिः तथा स्वस्तिकाकृतिभिः अपि ताभिः आढ्याः भवन्ति) ऊँची और स्वस्तिक के आकार उनही लिलारकी नसों से जो युक्त होय तो धनवान् अर्थात् धनाढ्य होते हैं॥२७९॥

रेखाभिर्वर्षशतं पञ्चभिरायुर्ललाटसंस्थाभिः ।
पुरुषाणां स्त्रीणां वा कर्मकरत्वं करोति श्रीः ॥२८०॥

अन्वयार्थौ—(ललाटसंस्थाभिः पंचभिः रेखाभिः पुरुषाणां वा स्त्रीणां वर्षशतम् आयुर्भवति) लिलार में स्थित जो पाँच रेखा होयँ तो पुरुष वा स्त्री की सौ वर्ष की आयु होती है (श्रीः कर्मकरत्वं करोति) लक्ष्मी उनके काम को करनेवाली अर्थात् टहलनी होती है॥२८०॥

भालस्थलस्थितेन स्फुटेन रेखाचतुष्टयेन नृणाम् ।
वर्षाण्यशीतिरायुर्वसुधेशत्वं पुनर्भवति ॥२८१॥

अन्वयार्थौ—(भालस्थलस्थितेन स्फुटेन रेखाचतुष्टयेन नृणाम् अशीतिः वर्षाणि आयुर्भवति)लिलारमें स्थित प्रकट चार रेखा करिके मनुष्यकी अस्सी वर्षकी आयु होती है और (पुनः वसुधेशत्वं भवति) पृथ्वी का राजा होता है॥२८१॥

स्यादायुर्लेखाभिस्तिसृभिर्द्वाभ्यामथैकया नियतम् ।
शरदां सप्ततिषष्टिं चत्वारिंशतमपि क्रमशः ॥२८२॥

अन्वयार्थौ—(तिसृभिः रेखाभिः शरदां सप्ततिम्) तीन रेखा करिके ७० वर्ष की आयु होती है और (द्वाभ्यां रेखाभ्यां षष्टिम्) दो रेखा करिके ६० वर्ष की आयु होती है और (एकया रेखया चत्वारिंशतम् अपि क्रमशः नियतम् आयुर्भवतिः) एक रेखा करिके ४० वर्ष की क्रम से निश्चय आयु होती है॥२८२॥

भाले लेखाहीने पंचाधिकविंशहायनायुः स्यात् ।
तस्य स्याद् ध्रुवमखिला जायंते संपदः सपदि ॥२८३॥

अन्वयार्थौ—(भाले लेखाहीने सति पंचाधिकविंशहायनायुः स्यात्) जो रेखारहित लिलार होय तो ५५ वर्ष की आयु होय और (ध्रुवम् तस्य अखिला संपदः सपदि जायन्ते) निश्चय उसको संपूर्ण संपदा शीघ्र ही होय॥२८३॥

यदि वा तिर्यग्दीर्घास्तिस्रो रेखाः शतायुषां भाले ।
भूमिजुषां तु चतस्रः पुनरायुः पंचहीनशतम् ॥२८४॥

अन्वयार्थौ—(यदि वा शतायुषां भाले दीर्घाः तिर्यक् तिस्रः रेखा भवंति) अथवा सौ वर्ष की आयुवाली के लिलार में बड़ी तिरछी तीन रेखा होती है और (पुनः भूमिजुषां तु चतस्रः पंचहीनशतम् आयुर्भवति) फिर भूमिवालों के लिलार में बड़ी तिरछी चार रेखा होयँ तो पांच कम सौ वर्ष की आयु होती है॥२८४॥

जीवति वर्षाशीतिर्यदि वा केशान्तमुपगते रेखे ।
भालेन वर्षनवतिः पुरुषो रेखाचितेन पुनः ।।२८५।।

अन्वयार्थौ—(यदि शकोन्तमुपगते रेखे भवतः तर्हि अशीतिःवर्षाणि नरो जीवति) जो दो रेखा केशों के अंत तक जायँ तो वह पुरुष ८० वर्ष तक जीवै और (पुनः रेखाचितेन भालेन पुरुषः वर्षनवतिर्जीवति) जो फिर अनेक रेखा करिके युक्त लिलार होय तो वह पुरुष ९० वर्ष जीवे।।२८५।।

रेखाः सप्ततिरायुः पंचैवाग्रस्थिताः पुनः षष्टिः ।
बह्वचो नृणां शतार्द्धं दशोनमपि भंगुरा ददते ।।२८६।।

अन्वयार्थौ—(यदि पंचैव रेखा अग्रस्थिता भवंति तदा सप्ततिर्वा षष्टिरायुर्भवति) जो पांच रेखा आगे स्थित होय तो ७० अथवा ६० वर्ष की आयु होती है और (नृणां बह्वचः रेखाः शतार्द्धम् आयुः ददते) मनुष्यों को बहुत रेखा होय तो) ५० वर्ष की आयु होती है और (यदि भंगुराः पंच रेखा भवंति तदा दशोनम् अपि शतार्द्धम् आयुः ददते) जो वे ही पांच रेखा टूटीफूटी हों तो दश कम पचास अर्थात् ४० वर्ष की आयु होती है।।२८६।।

भ्रूयुग्मोगताभिस्त्रिंशद्वर्षाणि जीवति शरीरी ।
विंशत्यब्दानि पुनर्लेखाभिर्वा च वक्राभिः ।।२८७।।

अन्वयार्थौ—(भ्रूयुग्मोपगताभिः रेखाभिः शरीरी त्रिंशद्वर्षाणि जीवति) दोनों भौहों के ऊपर जो रेखा होय तो मनुष्य तीस वर्ष तक जीता है और (पुनः वक्राभिः रेखाभिः विंशत्यब्दानि जीवति) फिर जो वे ही टेढी रेखा होय तो २० वर्ष जीवै है।।२८७।।

छिन्नाभिरगम्यस्त्रीगामी क्षुद्राभिरपि नरोऽल्पायुः ।
रेखाभिर्मनुजः स्यादित्याह सुमंतविप्रेन्द्रः ।।२८८।।

अन्वयार्थौ—(छिन्नाभिः रेखाभिः अगम्यस्त्रीगामी स्यात्) टूटी फूटी रेखाओं से मनुष्य अगम्या स्त्री से भोग करनेवाला होय और (क्षुद्राभिः अपि रेखाभिः नरः अल्पायुः स्यात्) छोटी रेखाओं से भी मनुष्य थोड़ी आयुवाला होता है और (रेखाभिः एवम् मनुजः स्यात् इति सुमन्तविप्रेन्द्र आह) सुमन्त नाम ब्राह्मण ने मनुष्य की ऐसी रेखाओं का यह फल कहा है।।२८८।।

श्रीवत्सकार्मुकाद्या यस्य शिरारोमभिः कृता भाले ।
रेखाभिर्वा नृपतिर्भोगी वा जायते सपदि ।।२८९।।

अन्वयार्थौ—(यस्य भाले श्रीवत्सकार्मुकाद्याः शिरारोमभिः रेखाभिः कृताः भवंति स नृपतिर्वा भोगी सपदि जायते) जिसके लिलार में नसों रोमों की रेखाओं करिके श्रीवत्स और धनुष को आदि लेकर चिह्न हों सो पुरुष राजा वा भोगी शीघ्र ही होता हैं।।२८९।।

मस्तकमिभकुम्भनिभं भूमिपुजां मण्डलं गवाद्यानाम् ।
भोगवतां भवति समं क्रमोन्नतं मण्डलेशानाम् ।।२९०।।

अन्वयार्थौ—(भूमिभुजां मस्तकम् इभकुंभनिभं भवंति) राजाओं के मस्तक हाथी के मस्तक के तुल्य हो तो (गवाद्यानां मंडलं भवति) उनके यहां गौ आदि का समूह होता है और (भोगवतां मस्तकं समं भवति) भोगनेवालों का मस्तक बराबर होता है और (मंडलेशानां मस्तकं क्रमोन्नतं भवति) मंडलेशों का मस्तक क्रम करिके ऊंचा होता है।।२९०।।

विकसच्छत्राकारं यस्य शिरो युवतिकुचनिभं वापि ।
नृपतिः स सार्वभौमो निम्नं वा यस्य स महीशः ।।२९१।।

अन्वयार्थौ—(यस्य शिरः विकसच्छत्राकारं वा युवतिकुचनिभं भवति स सार्वभौमः नृपतिर्भवति) जिसका मस्तक खुले हुए छाते के आकार वा जवान स्त्री के कूच के आकार हो वह सर्वभूमि का राजा होता है और (यस्य शिरः निम्नं स महीशो भवति) जिसका मस्तक नीचा होय सो भूमि का राजा होता है।।२९१।।

विषमो धनहीनानां करोटिकाभश्चिरायुषो मूर्द्धा ।
द्राघिष्ठो दुःखवतां चिपिटो मातापितृघ्नानाम् ।।२९२।।

अन्वयार्थौ—(धनहीनानां मूर्द्धा विषमो भवति) दरिद्रों का मस्तक ऊंचा नीचा होता है और (चिरायुषः मूर्द्धा करोटिकाभो भवति) बड़ी आयुवालों का मस्तक खोपड़ी के आकार होता और (दुःखवतां मूर्द्धा द्राघिष्ठो भवति) दुःख पानेवालों का मस्तक बहुत ही लम्बा होता है और (मातापितृघ्नानां मूर्द्धा चिपिटो भवति) माता पिता के मारनेवालों का मस्तक चिपटासा होता है।।२९२।।

धनविरहितो द्विमौलिः पापरतो मीनमौलिरतिदुःखी ।
अधमरुचिर्घटमौलिर्घननतमौलिः सदा निन्द्यः ।।२९३।।

अन्वयार्थौ—(द्विमौलिः धनविरहितः स्यात्) दो मस्तकवाला दरिद्री होता है और (मीनमौलिः पापरतः वा अतिदुःखी स्यात्) मछली के मस्तकवाला पाप करने में चाह रखे और बहुत दुःखी होता है और (घटमौलिः अधमरुचिः स्यात्) घड़ेके से

मस्तकवाला नीचों में संगति करनेवाला होता है और (घननतमौलिः सदा निंद्यः स्यात्) कड़े और झुके हुए मस्तकवाला सदा निन्दनीय होता है।।२९३।।

अत्रुटिताग्राः स्निग्धा ऋजवो मृदवः समास्तनीयांसः ।
अस्तोकदीर्घबहवस्तरङ्गिणो भूभुजां केशाः ।।२९४।।

अन्वयार्थौ—(अत्रुटिताग्राः स्निग्धाः ऋजवः मृदवः समाः तनीयांसः अस्तोकदीर्घवहवः तरङ्गिणः भूभुजां केशाः भवन्ति) नहीं टूटे हैं शिरे जिनके और चिकने, सीधे, नरम, बराबर, पतले, बहुत लंबे और बहुत छोटे नहीं व बलदार ऐसे बाल राजाओं के होते हैं।।२९४।।

ऊर्ध्वा रूक्षाः कपिलाः स्थूला विषमाः खरा विभिन्नाग्राः ।
अतिह्रस्वदीर्घकुटिला जटिला विरला दरिद्राणाम्।।२९५।।

अन्वयार्थौ—(ऊर्ध्वाः रूक्षाः कपिलाः स्थूलाः विषमाः खरा विभिन्नाग्राः अतिह्रस्वदीर्घकुटिलाः जटिलाः विरलाः दरिद्राणां भवन्ति) ऊंचे, रूखे, भूरे, ऊंचे, नीचे, खरदरे, आगे फटे हुए, बहुत छोटे, बहुत बड़े, बहुत टेढ़े बलदार मिले हुए, जुदे ऐसे बाल दरिद्रियों के होते हैं।।२९५।।

अंङ्गं यद्यपि पुंसां स्त्रीणां वा पिशितविरहितं सूक्ष्मम् ।
परुषं शिरावनद्धं तत्तदनिष्टं परं ज्ञेयम् ।।२९६।।

अन्वयार्थौ—(यद्यपि पुंसाम् अंगं वा स्त्रीणाम् अति अंगं पिशितविरहितं सूक्ष्मं परुषं शिवरावनद्धं तत्तत्परम् अनिष्टं ज्ञेयम्) जिन पुरुषों का अंग वा स्त्रियों का अंग मांसरहित, पतला, खरदरा, चमकती नसें जिसमें ऐसा हो तो बुरा है।।२९६।।

आयुः परीक्ष्य पूर्वं पुरुषाणां लक्षणं ततो ज्ञेयम् ।
व्यर्था लक्षणवीक्षा लोके क्षीणायुषां यस्मात् ।।२९७।।

अन्वयार्थौ—(पुरुषाणाम् आयुः पूर्वं परीक्ष्य ततो लक्षणं ज्ञेयम् यस्माल्लोके क्षीणायुषां लक्षणवीक्षा व्यर्था भवति) मनुष्यों की आयु की परीक्षा पूर्व में करे तो वह लक्षण भी ठीक है जिससे कि लोक में बहुत कमती आयुवालों के लक्षण झूठे होते हैं।।२९७।।

यल्लक्ष्म पुनः शुभमपि कररेखाप्रभृतिकं च संवदति ।
बाह्याभ्यन्तरमपरं तत्र समुद्रेण निर्दिष्टम् ।।२९८।।

अन्वयार्थौ—(यल्लक्ष्म शुभम् अपि पुनः कररेखाप्रभृतिकं च पुनः संवदति अपरं लक्षणं बाह्याभ्यंतरं तत्र समुद्रेण निर्दिष्टम्) जो लक्षण शुभ भी हैं और हाथ की

रेखाओं के लक्षण भी कहता है तिन दोनों में बाहिरी और भीतरी लक्षणों को औ
भी जानने चाहिये यह समुद्र ने कहा है॥२९८॥

इति महत्तमश्रीनरसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते तिलकापरनाम्नि नरस्त्रीलक्षणशास्त्रे
शारीरिकाधिकारः प्रथमः ॥१॥

संहतिसारानूकस्नेहोन्मानप्रमाणमाननि ।
क्षेत्राणि प्रकृतिस्थो मिश्रमेतदपि शारीरम् ॥१॥

अन्वयार्थौ—(संहतिसारानूकस्नेहोन्मानप्रमाणमानानि क्षेत्राणि प्रकृतिः अपि एतत् मिश्रं शारीरम्) बनावट जोड़ बल आचरण प्रीति ऊंचाई संख्या चौड़ाई क्षेत्र स्वभाव इनके मिलने का नाम शारीर है॥१॥

यत्र मिथः श्लिष्टत्वं मांसस्नाय्वस्थिसंधिबंधानाम् ।
संहननं संघातः संहतिरिति कथ्यते सद्भिः ॥२॥

अन्वयार्थौ—(यत्र मांसस्नाय्वस्थिसंधिबंधानां मिथः श्लिष्टत्वं संहननं संघात सद्भिः संहतिः इतिकथ्यते) मांस बड़ी बड़ी नसें और हाड़ जोड़ की जगह बंधा आपस में मिलना इसका नाम संहनन और संघात है सत्पुरुष उसको संहति कहे हैं॥२॥

यंत्रारिष्टमिवाङ्गं प्रत्यङ्गं यदि दृश्यते देहे ।
संस्थानेन सुरूपं महेच्छ सा संहतिर्भवति ॥३॥

अन्वयार्थौ—(इह देहे यंत्रारिष्टम् इव यत् अंगं प्रत्यङ्गं संस्थानेन सुरूपं दृश्य हे महेच्छ! सा संहतिर्भवति) इस शरीर में यंत्र की सी भांति जो शुभाशुभ लक्ष अंग प्रत्यंग में दीखते हैं सोई बनावट करिके सुरूप होता है तो हे महेच्छ! अर्था महाशय! सोई संहति होती है॥३॥

मांसास्थिसन्धिबन्धः कायेऽशिथिलो हि लक्ष्यते यस्य ।
स च संहतिमान् धन्यो दीर्घायुर्जायते नियतम् ॥४॥

अन्वयार्थौ—(यस्य काये मांसास्थिसन्धिबंधः अशिथिलः लक्ष्यते सः संहतिमा नियतं धन्यः दीर्घायुर्जायते) जिसके शरीर में मांस, हाड़, सन्धिबंधन ढीले नहीं दी सो सहतिमान् ऐसे शरीरवाला निश्चय धन्य और बड़ी आयुवाला हो है॥४॥

संहतिरहितो रूक्षः पिशितविहीनः शिरायुतः शिथिलः ।
स्थूलास्थिसन्निवेशो भवति क्लेशावहः स पुमान् ॥५॥

अन्वयार्थौ—(यः पुरुषः संहतिरहितः रूक्षः पिशितविहीनः शिरायुतः शिथिलः स्थूलास्थिसन्निवेशः स पुमान् क्लेशावहः भवति) जिस पुरुष का शरीर अच्छी बनावट का नहीं होय और रूखा मांसरहित थोड़े मांस का, बड़ी बड़ी नसें दीखें और ढीला, मोटे हाड होयँ जिसमें सो ऐसा पुरुष दुःख भोगनेवाला होता है॥५॥

अथ सारः

त्वग्रक्तमांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राण्यनुक्रमेण नृणाम् ।
साराः सप्त भवेयुः समासतस्तत्फलं ब्रूमः ॥६॥

अन्वयार्थौ—(अनुक्रमेण नृणां त्वक् रक्तं मांसं मेदः अस्थि मज्जा शुक्रम् इति सप्त साराः भवेयुः समासतः तत्फलं वयं ब्रूमः) क्रम से मनुष्यों के ७ सार होते हैं—चर्म, रक्त, मांस, चर्बी, हाड़, मज्जा वीर्य सो संक्षेप से उनका फल हम कहते हैं॥६॥

स्निग्धत्वचो धनाढ्यास्तनुत्वचः कुबुद्धयो मनुजाः ।
सुभगा मृदुत्वचः स्युः प्रागुक्तत्रित्वचः सुखिनः ॥७॥

अन्वयार्थौ—(स्निग्धत्वचः मनुजाः धनाढ्याः तनुत्वचः मनुजाः कुबुद्धयः मृदुत्वचः सुभगाः स्युः, प्रागुक्तत्रित्वचः सुखिनो भवन्ति) चिकनी खालवाले मनुष्य ज्ञानवान् होते हैं और पतली खालवाले मनुष्य खोटी बुद्धि के होते हैं और नरम खालवाले सुन्दर होते हैं और पहले कही गई तीन त्वचावाले सुखी होते हैं॥७॥

रसनोष्ठदन्तपीठकरांघ्रिगुदतालुलोचनान्तेन ।
रक्तेन रक्तसारा धनतनयस्त्रीसुखोपेता ॥८॥

अन्वयार्थौ—(रसनोष्ठदन्तपीठकरांघ्रिगुदतालुलोचनान्तेन रक्तेन मनुजाः रक्तसाराः धनतनयस्त्रीसुखोपेता भवंति) जीभ, होठ, मसूढें, हाथ, पांव, गुदा, तालुवा, नेत्रों के अंत जो ये सात लाल होयँ तो वे पुरुष रक्तसार कहाते हैं, वे धन-संतान-स्त्री करिके युक्त सुखी होते हैं॥८॥

सर्वाङ्गीणेन चितो यथाप्रदेशं घनेन मांसेन ।
उक्तः स मांससारो विद्याधनरूपपरिकलितः ॥९॥

अन्वयार्थौ—(यथाप्रदेशं घनेन सर्वांगीणेन मांसेन चितः स मांससारः उक्तः विद्याधनरूपपरिकलितो भवति) जैसा जिस जगह चाहिए वैसे कड़े मांस करके जो

पुरुष युक्त होय सो मांससार कहाता है और वह विद्या, धन, रूप इन करिके युक्त होता है॥९॥

नखदन्तदृशि स्निग्धो मेदस्सारः सुखान्वितः सुतवान् ।
स्थूलास्थिरस्थिसारः कान्तो विद्यां गतः सबलः ॥१०॥

अन्वयार्थौ—(नखदन्तदृशि स्निग्धः मनुजः मेदस्सारो भवतिसुखान्वितः सुतवान् स्यात्) नख, दांत, दृष्टि यह जिस पुरुष के चिकने होयँ वह मेदःसार कहाता है, वह सुखी और पुत्रवान् होता है और (स्थूलास्थिरस्थिसारः मनुजः कान्तः विद्यां गतः सबलः स्यात्) मोटे हाड़वाला अस्थिसार कहाता है वह पुरुष विद्यावान् और बलवान् होता है॥१०॥

घनशुक्रोपचययुतः संस्थितिमान् यो महाबलः स्निग्धः ।
कथितः स मज्जसारो बहुतनयः स्त्रैणसुखभोगी ॥११॥

अन्वयार्थौ—(यः घनशुक्रोपचययुतः संस्थितिमान् स्निग्धः महाबलः स मज्जसारः कथितः स एव बहुतनयः स्त्रैणसुखभोगी स्यात्) जो बहुत वीर्य के समूह से स्थित है जिसकी मज्जा चिकनी, बहुत बल करिके युक्त होय सो मज्जसार कहाता है। सो पुरुष बहुत पुत्र और स्त्रियों के सुख का भोगनेवाला होता है॥११॥

यो भवति शुक्रसारो विद्यासौभाग्यरूपपरिकलितः ।
प्रायेण सप्तसारः सर्वोत्कर्षप्रदः पुरुषः ॥१२॥

अन्वयार्थौ—(यः पुरुषः शुक्रसारो भवति स विद्यासौभाग्यरूपरिकलितः स्यात्) जो पुरुष शुक्रसार अर्थात् वीर्य का बलयुक्त होय तो विद्या और सौभाग्य रूप करिके युक्त होता है और (यः पुरुषः प्रायेण सप्तसारो भवति सः सर्वोत्कर्षप्रदो भवति) जो पुरुष सप्तसार होय तो सव प्रकार करिके अधिकता देनेवाला होता है॥१२॥

अथाऽनूकम्

पूर्वभवे ह्यनवरतं सत्त्वस्वरूपगतिभिरभ्यस्तम् ।
पुनरिह यदनुक्रियते तदनूकं कथ्यते सद्भिः ॥१३॥

अन्वयार्थौ—(सत्त्वस्वरूपगतिभिः पूर्वभवे अभ्यस्तम् अनवरतम् इह पुनः यत् अनुक्रियते सद्भिः तत् अनूकं कथ्यते) जैसे सत्त्वस्वरूप गति मनुष्यों ने पहिले जन्म में अभ्यास किया था वही इस जन्म में भी बराबर होय तो उसीके नाम को पंडित अनूक कहते हैं॥१३॥

सिंहव्याघ्रगरुत्मद्वृषभानूका भवन्ति ये मनुजाः ।
अप्रतिहतप्रतापा विजितरथास्ते नराधीशाः ॥१४॥

अन्वयार्थौ—(ये मनुजाः सिंहव्याघ्रगरुत्मद्वृषभानूका भवंति ते अप्रतिहतप्रतापा विजितरथाः नराधीशाः भवन्ति) जिन मनुष्यों के सिंह-बघेरे-गरुड़-बैल के से आचरण होयँ तो नहीं रुका है तेज जिनका और जीते हैं रथी आदि योद्धा जिन्होंने सो ऐसे मनुष्य राजा होते हैं॥१४॥

वानरमहिषक्रोडच्छगलानूकाः सुखार्थसुतसहिताः ।
रासभकरभानूका धनहीना दुःखिताः प्रायः ॥१५॥

अन्वयार्थौ—(वानरमहिषक्रोडच्छगलानूकाः सुखार्थसुतसहिता भवन्ति तथा रासभकरभानूकाः प्रायः धनहीनाः दुःखिता भवंति) बंदर, भैंसा, सूकर, बकरा इनकेसे आचरणवाले सुख, अर्थ, पुत्र सहित होते हैं और गधा, ऊंट इनके से आचरणवाले निश्चय दरिद्री और दुःखी होते हैं॥१५॥

अथ स्नेहः

चित्तप्रसत्तिजननं प्रीणनमिति कथ्यते ध्रुवं स्नेहः ।
तन्मूलमिह ज्ञेयं सुखसौभाग्यादिकं सर्वम् ॥१६॥

अन्वयार्थौ—(चित्तप्रसत्तिजननं प्रीणनं ध्रुवं स्नेहः इति कथ्यते इह उन्मूलं सर्वं सुखसौभाग्यादिकं ज्ञेयम्) चित्त की प्रसन्नता को उत्पन्न करनेवाला स्नेह है, सो इस लोक में इससे सकल सुख सौभाग्य आदि प्राप्त होते हैं॥१६॥

रसनायां दशनेषु त्वचि लोचनयोर्नखेषु केशेषु ।
पुण्यवतां प्रायेण स्नेहोऽयं षड्विधो ज्ञेयः ॥१७॥

अन्वयार्थौ—(पुण्यवतां रसनायां दशनेषु त्वचि लोचनयोः नखेषु केशेषु प्रायेण अयं स्नेहः षड्विधः ज्ञेयः) पुण्यवानों के जीभ में, दाँतों में, त्वचा में, नेत्रों में, नखों में, बालों में यह स्नेह अर्थात् चिकनाई छः प्रकार से जानने योग्य है॥१७॥

प्रियभाषित्वं रसनास्निग्धत्वं सुभोजनं रदाः स्निग्धाः ।
अतिसौख्यं त्वक्स्निग्धा नियतं भजते भुजिष्योऽपि ॥१८॥

अन्वयार्थौ—(यस्य रसनास्निग्धत्वं स भुजिष्योऽपि नियतं प्रियभाषित्वं भजते) जिसकी जीभ चिकनी हो वह दास भी निश्चय प्रिय बोलनेवाला हो (यस्य रदाः स्निग्धाः स भुजिष्योऽपि नियतं सुभोजनं भजते) जिसके दाँत चिकने हों वह दास भी सुभोजन पाता है और (यस्य त्वक् स्निग्धा स भुजिष्योऽपि नियतम् अतिसौख्यं भजते

(जिसकी त्वचा चिकनी हो वह (दास भी) निश्चित अतिसुख पाता है॥१८॥

जनतास्निग्धो नयनस्निग्धः समधिकधनं नखस्निग्धः ।
केशस्निग्धो बहुविधसुगन्धमाल्यं नरो लभते ॥१९॥

अन्वयार्थौ—(नयनस्निग्धः जनतास्निग्धः भवति) नेत्रों में चिकनाई से मनुष्यों में प्रीति करनेवाला होता है (नखस्निग्ध समधिकधनं लभते) और नखों में चिक्कणता होय तो अधिक धनवाला होता है और (केशस्निग्धः नरः बहुविधसुगंधमाल्यं लभते) बालों में जिसके चिकनाई होय वह पुरुष अनेक प्रकार की सुगंधमाला को प्राप्त करता है॥१९॥

अथोन्मानम्

मञ्जिष्ठादीनामिव तुलया यत्तोलनं भवति पुंसाम् ।
उन्मीयतेऽत्र नियतं तदुच्यते सद्भिरुन्मानम् ॥२०॥

अन्वयार्थौ—पुंसां मंजिष्ठादीनाम् इव तुलया यत्तोलनं भवति अत्र नियतम् उन्मीयते सद्भिः तत् उन्मानम् उच्यते) मंजीठ आदि चीजों को जैसे तराजू में तौलना होता है तैसे ही पुरुषों का भी उन्मान किया जाता है इसलिये निश्चय बुद्धिमान् पुरुष उसको उन्मान कहते हैं॥२०॥

यो व्यर्द्धभारदेहः स निखिलविश्वम्भरेश्वरो भवति ।
भारवपुर्यः पुनरिह जगति स कोटिध्वजो भवति ॥२१॥

अन्वयार्थौ—(यः द्व्यर्धभारदेहः स निखिलविश्वम्भरेश्वरो भवति) जिसका शरीर ढाई भार तोल में हो वह संपूर्ण पृथ्वी का पालनेवाला राजा होय और (पुन इह भारवपुः यः जगति स कोटिध्वजो भवति) जिस पुरुष का शरीर एक भार तोल में हो वह करोड़पति होता है॥२१॥

भारार्द्धं यस्याङ्गं स सुखाढ्यो भोगभाजनं भवति ।
भारार्द्धार्द्धतनुर्यः स दुर्गतो दुःखितः प्रायः ॥२२॥

अन्वयार्थौ—(यस्य अङ्गं भारार्द्धं सः पुरुषः सुखाढ्यः भोगभाजनं भवति) जिसका अंग आधार भार तोल में होय सो पुरुष सुख और भोग का पानेवाला होय और (यः पुरुषः भारार्द्धार्द्धतनुः प्रायः स दुर्गतः दुःखितः स्यात्) जिस पुरुष का शरीर चौथाई भार तोल में होय तो निश्चय दरिद्र और दुःख भोगनेवाला होता है॥२२॥

काष्ठेषु मणिषु वज्रेष्वाकरधातुषु तथान्यवस्तुषु च ।
स्निग्धं यत्तद्वद्गुरु यद्रूक्षं च लघु तद्वदिदम् ॥२३॥

अन्वयार्थौ—(काष्ठेषु मणिषु वज्रेषु आकारधातुषु तथा अन्यवस्तुषु यत् स्निग्धत्वं रूक्षत्वं तद्वत् गुरु च पुन तत् इदं लघु भवति) काठ में मणि में हीरा में जितनी खानि की धातु हैं उनमें वा और वस्तुओं में जो चिकनाई और रुखापन है वैसे स्निग्धादिगुणवाले मनुष्य होते हैं॥२३॥

अथ प्रमाणम्

आपार्ष्णितलशिरोऽन्तं यदिह वपुर्मीयते प्रकर्षेण ।
प्रवदन्ति तत्प्रमाणं केऽप्यायामां पुनः प्राहुः ॥२४॥

अन्वयार्थौ—(आपार्ष्णितलशिरोऽन्तं यत् इह वपुः प्रकर्षेण मीयते तत् प्रमाणं प्रवदन्ति केऽपि पुनः आयामं प्राहुः) पाँव के तलुवे से लेकर शिर तक जो यह शरीर नापा जाय उसीको प्रमाण कहते हैं कोई आयाम कहते हैं॥२४॥

शतमष्टभिः समधिकं ज्येष्ठः स्यान्मध्यमोऽपि षण्णवतिः ।
चतुरधिकाशीतिरथांगुलानि दैर्घ्यात्पुमानधमः ॥२५॥

अन्वयार्थौ—(यः पुमान् दैर्घ्यात् अंगुलानि अष्टभिः अधिकं शतं स ज्येष्ठः स्यात्) जिस पुरुष की लम्बाई १०८ अंगुल की होय सो ज्येष्ठ अर्थात् उत्तम होता है और (षण्णवतिः दैर्घ्यात् अंगुलानि अपि मध्यमः स्यात्) जिसकी लम्बाई ९६ अंगुल की होय सो मध्यम अर्थात् बीच का होता है और (चतुरधिकाशीतिः दैर्घ्यात् अंगुलानि अधमः स्यात्) जिसकी लम्बाई ८४ अंगुल की होय सो अधम अर्थात् नीच होता है॥२५॥

दैर्घ्या गुल्फोपगता चतुरंगुलिका भवेदथो जङ्घा ।
दैर्घ्येण चतुर्विंशतिरथांगुलिचतुष्टयं जानु ॥२६॥

अन्वयार्थौ—(गुल्फोपगता दैर्घ्या चतुरङ्गुलिका भवेत् अथो जंघा दैर्घ्येण चतुर्विंशतिर्भवेत् अथ जानु अंगुलचतुष्टं भवेत्) टकने की लंबाई ४ अंगुल होय और पिंडली की लम्बाई २४ अंगुल होय और जानु की लंबाई ४ अंगुल होती है॥२६॥

ऊरू जंघातुल्यौ बस्तिः स्याद् द्वादशांगुलायामा ।
तदर्द्धमितं नाभियुतमुदरं च कुचसहितम् ॥२७॥

अन्वयार्थौ—(ऊरू जंघातुल्यौ द्वादशांगुलायामा बस्तिः स्यात् नाभि युतं

कुचसहितम् उदरं तदर्द्धमितं स्यात्) ऊरू और जंघा बराबर होती हैं और १२ अंगुली की लम्बी बस्ति कहते हैं और नाभियुक्त कुचसहित उदर की लंबाई उससे आधी होती है॥२७॥

चत्वारि ग्रीवा स्याच्चिबुककचान्तमंगुलानि मुखम् ।
द्वादश पुंसां भवतीत्यायामोऽष्टाधिकं शतकम् ॥२८॥

अन्वयार्थौ—(चत्वारि ग्रीवा स्यात् चिबुककचान्तं द्वादश अंगुलानि मुखं भवति पुंसाम् अष्टाधिकं शतकम् आयामः) गर्दन की लंबाई चार अंगुल की और ठोढी से कच तक लम्बाई १२ अंगुल की मुख में होती है और पुरुष की लंबाई १०८ अंगुल की कहते हैं॥२८॥

एतदपि मतं केषामष्टोत्तरमुत्तमस्य भवति शतम् ।
मध्यस्याष्टविहीनं ततो दशोनं जघन्यस्य ॥२९॥

अन्वयार्थौ—(उत्तमस्य पुरुषस्य अष्टोत्तरं शतम् अंगुल शरीरं मध्यस्य पुरुषस्य अष्टविहीनं जघन्यस्य ततः दशोनम् अंगुलं शरीरम् एतत् केषाम् अपि मतं भवति) उत्तम पुरुष का १०८ अंगुल का शरीर होता है और मध्यम पुरुष का १०० अंगुल का और अधम पुरुष का ९८ अंगुल का शरीर होता है यह भी किसीका मत है॥२९॥

इदमपि मतमन्यस्य उत्तममुत्तमनरे भवत्यायुः ।
मध्ये मध्यं हीने तदपि विहीनं परिज्ञेयम् ॥३०॥

अन्वयार्थौ—(उत्तमनरे उत्तमम् आयुः मध्ये नरे मध्यम् आयुः हीने नरे हीनम् आयुः इतीपमप्यन्यस्य मतं परिज्ञेयम्) उत्तम पुरुष की १०८ वर्ष और ५ दिन की आयु होती है और मध्यम पुरुष की मध्यम आयु होती है और अधम पुरुष की अधम आयु होती है यह भी और किसी का मत है॥३०॥

उत्तममध्यहीनाः कालक्षेत्रानुमानतो ये स्युः ।
निजपर्वांगुलिसंख्या नियतं तेषां विबोद्धव्या ॥३१॥

अन्वयार्थौ—(कालक्षेत्रानुमानतः ये नराः उत्तममध्यमहीनाः स्युः तेषां निजपर्वांगुलिसंख्या नियतं विबोद्धव्या) समय क्षेत्र के अनुमान से जो मनुष्य उत्तम मध्यम अधम होते हैं, तिन पुरुषों की अपने पोरुओं के अंगुलों से गिनती निश्चय जाननी चाहिये॥३१॥

रामो दशरथसूनुर्बलिरपि विंशतिशतांगुलावेव ।
पूर्वं मानाधिक्यात् पुनरेतौ दुःखितौ जातौ ॥३२॥

अन्वयार्थौ—(दशरथसूनुः रामः तथा बलिः अपि विंशतिक्षतांगुलौ बभूवतुः पूर्वं मानाधिक्यात् एव एतौ दुःखितौ जातो) दशरथ का पुत्र राम और राजा बलि ये दोनों १२० अंगुल के थे, पहले मान अधिक होने से सोई वे इतने दुःखी हुए।।३२।।

अथ मानम्

जलभृतकटाहमध्यासीनस्य चतुर्दिशं नरस्य बहिः ।
पतति यदम्बु द्रोणं परिणाहत्वेन तन्मानम् ।।३३।।

अन्वयार्थौ—जलभृतकटाहमध्यासीनस्य नरस्य चतुर्दिशं बहिः यत् द्रोणम् अम्बु पतति परिणाहत्वेन तत् मानम्) जल की भरी हुई कढाई के बीच में जिस मनुष्य के बैठने से चारों ओर बाहर की जो ३२ सेर पानी गिरे उस प्रमाण करिके उसे मान कहते हैं।।३३।।

मानोपेतशरीराश्चिरायुषः संपदान्विताः पुरुषाः ।
तद्धीनाधिक्ययुताः पुनर्भजन्ते सदा दुःखम् ।।३४।।

अन्वयार्थौ—(मानोपेतशरीराः पुरुषाः चिरायुषः संपदान्वितः भवन्ति) मान से युक्त शरीर जो ऐसे पुरुष होयँ वे बड़ी आयुवाले और संपदायुक्त होते हैं और (पुनः तद्धीनाधिक्ययुताः सदा दुःखं भजन्ते) फिर उससे कमती बढती मानके शरीरवाले होयँ तो सदा दुःख को भजते हैं।।३४।।

यत्स्यात् तिर्यङ्मानं नरस्य पद्मासनोपविष्टस्य ।
जानुयुगलबाह्यपक्षांतराश्रितं सोऽत्र परिणाहः ।।३५।।

अन्वयार्थौ—(पद्मासनोपविष्टस्य नरस्य यत् तिर्यङ्मानं स्यात्) पद्मासन अर्थात् कमल के आसन में बैठे हुए पुरुष के जो तिर्यङ्मान हो जानुयुगलबाह्यपक्षांतराश्रितं सः अत्र परिणाहः) जो दोनों जानु बाहर को और बगल को भी रहें तो उस मान का नाम परिणाह है।।३५।।

आसनतो भालान्तं शरीरमध्ये तथोपविष्टस्य ।
यन्मानं स्यादूर्ध्वं स चोच्छ्रयः कथ्यते सद्भिः ।।३६।।

अन्वयार्थौ—(तथोपविष्टस्य शरीरमध्ये आसनतः भालान्तम् ऊर्ध्वं यन्मानं स्यात् स सद्भिः उच्छ्रयः कथ्यते) पूर्ववत् बैठा जो पुरुष उसके शरीर के बीच में आसन से ललाट के अंत तक जो ऊर्ध्वमान है उसी को पण्डित उच्छ्रय कहते हैं।।३६।।

यस्योच्छ्रयः समः स्यात्परिणाहेनोदितेन भाग्यवशात् ।
नियतं जगति प्रायः स पुमान् पुरुषोत्तमो भवति ।।३७।।

अन्वयार्थौ—(यस्य उछ्रयः भाग्यवशात् उदितेन् परिणाहेन समः स्यात् स पुमान् जगति प्रायः नियतं पुरुषोत्तमो भवति) जिस पुरुष का उच्छ्रयमान भाग्य के वश से उदित जो परिणाह तिसके बराबर होय सो पुरुष जगत् में बहुधा निश्चय उत्तम पुरुष होता है।।३७।।

अङ्गोपाङ्गानामिह विस्तारायमपरिधिभेदेन ।
मानं यथानुरूपं संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि ।।३८।।

अन्वयार्थौ—(यह अंगोपाङ्गानां विस्तारायामपरिधिभेदेन यथानुरूपं मानं संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि) इस ग्रंथ में अंग उपांग के विस्तार, आयाम, परिधि इन तीन भेदों करके जैसे का तैसा मान संक्षेप से कहता हूं।।३८।।

आपार्ष्णि ज्येष्ठान्तं तलमत्र चतुर्दशांगुलायामम् ।
विस्तारेण षडंगुलमंगुष्ठो द्वयंगुलायामः ।।३९।।

अन्वयार्थौ—(आपार्ष्णि ज्येष्ठान्तं तलम् अत्र चतुर्दशांगुलायामं स्यात्) पाँव के तलुवे की लम्बाई १४ अंगुल को पार्ष्णि से ज्येष्ठांगुली तक होती है और (विस्तारेण षडंगुल द्वयंगुलायामः अंगुष्ठः स्यात्) चौड़ाई ६ अंगुल की है और दो अंगुल की अंगूठे की होती है।।३९।।

पञ्चांगुलपरिणाहः पादान्तं तन्नखांगुलं दैर्घ्यात् ।
अंगुष्ठसमा ज्येष्ठा मध्या तत्षोडशांशोना ।।४०।।

अन्वयार्थौ—(दैर्घ्यात् पादांतं तन्नखांगुलं पंचांगुलपरिणाहः अंगुष्ठसमा ज्येष्ठा मध्यां तत्षोडशांशोना स्यात्) लंबाई से पांव के अंत तक नखोंके अंगुल ५ प्रमाणका होता है और प्रमाण से अंगूठे के बराबर ज्येष्ठा अंगुली होती है और बीच की अंगुली उससे १६ वें भाग हीन होती है।।४०।।

अष्टांशोनाऽनामा कनिष्ठिका षष्ठभागपरिहीना ।
सर्वासामप्यासां नखाः स्वपर्वत्रिभागमिताः ।।४१।।

अन्वयार्थौ—(अनामा अष्टांशोना कनिष्ठिका षष्ठभागपरिहीना सर्वा साम् अप्यासां नखाः स्वपर्वत्रिभागमिताः स्युः) अनामिका अंगुली ८वें भागहीन और कनिष्ठिका अंगुली ६वें भागहीन होय और सब इन अंगुलियों के नख अपने अपने पोरुवों से तीन भाग प्रमाण होते हैं।।४१।।

सत्र्यंगुलपरिणाहा प्रथमांगुलविस्तृतांगुली भवति ।
अष्टाष्टभागहीनाः शेषाः क्रमशः परिज्ञेयाः ।।४२।।

अन्वयार्थौ—(प्रथमांगुली सत्र्यंगुलपरिणाहा विस्तृतांगुली भवति शेषाः अंगुलयः क्रमशः अष्टाष्टभागहीनाः परिज्ञेयाः) पहली अंगुली की तीन अंगुल के प्रमाण करके लम्बाई होती है और जो बाकी अंगुलों के क्रम से हैं वे आठवें भाग हीन होती हैं।।४२।।

जंघातः परिणाहो ध्रुवमष्टाधिकदशांगुलानि स्यात् ।
विंशतिरेकोपगतो जानुर्द्वात्रिंशदूरुरपि ।।४३।।

अन्वयार्थौ—(जंघातः ध्रुवं परिणाहः अष्टाधिकदशांगुलानि स्यात् विंशतिः एकोपगतः जानुः स्यात् अपि द्वात्रिंशत् ऊरुः भवति) जंघा का प्रमाण १८ अंगुल का है और २१ अंगुल का प्रमाण जानु का होता है और ३२ अंगुल का प्रमाण ऊरु का होता है।।४३।।

अष्टादशांगुलमिता विस्ताराज्जायते कटिः पुंसाम् ।
नाभेरन्तः परिधिः षट्चत्वारिंशदंगुलतः ।।४४।।

अन्वयार्थौ—(पुंसां कटिः अष्टादशांगुलमिता विस्तारात् जायते तथा नाभेः अंतः परिधिः षट्चत्वारिंशदंगुलतः स्यात्) पुरुषों की कमर प्रमाण से १८ अंगुल की लंबी होती है और नाभि से अंत तक प्रमाण ४० अंगुल की लंबाई होती है।!४४।।

पुंसां द्वादश कुचयोरभ्यन्तरमंगुलानि दैर्घ्येण ।
उरसि च युगोपनिष्ठात्षडंगुलो भवति कक्षांतः ।।४५।।

अन्वयार्थौ—(पुंसां दैर्घ्येण कुचयोः अभ्यन्तरं द्वादश अंगुलानि स्यात् च पुनः उरसि युगोपनिष्ठात् षडंगूलः कक्षान्तो भवति) पुरुषों के कुचों की लंबाई बीच में १२ अंगुल के प्रमाण की होती है और हृदय से दोनों कुचों की जगह से ६ अंगुल प्रमाण कक्षा का अंग होता है।।४५।।

विंशत्युरः स्थलं स्याद्विस्तारादंगुलानि चतुरधिकम् ।
पृष्ठचा सह परिणाहे षहधिकपंचाशदंगुलिकम् ।।४६।।

अन्वयार्थौ—(उरःस्थलं विस्तारात् अंगुलानि चतुरधिकं विंशतिः स्यात पृष्ठचा सह परिणाहे षड्धिकपंचाशदंगुलिकं स्यात्) हृदय के जगह की लंबाई का प्रमाण २४ अंगुल का होता है और पीठ की लंबाई का प्रमाण ५६ अंगुल का होता है।।४६।।

पर्व प्रथमं बाह्वोर्दैर्घ्येणाष्टादशांगुलानि स्यात् ।
षोडश पुनर्द्वितीयं सप्त तलं मध्यमांगुलिमा ।।४७।।

अन्वयार्थौ—(बाह्वोः प्रथमं पर्व दैर्घ्येण अष्टादशांगुलानि स्यात् पुनः द्वितीयं षोडश स्यात् आ मध्यमांगुलिं सप्त तलं स्यात्) भुजा के पहले खंड की लंबाई १८ अंगुल प्रमाण होती है और दूसरे खंड की लंबाई १६ अंगुल की है, बीच की अंगुली तक हथेली की लंबाई ७ अंगुल की होती है।।४७।।

इति समुदायेन भुजः षट्चत्वारिंशदंगुलानि स्यात् ।
पञ्चांगुलविस्तारं पाणितलं शस्तरेखान्तम् ।।४८।।

अन्वयार्थौ—(इति समुदायेन भुजः षट्चत्वारिंशदंगुलानि स्यात्) इस समुदाय करके भुजा ४६ अंगुल के प्रमाण की होती है और (पाणितलं रेखान्तं पंचांगुलविस्तारं शस्तं स्यात्) हथेली की रेखा के अंत तक लंबाई ५ अंगुल की श्रेष्ठ होती है।।४८।।

मध्यांगुलितो हीना प्रदेशिनी भवति पर्वणाऽर्द्धेन ।
तत्सममानाऽनामा कनिष्ठिका पर्वपरिहीना ।।४९।।

अन्वयार्थौ—(अर्द्धेन पर्वणा मध्यांगुलितः हीना प्रदेशिनी भवति) आधे पोरुवा के प्रमाण बीच की अंगुली से हीम तर्जनी होता है और (तत्सममानाऽनामा, कनिष्ठिका पर्वपरिहीना भवति) उसके समान है मान अर्थात् परिमाण जिसका ऐसी अनामिका और कनिष्ठिका १ पोरुवा उससे कमती होती है।।४९।।

अंगुष्ठस्यायामोंऽगुलानि चत्वारि जायते पुंसाम् ।
निजपर्वार्द्धपरिमिता भवन्ति सर्वेऽपि पाणिनखाः ।।५०।।

अन्वयार्थौ—(पुंसाम् अंगुष्ठस्य आयामः चत्वारि अंगुलानि जायते) पुरुष के अँगूठे की लम्बाई ४ अंगुल की होती है और (सर्वेऽपि पाणिनखाः निजपर्वार्द्धपरिमिताः भवंति) सव हाथ के नख अपने पोरुवे के आधे प्रमाण के होते हैं।।५०।।

ग्रीवायाः परिणाहोंऽगुलानि चतुरधिकविंशतिः शस्तः ।
नासापुटद्वयान्तर्विस्तारो द्वयंगुलं मानम् ।।५१।।

अन्वयार्थौ—(ग्रीवायाः परिणाहः अंगुलानि चतुरधिकविंशतिः शस्तः स्यात्) गर्दन की लंबाई चारों ओर से २४ अंगुली की श्रेष्ठ होती है और (नासापुटद्वयान्तः द्वयंगुलं मानं विस्तारो भवति) नाक के नथुने दोनों अंत तक २ अंगुल प्रमाण के लंबे होते हैं।।५१।।

आचिबुकपश्चिमकचप्रान्तं द्वात्रिंशदंगुलो मूर्द्धा ।
कर्णद्वयस्य मध्ये पुनरष्टाधिकदशांगुलिकः ॥५२॥

अन्वयार्थौ—(स्पष्टान्वयः) ठोढी से लेकर पिछले बालों तक ३२ अंगुल मूर्धा है और दोनों कानों के बीच फिर १८ अंगुल प्रमाण से मूर्द्धा है॥५२॥

पुंसामंगे मानं स्पष्टं शिष्टैः पुरा विनिर्दिष्टम् ।
इह पुनरुपयोगाद्वै दिङ्मात्रमिदं मयाप्युक्तम् ॥५३॥

अन्वयार्थौ—(शिष्टै पुंसाम् अंगे मानं पुरा स्पष्टं विनिर्दिष्टम् पुनः इह उपयोगात् वै दिङ्मात्रम् इदं मया उत्तम) श्रेष्ठ पुरुषों के अङ्गमान तो सब शिष्टों ने स्पष्ट पहिले ही कह दिया और फिर इस स्थान में कार्यवश से निश्चय करके दिशा के दिखाने मात्र यह मैंने वही कहा है॥५३॥

विंशतिवर्षा नारी सपंचविंशतिसमो नरो योग्यः ।
जीवति तुर्यांशो वा मानोन्मानप्रमाणानाम् ॥५४॥

अन्वयार्थौ—(विंशतिवर्षा नारी सपंचविंशतिसमः नरः योग्यः स्यात् मानोन्मानप्रमाणानां तुर्यांशः वा जीवति) बीस वर्ष की स्त्री और पच्चीस वर्ष का पुरुष मान उन्मान प्रमाण इनका योग्य होता है, उक्त प्रमाण से अधिक वय होने पर चौथे भाग समझना॥५४॥

अथ क्षेत्रकथनम्

वर्षाणां शतमायुस्तस्यैवं दश दशा विभागेन ।
क्षेत्राणि दश नराणां तदाश्रितं लक्षणं ज्ञेयम् ॥५५॥

अन्वयार्थौ—(वर्षाणां शतम् आयुः प्रमाणं तस्य एवं विभागेन दश दशा नराणां दश क्षेत्राणि तदाश्रितं लक्षणं ज्ञेयम्) सौ वर्ष की आयु का प्रमाण है तिसी में द्वस भाग करके मनुष्यों की दश दशा जानना, तिसके दश क्षेत्र हैं तिसी के आसरे से लक्षण जानना चाहिए॥५५॥

आद्यं सगुल्फपादौ सजानु जंघाद्वयं द्वितीयं स्यात् ।
ऊरू गुह्यं मुष्कद्वितयं क्षेत्रं तृतीयमिदम् ॥५६॥

अन्वयार्थौ—(सगुल्फपादौ आद्यं सजानु जंघाद्वयं द्वितीयंस्यात् ऊरू गुह्यं मुष्कद्वितयम् इदं तृतीय क्षेत्रम्) टकने सहित पांव पहला क्षेत्र है और जानुसहित दोनों जंघा दूसरा क्षेत्र है और ऊरू गुह्य मुष्क यह तीसरा क्षेत्र है॥५६॥

नाभिः कटिश्चतुर्थं पंचममपि जायते पुनर्जठरम् ।
षष्ठं स्तनान्वितोरः सप्तममंसौ सजत्रुयुगौ ।।५७।।

अन्वयार्थौ—(नाभिः कटिश्चतुर्थं क्षेत्रम् पुनः जठरं क्षेत्रम् अपि पंचमं जायते स्तनान्वितम् उरः षष्ठं क्षेत्रम् सजत्रुयुगौ अंसौ सप्तमं क्षेत्रम्) नाभि से कटि तक चौथा क्षेत्र है, फिर उदर पाँचवाँ क्षेत्र है, कुचों से छाती तक छठा क्षेत्र है, दोनों हँसली सहित कंधे सातवाँ क्षेत्र है।।५७।।

ओष्ठौ ग्रीवाष्टममिह नवमं स्याद्भ्रूयुगं नयनयुगलम् ।
सललाटमुत्तमांगं दशमं लक्षणविदः प्राहुः ।।५८।।

अन्वयार्थौ—(ओष्ठौ ग्रीवा अष्टमं क्षेत्रम्) होठ और गर्दन आठवाँ क्षेत्र है (भ्रूयुगं नयनयुगलम् इह नवमं क्षेत्रं स्यात्) दोनों भौह और दोनों नेत्र नववाँ क्षेत्र है और (लक्षणविदः सललाटम् उत्तमांगं दशमं क्षेत्रं प्राहुः) लक्षण के जाननेवाले ललाट सहित शिर को दशवाँ क्षेत्र कहते हैं।।५८।।

क्षेत्रवशाज्जायन्ते मनुजानां जगति दश दशाः क्रमशः ।।
क्षेत्रेष्वशुभेष्वशुभा दशाः शुभेषु च शुभाः प्रायः ।।५९।।

अन्वयार्थौ—(मनुजानां क्षेत्रवशात् जगति दश दशाः क्रमशः जायन्ते) मनुष्यों के क्षेत्र के वश से जगत् में १० दशा क्रम से होती हैं और (क्षेत्रेषु अशुभेषु अशुभाः दशा भवंति) जो क्षेत्र अशुभ हैं वह दशा भी अशुभ होती हैं और (क्षेत्रेषु च पुनः शुभेषु शुभाः प्रायः दशा भवन्ति) जो क्षेत्र शुभ हैं वह बहुधा दशा भी शुभ होती हैं।।५९।।

बाल्यं वृद्धिरथ बलं धीत्वचाशुक्रविक्रमाः पुंसाम् ।
दशकेन निवर्त्तन्ते चेतः कर्मेन्द्रियाणि तथा ।।६०।।

अन्वयार्थौ—(बाल्यं वृद्धिः अथ बलं धीत्वचाशुक्रविक्रमाः तथा चेतः कर्मेंद्रियाणि पुंसां दशकेन निवर्तन्ते) बाल्यावस्था १ और वृद्धि बढ़वारी २ और बल ३ बुद्धि ४ त्वचा ५ वीर्य ६ पराक्रम ७ चित्त ८ कर्म ९ इंद्रिय १० पुरुषों की १० दशा ही करके बरते हैं।।६०।।

अथ प्रकृतिकथनम्

क्षितिजलशिखिपवनांबरसुरनररक्षःपिशाचतिर्यग्भिः ।
तुल्या प्रकृतिः पुंसां क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ।।६१।।

अन्वयार्थौ—(पुंसां शितिजलशिखिपवनांबरसुरवररक्षःपिशाचतिर्यग्भिः तुल्या प्रकृतिः क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः) पुरुषों के पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ देवता ६ मनुष्य ७ राक्षस ८ प्रेत ९ चतुष्पद १० इनके से स्वभाव क्रम करके जो होयँ, तिनके लक्षण हम कहते हैं॥६१॥

सुरभिः प्रसूनगन्धः सुखवान् भोगी स्थिरः क्षितिप्रकृतिः ।
प्रियवाग्घनाम्बुपायी नीरप्रकृतिर्नरो रसभुक् ॥६२॥

अन्वयार्थौ—(सुरभिः प्रसूनगंधः सुखवान् भोगी स्थिरः क्षितिप्रकृतिः भवति) चन्दन और फूलों की सी गन्धवाला-सुखवाला-भोगनेवाला-स्थिरवाला जिसमें ये लक्षण पाये जायँ उसकी पृथ्वी की सी प्रकृति होती है और (प्रियवाक् घनाम्बुपायी रसभुक् नीरप्रकृतिः नरो भवति) मीठी बोली बहुत जल का पीनेवाला रसों का खानेवाला ऐसे मनुष्य की जल की सी प्रकृति होती है॥६२॥

चपलः खण्डस्तीक्ष्णः क्षुद्वान् घनभोजनः शिखिप्रकृतिः ।
चटुलः क्षामः क्षिप्रः सकोपनः स्यान्मरुत्प्रकृतिः ॥६३॥

अन्वयार्थौ—(चपलः खंडः तीक्ष्णः क्षुद्वान् घनभोजनः शिखिप्रकृतिः भवति) चंचल मीठा-तेज बहुत-भूखा बहुत भोजन करनेवाला इनकी अग्नि की सी प्रकृति होती है और (चटुलः क्षामः क्षिप्रः सकोपनः मरुत्प्रकृतिर्भवति) चलायमान दुर्बल शीघ्र क्रोधसहित ये पवनप्रकृति के होते हैं॥६३॥

विद्वान् सुस्वरकुशलो विवृताक्ष शिक्षितोऽम्बरप्रकृतिः ।
त्यागरतिः सस्नेहः सुरस्वभावेन पृथुकोपः ॥६४॥

अन्वयार्थौ—(विद्वान सुस्वरः कुशलः विवृताक्ष शिक्षितः अंबरप्रकृति भवति) पंडित होय, अच्छी वाणी-कुशल, खुली आँखे, पढ़ा हुआ जिसने शिक्षा पाई, ये आकाशप्रकृतिवाले होते हैं (सुस्वभावेन त्यागरतिः सस्नेहः पृथुकोपः भवति) देवता की सी प्रकृतिवाला दानरति, प्रीतिसहित, बहुत क्रोध करनेवाला होता है॥६४॥

भूषणगीतप्रवणो नरस्वभावेन संविभागी स्यात् ।
दुर्जनचेष्टः पापो रक्षः प्रकृतिः खरक्रोधः ॥६५॥

अन्वयार्थौ—(नरस्वभावेन भूषणगीतप्रवणः संविभागी स्यात्) मनुष्य की सी प्रकृतिवाला भूषण पहरनेवाला, गाने में कुशल, विभाग करनेवाला होता है और (रक्षःप्रकृतिः नरः दुर्जनचेष्टः पापः खरक्रोधः स्यात्) राक्षस प्रकृतिवाला मनुष्य खोटी चेष्टावाला, पाप करनेवाला, बड़ा क्रोध करनेवाला होता है॥६५॥

भवति पिशाचप्रकृतिः स्थूलो मलिनश्चलः प्रलापी च ।
क्षुद्रानुगतस्तिर्यक्प्रकृतिर्बहुभुग्भवेन्मनुजः ॥६६॥

अन्वयार्थौ—(पिशाचप्रकृतिः स्थूलः मलिनः चलः च पुनः प्रलापी भवति) प्रेत की प्रकृतिवाला मोटा, मलीन, चलायमान और बकवादी होता है और तिर्यक्प्रकृतिः क्षुद्रानुगतः बहुभुक् मनुजः भवेत्) चौपायों की सी प्रकृतिवाला नीचों की संगतिवाला, बहुत खानेवाला पुरुष होता है॥६६॥

इति दक्षविधा नराणां निर्दिष्टाः प्रकृतयो यथा दृष्टाः ।
किञ्चिन्मिश्रकलक्षणमधुना वक्ष्यास्यतो लोके ॥६७॥

अन्वयार्थौ—(नराणाम् इति दशविधाः प्रकृतयः यथा दृष्टा निर्दिष्टाः) मनुष्यों की यह १० प्रकार की प्रकृति जैसी देखने में आई तैसी कहीं और (अतःपरं लोके किंचित् मिश्रकलक्षणम् अधुना वक्ष्यामि) इससे आगे लोक में कुछ मिश्रक लक्षण अब कहूँगा॥६७॥

अथ मिश्रकलक्षणम्

विभवसमृद्धिपरत्वं व्यंजनलाभः प्रभुत्वमव्याजम् ।
वयसि भवन्ति प्रथमे प्रायः स्वल्पायुषां पुंसाम् ॥६८॥

अन्वयार्थौ—(स्वल्पायुषां पुंसां प्रथमे वयसि प्रायः एतानि भवन्ति) थोड़ी आयुवाले पुरुषों की पहिली अवस्था में बहुधा इतने कार्य होते हैं (विभवसमृद्धिपरत्वं व्यञ्जनलाभः अव्याजं प्रभुत्वम्) ऐश्वर्यताः ठाटबाट में तत्पर अनेक प्रकार के भोजनों का लाभ छलरहित मालिकपन होता है॥६८॥

स्वङ्गानि धीपटुत्वं शक्तिर्दशनाः शनैर्विशीर्यन्ते ।
निखिलेन्द्रियाणि येषां चिरायुषस्ते नरा ज्ञेयाः ॥६९॥

अन्वयार्थौ—(येषाम् अंगानि सुन्दराणि धीपटुत्वं शक्तिः दशनाः शनैर्विशीर्यन्ते निखिलेन्द्रियाणि पूर्णानि ते मनुजाः चिरायुषो ज्ञेयाः) जिनके अंग तो सुन्दर और बुद्धि की चतुरता, पराक्रम, दांत धीरे धीरे उखड़ जायँ, सम्पूर्ण इंद्रिय पूरी होयँ वे मनुष्य बड़ी आयुवाले होते हैं॥६९॥

शुभलक्षणमङ्गेभ्यः सौन्दर्येणाधिकं मुखं यस्य ।
स्वज्ञातिप्राधान्यं प्राप्नोति स धान्यधनवत्त्वम् ॥७०॥

अन्वयार्थौ—(यस्य अंगेभ्यः शुभलक्षणं सौंदर्येण अधिकं मुखं स्वज्ञातिप्राधान्यं

सः पुरुषः धान्यधनवत्त्वं प्राप्नोति) जिसके अंग शुभलक्षणयुक्त होंय और सुन्दरता के योग्य अधिक सुख होय अपनी जाति में प्रधान होय सो पुरुष धनधान्यवान् होता है उसी को धन धान्य मिलता है।।७०।।

अतिकृष्णेष्वतिगौरेष्वतिपीनेष्वतिकृशेषु मनुजेषु ।
अतिदीर्घेष्वतिलघुषु प्रायेण न विद्यते सत्यम् ।।७१।।

अन्वयार्थौ—(अतिकृष्णेषुः अतिगौरेषु अतिपीनेषु अतिकृशेषु अतिदीर्घेषु अतिलघुषु मनुजेषु प्रायेण सत्यं न विद्यते) बहुत काले, बहुत गोरे, बहुत मोटे, बहुत दुबले बहुत लंबे, बहुत छोटे ऐसे मनुष्य बहुधा सच्चे नहीं होते हैं।।७१।।

चपलः स्थूलो रूक्षः पुरुषो घनमांसलः शिरोविचितः ।
स पुमान्वैतरणाख्यस्समुद्रमपि शोषयत्यखिलम् ।।७२।।

अन्वयार्थौ—(यः पुरुषः चपलः स्थूलः रुक्षः घनमांसलः शिरोविचितः स पुमान् वैतरणाख्यः अखिलं समुद्रमपि शोषयति) जो पुरुष चंचल, मोटा, रुखा, बहुत मांसवाला, दृढ शिर का है वह वैतरण कहाता है सो सब समुद्र को भी सोखनेवाला होता है।।७२।।

यस्य शरीरं पुष्टिं गृह्णात्यन्नेन येनकेनापि ।
स नरो दुंदुबकाख्य कलयति कल्याणवैराग्यम् ।।७३।।

अन्वयार्थौ—(यस्य शरीरं येनकेनपि अन्नेन पुष्टिम् गृह्णाति स नरः दुंदुबकाख्यः कल्याणवैराग्यं कलयति) जिसका शरीर जिस किसी अन्न करके मोटापन को पकड़े सो वह पुरुष दुंदुबक नामवाला है कल्याण और वैराग्य को करता है।।७३।।

सत्त्वं रजस्तमश्चेत्यमी नराणां त्रयो भवन्ति गुणाः ।
क्वचिदेकःकुत्र द्वौ त्रयः समं क्वापि दृश्यन्ते ।।७४।।

अन्वयार्थौ—(सत्त्वं रजः तमः इति अमी नराणां त्रयो गुणाः भवंति) सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण ये पुरुषों के तीन गुण होते हैं और (क्वचित् एकः कुत्र द्वौ त्रयः समं क्वापि दृश्यन्ते) कहीं एक, कहीं दो और कहीं तीनों बराबर दीख पड़ते हैं।।७४।।

यः सत्त्वगुणोपेतः स दयालुः सत्यवाक् स्थिरः सरलः ।
देवगुरुभक्तियुक्तो व्यसनेऽभ्युदये च कृतधैर्य्यः ।।७५।।

अन्वयार्थौ—(यः सत्त्वगुणोपेतः स दयालुः सत्यवाक् स्थिरः सरला देवगुरुभक्तियुक्तः व्यसने अभ्युदये च कृतधैर्यो भवति) जो सत्त्वगुणवाला पुरुष है

दयावान और सत्य बोलनेवाला स्थिरतायुक्त सीधा देवता और गुरु की भक्तिवाला, दु:ख और आनन्द में धीरज धरनेवाला होता है।।७५।।

काव्यकलासु प्रवणः कुलनारीकृतरतिस्सदा शूरः ।
प्रायेणैवं सततं रजोऽधिकः कथ्यते स पुमान् ।।७६।।

अन्वयार्थौ—(काव्यकलासु प्रवणः सदा कुलनारीकृतरतिः शूरः स पुमान् सततं रजोऽधिकः कथ्यते प्रायेण एवं भवति) जो काव्य बनाने में चतुर और कुल की स्त्री से सदा रति करनेवाला; शूरवीर होता है बहुधा सो निरन्तर रजोगुणी कहाता है।।७६।।

मूर्खस्तमोऽन्वितः स्यान्निद्रां कुर्वंश्च सालसः क्रोधी ।
एतैर्मिश्रैर्बहुशो भेदाश्चान्यैर्नृणां मिश्राः ।।७७।।

अन्वयार्थौ—(तमोऽन्वितः पुरुष मूर्खः निद्रां कुर्वन् सालसः क्रोधी स्यात्) तमोगुणयुक्त पुरुष मूर्ख और निद्रा करनेवाला और आलसी तथा क्रोधी होता है और (नृणाम् एतैर्मिश्रैः बहुशः अन्येऽपि मिश्राः भेदाः भवन्ति) पुरुषों के यही मिले हुए बहुधा और अनेक भेद होते हैं।।७७।।

प्रायो रजोगुणः सत्यात्प्राप्तोत्कर्षस्तमोगुणः कोपः ।
पुंसां विशेषतः पुनराख्यास्यामो ह्यग्रतः सत्त्वम् ।।७८।।

अन्वयार्थौ—(तमोगुणः प्राप्तोत्कर्षः रजोगुणः प्रायः कोपः स्यात्) तमोगुण की है अधिकता जिसमें ऐसा रजोगुण बहुधा कोप को प्राप्त होता है और (पुंसां सत्त्वम् अग्रतः विशेषतः पुनराख्यास्यामः) पुरुषों के सत्त्वगुण आगे विशेषरूप से कहेंगे।।७८।।

देहस्थितेषु संततमशुभेषु शुभेषु लक्षणेषु नृणाम् ।
ज्ञात्वाऽनवरभावं तत्फलमपि निर्दिशेत्प्राज्ञः ।।७९।।

अन्वयार्थौ—(नृणां देहस्थितेषु अशुभेशु वा शुभेषु लक्षणेषु संततम् अनवरतभावं ज्ञात्वा प्राज्ञः तत्फलम् अपि निर्दिशेत्) मनुष्यों के देह में स्थित जो है अशुभ वा शुभ लक्षण इनमें से निरंतर भाव जान करके पंडित उसका फल कहते हैं।।७९।।

बुद्धियुतो यो दीर्घो ह्रस्वो यो जायते नरो मूर्खः ।
पिङ्गः शुचिः सुशीलः कालाक्षो यस्तदाश्चर्यम् ।।८०।।

अन्वयार्थौ—(यः दीर्घः बुद्धियुतो भवति) जो लंबा है सो बुद्धियुक्त होता है और (यः ह्रस्वः नरः स मूर्खो जायते) जो छोटा पुरुष है सो मूर्ख होता है और (यः

पिङ्गः कालाक्षः शुचिः सुशीलः तत् आश्चर्यम्) जो कुछ पीली व काली आँखोवाला पवित्र और शीलवान् होता है यह बड़े आश्चर्य की बात है।।८०।।

यद्दन्तुरोऽपि मूर्खो रोमयुतो जायते यदल्पायुः ।
यन्निष्ठुरः स दीर्घस्तदद्भुतं जृम्भते भुवने ।।८१।।

अन्वयार्थौ—(यत् दन्तुरः अपि मूर्खः) जिसके बड़े दाँत हैं वह मूर्ख होय और (रोमयुतः यत् अल्पायुः जायते) रोमयुक्त है उसकी थोड़ी आयु होय और (यत् दीर्घः स निष्ठुरः) जो लंवा है सो निर्दय होय (भुवने तत् अद्भुत जृंभते) जगत् में यह बड़े अजरज की बात है अर्थात् बड़े दांतवाला जो विद्यावान् होना चाहिये और रौमवाला बड़ी आयुवाला होना चाहिए और जो लंवा है उसे दयावान् होना चाहिये और इससे विपरीत होय तो आश्चर्य करना चाहिये।।८१।।

न च दुर्भगः सुनेत्रः सुग्रीवो भारवाहको न स्यात् ।
रूक्षो नास्ति सुभोगी परुषत्वङ् नास्ति सुखसहितः ।।८२।।

अन्वयार्थौ—(सुनेत्रः दुर्भगो न स्यात्) सुन्दर नेत्रवाला कुरूप नहीं होता है और (सुग्रीवः भारवाहकः न स्यात्) सुन्दर गर्दनवाला बोझ ढोनेवाला नहीं होता है और (रूक्षः सुभोगी नास्ति) जो रूखा है सो सुन्दर भोगवाला नहीं होता है और (परुषत्वक् सुखसहितो नास्ति) कठोर त्वचावाला सुख पानेवाला नहीं होता।।८२।।

पृथुपाणिः पृथुपादः पृथुकर्णः पृथुशिराः पृथुस्कन्धः ।
पृथुवक्षाः पृथुजठरः पृथुभालः पूजितः पुरुषः ।।८३।।

अन्वयार्थौ—(अस्मिन् श्लोके क्रमान्वयः) बड़े हाथ, बड़े पांव, बड़े कान, बड़ा मस्तक, बड़े कंधे, बड़ी छाती, बड़ा पेट, बडा ललाटवाले से पुरुष पूजित अर्थात् पूजने योग्य होते हैं।।८३।।

रक्ताक्षं भजति श्रीः प्रलम्बबाहुं भजत्यधीशत्वम् ।
पीनाङ्गं भजति कृषिर्मांसोपचितं च सौभाग्यम् ।।८४।।

अन्वयार्थौ—(रक्ताक्षं श्रीः भजति) लाल नेत्रवाले को श्रीसेवन करती है और (अधीशत्वं प्रलंबबाहुं भजति) मालिकपना लंबी बाहूवाले को भजता है और (कृषिःपीनाङ्गं भजति) खेती मोटे शरीरवाले को भजती है और (सौभाग्यं मांसोपचित भजति) अच्छा भाग्य मांसल पुरुष को भजता है।।८४।।

सुश्लिष्टसंधिबन्धो यः कश्चिन्मांसलो मृदुः स्निग्धः ।
अतिसुन्दरः प्रकृत्या स सुखाढ्यो जायते प्रायः ।।८५।।

अन्वयार्थौ—(यः कश्चित् सुश्लिष्टसंधिबंधः मांसलः मृदुः स्निग्धः प्रकृ अतिसुन्दरः प्रायः सुखाढ्यो जायते) जिस किसी पुरुष के अच्छे मिले हुए जोड़ मां से भरे, कोमल, चिकने, रूप जिसका सुन्दर हो वह बहुधा सुखी होत है॥८५॥

स्निग्धतिलो मशकं वा चिह्नं वा भवति किमपि चान्यच्चेत्।
पुंसां दक्षिणभागे तच्छुभमित्याह भोजनृपः ॥८६॥

अन्वयार्थौ—(स्निग्धतिलः मशकं वा किमपि अन्यत् चिह्नं पुंसां दक्षिणभा भवति चेत् (अच्छा तिल मस्सा वा कोई और चिह्न पुरुष के दाहिने भाग में होय त (तत शुभम् इति भोजनृपः आह) वह शुभ है, यह राजा भोज ने क है॥८६॥

नखशङ्खकेशरोम्णि जिह्वायां लोचनास्यरदने च ।
नास्ति स्नेहो येषामकारणं सत्त्वमिह तेषाम् ॥८७॥

अन्वयार्थौ—(येषां नखशंखकेशरोम्णि जिह्वायां लोचनास्यरदने च स्ने नास्ति) जिसके नख शंख अर्थात् कनपटी बाल रोंगटे-जीभ-नेत्र-मुख-दांत इन सच्चिक्रणता नहीं होय (इह तेषाम् अकारणं सत्त्वम्) इस लोक में तिनके बिन कारण का पराक्रम होता है॥८७॥

इह भवति सप्तरक्तः षडुन्नतः पञ्चसूक्ष्मदीर्घो यः ॥
त्रिविपुललघुगंभीरो द्वात्रिंशल्लक्षणः स पुमान् ॥८८॥

अन्वयार्थौ—(इह यः सप्तरक्तः षडुन्नतः पंचसूक्ष्मः पञ्चदीर्घः त्रिविपुललघु गंभीरः स पुमान् द्वात्रिंशल्लक्षणो भवति) इस लोक में ७ तो लाल, ६ ऊंचे, ५ पतले ५ लंबे,३ चौड़े,३ छोटे,३ गहरे सो पुरुष ३२ लक्षणोंका होता है॥८८॥

नखचरणपाणिरसनादशनच्छदतालुलोचनान्तेषु ।
स्याद्यो रक्तः सप्तसु सप्ताङ्गां स लभते लक्ष्मीम् ॥८९॥

अन्वयार्थौ—(यः नखचरणपाणिरसनादशनच्छदतालुलोचनान्तेषु सप्तसु रक्त स्यात् स सप्ताङ्गां लक्ष्मीं लभते) जो नख-चरण-हाथ-जीभ-होठ, तालु-नेत्रों के अं इन सात अंगों में ललाई होय तो वह सात अंगयुक्त लक्ष्मी को प्राप्त हो है॥८९॥

षट्कं कक्षावक्षः कृकाटिकानासिकानखास्यमिति ।
यस्येदमुन्नतं स्यादुन्नतयस्तस्य जायन्ते ॥९०॥

अन्वयार्थौ—(यस्य इदं षट्कम् कक्षा वक्षः कृकाटिका नासिका नखाः आस्

इति उन्नतं भवति तस्य उन्नतयः जायन्ते) जिस पुरुष की बगल, छाती, गर्दन की घेंटी, नाक, नख, मुख ये ६ अंग ऊंचे होय तिसको उच्चपद अर्थात् बढ़वारी प्राप्त होती है॥९०॥

दन्तत्वक्केशांगुलिपर्वनखं चेति पञ्च सूक्ष्माणि ।
धनलक्षणैरुपेता भवन्ति ते प्रायशः पुरुषाः ॥९१॥

अन्वयार्थौ—(येषां पुरुषाणां दंतत्वक्केशांगुलिपर्वनखाः एतानि पंच सूक्ष्माणि ते पुरुषाः प्रायशः धनलक्षणैः उपेताः भवन्ति) जिन पुरुषों के दाँत, त्वचा, बाल, अंगुलियों के पोरुवे और नख, ये पांच पतले होंय तो वे पुरुष बहुधा धनलक्षणयुक्त होते हैं अर्थात् धनवान् होते हैं॥९१॥

नयने कुचौ च रसनाहनुभुजमिति यस्य पञ्चकं दीर्घम् ।
दीर्घायुर्वित्तकरः पराक्रमी जायते स नरः ॥९२॥

अन्वयार्थौ—(यस्य इति पंचकं दीर्घं नयने कुचौ रसना हनु भुजौ स नरः पराक्रमी वित्तकरः दीर्घायुर्जायते) जिसके ये पाँच अंग बड़े होंय, नेत्र चूची, जीभ कपोलों के हाड़ और भुजा सो मनुष्य वलवान् धनवान् बड़ी आयुवाला होता है॥९२॥

भालमुरो वदनमिति त्रितयं भूमीश्वरस्य विपुल स्यात् ।
ग्रीवा जङ्घा मेहनमिति त्रिकं लघु महीशस्य ॥९३॥

अन्वयार्थौ—(भूमीश्वरस्य एतत्त्रितयं भालम् उरः वदनम् इति विपुलं स्यात्) राजा के ये तीन ललाट १ छाती २ मुख ३ चौड़े होते हैं और (महीशस्य एतत् त्रयं ग्रीवा जंघा मेहनम् इति लघु स्यात्) राजा की ये तीन गर्दन जाँघ इंद्री आदि छोटी होती है॥९३॥

यस्य स्वरोऽथ नाभिः सत्त्वमिदं च त्रयं गंभीरं स्यात् ।
सप्तांबुधिकांच्या हि भूमेः स करग्रहं कुरुते ॥९४॥

अन्वयार्थौ—(यस्य स्वरः अथ नाभिः सत्त्वम् इदं त्रयं गभीरं स्यात्) जिसका शब्द टूंडी पराक्रम ये तीन गहरे होंय तो (स सप्ताम्बुधिकांच्याः भूमेः करग्रह कुरुते) सो ७ समुद्र हैं कांची शुद्रघंटिका अर्थात् कटिबंधिनी जिसके ऐसी पृथ्वी को व्याहता है अर्थात् पृथ्वी का मालिक होता है॥९४॥

स्मरशास्त्रविनिर्दिष्टाः शशो वृषो हय इति त्रयो भेदाः ।
जायन्ते मनुजानां क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ॥९५॥

अन्वयार्थौ—(स्मरशास्त्रविनिर्दिष्टाः मनुजानां शशः वृष हय इति त्रयो भेदा जायन्ते) कामशास्त्र के कहे हुए मनुष्यों के खरगोश, बैल, घोड़ा ये तीन भेद होते हैं और (क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः) उनके क्रम से लक्षण हम कहते हैं।।९५।।

लिङ्गं षडंगुलानि स्यादष्टौ वा शशः स्फुटं स पुमान् ।
नव दश चैकादश वा तदपि पुनर्यस्य स वृषाख्यः ।।९६।।

अन्वयार्थौ—(यस्य लिंग षट् वा अष्टौ अंगुलानि सः पुमान्स्फुटं शशः स्यात्) जिसका लिंग ६ वा ८ अंगुल का प्रगट होय वह खरगोश की संज्ञा का पुरुष होता है और (यस्य नव वा एकादश अंगुलानि तदपि लिंगं स पुरुषः वृषाख्यः स्यात्) जिसका ९-१०-११ अंगुल का लिंग होय तो पुरुष बैल की संज्ञा का होता है।।९६।।

द्वादश वा लिङ्गं स्यात्त्रयोदशादीनि चांगुलानि भवेत् ।
जातोद्भवस्य मानं हयाख्यया निगदितः सोऽपि ।।९७।।

अन्वयार्थौ—(यस्य जातोद्भवस्य लिंगं द्वादश वा त्रयोदशादीनि अंगुलानि मानं स्यात्) जिस पुरुष का आदि समय से ही लेकर के लिंग १२-१३ आदि अंगुल के प्रमाण का होय (सः अपि हयाख्यया निगदितः) उसको भी घोड़े की संज्ञा का कहा है।।९७।।

रतिषु शशवृषहयानां सह भृत्यादिभिरकृत्रिमा प्रीतिः ।
मेहनवराङ्गयोश्चेत्परस्परेण प्रमाणैक्यम् ।।९८।।

अन्वयार्थौ—(शशवृषहयानां रतिषु मेहनवराङ्गयोः प्रमाणैक्यं चेत्) खरगोश बैल घोड़ा पुरुषों की रति में इंद्री और योनि के एक समान प्रमाण होवे तो (भृत्यादिभिः सह परस्परेण अकृत्रिमा प्रीतिर्भवति) सेवक आदि के साथ अकृत्रिम प्रीति होती है।।९८।।

अन्नं क्षुधि पानं तृषि पथिश्रमे वाहनं भवेद्रक्षा ।
इति भवति यस्य समये धन्यं प्रवदंति तं सन्तः ।।९९।।

अन्वयार्थौ—(यस्य क्षुधि समये अन्नं तृषि पानं पथिश्रमे वाहनं भवेत्) जिसके भूख के समय में तो अन्न और प्यास में जल और थकावट में सवारी होय तो (इति रक्षा भवेत्) ये बड़ी रक्षा होती है और (सन्तः त पुरुषं धन्यं प्रवदंति) पंडित उस पुरुष को धन्य कहते हैं।।९९।।

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकाऽपरनाम्नि स्त्रीनरलक्षणशास्त्रे शरीराधिकारो द्वितीयः ।।२।।

अङ्गप्रत्यङ्गयुतं सकलं शारीरमिदमिति प्रोक्तम् ।
आवर्तप्रभृतीनामनुक्रमाल्लक्षणं ब्रूमः ॥१॥

अन्वयार्थौ—(इति अंगप्रत्यंगयुतं सकलम् इदं शरीरं प्रोक्तम् आवर्त्तप्रभृतीनां लक्षणं ब्रूमः) अब क्रम से चक्र वा भौंरी आदि के लक्षण हम कहते हैं॥१॥

रोमत्वग्बालभवः स्यादावर्तः शुभस्त्रिधा वपुषिः ।
शरतो दक्षिणवलितः स्निग्धो व्यक्तः परो न शुभः ॥२॥

अन्वयार्थौ—(वपुषिरोमत्वग्बालभवः आवर्त्तः त्रिधा स्यात्) शरीर में रोंगटे त्वचा बाल इनसे उत्पन्न हुई भौंरी तीन प्रकार की होती है और (दक्षिणावलितः स्निग्धः व्यक्तः शस्तः परो न शुभः) जो दाहिनी ओर की चिकनी अच्छी प्रकट होय तो शुभ है और जो बाईं ओर होय तो अशुभ है॥२॥

करतलपदश्रुतियुग्मे नाभौ वा त्वग्भवो य आवर्तः ।
स स्यादपरौ द्वावपि विद्भिर्ज्ञेयौ यथास्थानम् ॥३॥

अन्वयार्थौ—(करतलपदश्रुतियुग्मे वा नाभौ यः त्वग्भवः सः आवर्तः स्यात्) मनुष्यों के दोनों हाथ, दोनों पाँव, दोनों कान और टूँडी में जो है वह त्वचा से उत्पन्न भौंरी होती है और (अपरौ द्वौ अपि विद्भिः यथास्थानं ज्ञेयौ) जो और भी दो हैं उनके भी लक्षण विद्वानों को यथास्थान जैसी जगह है वैसे जानने चाहिये॥३॥

सव्यापसव्यभागे शिरसि स्याद्यस्य दक्षिणावर्तः ।
श्वेतालपत्रलक्ष्मा लक्ष्मीः करवर्तिनी तस्य ॥४॥

अन्वयार्थौ—(यस्य शिरसि सव्यापसव्यभागे दक्षिणावर्तः स्यात्) जिसके मस्तक में वा दहिने विभाग में जो दक्षिणावर्त चक्र वा भौंरी होय (तस्य श्वेतातपत्रलक्ष्मा लक्ष्मीः करवर्तिनी भवति) तिसके उज्ज्वल छत्र की शोभायुक्त लक्ष्मी हाथ में आती है॥४॥

रोमावर्तः स्निग्धो भ्रूयुगमध्ये प्रदक्षिणो व्यक्तः ।
यस्योर्णाख्यः पूर्णः सोऽम्बुधिकाञ्चेर्भुवो भर्ता ॥५॥

अन्वयार्थौ—(यस्य भ्रूयुगमध्ये व्यक्तः प्रदक्षिणः स्निग्धः रोमावर्तः पूर्णः ऊर्णाख्यः स्यात्) जिस पुरुष की दोनों भौंह के बीच में प्रगट दाहिनी ओर झुकी हुई अच्छी भौंरी वा चक्र पूरा ऊर्णा नामका होय (सः अम्बुधिकाञ्चेर्भुवः भर्ता भवति) सो पुरुष समुद्र है कांची (कटिबन्धिनी) जिसकी ऐसी पृथ्वी का स्वामी अर्थात् संपूर्ण पृथ्वी का पालनेवाला होता है॥५॥

भुजयुग्मे यस्य स्यादावर्तद्वितयमङ्गदप्रतिमम् ।
नियतं सोऽखिलभूमिं पुरुषो निजवाहनां वहति ॥६॥

अन्वयार्थौ—(यस्य भुजयुग्मे अंगदप्रतिमम् आवर्तद्वितयं स्यात्) जिसकी दोनं भुजाओं के बीच में बाजू का सा दो चक्र चिह्न वा भौंरी होंय तो (सः पुरुषः नियतं अखिलभूमिं निजवाहनां वहति) सो पुरुष निश्चय करिके संपूर्ण पृथ्वी को अपनं भुजाओं से धारण करे॥६॥

यस्य कराम्भोजतले दक्षिणवलितो भवेदतिव्यक्तः ।
परिचितशौचाचारो धर्मपरः स्यात्स वित्ताढ्यः ॥७॥

अन्वयार्थौ—(यस्य कराम्भोजतले दक्षिणवलितः अतिव्यक्तः भवेत्) जिसके करकमल अर्थात् हथेली में दाहिनी ओर चिह्न वा सांथिया बहुत प्रकट होय तो (स परिचितशौचाचारः धर्मपरः वित्ताढ्यः स्यात्) सो पुरुष जाना है पवित्रता का आचार जिसने ऐसा धर्म में तत्पर और धनवान् होय॥७॥

भाग्यवतां पंचांगुलिशिरस्सु सौख्याय दक्षिणावर्तः ।
प्रायः पुंसां वामावर्तो दुःखायः पुनरेषः ॥८॥

अन्वयार्थौ—(भाग्यवतां पुंसां पंचांगुलिशिरस्सु दक्षिणावर्तः सौख्याय भवति) धनवान् पुरुषों की पांचो अंगुलियों के अग्रभाग में दाहिनी ओर को झुका हुआ चक्र वा चिह्न अर्थात् भौंरी सुखदायक होती है और (पुनः एष वामावर्तः प्रायः दुःखाय भवति) जो वही बाँई ओर को झुकी हुई भौंरी होय तो बहुधा दुःखदाई होती है॥८॥

श्रुतियुगनाभ्यावर्ताः प्रदक्षिणाः श्रेयसे भवंति नृणाम् ।
चूडावर्तोऽप्येकः श्रेष्ठतरो दक्षिणः शिरसि ॥९॥

अन्वयार्थौ—(नृणां प्रदक्षिणाः श्रुतियुगनाभ्यावर्ताः श्रेयसे भवन्ति) मनुष्यों के दाहिनी ओर झुके हुए दोनों कान और नाभि के चक्र शुभकारक होते हैं और (नृणां शिरसि एकः अपि चूडावर्तः दक्षिणः श्रेष्ठातरो भवति) मनुष्यों के शिर में एक ही चूडावर्त्त नाम चक्र दाहिनी ओर का बहुत श्रेष्ठ होता है॥९॥

शीर्षे वामे भागे वामावर्तो भवेत्स्फुटो यस्य ।
स क्षुत्क्षामो भिक्षां रूक्षां निर्लक्षणो लभते ॥१०॥

अन्वयार्थौ—(यस्य शीर्षे वामे भागे वामावर्तः स्फुट। भवेत्) जिसके शिर में बाईं ओर की चक्र अर्थात् भौंरी प्रकट होय तो (क्षुत्क्षामः सः निर्लक्षणः रूक्षां भिक्षां लभते) भूँख का मारा अभागा रूखी भीख को प्राप्त होता है॥१०॥

वामो दक्षिणपार्श्वे प्रदक्षिणो वामपार्श्वके यस्य ।
न तु तस्य चरमकाले भोगो नास्त्यत्र सन्देहः ॥११॥

अन्वयार्थौ—(यस्य दक्षिणपार्श्वे वामः वामपार्श्वके प्रदक्षिणः भवति तस्य चरमकाले भोगो नास्ति अत्र सन्देहो न तु) जिसकी दाहिनी ओर तो बाँई होय और बाँई ओर दाहिनी होय उसको पिछली अवस्था में भोग नहीं होय इसमें सन्देह नहीं॥११॥

अन्तर्ललाटपट्टं व्यक्तावर्तो ललामवद्यस्य ।
वामोऽथ दक्षिणो वा स्वल्पायुर्दुःखितश्च स्यात् ॥१२॥

अन्वयार्थौ—(यस्य ललाटपट्टम् अन्तःललामवत् व्यक्तावर्तः वामः अथवा दक्षिणः भवति) जिसके लिलार के ऊपर प्रकट है भौंरी जिसमें ऐसा रत्न के समान बाँयाँ अथवा दाहिने चक्र होय तो (सः स्वल्पायुः दुःखितश्च स्यात्) वह थोड़ी आयुवाला और दुःखी होय॥१२॥

यस्यावर्तद्वितयंसुव्यक्तं भवति पादतलमध्ये ।
नक्तंदिनमतिदीनो भूमिं स भ्रमति मतिहीनः ॥१३॥

अन्वयार्थौ—(यस्य पादतलमध्ये आवर्तद्वितयं सुव्यक्तं भवति) जिसके पांव के तलुवे मे दो चक्र प्रकट होंय तो (अतिदीनः मतिहीनः स नक्तंदिनं भूमिं भ्रमति) सो अतिदीन अर्थात् बहुत गरीब मतिहीन मूर्ख सा रातदिन पृथ्वी में घूमता रहे॥१३॥

अथ गतिकथनम्

सुखसंचारितपादा मयूरमार्जारसिंहगतितुल्या ।
दीर्घक्रमा सुलीला भाग्यवतां स्याद्गतिः सुभगा ॥१४॥

अन्वयार्थौ—(भाग्यवतां सुखसंचारितपादा मयूरमार्जारसिंहगतितुल्या दीर्घक्रमा सुलीला सुभगा गतिः भवति) भाग्यवानों का सुखसे हैं पैरों का चलना जिसमें मोर-बिल्ली-सिंह इनकी सी चाल के समान लम्बा है ढंग का रखना जिसमें अच्छी लीलायुक्त सुन्दर चाल होती है॥१४॥

गतिभिर्भवन्ति तुल्या ये च नरा द्विरदनकुलहंसानाम् ।
वृषभस्यापि समास्ते सततं धर्मार्थकामपराः ॥१५॥

अन्वयार्थौ—(ये गतिभिः द्विरदनकुलहंसानां वृषभस्यापि समाः भवन्ति) जो

मनुष्य चाल से हाथो-नौला-हंस-बैल की सी समान होते हैं (ते नराः सत धर्मार्थकामपराः भवन्ति) वे मनुष्य निरन्तर धर्म, अर्थ काम में तत्पर हो हैं॥१५॥

गोमायुकरभरासभकृकलासशशकभेकमृगैः ।
येषां गतिः समाना ते गतसुखराजसन्मानाः ॥१६॥

अन्वयार्थौ—(येषां मतिः गोमायुकरभरासभकृकलासशशकभेकमृगैः समाना गतसुखराजसन्मानाः भवन्ति) जिनकी चाल गीदड़-ऊँट-गधा-गिरगिट-खरगो मेंढक-हिरण इनके समान होय तो वे गया सुख और राजसन्मान जिनका ऐसे हो हैं॥१६॥

विषमा विकटा मन्दा लघुक्रमा चञ्चला द्रुता स्तब्धा ।
आभ्यन्तराऽथ बाह्या लग्नपदा वा गतिर्न शुभा ॥१७॥

अन्वयार्थौ—(यस्य विषमा विकटा मंदा लघुक्रमा चंचला द्रुता स्तब्ध आभ्यंतरा अथ बाह्या वा लग्नपदा ईदृशी गतिः शुभान) जिसकी ऊँची नीची भयकारी, धीरजकी, छोटी डग, फुरतीकी, शीघ्र, रुकरुक के भीतर बाहर जिस पांव भिड़ते जायँ, ऐसी चाल अशुभ अर्थात् बुरी होती है॥१७॥

धनिनां गमनं स्तिमित समाहितं शब्दहीनमस्तब्धम् ।
ह्रस्वप्लुतानुविद्धं विलम्बितं स्याद्दरिद्राणाम् ॥१८॥

अन्वयार्थौ—(धनिनां गमनं स्तिमितं समाहितं शब्दहीनं अस्तब्धं स्यात्) धनवानों की चाल अच्छी एक सी शब्द करिके हीन रुकावट की नहीं ऐसी होती और (ह्रस्वप्लतानुविद्धं विलंबितं दरिद्राणां स्यात्) छोटी छोटी डगयुक्त, धीरे धी ऐसी चाल दरिद्रियों की होती है॥१८॥

अथ छायाकथनम्

छादयति नरस्याङ्गे लक्षणमत्यन्ततो नरच्छाया ।
सा पार्थिवी तथाऽऽप्या ज्वलनभवा वायवी व्योम्नी ॥१९॥

अन्वयार्थौ—(नरच्छाया नरस्य अंगे लक्षणम् अत्यन्ततः छादयति सा छाय पार्थिवी तथा आप्या ज्वलनभवा वायवी व्योम्नी च भवंति) मनुष्य की छाया अर्था तेज मनुष्य के अंग में लक्षण को ढक देय सो छाया पृथ्वी से जल से अग्नि से आका और पवन से उत्पन्न होती है॥१९॥

भवति शुभाशुभफलदा निजतेजस्तन्वती बहिर्देहात् ।
विमलस्फटिकटघान्तर्विलसति सा दीपकलिकेव ॥२०॥

अन्वयार्थौ—(छाया शुभाशुभफलदा भवति) छाया शुभ और अशुभ फलकी देनेवाली होती है और (देहात् बहिर्निजतेजस्तन्वती भवति) देह से बाहिर वही छाया अपने तेज को फैलाती है और (सा विमलस्फटिकघटान्तः दीपककलिका इव विलसति) कैसे कि निर्मल स्फटिक के घड़े में दीपक की ज्योति जैसे प्रकाशवान् अर्थात् शोभित होती है॥२०॥

स्निग्धद्विजनखलोमत्वक्केशा पार्थिवी स्थिरा रेखा ।
नयनहृदयभिरामा दत्ते धनधर्मसुखभोगान् ॥२१॥

अन्वयार्थौ—(स्निग्धद्विजनखलोमत्वक्केशा रेखा स्थिरा नयनहृदयाभिरामा एतादृशी पार्थिवी छाया धनधर्मसुखभागान् दत्ते) अच्छे दांत, नख, रोम, त्वचा, बाल और स्थिर रेखा जिसमें होते हैं और नेत्र चित्त को सुन्दर ऐसी पार्थिवी छाया धन धर्म और सुख भोग इनको देनेवाली होती है॥२१॥

आप्याऽभिनवाम्भोदप्रच्छन्नजलसन्निभा छाया ॥
सर्वार्थसिद्धिजननी जनयति सौभाग्यमिह पुंसाम् ॥२२॥

अन्वयार्थौ—(अभिनवाम्भोदप्रच्छन्नजलनिभा छाया आप्या) नवीन जो मेघ जिससे गिरा जो जल उसकी तुल्य जो छाया है उसका नाम आप्या है (सा छाया सर्वार्थसिद्धिजननी) सो छाया सर्व अर्थ की सिद्धि को उत्पन्न करनेवाली है (इहं पुंसां सौभाग्यं जनयति) वह इस लोक में पुरुष को शुभग बनाती है॥२२॥

ज्वलनप्रभा च बालार्कप्रवालकनकाग्निपद्मरागनिभा ।
पौरुषपराक्रमैः सा जयमर्थं तनुभृतां तनुते ॥२३॥

अन्वयार्थौ—(या बालार्कप्रवालकनकाग्निपद्मरागनिभा भवति) जो उदय हुआ सूर्य मूंगा सोना अग्नि रत्न इनकी तुल्य होय (सा छाया ज्वलनप्रभा भवति) सो छाया ज्वलनप्रभा नाम है (सा ज्वलनप्रभा तनुभृतां पौरुषपराक्रमैर्जयम् अर्थं तनुते) वही ज्वलनप्रभा छाया मनुष्यों के पौरुष और पराक्रम करके जय और अर्थ को फैलाती है॥२३॥

रूक्षा मलिना दीना चला खला मारुती भवेच्छाया ।
वधबन्धबन्धनपरा वित्तविनाशं नृणां कुरुते ॥२४॥

अन्वयार्थौ—(छाया रूक्षा मलिना दीना चला खला सा छाया मारुती भवति) जो छाया मैली, हीन, चलायमान, बुरी इनकी तुल्य होय सो छाया मारुती नाम है

(सा छाया वधबन्धबन्धनपरा नृणां वित्तविनाशं कुरुते) सो छाया मारण और बंधन को करनेवाली और मनुष्यों के धन का नाश करनेवाली है।।२४।।

स्वच्छा स्फटिकमणिनिभा प्रोद्दामा देहिनामिह व्योम्नी ।
प्रायः श्रेयोनिधिसुखधनसुतसौभाग्यदा पुंसाम् ।।२५।।

अन्वयार्थौ—(पुंसां या छाया स्वच्छा स्फटिकमणिनिभा प्रोद्दामा सा छाया व्योम्नी) पुरुषों की जो छाया निर्मल स्फटिक मणिनिभा तुल्य अत्यन्त सुंदर ऐसी होय सो व्योम्नी नाम छाया है (सा छाया इह देहिनां प्रायः श्रेयोनिधिसुखधनसुतसौभाग्यदा भवति) सो छाया मनुष्यों को बहुधा कल्याण लक्ष्मी, सुख, धन, पुत्र, सौभाग्य इनके देनेवाली है।।२५।।

अर्काच्युतेन्द्रयमशशिसदृशाश्छायास्तु लक्षणैश्च फलैः ।
अन्याः पञ्च पुनस्ताः प्रवदंत्यपरे समा नैतत् ।।२६।।

अन्वयार्थौ—(अर्काच्युतेन्द्रयमशशिसदृशाः अन्याः पंच छायाः सन्ति लक्षणैः फलैश्च पुनः अपर ताः समा इति प्रवदन्ति एतत् न) सूर्य, विष्णु, इंद्र, यम चंद्रमा इनकी तुल्य ये और पांच छाया हैं वे लक्षणों और फलों करिके दूसरे मतवाले इनको समान संपत्तिवाले कहते हैं परंतु यह बात नहीं किन्तु इनके पृथक् पृथक् फल हैं।।२६।।

अथ स्वरः

स्निग्धः स्वरोऽनुमोदी निर्ह्लादी खण्डितः कलो मन्द्रः ।
तारः स्वरश्च विपुलः पुंसां संपत्करः सततम् ।।२७।।

अन्वयार्थौ—(पुंसां स्निग्धः स्वरः अनुमोदी निर्ह्लादी खंडितः कलः मन्द्रः तारः स्वरः विपुलः सततं संपत्करो भवति) पुरुषों की अच्छी जो बोली है सोई प्रसन्न करती है। सारसकी कुछ कही कुछ न कही मीठी अप्रकट मृदंग की सी बहुत ऊंची बड़ी ये सब निरन्तर संपत्ति की करनेवाली हैं।।२७।।

दुन्दुभिवृषभाम्भोधरमृदंगशिखिशबररथाङ्गैर्भवति ।
यस्य स्वरः समानः स भूपतिर्भवति भोगाढ्यः ।।२८।।

अन्वयार्थौ—(यस्यः स्वरः दुन्दुभिवृषभाम्भोधरमृदंगशिखिशबररथाङ्गैःसमानः भवति सः भूपतिः भोगाढ्यो भवति) जिसकी बोली नगारा, बैल, मेघ, मृदंग, मोर, हिरण, चकवा, इनकी तुल्य होय सो राजा और भोगी होता है।।२८।।

भिन्नः क्षीणः क्षामो विक्रुष्टो गद्गदस्वरो दीनः ।
रूक्षो जर्जरितोऽपि च निस्वानां निःस्वनः प्रायः ॥२९॥

अन्वयार्थौ—(निःस्वानां स्वरः भिन्नः क्षीणः क्षामः विकुष्टः गद्गददीनः रूक्षः जर्जरितः प्रायः निस्वनः भवति) दरिद्रियों को बोली फूटी, टूटी, कुछ कही न कही बहुत धीरे की दुवले मनुष्य की सी खैंची हुई बड़े जोर से, रुक रुक के, गरीबी से रूखी सी, बूढों की सी ऐसी बोली बहुधा दरिद्रियों की होती है॥२९॥

यदि वृककाकोलूकप्लवगोष्ट्रक्रोष्टुरासभवराहैः ।
तुल्यः स्वरो न शस्तो विशेषतो हि स्वरो दुष्टः ॥३०॥

अन्वयार्थौ—(यदि स्वरः वृककाकोलूकप्लवगोष्ट्रक्रोष्टुरासभवराहैः तुल्यो भवति स न शस्तः विशेषतः स्वरः दुष्टो भवति) जिसका स्वर भेड़िया, कौवा, उलूक, बंदर, ऊंट, गीदड़, गधा, सूअर इनकी सी तुल्य जो होय तो अच्छा नहीं है और इनसे अधिक स्वरवाला दुष्ट होता है॥३०॥

अथ गन्धः

गन्धो भुवि मनुजानां प्रजायते नासिकेन्द्रियग्राह्यः ।
श्वासस्वेदादिभवो ज्ञेयः स शुभाशुभो द्विविधः ॥३१॥

अन्वयार्थौ—(भुवि मनुजानां नासिकेन्द्रियग्राह्यः गन्धः प्रजायते श्वासस्वेदादि भवः गन्धः स शुभाशुभो द्विविधो ज्ञेयः) पृथ्वी में मनुष्यों की गन्ध नासिका इंद्रिय करिके लीनी जाय ऐसी जो गन्ध होय सो श्वास और पसीना आदि से जो उत्पन्न गन्ध सोई गन्ध शुभ और अशुभ दो प्रकार की जानिये॥३१॥

कर्पूरागुरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगन्धाः ।
द्विपमदगन्धा भूमौ पुरुषाः स्युर्भोगिनः प्रायः ॥३२॥

अन्वयार्थौ—(कर्पूरागुरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगंधाः वा द्विपमदगन्धाः भूमौ प्रायः भोगिनः स्युः) कर्पूर, अगर, चंदन, कस्तूरी, चमेली, तमाल अर्थात् आमनूस के पत्ते की सी वा हाथी के मद की सी गंध जिन मनुष्यों की पृथ्वी में होय वे मनुष्य बहुधा भोगी होते हैं॥३२॥

मत्स्याण्डपूतिशोणितनिम्बवसाकाकनीडबकगन्धाः ।
दुर्गन्धाश्च नरास्ते दुर्भगतानिः स्वताभाजः ॥३३॥

अन्वयार्थौ—(मत्स्याण्डपूतिशोणितनिम्बवसाकाकनीडबकगन्धाः ते नराः

दुर्गन्धाः प्रायः दुर्भगतानिःस्वताभाजो भवन्ति) जिनकी गंध मच्छी के अण्डे सड़े रुधिर, नीम, चरबी, कौवे के अण्डे, बगुले इनके तुल्य होय वे मनुष्य बुरे गंधवाले हैं, बहुधा कुरूप और दरिद्रता के भोगनेवाले होते हैं।।३३।।

अथ वर्णः

गौरः श्यामः कृष्णो वर्णः संभवति देहिनां त्रेधा ।
आद्यौ द्वावपि शस्तौ शुभो न कृष्णो न सङ्कीर्णः ।।३४।।

अन्वयार्थौ—(देहिनां वर्णः त्रेधा संभवति) मनुष्यों के शरीर का रंग तीन प्रकार का होता है जैसे—(गौरः श्यामः कृष्णः द्वौ अपि आद्यो शस्तौ) गोरा, सांवरा, काला जो आदि के दोनों हैं सो अच्छे हैं और (कृष्णः न शुभः वा संकीर्णः शुभो न) काला अच्छा नहीं है और कुछ काला कुछ गोरा यह भी शुभ नहीं है।।३४।।

पङ्कजकिञ्जल्कनिभो गौरः श्यामः प्रियंगुकुसुमसमः ।
कृष्णस्तु कज्जलाभः स्निग्धः शुद्धोऽपि नो शस्तः ।।३५।।

अन्वयार्थौ— (पङ्कजकिंजल्कनिभः गौरः) कमल के फूल के जीरे के तुल्य तो गोरा और (प्रियंगुकुसुमसमः श्यामः) धाय के फूल के तुल्य सांवरा और (कज्जलाभः कृष्णः) काजल के तुल्य जो काला है और (स्निग्धः शुद्ध अपि कृष्णः नो शस्तः) चिकना चमकना जो काला है सो अच्छा नहीं है।।३५।।

अथ सत्त्वम्

व्यसने वाभ्युदये वा गतशङ्काशोकमुकुलितोत्साहम् ।
उन्मीलनधीरत्वं गंभीरमिह कीर्त्यते सत्त्वम् ।।३६।।

अन्वयार्थौ—(व्यसने वा अभ्युदये वा गतशंकाशोकमुकुलितोत्साहम् उन्मीलनधीरत्वम् इह सत्त्वं गंभीरं कीर्त्यते) दुःख में वा सुख में वा गई है शंका, शोक रहित, उत्सव में प्रसन्नता और धीरज होय तो इस लोक में ऐसे सत्त्व को गंभीर कहते हैं।।३६।।

एकमपि सत्त्वमेतैः सर्वैरप्यस्ति लक्षणैस्तुल्यम् ।
यस्मिन्नपि मनुजानां न कदाचन दुर्लभा लक्ष्मीः ।।३७।।

अन्वयार्थौ—(मनुजानां मध्ये यस्मिन् एतैः सर्वैरपि लक्षणैस्तुल्यमेकमपि सत्त्वमस्ति) मनुष्यों के बीच जिनमें पूर्वोक्त इतने सब लक्षणों से तुल्य एकमात्र सत्त्व है (तस्य कदाचन लक्ष्मीः दुर्लभा न) उसे तो कभी लक्ष्मी दुर्लभ नहीं है॥३७॥

त्वचि भोगा मांसे सुखमस्थिषु धनमीक्षणेषु सौभाग्यम् ।
यानं गतौ स्वरे स्यादाज्ञा सत्त्वे पुनः सर्वम् ॥३८॥

अन्वयार्थौ—(त्वचि भोगाः मांसे सुखम् अस्थिषु धनम् ईक्षणेषु सौभाग्यम् गतौ यानम् स्वरे आज्ञा पुनः सत्वं सर्वं स्यात् त्वचा में जो सत्त्व सो भोगों को-मांस में, सुखों को, हाड़ों में धन को, नेत्रों से सौभाग्य को, चलने में सवारी को, शब्द में आज्ञा को फिर भी जो कुछ है सो सब सत्त्व में ही है॥३८॥

सौभाग्यमिव स्त्रीणां पुरुषाणां भूषणं भवति सत्त्वम् ।
तेन विहीना भुवने भवन्ति परिभवपदं प्रायः ॥३९॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां सौभाग्यमिव पुरुषाणां सत्त्वं भूषणं भवति भुवने तेन विहीनाः प्रायः परिभवपदं भवन्ति) स्त्रियों का सौभाग्य जैसे भूषण है, ऐसे ही पुरुषों को सत्त्व भूषण है, जगत में जो सत्त्व करिके हीन हैं वे बहुधा निरादर का पद होते हैं॥३९॥

वर्णः शुभो गतेः स्याद्वर्णादपि शुभतरः स्वरः पुंसाम् ।
अतिशुभतमं स्वरादपि सत्त्वं सत्त्वाधिका धन्याः ॥४०॥

अन्वयार्थौ—(पुंसां गतेः वर्णः शुभः वर्णादपि स्वरः शुभतरः स्यात् स्वरात् अपि अतिशुभतमं सत्त्वम् तथा-सत्त्वाधिकाः पुरुषाः धन्याः) पुरुषों की गति से तो वर्ण शुभ है, वर्णों से स्वर अत्यंत उत्तम (अच्छा) है स्वर से भी उत्तम सत्त्व है और जिनमें सत्त्व अधिक है वे ही पुरुष धन्य हैं॥४०॥

वक्त्रानुगतं रूपं रूपानुगतं नृणां भवति वित्तम् ।
वित्तानुगतं सत्त्वं सत्त्वानुगता गुणाः प्रायः ॥४१॥

अन्वयार्थौ—(नृणां वक्त्रानुगतं रूपम्-रूपानुगतं वित्तम्-वित्तानुगतं सत्त्वं-प्रायः सत्त्वानुगताः गुणाः भवंति) मनुष्यों के मुख के तुल्य तो रूप है और रूप के तुल्य वित्त है और वित्त के तुल्य सत्त्व है और बहुधा सत्त्व के ही तुल्य गुण भी होते हैं॥४१॥

इह सत्त्वमेव मुख्यं निखिलेष्वपि लक्षणेषु मनुजानाम् ।
सद्भावो भवति पुनश्चिंता शान्तिं समुपयाति ॥४२॥

अन्वयार्थौ—(इह मनुजानां निखिलेषु लक्षणेषु अपि सत्त्वमेव मुख्यम्) इस लोक में मनुष्यों के इन सब लक्षणों में सत्त्व ही लक्षण मुख्य है और (पुनः सद्भावो भवति) इसमें सद्भाव अर्थात् अच्छा विचार होता है और (चिंता शान्तिं समुपयाति) चिंता शांत हो जाती है।।४२।।

नापि तु येषां नमनं मनोविकारं कथंचनाभ्येति ।
आपद्यपि संपद्यपि ते सत्त्वविभूषिताः पुरुषाः ।।४३।।

अन्वयार्थो—(येषां नमनं न तु-आपद्यपि संपद्यपि मनोविकारं कथं च अभ्येति) जिनका झुकना नहीं है, आपत्ति में और संपत्ति जिनके मन को कभी विकार नहीं होता है (ते पुरुषाः सत्त्वविभूषिताः भवंति) वे पुरुष सत्त्वविभूषित होते हैं अर्थात् सत्त्व ही जिनके भूषण हैं।।४३।।

शुभलक्षणमप्येवं बाह्यं न विलोक्यते स्फुटं यस्य ।
अपि दृश्यते पुनः श्रीस्तस्य तदा न ध्रुवेति दृढम् ।।४४।।

अन्वयार्थौ—(यस्य एवं शुभलक्षणं बाह्यमपि स्फुटं न विलोक्यते) जिसके ये शुभलक्षण बाहिरी प्रगट नहीं दीखे (तस्य पुनः श्रीरपि न ध्रुवा) दृश्यते इति दृढम्) तिसके फिर लक्ष्मी चलायमान दीखती है अर्थात् उसके स्थिर नहीं रहे यह सत्य है।।४४।।

स्थूलैस्तनुभिः परुषैर्मृदुभिः स्वल्पैस्थायुतैरङ्गैः ।
यः सत्त्ववान् स पूज्यस्तत्सकलगुणाधिकं सत्त्वम् ।।४५।।

अन्वयार्थौ—(स्थूलैः तनुभिः परुषैः मृदुभिः स्वल्पैः अथ आयतैरङ्गैः) मोटा, पतला, खरदरा, नरम, छोटा, लंबा शरीर होय तो इन करके कुछ फल नहीं (यः सत्त्ववान् स पूज्यः) जो सत्त्ववान् है सोई पूज्य है (तत्सकलगुणाधिकं सत्त्वं भवति) तिससे सब गुणों में अधिक सत्त्व ही है।।४५।।

शुभलक्षणमङ्गं यदि स पूजितः स्यान्नरस्य सत्त्ववतः ।
तदुभयसंपर्कादिह सौभाग्ये मञ्जरीभेदः ।।४६।।

अन्वयार्थौ—(यदि अङ्गं शुभलक्षणं स पूजितः स्यात्) यदि अंग शुभलक्षणयुक्त है सोई पूजित है और (सत्त्ववतः नरस्य तदुभयसंपर्कात् इह सौभाग्ये मंजरीभेदः) सत्त्ववाले मनुष्य का उन दोनों के अर्थात् सत्त्व और अंगलक्षण के मिलाप से इस लोक में भाग्यरूपवृक्ष में मंजरी का अर्थात् बालिका का उदय हुआ समझना।।४६।।

इति श्रीमहत्तम श्रीनरसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकापरनाम्नि
स्त्रीपुरुषलक्षणशास्त्रे आवर्ताद्यधिकारस्तृतीयः ।।३।।

संस्थानवर्णगन्धावर्ताः सत्त्वं स्वरो गतिश्छाया ।
तन्नरवन्नारीणामिति लक्षणमष्टधा भवति ॥१॥

अन्वयार्थौ—(संस्थानवर्णगन्धावर्ताः सत्त्वं स्वरः गतिः छाया नारीणामिति नरवत् लक्षणमष्टधा भवति)। आकार, रंग, सुगंध, चक्र, सत्त्व, बोली, चाल, कांति जैसे मनुष्यों के लक्षण हैं तैसे ही स्त्रियों को भी लक्षण यह आठ प्रकार के होते हैं॥१॥

इह देहसंनिवेशः संस्थानं तस्य लक्षणमिदानीम् ।
आपादतलशिरोऽन्तं स्त्रियाः शुभाशुभफलं वक्ष्ये ॥२॥

अन्वयार्थौ—(इह देहसंनिवेशः संस्थानम्, इदानीम् आपादतलशिरोन्तं स्त्रियाः शुभाशुभफलं लक्षणं वक्ष्ये) इस लोक में शरीर का जो आकार है उसी का नाम संस्थान है- अब पुरुष के से पांव से लेकर शिर तक स्त्रियों के शुभ वा अशुभ फल लक्षण कहता हूँ॥२॥

प्रथमं पादस्य तले रेखाश्चक्रादयस्ततोऽङ्गुष्ठः ।
अंगुल्यस्तदनु नखाः पृष्ठै गुल्फद्वयं पार्ष्णिः ॥३॥

अन्वयार्थौ—(प्रथमं पादस्य तले रेखाः ततः चक्रादयः अंगुष्ठः तदनु नखा अंगुल्यः पादपृष्ठं गुल्फद्वयं पार्ष्णिः) पहिले तो पांव के तलुवे की रेखा तिसके पीछे चक्र आदि अंगूठा तिसके पीछे नख फिर अंगुली तिस पीछे पांव की पीठ और दो टखना और पार्ष्णि नाम पांव का फावा अर्थात् पंजा॥३॥

जङ्घाद्वितयं रोम जानूरुचूचुकगण्डयुगलमथो ।
कटिरथनितंबबिम्बः स्फिचौ भगं जघनमथ बस्तिः ॥४॥

अन्वयार्थौ—(जंघाद्वितयम्) पिंडली दोनों (रोम) बाल (जानु) घुटने के ऊपर (ऊरु) जंघा (चूचुक) चूची की नोक (गण्डयुगलम्) कपोल की दोनों हड्डियां (अथो कटिः) और कमर (अथ नितंबबिंबः) कूले के मोटेपन (स्फिचौ) कमर के पिंड (भगम्) भग (जघनम्) कूले का आगा (अथ वस्तिः) पेडू आदि ये अंग हैं॥४॥

नाभिः कुक्षिद्वितयं ततश्च पार्श्वद्वयं तथा जठरम् ।
मध्यं त्रिवलीरोमावलिसहितं हृदयमथ वक्षः ॥५॥

अन्वयार्थौ—(नाभिः टूंडी, (कुक्षिद्वितयम्) बगले दोनों, (ततः पार्श्वद्वयम्) उसकी पांसू दोनों, (तथा जठरम्) और पेट, (मध्यम् त्रिवलीरोमावलिसहितम्) बीच की सलवटें और बालों की पंगति सहित मध्य (हृदयम्) नाभि के ऊपर (अथः

वक्षः) बगल आदि अंग हैं।।५।।

उरसिजयुगल जत्रुद्वंद्वं तदनु स्कन्धयोर्युग्मम् ।
अंसद्वयमथ कक्षाद्वितयं भुजयोस्तथा द्वन्द्वम् ।।६।।

अन्वयार्थौ—(उरसिजयुगलम्) चूँची (जत्रुद्वंद्वम् कंधों की हंसली, (तदनु स्कंधयोर्युग्मम्) उस पीछे दोनों कंधे (अंसद्वयम्) कंधों के भाग (अथ कक्षाद्वितयम्) ये दोनों कांखें (तथा भुजयोर्द्वन्द्वम्) और दोनों भुजा जानिये।।६।।

मणिबन्धपाणियुगलं तस्य च पृष्ठ तलं ततो रेखा ।
अंगुष्ठोऽङ्गुलयो नखलक्षणमथ चानुपूर्वतो वक्ष्ये ।।७।।

अन्वयार्थौ—(मणिबन्धः) पहुंचा (पाणियुगलम्) दोनों हाथ (तस्य पृष्ठम्) उस हथेली की पीठ (तलम्) हथेली (ततोरेखा) उसके पीछे रेखा (अंगुष्ठः) अंगूठा (अंगुलय) अंगुली (नखलक्षणम् अनुपूर्वतश्च वक्ष्ये) नख इत्यादि अंग के लक्षण क्रमपूर्वक आगे कहेंगे।।७।।

कृकाटिकाऽथो कण्ठस्ततश्च चिबुकं कपोलयुगलं च ।
वक्त्रमधरोत्तरोष्ठौ दन्ता जिह्वा ततस्तालु ।।८।।

अन्वयार्थौ—(कृकाटिका) गले की घेंटी (कंठः) गला (चिबुकम्) ठोढी (कपोलयुगलम्) दोनों गाल (वक्त्रम्) मुख (अधरोत्तरौष्ठौ) ऊपर नीचे के होंठ (दन्ताः) दांत (जिह्वा) जीभ (ततश्च तालु) उसके बाद तालु आदि अंग जानिये।।८।।

घण्टी हसितं नासा क्षुतमक्षिद्वितयमथ च पक्ष्माणि ।
भ्रूकर्णयुगलललाटं सीमन्तः शीर्षमथ केशाः ।।९।।

अन्वयार्थौ—(घंटी) तलुवे के ऊपर का भाग (हसितम्) हँसना (नासा) नाक (क्षुतम्) छींक (अक्षिद्वितयम्) आंखें दोनों, (पक्ष्माणि) नेत्रों की बरौनी, तथा बाफणी (भ्रूयुगम्) भौंह, कर्णयुगम्) दोनों कान, (ललाटम्) लिलार, (सीमंतः) बालों की मांग, (शीर्षम्) शीस, (अथ केशाः) बाल आदि अंग हैं।।९।।

अथ पादतलम्

पादतलमुष्णमरुणं समांसलं मृदु समं स्निग्धम् ।
सुप्रतिष्ठितं च यासां स्त्रीणां भोगप्रतिष्ठायै ।।१०।।

अन्वयार्थौ—(यासां स्त्रीणाम् पादतलम् उष्णमरुणं समांसलं मृदु समं स्निग्धं सुप्रतिष्ठितं च भवति तासां भोगप्रतिष्ठायै भवति) जिन स्त्रियों का पैर का तलुवा गरम, लाल, मांस से भरा, नरम, बराबर, चिकना, एकसा बैठा जाय ऐसा होवे तो उन स्त्रियों के भोग और प्रतिष्ठा अर्थात् बड़ाई के लिये होता है॥१०॥

रूक्षं खरं विवर्णं चरणतलं भवति भोगनाशाय ।
असितं दौर्भाग्याय श्वेतं दुःखाय योषाणाम् ॥११॥

अन्वयार्थौ—(रूक्षं खरं विवर्णं चरणतल भोगनाशाय भवति) रूखा, खरदरा, बुरे रंग का ऐसा पाँव का तलुवा भोगों के नाश करने के लिये होता है और (योषाणां पादलमसितं दौर्भाग्याय भवति) स्त्रियों के पांव का तलुवा जो काला होय तो अभाग्य के लिये होता है और (श्वेतं दुःखाय भवति) जो सफेद होय दुःख के लिये होता है॥११॥

शूर्पाकृतिभिः श्वेतैः कुटिलैः स्युर्दुर्भगाश्च चरणतलैः ।
शुष्कैर्निःस्वा विषमैः शोकजुषोदुःखिताऽमृदुभिः ॥१२॥

अन्वयार्थौ—(शूर्पाकृतिभिः श्वेतैः कुटिलैश्च चरणतलैः नार्यो दुर्भगाः स्युः) जो सूप के आकार और सफेद टेढ़ा ऐसा पांव का तलुवा होय तो स्त्री कुरूपा और अभागिनी होती है और (शुष्कैः निस्सवाः भवंति) जो सूखा होय तो दरिद्रिणी होय और (विषमैः शोकजुषो भवन्ति) जो टेढ़ा और ऊंचा नीचा होय तो शोक का सेवन करनेवाली होय और (अमृदुभिः दुखिता भवंति) जो कड़ा होय तो दुःखी होती हैं॥१२॥

चक्रस्वस्तिकशङ्खध्वजांकुशच्छत्रमीनमकराद्याः ।
जायन्ते पादतले यस्याः सा राजपत्नी स्यात् ॥१३।

अन्वयार्थौ—(यस्याः पादतले चक्र-स्वस्तिक-शंख-ध्वज अंकुश-छत्र-मीन-मकराद्याः जायन्ते सा राजपत्नी स्यात्) जिस स्त्री के पाँव के तलुवे में चक्र साथियां, शंख, ध्वजा, अंकुश, छत्र, मछली, मगर को आदि ले करिके ये शुभ रेखा होंय सो शुभ स्त्री राजा की रानी होती है॥१३॥

चक्रादिचिह्नमध्ये स्यादेकं द्वे बहूनि वा यासाम् ।
ऐश्वर्यसौख्यमपि वा तासां स्यात्तदनुमानेन ॥१४॥

अन्वयार्थौ—(यासां चक्रादिचिह्नमध्ये एकं स्यात् द्वे वा बहूनि संति तदनुमानेन तासामैश्वर्यसौख्यमपि स्यात्) जिन स्त्रियों के चक्रादि चिह्नों में से एक होय वा दो वा बहुत होंय-उनके अनुमान करिके तिन्हीं स्त्रियों को ऐश्वर्य और सौख्य

होता है।।१४।।

ऊर्ध्वा रेखांघ्रितले यावन्मध्यांगुलीगता यस्याः ।
सा लभते पतिमाढ्यं प्रिया पुनर्भवति तस्यापि ।।१५।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः अंघ्रितले ऊर्ध्वा रेखा यावत् मध्यांगुलीगता भवति सा आढ्यं पतिं लभते पुनः तस्यापि प्रिया भवति) जिस स्त्री के पाँव के तलुवे में जो ऊर्ध्व रेखा जितनी बीच की अंगुली तक गई होय सो स्त्री धनवान् पति को पाती है और सोई उसकी प्यारी होती है।।१५।।

श्वशृगालमहिषमूषककाकोलूकाहिकोककरभाद्याः ।
चरणतले जायन्ते यस्याः सां दुःखमाप्नोति ।।१६।।

अन्वयार्थौ—(यस्याःचरणतले श्वशृगालमहिषमूषककाकोलूकाहिकोककरभाद्या जायन्ते सा दुःखमाप्नोति) जिस स्त्री के पाँव के तलुवे में कुत्ता गीदड़ी, भैंसा, चूहा, कौवा, उल्लू, सर्प, भेड़िया, ऊँट आदि के चिह्न होंय सो स्त्री दुःख पाती है।।१६।।

अथांगुष्ठः

मांसोपचितोंऽगुष्ठः समुन्नतो वर्तुलःशुभो यः स्यात् ।
ह्रस्वश्चिपिटो वक्रः कुलक्षयाय ध्रुवं स्त्रीणाम् ।।१७।।

अन्वयार्थौ—(यस्यः यः पादांगुष्ठः मांसोपचितः समुन्नतः वर्तुलः स शुभः तथा ह्रस्वः चिपिटः वक्रः स्त्रीणां ध्रुवं कुलक्षयाय भवति) जिस स्त्री का जो पाँव का अंगूठा मांस से भरा ऊंचा गोल ऐसा होय सो शुभ है और छोटा चिपटा टेढा होय तो स्त्रियों का ऐसा अंगूठा कुल का नाश करनेवाला होता है।।१७।।

वैधव्यं विपुलेन द्वेष्यत्वं स्वल्पवर्तुले स्त्रीणाम् ।
रमणेनाद्रियमाणा पुनरंगुष्ठेन दीर्घेण ।।१८।।

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां विपुलेन अंगुष्ठेन वैधव्यं स्यात्) स्त्रियों के चौड़े अंगूठे से विधवापन होता है और (स्वल्पवर्तुले अंगुष्ठे द्वेष्यत्वं स्यात्) थोड़े गोलाई अंगूठे में हो तो वैरभाव होता है और (दीर्घेण अंगुष्ठेन रमणेनाद्रियमाणा भवति) बहुत लंबे अंगूठे से स्त्री पति से आदर पानेवाली होती है।।१८।।

अथांगुल्यः

मृदवोंऽगुलयः शोणाः मदाम्बुजस्येव कोमलदलानि ।
सरला घनाः सुवृत्ताः समुन्नता भोगलाभाय ।।१९।।

अन्वयार्थौ—(पादांबुजस्य अंगुलयः मृदवः शोणाः अम्बुजस्य कोमलदलानि इव सरलाः घनाः सुवृत्ताः समुन्नताः भोगलाभाय भवंति) पांव की अंगुलियें में नरम, लाल, कमल की पत्तियों की सी नरम, सूधी, सघन, आसपास गोल, ऊँचाई लिये ऐसी भोग के लाभ के अर्थ होती हैं॥१९॥

वितरंति प्रौढभुग्ना दौर्भाग्यत्वं हि किङ्करीत्वं च ।
पृथवः स्थूला दुःखं विरला रूक्षाः पुनर्नैःस्व्यम् ॥२०॥

अन्वयार्थौ—(प्रौढभुग्नाः अंगुल्यः दौर्भाग्यत्वं वितरंति) बहुत टेढ़ी अंगुली कुरूप को देती हैं और (पृथवः अंगुल्यः किंकरीत्व वितरंति) फैली हुई चौड़ी अंगुली दासीपन को देती हैं और (स्थूलाः अंगुलयः दुःखं वितरंति) मोटी अंगुली दुःख को देती है और (विरलाः रूक्षाः अंगुल्यः पुनः नैःस्व्यं वितरंति) छितरी और रूखी अंगुली फिर दरिद्रपन को देती है॥२०॥

पूर्वं वृत्ता यस्यास्तनवोऽङ्गुलयः परस्पराऽऽरूढाः ।
हत्वा बहूनपि पतीन् सा दासी जायते नियतम् ॥२१॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः अंगुलयः पूर्वं वृत्ताः तनवः परस्परारूढाः भवंति) जिस स्त्री की अंगुली पहले गोल फिर पतली एक के ऊपर एक चढ़ी हुई हो (सा बहून् अपि पतीन् हत्वा नियतं दासी जायते) सो स्त्री बहुत पति को मारिके निश्चय करके दासी होती है॥२१॥

यस्याः पथि प्रयांत्यारेणुगणः क्षितितलात्समुच्छलति ।
सा च कदापि न शस्ता कुरुते कुटिला विनाशं च ॥२२॥

अन्वयार्थौ—(पथि प्रयांत्या यस्याः क्षितितलात् रेगुणगणः समच्छलति) जिसके मार्ग चलने से धरती से धूल के कण उछलें (सा कदापि न शस्ता) सो स्त्री कभी अच्छी नहीं और (च पुनः सा कुटिला विनाशं कुरुते) सो खोटी स्त्री नाश करती है॥२२॥

यांत्यां नियतं यस्या न स्पृशति कनिष्ठिकांगुली भूमिम् ।
सा हत्वा पतिमाद्यं रहो रमते द्वितीयेन ॥२३॥

अन्वयार्थौ—(यांत्याः यस्याः कनिष्ठिकांगुली नियतं भूमिं न स्पृशति)चलती हुई जिस स्त्री की कनिष्ठिका अंगुली निश्चय पृथ्वी को नहीं छुवे (सा आद्यं पतिं हत्वा रहः द्वितीयेन रमते) तो स्त्री पहिले पति को मारिके एकान्त में दूसरे पति के साथ भोगविलास करती है॥२३॥

स्पृशति न यस्या भूतलमनामिका सा पतिद्वयं हन्ति ।
अतिहीनायां तस्यां नित्यं कलहप्रिया सा च ॥२४॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः अनामिका भूतलं न स्पृशति) जिस स्त्री की अनामिका अंगुली चलते में धरती से न लगे (सा पतिद्वयं हन्ति) सो दो पति को मारती है (तस्यामतिहीनायां सत्यां सा नित्यं कलहप्रिया भवति) उसके अत्यंत छोटे होने से स्त्री नित्य ही कलह की प्यारी होती है॥२४॥

हीना मध्या यस्याः सा योषित्पौरुषं करोति सदा ।
अस्पृष्टायां तस्यां मारयति पुनः पतित्रितयम् ॥२५॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः मध्या हीना भवति सा योषित् सदा पौरुषं करोति) जिस स्त्री के पांव की बीच की अंगुली छोटी होय तो स्त्री निरंतर पराक्रम को करती है (पुनः तस्यामपृष्टायां सा योषित् पतित्रितयं मारयति) और जो धरती के बीच की अंगुलि न छुए सो स्त्री तीन पति को मारती है॥२५॥

अंगुष्ठादधिका स्यादस्याः पादप्रदेशिनी नियतम् ।
सा भवति दुश्चरित्रा कन्यैव च कोऽत्र संदेहः ॥२६॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः पादप्रदेशिनी नियतमंगुष्ठात् अधिका स्यात्) जिस स्त्री के पांव के अंगूठे के पास की अंगुली अंगूठे से निश्चय बड़ी होय (सा कन्या एव दुश्चरित्रा भवति अत्र कःसंदेहः) सो कन्याहीपन में व्याभिचारिणी होती है) इसमें क्या सन्देह है॥२६॥

अथ नखलक्षणम्

आताम्रकान्तयश्चेत् शस्ताः स्निग्धाः समुन्नता नखराः ।
वृत्ता मसृणाः स्त्रीणां न पुनः शस्ता विपर्यस्ताः ॥२७॥

अन्वयार्थौ—(आताम्रकान्तयः स्निग्धाः समुन्नताः वृत्ताः मसृणाश्चेत् स्त्रीणां नखराः शस्ताः) कुल लाल है रंग जिनके अच्छे चमकदार ऊंचे गोल चिकने ऐसे हों तो स्त्रियों के नख अच्छे हैं और (पुनः विपर्यस्ताः नशस्ताः) इससे विपरीत जो होयँ तो अच्छे नहीं हैं॥२७॥

अथ पादपृष्ठलक्षणम्

कमठोन्नतेन मृदुना यदि च शिराविरहितेन पीनेन ।
राज्ञीत्वं पृष्ठेन स्त्रीणां स्यात्पादपीठेन ॥२८॥

अन्वयार्थौ—(कमठोन्नतेन मृदुना यदि च शिराविरहितेन पीनेन एतादृशेन पादपीठेन पृष्ठेन स्त्रीणां राज्ञीत्वं स्यात्) कछुवे की सी ऊंची मुलायम और नसें नहीं निकली होयँ और मोटी ऐसी पाद पीठ से स्त्रियों के बीच में स्त्री रानी होती है॥२८॥

रोमान्वितेन दासी निर्मांसेनाधमा भवति नारी ।
मध्यगतेन दरिद्रा दौर्भाग्यवती शिरालेन ॥२९॥

अन्वयार्थौ—(रोमान्वितेन पृष्ठेन दासी भवति) जिसकी पीठ पर रोम बहुत होंय वह दासी और (निर्मांसेन पृष्ठेन नारी अधमा भवति) जो मांसरहित पीठ होय तो वह स्त्री नीच होती है और (मध्यगतेन पृष्ठेन दरिद्रा भवति) जो बीच में नीची पीठ होय तो दरिद्रिणी हो और (शिरालेन पृष्ठेन नारी दौर्भाग्यवती भवति) जिसमें नसें निकली हुई चमकती होयँ, ऐसी पीठवाली स्त्री अभागिनी होती है॥२९॥

अथ गुल्फलक्षणम्

गूढौ सुखाय गुल्फौ वृत्तौ शिरारहितावशिथिलौ च ॥
विषमौ विकटौ ख्यातौ गुल्फौ दौर्भाग्यकरौ नियतम् ॥३०॥

अन्वयार्थौ—(गूढौ वृत्तौ शिरारहितौ अशिथिलौ च एतादृशौ गुल्फौ सुखाय भवतः) मांस से दबे हुए गोलाई लिये नसें न प्रकट होयँ जिसमें और ढीले नहीं कड़े होयं तो ऐसी टंघनेवाली स्त्री सुखी रहती है और (विषमौ विकटौ ख्यातौ एसादृशौ गुल्फौ नियतं दौर्भाग्यकरौ भवतः) जो ऊंचे नीचे कड़े प्रकट होंय तो ऐसी टंघनेवाली स्त्री निश्चय अभागिनी रहती है॥३०॥

अथ पार्ष्णिलक्षणम्

सौख्यवती समपार्ष्णिः पृथुपार्ष्णिर्दुर्भगा नारी ।
उन्नतपार्ष्णिः कुलटा दुःखवती दीर्घपार्ष्णिः स्यात् ॥३१॥

अन्वयार्थौ—(सम्पार्ष्णिः नारी सौख्यवती स्यात्) बराबर पाँव के फावेवाली स्त्री सुखी रहे और (पृथुपार्ष्णिः नारी दुर्भगा स्यात्) जो चौड़े छितरें पाँव के फावेवाली स्त्री होय वह कुरूपिणी होती है और (उन्नतपार्ष्णिः नारी कुलटा स्यात्)

ऊंचे पाँव के फाबेवाली स्त्री व्याभिचारिणी अर्थात् घरघर फिरनेवाली होती है और (दीर्घपार्ष्णि: नारी दु:खवती स्यात्) लंबे पाँव के फाबेवाली स्त्री दु:खी रहती है।।३१।। इति प्रथमदशी पूर्णा ।।

अथ जंघालक्षणम्

स्निग्धे रोमविहीने यस्या: क्रमवर्तुले समे विशिरे ।
पादाम्बुजमाले इव जङ्घे सा भवति नृपपत्नी ।।३२।।

अन्वयार्थौ—(यस्या: जंघे स्निग्धे रोमविहीने क्रमवर्तुले समे विशिरे पादांबुजमाले इव सा नृपपत्नी भवति) जिस स्त्री की पिंडली अच्छी चिकनी रोमरहित, क्रम से गोल बराबर नसें चमकती हों और चरण कमल की सी होय सो राजा की रानी होती है।।३२।।

शुष्के पृथू विशाले शिरान्विते स्थूलपिण्डके यस्या: ।
जङ्घे मांसोपचिते श्लथजानू पांसुला सा स्यात् ।।३३।।

अन्वयार्थौ—(यस्या जंघे पृथू विशाले शिरान्विते शुष्के मांसोपचित्ते श्लथजानू स्थूलपिण्डके भवत: सा पांसुला स्यात्) जिस स्त्री की पिंडली चौड़ी, बड़ी, नसें चमकती हुईं, सूखी थोड़े मांस की ढीले हैं घुटने से ऊपर के भाग जिनमें और मोटे पिण्ड होंय तो स्त्री व्यभिचारिणी होती है।।३३।।

जङ्घे खररोमे वै वायसजंघोपमे तथा यस्या: ।
मारयति पतिं यदि वा प्राय: सा स्वैरिणी भवति ।।३४।।

अन्वयार्थौ—(यस्या जंघेखररोमे तथा वायसजंघोपमे वै भवत: सा पतिं मारयति) जिस स्त्री की पिंडली खरदरे रोमवाली तथा कौवे की पिंडली के तुल्य जो निश्चय करके होयँ तो स्त्री पति को मारती है और (यदि वा प्राय: स्वैरिणी भवति) जो बहुधा करके व्यभिचारिणी होती है।।३४।।

एकैकमेव भूपतिपत्नीनां रोमकूपके रोम ।
सामान्यानां द्वित्र्यादीनि च तथैव विधवानाम् ।।३५।।

अन्वयार्थौ—(भूपतिपत्नीनां रोमकूपके एकैकमेव रोम स्यात्) राजाओं की रानी के वालों के छेदों में एक ही एक रोम होता है और (सामान्यानां विधवानां च रोमकूपके तथैव द्विव्यादीनि रोमाणि भवन्ति) जो सामान्य और स्त्रियों के अथवा विधवाओं के उन बालों के छेदों में दो तीन आदि करके रोम होते हैं।।३५।।

अथ जानुकथनम्

यस्या जानुयुगं स्यादनुल्बणं पिशितमग्नमतिवृत्तम् ।
सा लक्ष्मीरिव नियतं सौभाग्यसमन्विता वनिता ॥३६॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः जानुयुगम् अनुल्वणं पिशितमग्नमतिवृत्तं स्यात्) जिस स्त्री के दोनों घुटनों के ऊपर से भाग बड़े और बुरे होयँ और मांस में गढ़े और बहुत गोल होयँ (सा वनिता नियतं सौभाग्यसमन्विता लक्ष्मीरिव भवति) सो निश्चय करिके सौभाग्य युक्त लक्ष्मी की भांति होती है॥३६॥

निर्मांसैः स्वैरिण्यो विविधाभैः स्युः सदाध्वगा नार्यः ।
विश्लिष्टैर्धनहीना जायन्ते जानुभिः प्रायः ॥३७॥

अन्वयार्थौ—(निमांसै जानुभि नार्यः स्वैरिण्यो भवन्ति) थोड़े मांसवाली जानु करके स्त्री व्याभिचारिणी होती है और (विविधाभैःनार्यःसदा अध्वगाःस्युः) अनेक सूरत की जानु करके स्त्री सदा मार्ग चलनेवाली होती है और (विश्लिष्टैः जानुभिः नार्यः प्रायः धनहीनाः जायन्ते) जो छितरौसी जानुवाली होयँ वे स्त्री बहुधा धन ही होती हैं॥३७॥

अथोरुकथनम्

मदनगृहस्तंभौ यौ कदलीकाण्डद्वयोपमावूरू ।
यस्याः करिकरवृत्तावरोमशौ भूपपत्नी स्यात् ॥३८॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः यौ ऊरू मदनगृहस्तंभौ कदलीकाण्डद्वयोपमौकरिकरवृत्तौ अरोमशौ सा भूपपत्नी स्यात्) जिस स्त्री की जो दोनों जाँघें कामदेव के घर के खंभे केले के दो वृक्ष के तुल्य और हाथी की सूंड के बराबर गोल और रोमरहित होयँ सो राजा की स्त्री अर्थात् रानी होती है॥३८॥

मांसोपचितैर्विशिरैः करिकरसदृशैररोमभिर्मुदुभिः ।
आसादयन्ति सततं मदनक्रीडासुखं नार्यः ॥३९॥

अन्वयार्थौ—(नार्यः मांसोपचितैः विशिरैः अरोमभिः घनैः मृदुभिः करिकरसदृशैः ऊरुभिः सततं मदनक्रीडासुखम् आसादयन्ति) जिन स्त्रियों की दोनों जाँघे माँस से भरी हुई नसें चमकती न होयँ रोमरहित होंय मोटी कोमल हाथी की सूंड के तुल्य होंय तो ऐसी जाँघों से स्त्री निरंतर कामदेव के समान सुख भोगती है॥३९॥

चलमांसैर्दौर्भाग्यं लोमशैः खरैर्नैःस्व्यम् ।
मध्यक्षुद्रैर्दुःखम् तनुभिर्वधमूरुभिर्याति ॥४०॥

अन्वयार्थौ—(चलमांसैः उरुभिः नारी दौर्भाग्यं याति) मांस से ढ़ीली दोनों जाँघे जो स्त्री की होयँ तो अभागिनी होती है और (लोमशैः खरैरुरुभिः नारी नैःस्व्यं वा याति) रोमों सहित खरदरी जाँघों से स्त्री दरिद्रिणी और विधवा होती है और (मध्यक्षुद्रैः तनुभिरूरुभिः नारी दुःखं तया बधं याति) बीच में छोटी और पतली जाँघों करके स्त्री दुःख और मरणको पाती है।।४०।।इति द्वितीयदशी पूर्णा ॥

अथ कटिलक्षणकथनम्

यदि चतुरन्वितविंशत्यंगुलविनता कटिः समा कठिना ।
उन्नतनितम्बबिम्बा चतुरस्रा शोभना स्त्रीणाम् ॥४१॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां कटिः चतुरन्वितविंशत्यंगुलविनता समा कठिना उन्नतनितम्बबिम्वा चतुरस्रा यदि शोभना भवति) स्त्रियों की कमर जो २४ अंगुल की झुकी हुई बराबर कड़ी और ऊँचे हैं कूले जिसके और चौकोर ऐसी हो तो कमर शोभायमान होती है।।४१।।

विनता दीर्घा चिपिटा निर्मांसा सङ्कटा कटिर्विकटा ।
ह्रस्वा रोमयुता या सा स्याद्दौर्भाग्यदुःखकरी ॥४२॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां या कटिः विनता दीर्घा चिपिटा निर्मांसा संकटा विकटा ह्रस्वा रोमयुता स्यात्, सा दौर्भाग्यदुःखकरी भवति) स्त्रियों की कमर जो बहुत झुकी हुई और लंबी चपटी मांसरहित सूखी भयंकर बुरी छोटी रोमयुक्त होय सो कमर स्त्रियों को अभाग्य और दुःख की करनेवाली होती है।।४२।।

अथ नितम्बबिम्बलक्षणम्

सुदृशां नितम्बबिम्बः समुन्नतो मांसलः पृथुः पीनः ।
स्मरभूपस्य सुवर्णक्रीडाचुलुक इव रतिहतोः ॥४३॥

अन्वयार्थौ—(सुदृशां नितम्वबिंबः समुन्नतः मांसलः पृथुः पीनः स्यात् रतिहेतोः स्मरभूपस्य सुवर्णक्रीडाचुलुक इव (स्त्रियों के कूले बराबर ऊंचे मांस से भरे चौड़े मोटे होय तो रति करने के निमित्त कामदेव राजा के खेलने का मानों सुवर्ण का बाजा है।।४३।।

विकटश्चिपिटो नतिमान्निर्मांसो रोमशः खरः शुष्कः ।
कुरुते नितम्बफलको दरिद्रतां दुःखदौर्भाग्यम् ॥४४॥

अन्वयार्थौ—(विकटः चिपिटः नतिमान् निर्मांसि रोमशः खरः शुष्कः नितम्बफलकः दरिद्रतां वा दुःखदौर्भाग्यं कुरुते) भयानक चिपटे झुके हुए नीचे थोड़े मांस के रोमवाले खरदरे सूखे ऐसे जो कूले होंय तो दरिद्री वा दुःख वा अभाग्य को करते हैं॥४४॥

अथ स्फिक्कथनम्

वलिभिर्मुक्तौ पीनौ कपित्थफलवर्तुलौ स्फिचौ नार्याः ।
मृदुलौ घनमांसयुतौ रतिसौख्यं वितरतः सततम् ॥४५॥

अन्वयार्थौ—(वलिभिर्मुक्तौ पीनौ कपित्थफलवर्तुलौ मृदुलौघनमांसयुतौ नार्याः स्फिचौ सततं रतिसौख्यं वितरतः)बिना सलवट के कड़े मांस के कैथ के फल के तुल्य गोल कोमल बहुत मांसयुक्त जो स्त्री की कमर के दोनों ओर के मांस के पिण्ड होंय तो निरंतर रति के सुख को देते हैं॥४५॥

परुषं रूक्षं चिपिटं स्फिग्युग्मं मांसविरहितं न शुभम् ।
तदपि च बिलम्बमानं धत्ते वैधव्यमचिरेण ॥४६॥

अन्वयार्थौ—(परुषं रूक्षं चिपिटं मांसविरहितं स्फिग्युग्मं शुभं न) खरदरे रूखे चिपटे मांसरहित जो कमर के दोनों ओर के पिंड होंय तो शुभ नहीं है और (तदापि स्फिग्युग्मं विलम्बमानं भवति तर्हि अचिरेण वैधव्यं धत्ते) जो वे ही दोनों ओर के मांस के पिंड लम्बे और लटकते ढीले हों तो शीघ्र ही विधवापन को करते हैं॥४६॥

प्राक् सव्येन निषीदति पदेन या सा सुखं सदा लभते ।
या पुनरपसव्येन नियतं सा कष्टमेणाक्षी ॥४७॥

अन्वयार्थौ—(सा एणाक्षी प्राक् सव्येन पदेन निषीदति सा सदा सुखं लभते) जो स्त्री पहले बायें पग करके बैठे सो सदा सुख को पाती है और (या अपसव्येन निषीदतिसा नियतं कष्टं लभते) जो पहले दाहिनी पग से बैठे सो निश्चय से दुःख को पाती है॥४७॥

अथ भगलक्षणम्

अश्वत्थदलाकारः कुंभिस्कंधोपमो भगः पृथुलः ।
पूर्णेन्दुबिम्बतुल्यः कच्छपपृष्ठः शुभः सुदृशाम् ॥४८॥

अन्वयार्थौ—(अश्वस्थदलाकारः कुंभिस्कंधोपमः पृथुलः पूर्णेन्दुविम्वतुल्यः कच्छपपृष्ठः एतादृशः सुदृशां भगः शुभः) पीपल के पत्ते के आकार और हाथी के कंधे के तुल्य चौड़ी पूर्ण चन्द्रमा के बिम्ब के तुल्य कछुवे की पीठ की ऐसी स्त्रियों की योनि होय तो शुभ है॥४८॥

स्निग्धो मृदुकृशरोमा मांसोपचितो भगो भवेद्यस्याः ।
सा पुत्रवती नियतं लभते रतिसौख्यसौभाग्यम् ॥४९॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः भगः स्निग्धः मृदुकृशरोमा मांसोपचितः भवेत्) जिस स्त्री की योनि अच्छी चिकनी नरम और थोड़े हैं रोम जिस पर मांस से भरी हुई होय (सा पुत्रवती नियतं वा रतिसौख्यसौभाग्यं लभते) सो पुत्रवती निश्चय होय और रति के सुख और सौभाग्य को पाती है॥४९॥

नियतं भगोऽङ्गनायाः प्रसूयते दक्षिणोन्नतः पुत्रान् ।
वामोन्नतस्तु कन्या जगति समुद्रस्य वचनमिदम् ॥५०॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः अङ्गनायाः भगः नियतं दक्षिणोन्नतः स्यात् सा पुत्रान् प्रसूयते) जिस स्त्री की योनि दाहिनी ओर को ऊँची होय सो निश्चय पुत्रों को उत्पन्न करे है और (वामोन्नतः भगः कन्या प्रसूयते) जो बाँईं ओर को योनि ऊंची हो तो कन्याओं को उत्पन्न करे (जगति इदं समुद्रस्य वचनम्) कोक में यह समुद्र का वचन है॥५०॥

यस्याः स्याच्चतुरस्रा कच्छपपृष्ठोन्नता स्थिरा श्रोणी ।
सा वै प्रबलान्पुरुषान् रोहिणी भूरिव रमणी सूते ॥५१॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः श्रोणी चतुरस्रा कच्छपपृष्ठोन्नता स्थिरा स्यात्) जिस स्त्री की योनि चौकोन और कछुवे की पीठ के तुल्य उठी हुई कड़ी होय (सा रमणी रोहिणी भूरिव वै प्रबलान् पुरुषान् सूते) सो स्त्री रोहिणी और पृथ्वी की भाँति प्रबल पुरुषों को उत्पन्न करे है॥५१॥

बहुलोर्द्धवकृष्णरोमा सुश्लिष्टः संहितो भगः शस्तः ।
गूढमणिश्चिंतामणिरिव भुवि विपुलं धनं तनुते ॥५२॥

अन्वयार्थौ—(बहुलोर्ध्वकृष्णरोमा सुश्लिष्टः संहितः गूढमणिः भगः शस्तः) बहुत है ऊंचे काले रोम जिस पर और मिली हुई अच्छी बनावट की और छिपी है मणि कहिये टोटनी जिसकी ऐसी योनि अच्छी होती है। (सः भगः भुवि चिंतामणिरिव विपुलं धनं तनुते)वही योनि पृथ्वी में चिंतामणि की भाँति बहुत धन पैदा करती है।।५२।।

विस्तीर्णोऽम्बुजवर्णो मृदुतनुरोमाल्पनासिकस्तुङ्गः ।
द्विरदस्कन्धसमः स्यात्स्त्रीणां षडमी भगाः सुभगाः ।।५३।।

अन्वयार्थौ—(विस्तीर्णः अम्बुजवर्णः मृदुतनुरोमा अल्पनासिकः तुङ्गः द्विरदस्कन्धसमः स्त्रीणाममी षट् भगाः सुभगाः) चौड़ी, कमल के रंग, नरम और थोड़े रोमवाली, छोटी नासिका जिसकी ऊंची, हाथी के कंधे के समान, स्त्रियों की ऐसी छः योनि अच्छी होती है।।५३।।

रुचिरोऽत्युष्णः सुघनो गोजिह्वाकर्कशोऽथवा मृदुलः ।
अतिसंवृत्तसुगंधी सप्त भगा विर्द्धयंति रतिम् ।।५४।।

अन्वयार्थौ—(रुचिरः अत्युष्णः सुघनः गोजिह्वाकर्कशः मृदुलः अतिसंवृत्तः सुगंधिः एते सप्त भगा रतिं वर्द्धयंति) अच्छी, बहुत गरम, कड़ी, गाय की जीभकी सी खरदरी, नरम, बहुत गोल, अच्छी गंधवाली-ये सात प्रकार की योनि सुखभोग को बढ़ाती है।।५४।।

विस्पष्टस्थूलमणिः सङ्कीर्णः खर्पराकृतिः स्त्रीणाम् ।
खरकुटिलः खररोमा मांसविहीनो न शुभः ।।५५।।

अन्वयार्थौ—(विस्पष्टस्थूलमणिः संकीर्णः खर्पराकृतिः खरकुटिलः खररोमा मांसविहीनः स्त्रीणामीदृशो भगः न शुभः) दीखे है मोठी मणि जिसमें, सँकडी, खपरे के आकार, खरदरी, टेढ़ी, खदरे मोटे बाल, मांसरहित सूखी सी ऐसी स्त्रियों की योनि शुभ नहीं है।।५५।।

चुल्लीकोटरतुल्यस्तिलपुष्पनिभः कुरङ्गखुररूपः ।
विश्वप्रेष्यां निःस्वा त्रयो भगाः कुर्वते नूनम् ।।५६।।

अन्वयार्थौ—(चुल्लीकोटरतुल्यः तिलपुष्पनिभः कुरंगखुररूपः एते त्रयो भगाः नूनं विश्वप्रेष्यां निःस्वां प्रकुर्वते) चुल्हे की खोडर के तुल्य और तिल के फूल के तुल्य और हिरण की खुरी के आकार ऐसी तीन प्रकार की योनि स्त्री को निश्चय पूरी टहलनी चलनेवाली और दरिद्रिणी करती हैं।।५६।।

विवृतमुखो नारीणामुलूखलाभो भगः सुदुर्गन्धः ।
कुञ्जररोमा सततं कुरुते दुःशैल्यदौर्भाग्यम् ।।५७।।

अन्वयार्थौ—(विवृतमुखः ऊलूखलाभः सुदुर्गन्धः कुञ्जररोमा एतादृशः नारीणां भगः सततं दुःशैल्यदौर्भाग्यं कुरुते) खुले हुए मुख की ओखली सी बुरी गंधवाली हाथी के से रोम होंय तो ऐसी स्त्रियों की योनि निरंतर दुःख और अभाग्य को करे है।।५७।।

श्रोणीबिम्बेनालं कीचकनवदलसमश्रिया नारी ।
सुखिता प्रायः प्रथमे पश्चात्सा दुःखिता भवति ।।५८।।

अन्वयार्थौ—(कीचकनवदलसमश्रिया श्रोणीबिम्बेन नारी प्रायः प्रथममलं सुखिता भवेत् सा पश्चाद्दुःखिता भवति) बाँस के नवीन पत्ते की सी है शोभा जिसकी ऐसी योनि करके स्त्री बहुधा पहले तो सुख पाती है और पीछे दुःख को प्राप्त होती है।।५८।।

शंखावर्त्तसमाना श्रोणी प्रायः प्रजायते यस्याः ।
धारयति सा न गर्भं निषेव्यमाणा च दुःखकरा ।।५९।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः श्रोणी शंखावर्त्तसमाना प्रायः प्रजायते सा गर्भं न धारयति) जिस स्त्री की योनि शंख के आकार होय सो गर्भ को नहीं धारण करे है और (सा निषेव्यमाणा सती दुःखकरा भवेत्) वह सेवन करी हुई भी दुःख को करनेवाली होती है।।५९।।

वेतसपर्णसमानः सङ्कीर्णः श्रोणिबिम्ब इव यस्याः ।
असती सा न कदाचन कल्याणपरंपरा नियतम् ।।६०।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः संकीर्णः श्रोणिबिम्बः वेतसपर्णसमान इवभवेत्) जिस स्त्री की सँकड़ी योनि बेंत्ते के पत्ते के समान होय (सो असती) सो स्त्री अच्छी नहीं होगी और (कदाचन नियतं कल्याणपरंपरा न) कभी निश्चय करके भलाई को करनेवाली नहीं है।।६०।।

तनुरेताः खररोमा संक्षिप्तो दीर्घनासिको विकटः ।
विवृतास्यो नारीणां जगति भगा दुर्भगा षडमी ।।६१।।

अन्वयार्थौ—(नारीणां जगति अभी षड् भगाः दुर्भगाः भवन्ति) स्त्रियों की लोक में ये छः प्रकार की योनि बुरी होती है तनुरेताः खररोमा संक्षिप्तः दीर्घनासिकः विकटः विवृतास्यः न शस्तः) थोड़े वीर्यवाली खरदरे रोमवाली बहुत छोटी बड़ी नाकवाली और भयंकर खुले मुखवाली ये अच्छी नहीं हैं।।६१।।

वलिसहितोद्भवसहितौ प्रलम्बमानोऽथ शीतलः शिथिलः।
नीचमुखोऽप्यथ पृथुलः सप्तामी रतिषु दुःखकृतः ॥६२॥

अन्वयार्थौ—(वलिसहितः उद्भवसहितः प्रलम्बमानः शीतलः शिथिलः नीचमुखः पृथुलः रतिषु अमी सप्त भगाः दुःखकृतो भवन्ति) सलवटें वाली कुछ दिनों के गर्भवाली लंबी ठंडी पिलपिली लटकी हुई ढीली चौड़ी मोटी भोग में ये ७ प्रकार की योनि दुःख के करनेवाली हैं॥६२॥

जघने भगस्य भालं विस्तीर्णं मांसलं समुत्तुङ्गम् ।
तनुकृष्णमृदुलरोम प्रदक्षिणावर्त्तमिह शस्तम् ॥६३॥

अन्वयार्थौ—(इह जघने भगस्य भालमेतातादृशं शस्तम्। विस्तीर्णम्मांसलम् समुत्तुंगम् तनुकृष्णमृदुलरोमप्रदक्षिणावर्त्तम्) इस लोक में पेडू के ऊपरी भाग की जो भग है उसका जो भाल ऐसा होय तो अच्छा है लंबा, चौड़ा, मांस का भरा गुदगुदा, ऊंचा थोड़े काले नरम रोमोंसहित दाहिनी ओर को झुका हुआ ऐसा भग का भाल अच्छा है॥६३॥

विषमं वामावर्तं निर्मांसं सङ्कटं खरं विनतम् ।
भवति तदेव स्त्रीणां वैधव्यविधायकं प्रायः ॥६४॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां तदेव भगस्य भालं विषमं वामावर्त्तं निर्मांसं संकटं खरः विनतं चेत् प्रायः तत् वैधव्यविधायकं भवति) स्त्रियों का सोई भग का भाल ऊंचा नीचा बाईं ओर को झुका हुआ, मांसरहित सुकड़ा हुआ खरदरा होय तो बहुधा विधवापन को करनेवाला होता है॥६४॥

अथ बस्तिकथनम्

विपुला बस्तिः शस्ता युवीनामीषदुन्नता मृद्वी ।
अभ्युन्नता शराभा लेखा यदि रोमशा न शुभा ॥६५॥

अन्वयार्थौ—(युवतीनां बस्तिः विपुला ईषत् उन्नता मृद्वी शस्ता) स्त्रियों का पेड़ बड़ा चौड़ा ऊंचा नरम होय तो अच्छा है और (यदि अभ्युन्नता शराभा रोमशा लेखा न शुभा) जो बहुत ऊंचा, तीर के तुल्य बहुत रोमों की धारी होय तो शुभ नहीं है॥६५॥

इति तृतीयदशी पूर्णा ॥

अथ नाभिशुभाशुभलक्षणम्

नाभिः शुभा गभीरा सुदृशां वृत्ता प्रदक्षिणावर्ता ।
स्मरनृपमुद्रेवोपरि रतिमणिकोशस्य रमणस्य ।।६६।।

अन्वयार्थौ—(सुदृशां वृत्ता नाभिः गभीरा प्रदक्षिणावर्ता शुभा) स्त्रियों की गोल टूंडी गहरी दाहिनी ओर झुकी हुई शुभ है और (रतिमणिकोशस्य रमणस्य उपरि स्मरनृपमुद्रा इव) रति के मणि के खजाने के ऊपर पति की कामदेव राजा ने की हुई मानो मुहर अर्थात् छाप है।।६६।।

यस्या विस्तीर्णास्या नवपङ्कजकर्णिकाकृतिर्नाभिः ।
सा स्फुटसौभाग्यधनं लभते सुखसंपदां सपदि ।।६७।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः नाभिः विस्तीर्णास्या स्फुटन व पङ्कजकर्णिकाकृतिः स्यात्) जिस स्त्री की नाभि वहुत लम्बी चौड़ी मुख जिसका प्रगट नये कमल का सा है भीतरी अंकडेदार ऐसा आकार जिसका होय (सा स्त्री सपदि सुखसंपदां सौभाग्यधनं लभते) सो स्त्री शीघ्र ही संपूर्ण सुख संपत्तियों को धन सौभाग्य को पावे।।६७।।

नाभिर्गभीरविवरा तरुणजनमनोहरा भवति यस्याः ।
सा जायते मृगाक्षी नियतं पुरुषप्रिया प्रायः ।।६८।।

अन्वयार्थौ—(यस्या नाभिः गभीरविवरा तरुणजनमनोहरा भवति) जिस स्त्री की टूँडी गहरी अच्छी और तरुणजनों के मन को हरनेवाली होय (सा मृगाक्षी प्रायः नियतं पुरुषप्रिया जायते) सो स्त्री बहुधा निश्चय करके पति को प्यारी होती है।।६८।।

वामावर्ता यस्या व्यक्ता ग्रंथिर्भवेत् समुत्ताना ।
सा दुर्भगा पुरंध्री विगर्हिता स्यात्परप्रेष्या ।।६९।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः वामावर्त्ता व्यक्ता ग्रंथिः समुत्ताना भवेत्) जिस स्त्री की टूंडी की गांठि अर्थात् टूंड बाईं ओर को झुकी हुई प्रकट ऊँची गाँठि होय तो (पुरंध्री विगर्हिता परप्रेष्या तथा दुर्भगा भवति) सो स्त्री निंदा करने योग्य बुरी और दूसरों की टहलनी बुरी सुरतवाली होती है।।६९।।

इति नाभिकटिचतुर्दशी पूर्णा

अथ कुक्षिः

घनतनया जायन्ते सुकुमारैः कुक्षिभिः पृथुभिः ।
मण्डूककुक्षिरबला धन्या नृपतिं सुतं सूते ।।७०।।

अन्वयार्थौ—(सुकुमारैः पृथुभिः कुक्षिभिः घनतनयाजायन्ते) अच्छी गुलगुली नरम लंबी चौड़ी कोखों करके बहुत पुत्र होते हैं और (मंडूक कुक्षिः अबला धन्या तथा नृपतिं सुतं सूते) मेंढक की सी कोख से स्त्री धन्य है और राजा पुत्र को उत्पन्न करती है।।७०।।

वन्ध्या भवन्ति वनिताः कुक्षिभिरत्युन्नतैर्वलिभिः ।
रोमावर्तयुतैस्ताः प्रव्रजिताः पांसुला दास्यः ।।७१।।

अन्वयार्थौ—(वलिभिर्युतैः अत्युन्नते कुक्षिभिः वनिताः वंध्या भवन्ति) सलवटों करके युक्त और बहुत ऊँची कोखों करके स्त्रियां बाँझ होती हैं और (रोमार्त्तयुतः कुक्षिभिः ताः वनिताः प्रव्रजिताः पांसुलाः दास्यो भवंति) रोमों की भौंरी अर्थात् चक्र करिके युक्त कोखें होंय तो वे ही स्त्रियां वरागिणी व्यभिचारिणी और दासी होती हैं।।७१।।

अथ पार्श्वलक्षणम्

मग्नास्थिभिः संमासैः पार्श्वैर्मृदुभिः समैर्मृजावद्भिः ।
या स्यादेभिः सहिता सुभगा सा जायते नियतम् ।।७२।।

अन्वयार्थौ—(मग्नास्थिभिः समांसैः मृदुभिः समैः मृजावद्भिः) गड़े हुए हैं हाड़. मांस में जिसके मुलायम् और बराबर, उजले (या स्त्रीएतादृशैः पार्श्वैः सहिता स्यात् सा नियतं सुभगा जायते) जो सीं ऐसे पाँसुओं सहित होय सो निश्चय करके सौभाग्यवती होती है।।७२।।

यस्याः सशिरे पार्श्वे समुन्नते रोमसंयुते परुषे ।
सा निरपत्या रमणी भवति प्रायेण दुःशीला ।।७३।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः पार्श्वे सशिरे समुन्नते रोमसंयुते परुषे भवतः) जिस स्त्री की पांसू नसोंसहित और ऊँची, रोमसहित खरदरी होंय (सा रमणी निरपत्या प्रायेण दुःशीला भवति) सो स्त्री संतानरहित बहुधा खोटे स्वभाववाली होती है।।७३।।

अथोदरलक्षणम्

उदरेण मार्दववता तनुत्वचा पीननाभिसहितेन ।
रोमरहितेन नारी नराधिपतिवल्लभा भवति ।।७४।।

अन्वयार्थौ—(मार्दववता तनुत्वचा पीननाभिसहितेन रोमरहितेन उदरेण नारी नराधिपतिवल्लभा भवति) जिसके पेट में मुलायमी और पतली खाल अच्छी टूँडीसहित, बिना रोमों के ऐसे उदर करके स्त्री राजा की वल्लभा अर्थात् प्यारी होती है।।७४।।

तुच्छं दुर्जनमानसमिव जठरं भवति भूपत्नीनाम् ।
जनहर्षोत्कर्षकरं सज्जनचेष्टितमिव मनोज्ञम् ।।७५।।

अन्वयार्थौ—(भूपपत्नीनां जठरंदुर्जनमानसमिव तुच्छं भवति) राजा की रानी का पेट खोटे मनुष्यों के चित्त की भाँति हलका होता है और (जनहर्षोत्कर्षकर सज्जनचेष्टितमिव मनोज्ञं भवति) मनुष्यों को हर्ष करनेवाला और अच्छे पुरुषों की चेष्टा की भाँति सुन्दर होता है।।७५।।

कुम्भाकारं जठरं निर्मांसं वा शिरायुतं यस्याः ।
अतिदुःखिता क्षुधार्ता सा नारी जायते प्रायः ।।७६।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः जठरं कुंभाकारं निर्मांसं वा शिरायुतं भवति) जिस स्त्री का उदर घड़े के आकार बिना मांस वा नसों करके युक्त होय (सा नारी प्रायः क्षुधार्ता अतिदुःखिता भवति) सो स्त्री बहुधा भूँखी और अतिदुःखी होती है।।७६।।

कूष्माण्डफलाकारैरुदरैः पणवोपमैर्मृदङ्गाभैः ।
यवतुल्यैर्दुःशीलाः क्लेशायासं स्त्रियो यान्ति ।।७७।।

अन्वयार्थौ—(स्त्रियः कूष्माण्डकलाकारैः पणवोपमैः मृदंगाभैः यवतुल्यैरुदरैः दुःशीला भवति तथा क्लेशायास यान्ति) स्त्री जे हैं ते कुम्हड़ा के फल के आकार, तबला और मृदंग के तुल्य और जौ के समान उदर करके खोटे आचरण की होती हैं और क्लेश वा परिश्रम को पाती हैं।।७७।।

भवति प्रलम्बमुदरं यस्याः सा श्वशुरमाहन्ति ।
यस्याः पुनर्विशालं चिरतनया दुर्भगा सापि ।।७८।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः उदरं प्रलम्वं भवति सा श्वशुरम् आहंति) जिस स्त्री का उदर लम्वा होय तो श्वशुर को मारती है और (यस्याः उदरं विशालं भवति सा

चिरतनया भवति) जिस स्त्री का उदर लंबा चौड़ा होय सो बहुत देर में संतानवाली होती है और (सा दुर्भगा अपि भवति) सोई खोटी बुरी होती है॥७८॥

असमपयोधरभाराक्रान्तेव सुबन्धुरं मध्यम् ।
मुष्टिग्राह्यं यस्याः सा सौभाग्यश्रियं श्रयते ॥७९॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः मध्यं मुष्टिग्राह्यं सुबंधुरं भवति, असमपयोधर भाराक्रांता इव सा सौभाग्यश्रियं श्रयते) जिस स्त्री का मध्यस्थल मुट्ठी में आ जाय ऐसा छोटा सुन्दर होय सो स्त्री भारी कुचों के बोझ से मानों दबी हुई सौभाग्य की शोभा लक्ष्मी को पाती है॥७९॥

अथ वलिरोमराजिकथनम्

सुभगानां वै वलयं वलित्रयेणान्वितं समग्रेण ।
नाभीलावण्याब्धेरुत्कलिकां भूमिकां वहते ॥८०॥

अन्वयार्थौ—(वैइतिनिश्चये, सुभगानांवलयं समग्रेण वलित्रयेण अन्वितं भवति) निश्चय करके सौभाग्यवती स्त्रियों का मध्यस्थल संपूर्ण तीन सलवटों करके युक्त होय तो (नाभीलावण्याब्धेः उत्कलिकां भूमिकां वहते) नाभि की शोभा से समुद्र की सी है लहरी जिसमें ऐसी पृथ्वी को धारण करती है॥८०॥

रोमलता तनुऋज्वी हृदयांतादुत्थिा शुभा श्यामा ।
विशतीव नाभिकुहरे मुखेन्दुभीता तिमिररेखा ॥८१॥

अन्वयार्थौ—(हृदयांतात् उत्थिता तनुऋज्वी रोमलता श्यामा शुभा) छाती के अंत से उत्पन्न हुई जो पतली सीधी रोमों की बेली काली शुभ है (का इव? मुखेन्दुभीता तिमिररेखा नाभिकुहरे विशति इव) मुखचन्द्रमा से डरी जैसे अँधेरे की रेखा मानों टूंडी के बुले में घुसी जाती है॥८१॥

कुटिला स्थूला कपिला व्युच्छिन्ना रोमवल्लरी यस्याः ।
विधवात्वं दौर्भाग्यं लभते प्रायेण सा रमणी ॥८२॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः रोमवल्लरी कुटिला स्थूला कपिला विच्छिन्ना भवति) जिस स्त्री की रोमों की बेली टेढ़ी मोटी कुछ कबरी कई रंग की, बीच में टूटी होय तो (सा रमणी प्रायेण विधवात्वं दौर्भाग्यं च लभते) सो स्त्री बहुधा करके विधवापन और अभाग्य को पाती है॥८२॥

अथ हृदयम्

निर्लोम व्रणरहितं हृदयं यस्याः समं मनोहारि ।
ऐश्वर्यमवैधव्यं पतिप्रियत्वं भवति तस्याः ॥८३॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः हृदयं निर्लोम व्रणरहितं समं मनोहारि स्यात्) जिस स्त्री का हृदय बिना रोमों के हो और किसी प्रकार का दाग अर्थात् फोड़ा फुन्सी नहीं होय और बराबर मन का हरनेवाला होय (तस्याः ऐश्वर्यम् अवैधव्यं पतिप्रियत्वं भवति) उस स्त्री का सब प्रकार के आनंद का ठाठ और सौभाग्यपन तथा पति की प्यारी होती है॥८३॥

उद्भिन्नरोमकीर्णं विस्तीर्णं हृदयमिह भवेद्यस्याः ।
सा प्रथमं भर्तारं हत्वा वेश्यात्वमुपयाति ॥८४॥

अन्वयार्थौ—(इह यस्याः हृदयम् उद्भिन्न रोमकीर्णं विस्तीणं भवेत्) इस लोक में जिस स्त्री का हृदय फटा टूटा बहुत रोमयुक्त और बहुत लंबा चौड़ा होय (सा प्रथमं भर्तारं हत्वा वेश्यात्वम् उपयाति) सो स्त्री पहिले पति को मारिके वेश्यापन को पाती है अर्थात् वेश्या होकर चली जाती है॥८४॥

पिशितविवर्जितमुन्नत विनतं हृदयं व्रणान्वितं विषमम् ।
कर्मकरात्वं तनुते वनितानां तत्क्षणादेव ॥८५॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः हृदयं पिशितविवर्जितम् उन्नतं विनतं व्रणान्वितं विषमं भवेत्) जिस स्त्री का हृदय मांसरहित ऊंचा झुका हुआ और फोड़ा फुन्सी आदि चिह्नयुक्त ऊँचा नीचा होय तो (वनितानां मध्ये तत् हृदयं कर्मकरात्वं तत्क्षणादेव तनुते) स्त्रियों के बीच में वह हृदय दासीपन को शीघ्र ही करे है॥८५॥

अथोरःस्थलम्

पीवरमुन्नतमायतमुरो यदि न मृदु न च कठिनं विशिरम्।
अष्टादशांगुलमितं रोमविहीनं शुभं स्त्रीणाम् ॥८६॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणाम् उरः पीवरम् उन्नतम् आयतं न मृदु न च कठिनं विशिरम् अष्टादशांगुलमितं रोमविहीनं शुभं भवति) स्त्रियों की छाती की जगह मांस से भरी हुई, ऊँची, लम्बी, चौड़ी न नरम न कड़ी और नसें न दीखती होय, अठारह अंगुल के प्रमाण बिना रोमों के शुभ होती है॥८६॥

विषमेण भवति हिंस्रा निर्मांसेनोरसा भवति विधवा ।
अतिपृथुना प्रियकलहा दुःशीला रोमशेनापि ॥८७॥

अन्वयार्थौ—(विषमेण उरसा नारी हिंस्रा भवति) ऊंची नीची छाती करिके स्त्री हिंसा करनेवाली होती है और (निर्मांसेन उरसा नारी विधवा भवति) बिना मांस की छाती से स्त्री विधवा होती है और (अतिपृथुना उरसा नारी प्रियकलहा भवति) बहुत चौड़ी छाती से स्त्री कलह की प्यारी होती है और (रोमशेन उरसा नारी अपि दु:शीला भवति) रोमोंवाली छाती से स्त्री खोटे स्वभाववाली होती है।।८७।।

अथ स्तनौ

शस्तौ वृत्तौ सुदृढौ पीनौ कठिनौ घनौ स्तनौ सुदृशाम् ।
स्नानाय स्मरनृपतेः काञ्चनकलशाविव प्रगुणौ ।।८८।।

अन्वयार्थौ—(सुदृशां स्तनौ वृत्तौ सुदृढौ पीनौ कठिनौ घनौ शस्तौ भवतः) स्त्रियों के कुछ गोल अच्छे कड़े मांस के भरे बहुत अच्छे होते हैं कौ इव? स्मरनृपतेः स्नानाय प्रगुणौ काञ्चनकलशौ इव) कैसे कि मानो कामदेव राजा के स्नान के अर्थ सुन्दर सोने के वे कलशे हैं।।८८।।

सुखसौभाग्यनिधानं समुन्नतं स्तनयुगं समं कान्तम् ।
धत्ते सुवर्णवनिता कुम्भं रुचिरं स्मरेभस्य ।।८९।।

अन्वयार्थौ—(सुवर्णवनिता समुन्नतं समं कान्तं सुखसौभाग्यनिधानम् रुचिर स्तनयुगं स्मरेभस्य कुंभम् इव धत्ते) जिस स्त्री के दोनों कुच ऊंचे बरावर, सुन्दर, सुखसौभाग्य के निधान कहिये स्थान हैं वह सुंदर रंग की स्त्री मानो कामदेव हाथी के कुम्भ (गण्डस्थल) को धारण करती है।।८९।।

पुत्रः प्रथमे गर्भे पयोधरे दक्षिणोन्नते स्त्रीणाम् ।
वामोन्नतेन पुत्री निरपत्यं चैव विषमेण ।।९०।।

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां दक्षिणोन्नते पयोधरे प्रथमे गर्भे पुत्रो भवति) स्त्रियों के दाहिनी ओर को झुके हुए कुचों से पहिले गर्भ से पुत्र होता है और वामोन्नतेन पयोधरेण प्रथमं पुत्री भवति) बाईं ओर को झुके हुए कुचों से पहिले गर्भ से पुत्री होती है और विषमेण पयोधरेण एव निरपत्यं भवति) ऊंचे नीचे कुचों से वह बिना संतान की होती है।।९०।।

शुष्के विहीनमध्ये स्थूलाग्रे स्तनयुगेऽङ्गना नैःस्व्यम् ।
लभते विरले तस्मिन्वैधव्यं पुत्रनाशं च ।।९१।।

अन्वयार्थौ—(अंगना शुष्के विहीनमध्ये स्थूलाग्रे स्तनयुगेमतिनैःस्व्यं लभते) स्त्री के सूखे, बीच में ऊंचे नीचे मोटे हैं आगे के भाग जिसके ऐसे दोनों कुचों के होने से दरिद्रता को पावें है और (तस्मिन् स्तनयुगे विरले सति वैधव्यं च पुनः पुत्रनाशं लभते) वे ही दोनों कुचों के बहुत दूर होने से विधवापन और पुत्र के नाश को पावै है॥९१॥

कुरुते वक्षोजद्वयमरघटघटीसदृशं पुरंध्रीणाम् ।
सतते पूर्वसुखं तत्पश्चादत्यर्थदुःखकरम् ॥९२॥

अन्वयार्थौ—(पुरंध्रीणां वक्षोजद्वयम् अरघटघटीसदृशं चेद् भवति) स्त्रियों के जो दोनों कुच रहैटकै घड़िये की तुल्य होंय तो (सततं पूर्वसुखं कुरुते) निरंतर पहले सुख को करते हैं और पश्चात (अतिदुःखकर भवति) पीछे दुःख के करनेवाले होते हैं॥९२॥

अतिनिबिडं कुचयुगलं यद्योषायाः पथि प्रयांत्या हि ।
सौख्य सारसवदना सौभाग्यं हन्ति शस्तकरम् ॥९३॥

अन्वयार्थौ—(पथि प्रयान्त्याः योषायाः यत् कुचयुगलम् अतिनिबिडे स्यात् तत् सारसवदना सौख्यं शस्तकरं च पुनः सौभाग्यं हंति) मार्ग में चलती हुई स्त्री के दोनों कुच जो मिल जायँ तो कमलवदना जो स्त्री है उसका जो कल्याणकारी सुख और सौभाग्य है उसको फिर नाश करे है॥९३॥

सुदृशांचूचुकयुग्मं शस्तं श्यामं सुवृत्तमतिपीनम् ।
स्मरनृपतेर्मुद्रेयं रतिसुकनिधिकोश भवनस्य ॥९४॥

अन्वयार्थौ—(सुदृशां चूचुकयुग्मं श्यामं सुवृत्तम् अतिपीनं शस्तं स्मर नृपतेः रतिसुखनिधिकोशभवनस्य इयं मुद्रा) स्त्रियों के दोनों कुचों की टोटनी साँवरी गोल और बहुत मोटी मांस से भरी हुई अच्छी होती हैं और कामदेव राजा के क्या हैं मानों रति सुख निधिकोषक घर की यह मुहर अर्थात् छाप है॥९४॥

दीर्घं चूचुकयुग्मं यस्याः सा प्रियरतिर्भवेन्नूनम् ।
धूर्ता चान्तर्मनसा तेनैव द्वेष्टि सा मनुजम् ॥९५॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः चूचुकयुग्मं दीर्घं भवति सा नूनं प्रियरतिर्भवेत्) जिस स्त्री के कुचों की दोनों नोकें बहुत लंबी होंय, सो स्त्री निश्चय से रति में सुख वा प्यार करनेवाली होती है और (पुनः अन्तर्मनसा धूर्त्ता सा तेनैव मनुजं द्वेष्टि) फिर वे ही कुचों की नोकों से भीतरे मन से धूर्त्त और छल से उसी मनुष्य से वैर करती हैं॥९५॥

बहिरवनतेन चूचुकयुगलेनातीव सूक्ष्मविषमेण ।
संप्राप्य महद्दुःखं दुःशीला जायते योषित् ॥९६॥

अन्वयार्थौ—(बहिरवनतेन अतीव सूक्ष्मविषमेण चूचुकयुगलेन योषित् महद् दुःखं संप्राप्य पुनः दुःशीला जायते) बाहर की ओर झुके हुए और बहुत छोटे पतले ऊंचे नीचे कुचों की दोनों नोंकों से स्त्री बड़े दुःख को पाकर फिर व्यभिचारिणी होती है॥९६॥

इति स्तनषष्ठदशी सम्पूर्णा

अथ जत्रकथनम्

जत्रुभ्यां पीनाभ्यां धनधान्यसुतान्विता भवेद्वनिता ।
उन्नतिसंहतिमभ्द्यां पुनरेषा भूरिभोगाढ्या ॥९७॥

अन्वयार्थौ—(एषा वनिता पीनाभ्यां जत्रुभ्याम् उन्नतिसंहतिमद्भ्यां धनधान्यसुतान्विता पुनः भूरिभोगाढ्या भवति) जो स्त्री ऊंचे मांस से भरे अच्छे बनावट के कंधों के जोड़ों से युक्त हो वह धन धान्यवती और बहुत भोग करिके युक्त अर्थात् भोगवती होती है॥९७॥

श्लथकीकससंधिमता निम्नेन द्रविणलेशपरिहीना ॥
जत्रुयुगलेन योषिद्विषमेण पुनर्भवति विषमा ॥९८॥

अन्वयार्थौ—(श्लथकीकससंधिमता निम्नेन जत्रुयुगलेन योषित् द्रविणलेशपरिहीना भवति) ढीले हांडों की संधिवाले नीचे ऐसे कंधों के जोड़ोंसे स्त्री थोड़े से धन करिके भी हीन होती है और (पुनः विषमेण जत्रुयुगलेन योषित् विषमा भवति) फिर ऊंचे नीचे कंधो के जोड़ों करके स्त्री नटखट होती है॥९८॥

वंध्या वनिता यस्याः स्कंधयुगं किंचिदुन्नतं मूले ।
नातिकृशपीनदीर्घं सुखसौभाग्यप्रदं सुदृशाम् ॥९९॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः स्कंधयुगं मूले किंचित् उन्नतं सा वनिता वंध्या भवति) जिस स्त्री के दोनों कन्धे जड़ में कुछ ऊंचे होंय सो स्त्री बांझ होती है और (सुदृशां नातिकृशपीनदीर्घ स्कंधयुगं सुखसौभाग्यप्रदं भवति) स्त्रियों के न तो बहुत पतले, न मोटे, न लम्बे, दोनों कन्धे हों तो सुख सौभाग्य के देनेवाले होते हैं॥९९॥

उद्ध्र्वस्कंधा कुलटा स्थूलस्कंधापि भारवहनपरा ।
चक्रस्कंधा वंध्या दुःखवती रोमशस्कंधा ॥१००॥

अन्वयार्थौ—(ऊर्ध्वस्कंधा वनिता कुलटा भवेत्) ऊंचे कन्धोंवाली स्त्री खोटी होती है और (स्थूलस्कन्धा वनिता भारवहन परा अपि भवेत्) मोटे स्कंधोवाली स्त्री बोझ ढोनेवाली होती है और (चक्रस्कंधा वनिता वंध्या भवेत्) चक्रवाले कंधों से स्त्री बांझ होती है (रोमशस्कंधा वनिता दुःखवती भवेत्) बहुत रोमवाले कंधों से स्त्री दुःख पानेवाली होती है।।१००।।

अथांसकथनम्

निर्गूढसंधिबन्धौ सुसंहतौ पिशितसंयुतौ शस्तौ ।
अंसौ स्यातां यस्याः सा नारी भूरिसौभाग्या ।।१०१।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः अंसौ निर्गूढसंधिबंधौ सुसंहतौ पिशितसंयुतौ शस्तौ भवतः) जिस स्त्री के कंधे छिपे हैं जोड़ों के बन्ध जिसके और खूब जोड़ों से बंधे हुए मांस से भरे हुए हों (सानारी भूरिसौभाग्या भवति) सो स्त्री बड़ी सौभाग्यवती अर्थात् पति की प्यारी होती है।।१०१।।

सुदृशां नीचौ स्कंधौ दौर्भाग्यसमन्वितौ च भवतो वै ।
अत्युच्चैर्वैधव्यं निर्मांसैदुःखदारिद्रचम् ।।१०२।।

अन्वयार्थौ—(सुदृशां नीचौ स्कन्धौ वै इति निश्चयेन दौर्भाग्यसमन्वितौ भवतः) स्त्रियों के नीचे कंधे होंय तो निश्चय करके दौर्भाग्ययुक्त होते हैं और (अत्युच्चैः स्कंधैः वैधव्यं स्यात्) बहुत ऊंचे होंय तो विधवापन होय और (निर्मांसैः स्कंधैः दुःखदारिद्रयं भवति) मांसरहित कंधों से स्त्री दुःखी और दरिद्रिणी होती है।।१०२।।

अथ कक्षाकथनम्

कक्षायुगं सुगन्धि स्निग्धं च समुन्नतं पिशितपूर्णम् ।
तनुमृदुलरोमसहितं प्रशस्यते प्रायशः सुदृशाम् ।।१०३।।

अन्वयार्थौ—(सुदृशां कक्षायुगं सुगन्धि स्निग्धं समुन्नतं पिशितपूर्णं तनुमृदुल-रोमसहितं प्रायशः प्रशस्यते) स्त्रियों की दोनों काँखें सुगंधित और अच्छी चिकनी ऊंची मांस से भरी हुई, पतले और मुलायम रोमों करिके युक्त बहुधा बड़ाई के योग्य होती हैं।।१०३।।

अतिनिम्ने निर्मांसे प्रस्वेदमलान्विते शिराकीर्णे ।
सोलूखलबहुरोमे कक्षे दौर्भाग्यमावहतः ॥१०४॥

अन्वयार्थौ—(अतिनिम्ननिर्मांसे प्रस्वेदमलान्विते शिराकीर्णे सोलूखलबहुरोमे कक्षे दौर्भाग्यम् आवहतः) बहुत नीचे, बिना मांस के, पसीने और मलकरके युक्त, नसें जिसमें चमकती हो सो ओखली की भाँति बहुत रोमवाली ऐसी कांखें अभाग्य को करती हैं॥१०४॥

इति सप्तदशीपूर्णा

अथ बाहुलक्षणम्

शस्तौ बाहू सदृशां शिरीषतरुपुष्पकौमलौ दीर्घौ ।
मानुषकुरङ्गहेतोः पाशाविव पुष्पचापस्य ॥१०५॥

अन्वयार्थौ—(सुदृशां बाहू शिरीषतरुपुष्पकोमलौ दीर्घौ शस्तौ भवतः) स्त्रियों की दोनों भुजा शिरस के फूल के समान कोमल और बड़ी लंबी होय तो श्रेष्ठ होती हैं (कौ इव? मानुषकुरङ्गहेतोः पुष्पचापस्य पाशौ इव) मानो क्या है कि मनुष्य हरिण के हेतु कामदेव की यह फाँसी है॥१०५॥

निर्लोम बाहुयुगलं गूढास्थिग्रन्थि करिकराकारम् ।
विश्लिष्टशिरासन्धि स्त्रीणां सौभाग्यमधिशेते ॥१०६॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां बाहुयुगलं निर्लोम गूढास्थिग्रंथि करिकराकारं विश्लिष्टशिरासंधि सौभाग्यम् अधिशेते) स्त्रियों की दोनों भुजा बिना रोमों के और छिपी है हौड़ की गाँठि जिनकी हाथी की सूंड के आकार नसों के जोड़ जिनमें न दीखें ऐसी भुजाओं से सौभाग्य होता है॥१०६॥

वैधव्यं वनितानां बाहुभ्यां स्थूलरोमशाभ्यां स्यात् ।
दौर्भाग्यं ह्रस्वाभ्यां शिरायुताभ्यां परिक्लेशः ॥१०७॥

अन्वयार्थौ—(स्थूलरोमशाभ्यां बाहुभ्यां वनितानां वैधव्यं स्यात्) मोटे रोमों करके युक्त भुजा स्त्रियों की होय तो विधवा होय और (ह्रस्वाभ्यां बाहुभ्यां वनितानां दौर्भाग्यं स्यात्) छोटी भुजाओं से स्त्रियां खोटे भाग्य की होती हैं और (शिरायुताभ्यां बाहुभ्यां परिक्लेशः स्यात्) नसों करके युक्त भुजाओं से स्त्रियों को दुःख होता है॥१०७॥

अम्भोजगर्भसुभगं मृदु नवसहकारकिसलयाकारम् ।
तनु विप्रकृष्टसर्वांगुलिकं पाणिद्वयं शस्तम् ॥१०८॥

अन्वयार्थौ—(अंभोजगर्भसुभगं मृदु नवसहकार किसलयाकारं तनुविप्रकृष्ट-सर्वांगुलिकम् एतादृशं पाणिद्वयं शस्तम्) कमल के पुष्प के गर्भ के समान सुन्दर मुलायम, नये आम की कोंपलों के तुल्य पतली जुदी जुदी सब अंगुली जिसमें ऐसे दोनों हाथ श्रेष्ठ अर्थात् अच्छे होते हैं॥१०८॥

रोमशिरापरिहीनं घनमांसं पाणितलयुगं स्निग्धम् ।
बहुशुभमुन्नतनिम्नं रूक्षं खरं क्लेशदं भवति ॥१०९॥

अन्वयार्थौ—(रोमशिरापरिहीनं घनमांसं स्निग्धं पाणितलयुगं बहुशुभं भवति) रोम और नसों करिके हीन बहुत मांसवाली चिकनी ऐसी दोनों हथेली बहुत शुभ होती हैं और (उन्नतनिम्नं रूक्षं खरं पाणितलयुगं क्लेशदं भवति) ऊंची, नीची, गहरी, रूखी, खरदरी होय तो ऐसी दोनों हथेली दुःख के देनेवाली होती हैं॥१०९॥

यस्याः पाणितलं स्याद्बहुरेखं सा निहन्ति भर्तारम् ।
दौर्भाग्यं चेन्नियतं रेखारहितं पुनस्तनुते ॥११०॥

अन्वयार्थौ—(यस्याःपाणितलं बहुरेखं स्यात्सा भर्त्तारं निहन्ति) जिस स्त्री की हथेली पर बहुत रेखा होंय सो स्त्री पति को मारती है और (पुनः रेखारहित पाणितलं चेत् नियतं दौर्भाग्यं तनुते) फिर बिना रेखा की हथेली नियतरूप से खोटाभाग्य करे है॥११०॥

नरलक्षणाधिकारे नारीणामप्यशेषमेवोक्तम् ।
कररेखालक्ष्म पुनः किंचित्प्रस्तावतो वक्ष्ये ॥१११॥

अन्वयार्थौ—(नरलक्षणाधिकारे नारीणाम् अपि अशेषं लक्षणम् उक्तं पुनः कररेखालक्ष्म किंचित् प्रस्तावतः वक्ष्ये) पुरुष के अधिकार में स्त्रियों के भी संपूर्ण हाथ की रेखाओं के लक्षण कहे। फिर कुछ प्रसंग से कहता हूं॥१११॥

रक्ताः व्यक्ताः स्निग्धा गम्भीरा वर्तुलाः समाः पूर्णाः ।
रेखास्तिस्रः स्त्रीणां पाणितले सौख्यलाभाय ॥११२॥

अन्वयार्थौ—(रक्ताः व्यक्ताः स्निग्धाः गंभीराः वर्तुलाः समाः पूर्णाः स्त्रीणां पाणितले तिस्रो रेखाः सौख्यलाभाय भवंति) लाल, अच्छी प्रकट, चिकनी, गहरी, गोल बराबर, पूरी स्त्रियों की हथेली से तीन रेखा जो दीखती हों, तो सुखलाभ के हेतु होती हैं॥११२॥

मत्स्येन भवति सुभगा हस्तस्थस्वस्तिकेन वित्ताढ्या ।
श्रीवत्सेन पुनः स्त्री नृपपत्नी नृपतिमाता वा ।।११३।।

अन्वयार्थौ—(स्त्री हस्ततलस्थेन मत्स्येन सुभगा भवति) स्त्री की हाथ की हथेली में जो मच्छी की रेखा होय तो सौभाग्यवती होती है और (हस्तस्थस्वस्तिकेन वित्ताढ्या भवति) जो हथेली में सांथिये का चिह्न होय तो धनवती होती है और (हस्ततलस्थेन श्रीवत्सेन नृपपत्नी वा नृपतिमाता भवति) जो हथेली में श्रीवत्स चिह्न होय तो राजा की रानी अथवा राजा की माता होती है।।११३।।

पाणितले यस्याः स्यान्नन्द्यावर्तः प्रदक्षिणो व्यक्तः ।
भुवि चक्रवर्तिनस्तत्स्त्रीरत्नं भवति भोगार्हम् ।।११४।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः पाणितले प्रदक्षिणः व्यक्तः नंद्यावर्तः स्यात् तत् स्त्रीरत्नं भुवि चक्रवर्तिनः भोगार्हं भवति) जिस स्त्री की हथेली में दाहिनी ओर प्रकट नंद्यावर्त साथिये का चिह्न होय तो वह स्त्रीरत्न (स्त्रियों में श्रेष्ठ) पृथ्वी में चक्रवर्ती राजा के भोगने के योग्य होती है।।११४।।

या करतले कनिष्ठां निर्गत्यांगुष्ठमूलतो याति ।
सा रेखा भर्तृघ्नी तद्युक्तां नोद्वहेत्कन्याम् ।।११५।।

अन्वयार्थौ—(करतले या रेखा अंगुष्ठमूलतः निर्गत्य कनिष्ठां याति) हथेली में जो रेखा अंगूठे के मूल से निकल कनिष्ठा तक जाय तो (सा रेखा भर्तृघ्नी भवेत्) सो रेखा पति को मारनेवाली होती है और (तद्युक्ता कन्यां न उद्वहेत्) ऐसी रेखायुक्त कन्या को न विवाहे।।११५।।

कररेखाभिस्तुलया तुल्याभिर्जायते वणिग्जाया ।
भवति कृषीवलपत्नी युगसीरोलूखलाकृतिभिः ।।११६।।

अन्वयार्थौ—(तुलया तुल्याभिः कररेखाभिः वणिग्जाया जायते) तराजू के तुल्य रेखाओं करिके युक्त करतल हो सो वैश्य की स्त्री होती है और (युगसीरोलूखलाकृतिभिः रेखाभिः कृषीवलपत्नी भवति) जुवा, हल, ओखली के आकार की रेखाओं से किसान की स्त्री होती है।।११६।।

गजवाजिवृषभपद्माः प्रासादधनुर्भागैर्दुर्वर्ज्याः ।
यस्याः पाणितले स्युः सा तीर्थकरस्य भुवि जननी।।११७।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः पाणितले गजवाजिवृषभपद्माः प्रासादधनुर्भागैर्दुर्वर्ज्याः या रेखाः स्युः) जिस स्त्री की हथेली में हाथी, घोड़ा, बैल, कमल, महल, धनुष इन

करिके रहित जो चिन्ह होंय तो (भुवि सा तीर्थकरस्य जननी भवति) पृथ्वी में सो स्त्री तीर्थकर अर्थात् धर्म के करनेवाले की माता होती है।।११७।।

शङ्खस्वस्तिकसागरनन्द्यावर्तातपत्रतिमिकूर्मैः ।
वामकरतलनिविष्टैः प्रजायते चक्रिणो माता ।।११८।।

अन्वयार्थौ—(वामकरतलनिविष्टैः शंखस्वस्तिकसागरनंद्यावर्तातपत्रतिमिकूर्मैः चक्रिणः माता प्रजायते) बायें हाथ की हथेली में जो स्थित शंख, चक्र, समुद्र, नंद्यावर्त चिह्न आतपत्र कहिये। छत्र, मछली कछुवा ऐसे चिह्न करके चक्रवर्ती राजा की माता होती है।।११८।।

ध्वजतोरणभद्रासनचमरभृङ्गारशीर्षरेखाद्याः ।
यस्या भवन्ति पाणौ सा जननी वासुदेवस्य ।।११९।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः पाणौ ध्वजतोरणभद्रासनचामरभृंगारशीर्षरेखाद्याः भवन्ति सा स्त्री वासुदेवस्य जननी भवति) जिस स्त्री के हाथ में ध्वजा, तोरण, राजा का आसन, चमर, जल की झारी, मस्तक पर के आकार रेखा आदि होंय तो सो स्त्री वासुदेव अर्थात् कृष्ण बलदेवकी माता होती है।।११९।।

श्रीवत्सवर्धमानांकुशायुधगदात्रिशूलतुल्याभिः ।
रेखाभिर्जयशब्दो वनितानां जायते सपदि ।।१२०।।

अन्वयार्थौ—(श्रीवत्सवर्धभानांकुशायुधभदात्रिशूलतुल्याभिःरेखाभिः वनितानां जयशब्दःसपदि जायते) श्रीवत्स, वर्धमान, अंकुश, गदा, आदि त्रिशूल इनके से आकार रेखा होंय तो स्त्रियों का जय जय बोलना शीघ्र ही होता है।।१२०।।

मण्डूककङ्कजंबुकवृषकाकोलूकवृश्चिकाः सुदृशाम् ।
रासभसैरिभकरभाः करस्थिता दुःखमाददते ।।१२१।।

अन्वयार्थौ—(सुदृशां करस्थिताः मंडूककंकजंबुकवृपकाकोलूकवृश्चिकाः रासभसैरिभकरभाः दुःखम् आददते) स्त्रियों के हाथ में स्थित मेंढक, कंकपक्षी, गीदड़, बैल, कौवा, उल्लू, बिच्छू, गधा, भैंसा,ऊंट आदि जो ये चिह्न होयँ तो दुःख को देते हैं।।१२१।।

अथांगुष्ठः

स्त्रीणां सरलोऽङ्गुष्ठः स्निग्धो वृत्तः शुभस्तथाऽङ्गुलयः ।
मृदुलत्वचः सुदीर्घाः क्रमशो वृत्ताः सुपर्वाणः ।।१२२।।

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणाम् अंगुष्ठः सरलः स्निग्धः वृत्तः शुभो भवति) स्त्रियों का अंगूठा सीधा, सुंदर, चिकना, गोल होय तो शुभ है और (अंगुलयः मृदुलत्वचः सुदीर्घाः क्रमशः वृत्ताः सुपर्वाणः शुभाः भवंति) अंगुलियाँ मुलायम, पतली, त्वचावाली, अच्छी, लम्बी, क्रमशः गोल अच्छे पोरुवों की शुभ होती हैं॥१२२॥

चिपिटाः स्फुटाश्च रूक्षाः पृष्ठे रोमान्विताः खरा वक्राः ।
अतिह्रस्वकृशा विरला विदधति दारिद्र्यमंगुलयः ॥१२३॥

अन्वयार्थौ—(चिपिटाः स्फुटाः रूक्षाः पृष्ठे रोमान्विताः खराः वक्राः अतिह्रस्वाः कृशाः विरलाः स्त्रीणाम् एतादृशाः अंगुलयः दारिद्र्यं विदधति) चपटी, प्रकट, रूखी, पीठ पर रोमयुक्त, खरदरी, टेढ़ी, वहुत छोटी पतली, जुदी जुदी स्त्रियों की अंगुली होय तो दारिद्र्य को करनेवाली है॥१२३॥

अथनखाः

स्निग्धा बन्धूकरुचः सशिखास्तुंगाः शुभा नखाः सुदृशाम् ।
बिभ्रत्यंकुशलीलामनङ्गगन्धद्विपेन्द्रस्य ॥१२४॥

अन्वयार्थौ—(सुदृशां नखाः स्निग्धाः बन्धूकरुचः सशिखाः तुङ्गाः शुभाः भवंति) स्त्रियों के नख चिकने, दुपहरिया के पुष्प की तरह उजले, चोटी के ऊंचे होय तो शुभ होते हैं और (अनंगगन्धद्विपेन्द्रस्य अंकुशलीलां बिभ्रति) वे ही नख कामदेवरूप मतवाले हाथी के अंकुश की शोभा को धारण करते हैं॥१२४॥

रूक्षैर्वक्रैः पीनैः सितैर्विवर्णैर्नखैः शिखारहितैः ।
शुक्त्याकारैर्वनिता भवन्ति सौभाग्यधनहीनाः ॥१२५॥

अन्वयार्थौ—(रूक्षैः वक्रैः पीनैः सितैः विवर्णैः शिखारहितैः शुक्त्याकारैः नखैः वनिताः सौभाग्यधनहीनाः भवंति) रूखे, टेढे, मोटे, सफेद, बेरंग के, उजली चोटी के रहित, सीपी के आकारवाले नख होयँ तो स्त्री सौभाग्य और धन से हीन होती हैं॥१२५॥

पाणिचरणयोर्यस्या जायन्ते बिन्दवो नखेषु सिताः ।
सा जगति सुसितनखा दुःखाय स्वैरिणी रमणी ॥१२६॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः पाणिचरणयोः नखेषु सिताः बिन्दवो जायंते जगति

सुसितनखा सा रमणी स्वैरिणी तथा दुःखाय भवति) जिस स्त्री के हाथ पाँव के नखों में सफेद छीटे होंय तो संसार में ऐसे नखवाली स्त्री व्याभिचारिणी और दुःख के अर्थ होती है॥१२६॥

अथ पृष्ठिः

सरलाशुभसंस्थाना निर्लोमा मध्यमाग्रवंशास्थिः ।
पृष्ठिः पिशितोपचिता सुखसौभाग्यप्रदा स्त्रीणाम् ॥१२७॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां पृष्ठिः सरला शुभसंस्थाना निर्लोमा मध्यमाग्रवंशास्थिः शुभा भवति) स्त्रियों की पीठ सूधी, अच्छे आकार की बिना रोमों की बीच में आगे तक की हड्डी की शुभ होती है और (पिशितोपचिता पृष्ठिःसुखसौभाग्यप्रदा भवति) मांस से खूब भरी पीठ सुख और सौभाग्य को देनेवाली होती है॥१२७॥

भुग्नवलितेन दासी भर्तृघ्नी भामिनी विशालेन ।
सशिरेण सदुःखा स्याद्विधवा पृष्ठेन रोमभृता ॥१२८॥

अन्वयार्थौ—(भामिनी भग्नवलितेन पृष्ठेन दासी स्यात्) स्त्री टेढ़ी सलघटोंवाली पीठ से दासी होती है और (विशालेन पृष्ठेन भर्तृघ्नी स्यात्) बड़ी और लंबी पीठ से पति को मारनेवाली होती है और (सशिरेण पृष्ठेन सदुःखा स्यात्) जिसमें नसें चमकती हों, ऐसी पीठ से दुःख सहित होती है और (रोमभृता पृष्ठेन विधवा स्यात्) रोमोंवाली पीठ से विधवा होती है॥१२८॥

अथ कृकाटिकालक्षणम्

ऋज्वी कृकाटिका स्यात्समांसपीना समुन्नता यस्याः ।
दीर्घायुर्विधवात्वं लभते सा सौख्यसौभाग्यम् ॥१२९॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः कृकाटिका ऋज्वी स्यात् सा दीर्घायुर्लभते) जिस स्त्री का गले का गट्टा अर्थात् गले की घेंटी सीधी होय तो स्त्री बड़ी आयु पावे और (यस्याः समांसपीना कृकाटिका स्यात् सा विधवात्वं लभते) जिसकी मांस से भरी मोटी घेटी होय सो विधवापन को पावे और (यस्याः कृकाटिका समुन्नता स्यात् सा स्त्री सौख्यसौभाग्यं लभते) जिस स्त्री की गलेकी घेंटी ऊँचाई लिये होय सो स्त्री सुख सौभाग्य को पाती है॥१२९॥

बहुपिशिता निष्पिशिता शिराचिता रोमशा विशाला च ।
कुटिला विकटा कुरुते दौर्भाग्यं प्रायशः सुदृशाम् ॥१३०॥

अन्वयार्थौ—(सुदृशः बहुपिशिता निष्पिशिता शिराचिता रोमशा कुटिला विकटा कृकाटिका प्रायशः दौर्भाग्यं कुरुते) स्त्रियों की बहुत मांसवाली वा बिना मांस की नसें चमकती हों, रोमावलीसहित बड़ी लंबी बुरी भयंकर जो गले की घंटी होय सो बहुधा अभाग्य को करती है॥१३०॥

मांसोपचितः कण्ठो वृत्तश्चतुरंगुलः शुभो विशदः ।
उच्चविलासं कथयति वदनाम्भोजस्य वनितानाम् ॥१३१॥

अन्वयार्थौ—(वनितानां कण्ठः मांसोपचितः वृत्तः चतुरगुलः विशदः शुभः) स्त्रियों का कंठ मांस से भरा, गोल चार अंगुल का, उज्ज्वल शुभ है और (वदनांम्भोजस्य उच्चविलासं कथयति) मुखकमल की अत्यन्त सुन्दरता को कहता है॥१३१॥

यस्याः सुसंहिता स्फुटरेखात्रितयाङ्किता भवेद्ग्रीवा ।
साऽलंकारे कनके मुक्तारत्नानि धारयति ॥१३२॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः ग्रीवा सुसंहिता स्फुटरेखात्रितयांकिता भवेत् सा कनकालंकारे मुक्तारत्नानि धारयति) जिस स्त्री की गर्दन मिली हुई प्रकट तीन रेखा चिह्नों से अंकित होय तो स्त्री सुवर्ण का गहना में मोती और रत्नों को पहनती है॥१३२॥

व्यक्तास्थिर्निर्मांसा चिपिटा स्फुटिता कुरूपसंस्थाना ।
चेदुपदिशति ग्रीवा योषाणां दुःखदौर्भाग्यम् ॥१३३॥

अन्वयार्थौ—(योषाणां ग्रीवा व्यक्तास्थिः निर्मांसा चिपिटा स्फुटिता कुरूपसंस्थाना स्यात् चेत्, सा ग्रीवा दुःखदौर्भाग्यम् उपदिशति) स्त्रियों की गर्दन प्रकट हाड़ों की, बिना मांस की, चपटी, फटी, बुरे स्वरूप की होय सो गर्दन दुःख और अभाग्य का उपदेश करती है॥१३३॥

ग्रीवा स्थूला विधवां चक्रावर्ता यदि स्त्रियं वंध्याम् ।
सशिरा ह्रस्वा निस्वां कुरुते दीर्घा पुनः कुटिलाम् ॥१३४॥

अन्वयार्थौ—(स्थूला ग्रीवा स्त्रियं विधवां कुरुते) मोटी गर्दन स्त्री को विधवा करती है और (चक्रावर्ती यदि ग्रीवास्त्रियं वंध्यां कुरुते) चक्र चिह्नवाली गर्दन स्त्री को बाँझ करती है और (ह्रस्वा सशिरा ग्रीवा स्त्रियं निःस्वां कुरुते) छोटी और

नसोंवाली गर्दन स्त्री को दरिद्रिणी करती है और (दीर्घा ग्रीवा स्त्रियं कुटिलां कुरुते) बड़ी और लंबी गर्दन स्त्री को खोटी करती है।।१३४।। इति ग्रीवाष्टदशी संपूर्णाः ।।

अथ चिबुकम्

अंगुलमानं चिबुकं वृत्तं पीनं सुकोमलं शस्तम् ।
स्थूलं द्विधा विभक्तं रोमशमत्यायतं न शुभम् ।।१३५।।

अन्वयार्थौ—(द्वचंगुलमानं वृत्तं पीनं सुकोमलं चिबुकं शन्तम्) दो अंगुल प्रमाण, गोल, मांसल, मुलायम ऐसी ठोढी अच्छी हैं और (स्थूलं द्विधा विभक्तं रोमशम् अत्यायतं चिवुकं न शुभं स्यात्) मोटी, दुहरी सी, रोमवाली, बहुत लंबी, ठोढ़ी अच्छी नहीं होती है।।१३५।।

अथ हनुकथनम्

निर्लोम शुभं सुघनं हनुयुगलं चिबुकपार्श्वसंलग्नम् ।
अतिवक्रकृशं स्थूलं पुनरशुभं रोमशं दृश्यम् ।।१३६।।

अन्वयार्थौ—(निर्लोम सुघनं चिवुकं पार्श्वसंलग्नं हनुयुगलं शुभम्) बिना रोमों के अच्छे, कड़े, ठोढी के पास ही लगे हुए ऐसे दोनों हनू शुभ हैं और (पुनः अतिवक्रकृशं स्थूलं रोमशं दृश्यम् अशुभं भवति) फिर बहुत टेढ़े, सूखे से, मोटे रोमवाले दीखे तो अशुभ होते हैं।।१३६।।

अथ कपोललक्षणम्

शस्ते कपोलफलके पीने वृत्ते समुन्नते विमले ।
पुलिन इव गङ्गायाः कुसुमायुधयादसां स्त्रीणाम् ।।१३७।।

अन्वयार्थौ—(पीने वृत्ते समुन्नते विमले स्त्रीणां कपोलफलके शस्ते) मांस से भरे, गोल, बराबर, ऊंचे, उजले, स्त्रियों के कपोलफल अच्छे होते हैं (के इव) क्या हैं मानो (कुसुमायुधयादसां स्त्रीणां गङ्गायाः पुलिने इव) कामदेव जलजीवों के गंगा के पुलिन अर्थात् रेत के गुदगुदे टीले हैं।।१३७।।

यस्याः कपोलयुगलं विच्छायं रोमसंयुतं परुषम् ।
रूक्षं स्वभावनिम्नमसितं सा दुःखिनी च स्यात् ॥१३८॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः कपोलयुगलं विच्छायं रोमसंयुतं परुषं रूक्षं स्वभावनिम्नम् असितं च स्यात्, सा स्त्री दुःखिनी भवेत्) जिस स्त्री के दोनों कपोल बिना रंग, रोमयुक्त, टेढ़े, रूखे, स्वभाव करिके नीचे काले होंय तो सो स्त्री दुखिया होती है॥१३८॥

अथ वदनम्

वर्तुलममलं स्निग्धंवसुपूर्णशीतांशुमण्डलविडम्बि ।
सौम्यं समं समांसं परिमलितं शस्यते वदनम् ॥१३९॥

अन्वयार्थौ—(वर्तुलम् अमलं स्निग्धं सुपूर्णशीतांशुमंडनविडंबि सौम्यं समं समांसं परिमलितं वदनं शस्यते) गोल, निर्मल, सचिक्कण, पूरे चन्द्रमा के बिम्ब के तुल्य सुन्दर बराबर, मांस से भरा सुगन्धित जो ऐसा मुख होय तो प्रशंसा के योग्य है॥१३९॥

जनकवदनानुरूपं यस्या मुखपङ्कजं सदाह्लादि ।
सा कल्याणी प्रायेणेति समुद्रः पुरा वदति ॥१४०॥

अन्वयार्थौ—(यस्याःमुखपंकजंजनकवदनानुरूपंसदाहलादि) जिस स्त्री का मुखकमल पिता के मुख के तुल्य होय तो सदा प्रसन्न करनेवाली है (प्रायेण सा कल्याणी भवति इति समुद्रः पुरा वदपि) बहुधा सो स्त्री कल्याण की करनेवाली होती है समुद्र ने यह बात पहिले से कही है॥१४०॥

तुरगोष्ट्रखरबिडालव्याघ्रच्छागाननैः समं यदि चेत् ।
पृथुलं निम्नं स्फुटितं दुर्गन्धं शस्यते न मुखम् ॥१४१॥

अन्वयार्थौ—(तुरगोष्ट्रखरविडालव्याघ्रच्छागाननैः समं पृथुलं निम्नं स्फूटितं दुर्गन्धं मुखं यदि चेत् न शस्यते) घोड़ा, ऊंट, गधा, विलाव, सिंह, बकरा इनके तुल्य होय और चौड़ा, नीचा, फटासा, दुर्गंधवाला हो तो मुख निंदित है॥१४१॥

अथौष्ठबिम्बम्

रेखाखण्डितमध्यो मसृणः परिपक्वबिम्बफलतुल्यः ।
अधरोष्ठः स्निग्धोऽसौ मनोहरो हरिणशावदृशाम् ॥१४२॥

अन्वयार्थौ—(रेखाखंडितमध्य: मसृण: परिपक्वबिम्बफलतुल्य: स्निग्ध: हरिण-वशावद्दशाम् अधरोष्ठ: मनोहर: भवति) रेखा करके खंडित है बीच जिसका, चिकना, पके हुए कुँदरूप के फल के तुल्य, अच्छे, चिकने हिरण के बच्चों के से नेत्र जिनके ऐसी अंगनाओं के होंठ मन के हरनेवाले होते हैं अर्थात् अच्छे हैं।।१४२।।

शस्त: सुधानिधानं सन्ततमधरोष्ठपल्लवो व्यक्त: ।
हृदयोत्थसदनुरागच्छटाभिरिव रंजित: स्त्रीणाम् ।।१४३।।

अन्वयार्थौ—(सुधानिधानं व्यक्त: हृदयोत्थसदनुरागच्छटाभि:रंजित: इव स्त्रीणाम् अधरोष्ठपल्लव:शस्त:) अमृत का स्थान, प्रकट हृदय से जो उठा है अच्छा अनुराग उसकी कांति से रंगा हुआ ऐसा स्त्रियों का होंठ नवीन पत्ते के तुल्य निरन्तर अच्छा होता है।।१४३।।

विषमोऽलघु: प्रलम्ब: प्रस्फुटित: खंडित: कृशो रूक्ष: ।
दन्तच्छदोऽङ्गनानां दत्ते दौर्भाग्यदु:खित्वे ।।१४४।।

अन्वयार्थौ—(विषम: अलघु: प्रलम्ब: प्रस्फुटित: खंडित: कृश:रूक्ष: अंगनानां दन्तच्छद: दौर्भाग्यदु:खित्वे दत्ते) ऊंचा,नीचा,बड़ा,लंबा,फटा,टूटा हुआ, कटा,पतला, रूखा स्त्रियों का ऐसा होठ तो अभाग्य और दु:ख को देता है।।१४४।।

श्यामेन भर्तृहीना स्थूलेन कलिप्रिया भवति [illegible] ।
अधरोष्ठेन प्रायो दौर्गत्ययुता विवर्णेन ।।१४५।।

अन्वयार्थौ—(श्यामेन अधरोष्ठेन नारी भर्तृहीना भवति) काले होठों से स्त्री पतिहीन होती है और (स्थूलेन अधरोष्ठेन नारी कलिप्रिया भवति) मोटे होठों करिके स्त्री कलह करनेवाली होती है और (विवर्णेन अधरोष्ठेन प्राय: दौर्गत्ययुता भवति) बुरे रंग के होठों से बहुधा दरिद्रिणी होती है।।१४५।।

सुद्दशामिहोत्तरोष्ठ: पर्यायन[illegible]: सुकोमलो मसृण: ।
स्निग्धो रोमविरहित: किंचिन्मध्योन्नत: शस्त: ।।१४६।।

अन्वयार्थौ—(इह सुद्दशाम् उत्तरोष्ठ: पर्यायनत: सुकोमल: मसृण: स्निग्ध: रोमविरहित: किंचिन्मध्योन्नत: शस्त:) इस लोक में स्त्रियों के ऊपर का होंठ क्रम करके झुका हुआ मुलायम, चिकना, विना रोम का, कुछ बीच में ऊंचाई लिये होय तो अच्छा है।।१४६।।

भवति पृथुरुत्तरोष्ठ: समुन्नतो लोमशो लघुर्यस्या: ।
स्थूल: सा रमणी स्याद्विधवा कलहप्रिया प्राय: ।।१४७।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः उत्तरोष्ठः पृथुः समुन्नतः लोमशः लघुः स्थूलः भवति, सा रमणी प्रायः विधवा वा कलहप्रिया स्यात्) जिस स्त्री का ऊपर का होंठ चौड़ा, मोटा, ऊंचा, रोमवाला छोटा होय तो बहुधा विधवा वा कलह करनेवाली होती है।।१४७।।

अथ दशनलक्षणम्

स्निग्धैः समैः शिखरिभिः समुन्नतैर्विशदकुन्दसमशुभ्रैः ।
दशनैर्घनैस्तरुण्यः सौभाग्यैश्वर्य भोगिन्यः ।।१४८।।

अन्वयार्थौ—(स्निग्धैः समैः शिखरिभिः समुन्नतैः विशदकुंदसमशुभ्रैः घनैः दशनैः तरुण्यः सौभाग्यैश्वर्यभोगिन्यो भवन्ति) चिकने, चमकने, बराबर नोंके निकली हों, ऊंचे हो और उजले कुंद के फूल के तुल्य सफेद, एक से एक भिड़े होंय तो ऐसे दाँत से स्त्रियाँ सौभाग्य वा ऐश्वर्य को भोगनेवाली होती हैं।।१४८।।

शुचिरुचयो द्वात्रिंशद्दशना गोक्षीरसन्निभाः सर्वे ।
अधउपरि समा यस्याः सा क्षितिपतिवल्लभा बाला ।।१४९।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः सर्वे दशनाः शुचिरुचयः गोक्षीरसन्निभाः अधः उपरि समाः द्वात्रिंशत् भवंति, सा बाला क्षितिपतिवल्लभा भवति) जिस स्त्री के सब दांत उजले, रुचिकारी, गो के दूध के तुल्य नीचे ऊपर बराबर बत्तीस होंय सो स्त्री पृथ्वीपति (राजा) की प्यारी होती है।।१४९।।

अतिह्रस्वदीर्घसूक्ष्मा नार्याः स्थूला द्विपङ्क्तयो दशनाः ।
विषमाः शुक्त्याकाराः श्यामास्तन्वन्ति दौर्गत्यम् ।।१५०।।

अन्वयार्थौ—(अतिह्रस्वदीर्घसूक्ष्माः स्थूलाः द्विपंक्तयः विषमाःशुक्त्याकाराः श्यामाःईदृशाः दशना दौर्गत्यंतन्वंति) बहुत छोटे लम्बे पतले मोटे, दुहरा पंक्ति के ऊंचे नीचे सीपी के आकार, काले होय तो ऐसे दाँतों से स्त्री दरिद्रणी वा दुखिया होती है।।१५०।।

निरतं रदैरधस्तादधिकैर्निजमातृभक्षिणी रमणी ।
अध उपरि पुनर्विरलैःकुटिला विकटैश्च पतिरहिता ।।१५१।।

अन्वयार्थौ—(अधस्तात् रदैः अधिकैः नियतं रमणी निजमातृभक्षिणी भवति) नीचे का दाँत बहुत होने से निश्चय स्त्री अपनी माता को मारनेवाली होती है और (पुनः अधः उपरि विरलैः रदैः कुटिला भवति) जो नीचे ऊपर जुदे जुदे दाँत होंय तो

खोटी होती है और (वा विकटैः रदैः पतिरहिता भवति) जो भयंकर दाँत होंय तो बिना पति की अर्थात् विधवा होती है।।१५१।।

सितपीठिकास्थिरदना सक्लेशा दन्तुरा पुनः कुटिला ।
चलितरदा पतिरहिता निरपत्या घनमतिर्युवतिः ।।१५२।।

अन्वयार्थौ—(सितपीठिकास्थिरदना नारी सक्लेशा भवति) सफेद मसूढे नीचे के हाड के दाँत से स्त्री क्लेशसहित रहती है और (पुनः दंतुरा नारी कुटिला भवति) फिर खूब बड़े दाँतवाली स्त्री खोटी होती है और (चलितरदा नारी पतिरहिता वा निरपत्या घनमतिर्युवतिः भवति) चलायमान है दाँत जिसके ऐसी स्त्री पति पुत्र रहित और कठोर बुद्धिवाली होती है।।१५२।।

अथ जिह्वालक्षणम्

जिह्वा स्निग्धा मृद्वी शोणा समृणा तनुर्भवति यस्याः ।
मिष्टान्नभोजना स्यात्सौभाग्ययुता सदा रमणी ।।१५३।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः जिह्वा स्निग्धा मृद्वी शोणा मसृणा तनुर्भवति) जिस स्त्री की जीभ अच्छी, मुलायम, लाल, चिकनी, पतली होय (सा रमणी सौभाग्ययुता सदा मिष्टान्नभोजना स्यात्) सो स्त्री भाग्ययुक्त और सदा मीठे भोजन के पानेवाली होती है।।१५३।।

स्यादन्ते सङ्कीर्णा कुशस्येवाग्रविस्तीर्णा वा ।
श्वेतापि न प्रशस्ता कृष्णा प्रायेण रमणीनाम् ।।१५४।।

अन्वयार्थौ—(जिह्वा अंते कुशस्येव संकीर्णा वा अग्रविस्तीर्णा श्वेता कृष्णा जिह्वा प्रायेण रमणीनाम् अपि न प्रशस्ता) जीभ अंत में सकड़ी और डाभ की भाँति आगे को चौड़ी, सफेद और काली जीभ बहुधा स्त्रियों की अच्छी नहीं है।।१५४।।

खरया तोये मरणं प्राप्नोति विवाहमेति पाटलया ।
वर्णच्छेदं कलहं श्यामलया जिह्वया युवती ।।१५५।।

अन्वयार्थौ—(युवती खरया जिह्वया तोये मरणं प्राप्नोति) स्त्री खरदारी जीभ करके पानी में डूब के मरे और (पाटलया जिह्वया विवाहम् एति) कुछ श्वेत कुछ लाल जीभ करके विवाह को पाती है और (श्यामलया जिह्वया वर्णच्छेदं तथा कलहं प्राप्नोति) काली जीभ करके अपनी जाति से दूसरी जाति होय और कलह

को पाती है।।१५५।।

अथ तालुलक्षणम्

दारिद्र्यं मांसलया विशालया रसनया पुनः शोकम् ।
अतिलम्बयापि सततमभक्ष्यभक्षणरतिः स्त्रीणाम्।।१५६।।

अन्वयार्थौ—(मांसलया रसनया दारिद्र्यं पुनः विशालया रसनया शोकं प्राप्नोति) मोटी जीभ से दरिद्रता को पावै और फिर बड़ी लंबी जीभ से शोक को पाती है और (अतिलंबयाअपि सततं स्त्रीणाम् अभक्ष्यभक्षणरतिर्भवति) बहुत लंबी जीभ से निरन्तर स्त्रियों की जो खाने योग्य वस्तु नहीं उसे खाने में चाहना अर्थात् प्रीति होती है।।१५६।।

स्निग्धं कोकनदच्छवि प्रशस्यते तालु कोमलं विमलम् ।
श्यामं पीनं च पुनः सुदृशां दुःखावहं बहुशः ।।१५७।।

अन्वयार्थौ—(सुदृशां स्निग्धं कोकनच्छवि कोमलं विमलं तालु प्रशस्यते) स्त्रियों का सुन्दर, चिकना, लाल कमलकी सी कांतिवाला, मुलायम उज्ज्वल तालु प्रशंसा के योग्य अर्थात् अच्छा है और (पुनः श्यामं तालु बहुशः दुःखावहम्) फिर वही काला मोटा तालु होय तो बहुत दुःख को करनेवाला है।।१५७।।

तालुनि सिते दरिद्रा पतिहीनाः दुःखिता भवति कृष्णे ।
प्रव्रज्यासंयुक्ता रूक्षे समले पुनर्नारी ।।१५८।।

अन्वयार्थौ—(तालुनि सिते सति नारी दरिद्रा) सफेद तालु होने से स्त्री दरिद्रणी और (तालुनि कृष्णे सति पतिहीना दुःखिता भवति) काले तालु होने से पतिरहित दुःखी होती है (पुनः रूक्षे समले सति प्रव्रज्यासंयुक्ता जायते) रूका मलिन तालु हुए वैरागिणी या पतिसंयोगरहित होती है।।१५८।।

अथ घण्टीलक्षणम्

कन्दस्थूला वृत्ता क्रमशस्तीक्ष्णलोहिता शुभा घण्टी ।
स्थूला सूक्ष्मा लम्बा कृष्णा श्वेता शुभा नैव ।।१५९।।

अन्वयार्थौ—(कन्दस्थूला वृत्ता क्रमशः तीक्ष्णलोहिता घण्टी शुभा) जमीकंद की भांति मोटी, गोल, क्रम से पैनी, लाल रंग की घंटी शुभ है और (स्थूला सूक्ष्मा

लम्बा कृष्णा श्वेता घंटी नैव शुभा) मोटी, पतली, लंबी, काली, सफेद घंटी शुभ नहीं है।।१५९।।

अथ हास्यलक्षणम्

ईषद्विकसितगण्डं हसितमलक्ष्यद्विजं कलं शस्तम् ।
प्राप्ते मुहुः सकम्पं संमीलितलोचनं निन्द्यम् ।।१६०।।

अन्वयार्थौ—(ईषद्विकसितगंडम् अलक्ष्यद्विजं कलं हसितं शस्तम्) थोड़े खुले हैं गंडस्थल जिसमें, नहीं दीख पड़ें, दांत जिसमें ऐसा सुन्दर हँसना अच्छा है और (प्रान्ते मुहुः सकंपं संमीलितलोचनं हसितं निंद्यं भवति) अंत में बारंबार हाथ पांव कँपै हिलें जिसमें और मुंद गये हैं नेत्र जिसमें ऐसा हँसना निंदित अर्थात् बुरा होता है।।१६०।।

अथ नासालक्षणम्

निःस्वां द्विधाग्रभागा कर्मकरां नासिका स्त्रियं लघ्वी ।
भर्तृविहीनां चिपिटा दीर्घा बहुकोपनां कुरुते ।।१६१।।

अन्वयार्थौ—(द्विधाग्रभागा नासिकां स्त्रियं निःस्वाम्) दोसी दीखैं हैं नोक आगे के भाग में जिसकी ऐसी नाक स्त्री को दरिद्रणी करे और (लघ्वी नासा स्त्रियं कर्मकराम्) छोटी नाक स्त्री को गुलामिनी करे और (चिपिटा दीर्घा नासिका स्त्रियं भर्तृविहीनां तथा बहुकोपनां कुरुते) चपटी लंबी नाक स्त्री को पतिरहित और बहुत क्रोधवाली करे।।१६१।।

अथ क्षुतलक्षणम्

दीर्घं दीर्घायुक्तं क्षुतं कृतं पिण्डितं ह्लादि ।
अनुनादयुतं शस्तं ततोऽन्यथा भवति विपरीतम् ।।१६२।।

अन्वयार्थौ—(दीर्घं क्षुतं दीर्घायुक्तं कृतं पिंडितं ह्लादि) बड़ी छींक भारी बड़ी न छोटी गोलाकार हुई ऐसी आनंदकारी है और (अनुनादयुतं क्षुतं शस्तम्)

शब्दसहित अथवा पिछला शब्दयुक्त छींक अच्छी है और (ततः अन्यथा विपरीतं भवति) इनसे और लक्षण की छींक बुरी होती है॥१६२॥

अथाक्षियुगलक्षणम्

गोक्षीरचारुलसिते रक्तान्ते कृष्णतारके तीक्ष्णे ।
प्रच्छन्नं कथयितुमिव कर्णविलग्ने शुभे नयने ॥१६३॥

अन्वयार्थौ—(गोक्षीरचारुलसिते रक्तांते कृष्णतारके तीक्ष्णे शुभे नयने प्रच्छन्नं कथयितुम् इव कर्णविलग्ने भवतः) गौ के दूध के समान श्वेत रंग शोभायमान लाल हैं अंत जिनके काले हैं तारे जिनमें गुप्त करने को मानो कान के पास आयके लगे हैं, ऐसे नेत्र शुभ होते हैं॥१६३॥

नीलोत्पलदलतुल्यैरतिविमलैः सूक्ष्मपक्ष्मभिः स्निग्धैः ।
नयनैरिवार्ककमलैर्भवन्ति सौभाग्यभोगिन्यः ॥१६४॥

अन्वयार्थौ—(नीलोत्पलदलतुल्यैः अतिविमलैः सूक्ष्मपक्ष्मभिः स्निग्धैःअर्ककमलैः इव नयनैः नार्यः सौभाग्यभोगिन्यो भवंति) नीलकमल की पँखुरी के तुल्य निर्मल, पतली हैं वरोनी जिनकी अच्छे चिकने, जैसे सूर्य से कमल खिले हुए ऐसे नेत्रों करिके स्त्री सौभाग्य के भोग करनेवाली होती है॥१६४॥

मृगनेत्रा शशनेत्रा वराहनेत्रा मयूरनेत्रा च ।
पृथुनेत्राम्बुजनेत्रा निर्मलनेत्रा शुभा नारी ॥१६५॥

अन्वयार्थौ—(मृगनेत्रा शशनेत्रा वराहनेत्रा मयूरनेत्रा पृथुनेत्रा अम्बुज नेत्रा निर्मलनेत्रा नारी शुभा भवति)हरिणकेसे नेत्रवाली, खरगोश के से नेत्रवाली, सूकर के से नेत्रवाली, बड़े लम्बे चौड़े नेत्रवाली, कमल के से नेत्रवाली और उजले नेत्रवाली स्त्री अच्छी होती है॥१६५॥

उद्भ्रान्तमनाः केकरविषमाक्षीनिन्दिता भवेद्युवतिः ।
मेषाक्षी बिडालाक्षी वृत्ताक्षी समुन्नताक्षी न दीर्घायुः ॥१६६॥

अन्वयार्थौ—(केकरविषमाक्षी निन्दिता उद्भ्रान्तमना युवतिर्भवेत्) काणी, ऊँचे नीचे नेत्रवाली निन्दित उड़े से चित्तवाली होती है और (मेषाक्षी बिडालाक्षी वृत्ताक्षी समुन्नताक्षी नारी दीर्घायुः न) मेंढे की सी नेत्रवाली बिलाव की सी नेत्रवाली बड़ी नेत्रवाली स्त्री आयुवाली नहीं होती है॥१६६॥

यस्याः पिङ्गलनेत्रद्वितयं सा सुरतकौशलं लभते ।
दुःशीलत्वेन समं वैधव्यं वा ध्रुवं रमणी ॥१६७॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः पिंगलनेत्रद्वितय भवति सा रमणी सुरतकौशलं लभते) जिस स्त्री के पीले रंग के से दोनों नेत्र होंय सो स्त्री भोग के सुख को पाती है अथवा (दुःशीलत्वेन समं ध्रुवं वैधव्यं लभते) वह खोटे स्वभाव के साथ निश्चय करके विधवापन को पाती है॥१६७॥

गोपिङ्गलनेत्रयुता पितरं श्वशुरं च मातुलं च पुत्रम् ।
भ्रातरमप्यधिगच्छति कामग्रथिला च मोहपरा ॥१६८॥

अन्वयार्थौ—(या नारी गोपिङ्गलनेत्रयुता भवति सा कामग्रथिला च पुनः मोहपरा वै पितरं श्वशुरं मातुलं पुत्र भ्रातरम् अपि अधिगच्छति) जो गौ के से रंग बराबर पीले नेत्रवाली होय सो स्त्री काम की अधिकता के कारण और मोह के मद में तत्पर होने से निश्चय पिता, श्वसुर, मामा, पुत्र और भाई से अधिक काम की चाहना करती है अर्थात् इनसे भोग चाहती है॥१६८॥

कोकनदच्छदरक्तच्छायं नयनद्वयं भवति यस्याः ।
सा परपुरुषाकांक्षायुक्ता रमणी च नित्यं स्यात् ॥१६९॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः कोकनदच्छदरक्तच्छायं नयनद्वयं स्यात्, सा रमणी परपुरुषाकांक्षायुक्ता नित्य स्यात्) जिस स्त्री के लाल कमल की पँखुरी के रंग के तुल्य दोनों नेत्र होयँ उस स्त्री को दूसरे पुरुष की चाहना नित्य होती है॥१६९॥

सजलनयना न शस्ता स्फारितनयना विहीनतरनयना ।
नरनयना कोटरनयना चञ्चलनयना गभीरनयनापि ॥

अन्वयार्थौ—(सजलयना नारीनशस्ता जल से भरे नेत्रवाली स्त्री अच्छी नहीं है और(स्फारितनयनानारी विहीनतरनयना) फटे से नेत्रवाली स्त्री बहुत खोटी होती है और (नरनयना कोटरनयना गभीरनयना चंचलनयना अपि नारी अशुभा भवति) मनुष्य के नेत्रवाली, चलायमान नेत्रवाली वृक्षकोटर के तुल्य नेत्रवाली, गहरे गढे से नेत्रवाली स्त्री अशुभ होती है॥१७०॥

या सव्यकाणचक्षुः सा परपुरुषाभिचारिणी रमणी ।
अपसव्यकाणचक्षुः स जन्मन्येव निरपत्या ॥१७१॥

अन्वयार्थौ—(या नारी सव्यकाणचक्षुःस्यात्, सारमणी परपुरुषाभिचारिणी भवति) जो स्त्री बाईं आँख से काणी होय सो स्त्री दूसरे पुरुष के भोगने की चाह से

व्यभिचारिणी होती है और (या नारी जन्मन्येव अपसव्यकाणचक्षुः भवति सा रमणी निरपत्या स्यात्) जो स्त्री जन्म से दाहिनी आँख से काणी होय सो स्त्री बिना सन्तान के होती है अर्थात् बाँझ होती है।।१७१।।

अथ पक्ष्मलक्षणम्

सुदृढैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मैः स्यात्पक्ष्मभिर्घनैः सुभगा ।
सूक्ष्मैर्विरलैः कपिलैः स्थूलैर्निन्द्या ध्रुवमजाभैः ।।१७२।।

अन्वयार्थौ—(सुदृढैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मभिः नारी सुभगा स्यात्) कड़ी चिकनी, काली, पतली, बहुत पास लगी हुई बरोंनियों से स्त्री अच्छी सुन्दर सौभाग्यवती होती है और (सूक्ष्मैः विरलैः कपिलैः स्थूलैः अजाभैः ध्रुवं पक्ष्मभिः नारी निंद्या स्यात्) पतली, जुदी, पीली, मोटी बकरीकीसी कांतिवाली निश्चय ऐसी बरोनियों से स्त्री निंद्य अयोग्य अर्थात् अशुभ होती है।।१७२।।

रुदनमनिमेषलक्षणमासामपि पुरुषवत्परिज्ञेयम् ।
ग्रन्थप्रपञ्चभयतः पुनरिह दिङ्मात्रमपि नोक्तम् ।।१७३।।

अन्वयार्थौ—(रुदनम् अनिमेषलक्षणम् आसाम् अपि पुरुषवत् परिज्ञेयम्) रोना और पलकों के न लगने के लक्षण पुरुष की भाँति इनके भी जानने चाहिये और (पुनः इह ग्रंथप्रपंचभयतः दिङ्मात्रम् अपि न उक्तम्) फिर यहां ग्रंथ के बढ़ने के भय से दिशामात्र के भी लक्षण नहीं कहे।।१७३।।

अथ भ्रूलक्षणम्

शस्ता वृत्ता तन्वी भ्रूयुगली* कज्जलच्छाया ।
नयनांभोरुहवलयितरूपा नालं समाश्रयति ।।१७४।।

अन्वयार्थौ—(वृत्ता तन्वी कज्जलच्छाया भ्रूयुगली शस्ता) गोलरूप काली कांति की दोनों भौहैं अच्छी हैं और (नयनांभोरुहवलयितरूपा भ्रूयुगली अलं न समाश्रयति) नेत्रों के कमलों को घेरनेवाली दोनों भौहैं अच्छी नहीं होती हैं।।१७४।।

---

* अस्य नपुं सकत्वेऽपि छन्दोऽपूर्तेः सन्देहात्स्त्रीत्वमुक्तं कविनेति प्रतिभाति।

लघुमृदुरोममयी भ्रूरधिज्यधनुरिव शुभा सुदृशाम् ।
कीर्णा पिङ्गलवृत्ता पृथुला खररोमशा न शुभा ।।१७५।।

अन्वयार्थौ—(सुदृशां लघुमृदुरोममयी अधिज्यधनुरिव भ्रूःशुभा स्यात्) स्त्रियों की छोटी, नरम रोमवाली और चढ़ी हुई कमान के रूप भौंहें शुभ हैं और (कीर्णा पिंगलवृत्ता पृथुला खररोमशाः भ्रूः न शुभा भवति) जुदे जुदे बिखरे से बालवाली पीले रंगवाली गोल चौड़ी खरदरे रोमवाली भौंह नहीं शुभ हैं।।१७५।।

वित्तविहीनां ह्रस्वा मिलिता स्थूला सदैव दुःशीलाम् ।
वन्ध्यां सुदीर्घरोमां रमणीं भ्रूवल्लरीकुरुते ।।१७६।।

अन्वयार्थौ—(ह्रस्वा भ्रूवल्लरी रमणीं वित्तविहीनाम्) छोटे भौंहें स्त्री को धनरहित करैं और (मिलिता स्थूला भ्रूवल्लरी रमणीं सदै व दुःशीलाम्) मिली हुई मोटी भौंहरूप बेली स्त्री को सदा खोटे चलनवाली करै और (सुदीर्घरोमा भ्रूवल्लरी रमणीं वंध्यां कुरुते) बड़े लंबे रोमवाली भौंह रूपवाली स्त्री को बांझ करे है।।१७६।।

अथ कर्णलक्षणम्

लम्बा विपुला कर्णद्वितयी मिलिता शुभा युताऽऽवर्तैः ।
दोलायुगलाविरतिप्रीतिं दंपतिकृते युगपत् ।।१७७।।

अन्वयार्थौ—(कर्णद्वितयी लम्बा विपुला मिलिता आवर्तैर्युता शुभा) दोनों कान लंबे बड़े मिले हुए चक्रयुक्त होयं तो शुभ हैं और (दोलायुगलाविरतिप्रीतिं दंपतिकृते युगपत् कुरुते) दो झूलों के चक्ररूप से स्त्री पुरुष के लिये आपस में प्रीति करे है।।१७७।।

रोमोपगता यस्याः शष्कुलिरहिता च नो शस्ता ।
कुटिला कृशा शिराला नारी सा जायते निन्द्या ।।१७८।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः कर्णद्वयी रोमोपगताशष्कुलिरहिता नो शस्ता) जिस स्त्रीके दोनों कान रोमयुक्त विना प्याली के होंय तो अच्छे नहीं और (कुटिला कृशा शिराला कर्णद्वयीयस्याः सा नारी निंद्या जायते) टेढ़े, पतले नसोंवाले दोनों कानों से स्त्री बुराई के योग्य होती है।।१७८।।

इति आचिबुककर्णान्तः संपूर्णा मन्ददशी

अथ ललाटलक्षणम्

निर्लोम शिराविरहितमर्द्धेन्दुसमं शुभं ललाटतलम् ।
त्र्यंगुलमानमनिम्नं स्त्रीणां सौभाग्यमावहति ।।१७९।।

अन्वयार्थौ—(निर्लोम शिराविरहितम् अर्द्धेन्दुसमं शुभं त्र्यंगुलमानम् अनिम्नं ललाटतलं स्त्रीणां सौभाग्यम् आवहति) रोमरहित, नसों बिना, आधे चन्द्रमा के समान, तीन अंगुल प्रमाण, ऊंचा ऐसा ललाट स्त्रियों के सौभाग्य को करता है।।१७९।।

रेखारहितं व्यक्तं स्वस्तिकसमलंकृतं शुभं भालम् ।
प्रगुणं पट्टमिव स्मरनृपस्य राज्याभिषकाय ।।१८०।।

अन्वयार्थौ—(व्यक्तं रेखारहितं स्वस्तिकसमलंकृतं भालं शुभम्) प्रकट और (स्मरनृपस्य राज्याभिषेकाय प्रगुणं पट्टम इव) कामदेव राजा के राज्याभिषेक के अर्थ मानों यह दृढ वस्त्र है।।१८०।।

यस्याः प्रलम्बमलिकं सा नारी देवरं निजं हन्ति ।
तदपि शिरारोमयुतं सा तु भवेत्पांसुला बाला ।।१८१।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः अलिकं प्रलम्बं सा नारी निजंदेवरं हन्ति) जिस स्त्री का ललाट लम्बा होय सो स्त्री अपने देवर को मारती है और (तदपि भालं शिरारोमयुतं भवेत् सा बाला तु पांसुला भवति) जो वही लम्बा ललाट नसें और रोमयुक्त हो तो सो स्त्री व्यभिचारिणी होती है।।१८१।।

अथ सीमंतलक्षणम्

सीमन्तो ललनानां ललाटपट्टाश्रितः शुभः सरलः ।
प्रगुणित इवार्द्धचन्द्राकृतिः कृतः पुष्पचापेन ।।१८२।।

अन्वयार्थौ—(ललनानां ललाटपट्टाश्रितः सरलः सीमन्तः शुभः) स्त्रियोंके ललाटपट्ट के आश्रित सीधी सीमंत अर्थात् माँग शुभ है और (पुष्पचापेन अर्द्धचन्द्राकृतिः प्रगुणितः कृतः इव) कामदेव ने आधे चन्द्रमा के आकार मानो यह दृढ़ किया है।।१८२।।

अथ शीर्षलक्षणम्

कुञ्जरकुम्भनिभं स्याद्वृत्तं शीर्षं समुन्नतं यस्याः ।
सा भवति भूपपत्नी सौभाग्यैश्वर्यसुखसहिता ।।१८३।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः शीर्षं समुन्नतं वृत्तं कुंजरकुंभनिभं स्यात् सा भूपपत्नीसौभाग्यैश्वर्यसुखसहिता भवति) जिस स्त्री का मस्तक ऊंचाई लिये गोल हाथी के शिर के तुल्य होय सो राजा की स्त्री सुख सौगाग्य सब सुहागवती होती है॥१८३॥

स्थूलेन भवति शिरसा विधवा दीर्घेण बन्धकी युवतिः ।
विषमेण विषमदुःखा दौर्भाग्यवती विशालेन ॥१८४॥

अन्वयार्थौ—(स्थूलेन शिरसा विधवा स्यात्) बड़े मोटे मस्तकवाली विधवा होय और (दीर्घेण शिरसा युवतिः बन्धकी भवति) लम्बे चौड़े मस्तकसे स्त्री व्यभिचारिणी अर्थात् खोटी होती है और (विषमेण शिरसा विषमदुःखा भवति) ऊंचे नीचे मस्तक करिके अत्यन्त दुःखी होती है और (विशालेन शिरसा दौर्भाग्यवती भवति) बहुत बड़े मस्तकवाली स्त्री अभागिनी होती है॥१८४॥

अथ केशलक्षणम्

रोलम्बसमच्छायाः सूक्ष्माः शीर्षे समुन्नताः स्निग्धाः ।
केशा एकैकभवा जायन्ते भूपपत्नीनाम् ॥१८५॥

अन्वयार्थौ—(रोलम्बसमच्छायाः सूक्ष्माः समुन्नताः स्निग्धाः एकैकभवाः भूपपत्नीनां शीर्षे ईदृशाः केशाः जायन्ते) भौंरे के समान काले पतले और ऊंचे चमकदार, चिकने, सुन्दर इकहरे होय तो राजा की स्त्रियों के शिर में ऐसे बाल होते हैं॥१८५॥

आकुञ्चिताग्रभागाः स्निग्धांबुजकालकान्तयः सुभगाः ।
चिकुरा हरन्ति यमुनातरङ्गभङ्गीं वरस्त्रीणाम् ॥१८६॥

अन्वयार्थौ—(आकुंचिताग्रभागाः स्निग्धाम्बुजकालकान्तयः सुभगाः वर-स्त्रीणां चिकुराः यमुनातरंगभंगीं हरन्ति) सिकुड़ रहे हैं आगे के भाग जिनके अर्थात् घुँगरारे ऐसे सचिक्कण काले कमल के रंग चमकदार, सुन्दर अच्छे स्त्रियों के ऐसे बाल मानो यमुनां की तरंग की रचना को हर लेते हैं॥१८६॥

यस्याः प्रस्फुटिताग्राः सूक्ष्माः परुषाः शिरोरुहा लघवः ।
उच्चा विरला जटिला विषमाः सा दुःखिनी युवतिः॥१८७॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः शिरोरुहाः प्रस्फुटिग्राः सूक्ष्माः परुषाः लघवः उच्चाः विरलाः जटिलाः विषमाः भवंति सा युवतिः दुःखिनी स्यात्) जिस स्त्री के बाल फटे

हुए हैं आगे के भाग जिसके ऐसे और पतले, रूखे, खरदरे, छोटे, ऊंचे, बिखरे हुए, लिपटे ऊंचे नीचे होंय सो स्त्री दुखिया होती है।।१८७।।

अतिशयदीर्घस्थूलैर्भर्तृघ्नी कामिनी भवति केशैः ।
कपिलरमनस्कारस्कंधप्रभवैः पुनर्निन्द्या ।।१८८।।

अन्वयार्थौ—(अतिशयदीर्घस्थूलैः केशैः कामिनी भर्तृघ्नी भवति) बहुत बड़े, लम्बे, मोटे बालों से स्त्री पति को मारनेवाली होती है और (पुनः कपिलैः अमनस्कारस्कन्धप्रभवैः केशैः नारी निंद्या भवति) फिर भूरे बुरे कंधों तक छिटके हुए बालों से स्त्री बुराई के योग्य अर्थात् बुरी होती है।।१८८।।

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रिकतिलकापरनाम्नि लरस्त्रीलक्षणशास्त्रे संस्थानाधिकारश्चतुर्थः ।।४।।

अथ व्यञ्जनलक्षणम्

व्यञ्जनमथ प्रकृतयो मिश्रकमेतदपि भवति संख्यानम् ।
संक्षेपाल्लक्षणमथ ह्यनुक्रमेणैव वक्ष्यामि ।।१।।

अन्वयार्थौ—(अथ व्यंजन प्रकृतयः मिश्रकम् एतत् अपि संक्षेपात् लक्षणम् अनुक्रमेण एव संख्यानं वक्ष्यामि) आगे व्यंजन और प्रकृति और मिश्रक इनके संक्षेप लक्षण क्रम करके इसी संख्या से मैं कहूंगा।।१।।

व्यञ्जनमिह जन्मान्तरशुभाशुभं व्यज्यते ध्रुवं येन ।
तनुमयमहत्त्वगादि व्यञ्जनमाख्यायते सद्भिः ।।२।।

अन्वयार्थौ—(इह येन जन्मान्तरशुभाशुभं ध्रुवं व्यज्यते तत् व्यञ्जनम्) इस ग्रन्थ में जिस करके पहिले जन्म का शुभ अशुभ लक्षण निश्चय करके प्रगट किया होय तिसका नाम व्यञ्जन है और (तनुमयमहत्त्वगादि सद्भिः व्यञ्जनम् आख्यायते) शरीरसंबधी बड़ी चर्म आदिक को पंडित व्यंजन कहते हैं।।२।।

अथ मशकलक्षणम्

रक्तः कृष्णो धूम्रो विन्दुसमो मशक एव विज्ञेयः ।
तिलकं तिलकाकारं ततोऽन्यदपि लांछनं स्त्रीणाम् ।।३।।

अन्वयार्थौ—(रक्तःकृष्णःधूम्रःबिंदुसमःमशक एव विज्ञेयः) लाल, काला, धूएँका सा बूँद समान होय उसी का नाम मशक जानिये और (तिलकं तिलकाकारं

ततः स्त्रीणाम् अन्यदपि लांछनं भवति) तिल के आकार तिल तिसके पीछे कोई और चिह्न स्त्रियों के होय उसका नाम लांछन होता है।।३।।

अन्तर्भ्रूयुग्मे वा ललाटमध्ये विलोक्यते यस्याः ।
सुस्निग्धाभो मशकः सा भवति महीपतेः पत्नी ।।४।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः अन्तर्भ्रूयुग्मे वा ललाटमध्ये सुस्निग्धाभःमशकः विलोक्यते सा स्त्री महीपतेः पत्नी भवति) जिस स्त्री के दोनों भौंहों के बीच में वा ललाट के बीच में सुन्दर मशक दीख पड़े सो स्त्री राजा की रानी होती है।।४।।

अन्तर्वामकपोले स्फुटता मशकेन लोहिता भवति ।
मिष्टान्नभोज्यमत्ति प्रायेणासौ नितम्बिनी लोके ।।५।।

अन्वयार्थौ—(या अंतर्वामकपोले मशकेनस्फुटता लोहिता भवति) जो स्त्री बायें कपोल में प्रकट मसासे लाल होय (असौ नितंबिनी लोके प्रायेण मिष्टान्नभोज्यम् अति)सो स्त्री लोकमें बहुधा मीठे भोजनको खाती है।।५।।

अथ तिलकलक्षणम्

तिलकं लांछनमथवा हृदि रक्ताभं विलोक्यते यस्याः ।
सा धनधान्योपेता पतिप्रिया जायते पत्नी ।।६।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः हृदि रक्ताभं तिलकम् अथवा लांछनं विलोक्यते सा पत्नी धनधान्योपेता पतिप्रिया जायते) जिस स्त्री के हृदय में लाल तिल वा और कोई चिह्न दीखे सो स्त्री धन धान्य से युक्त और पति की प्यारी होती है।।६।।

रक्तं तिलकं लांछनमपसव्यपयोधरे भवति यस्याः ।
पुत्रीचतुष्टयं सा सुतत्रयं चाङ्गना सूते ।।७।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः अपसव्यपयोधरे रक्तं तिलकं लांछनं भवति, सा अंगना पुत्रीचतुष्टयं च पुनः सुतत्रयं सूते) जिस स्त्री के दाहिने कुच में लाल तिल अथवा कोई और चिह्न होय सो चार पुत्री और तीन पुत्र को उत्पन्न करे हैं।।७।।

वामकुचे शुभतिलके विलासवती तदा स्वनालेन ।
स्फुटमेकपुत्रजननी सा विधवा दुःखिनी भवति ।।८।।

अन्वयार्थौ—(वामकुचे शुभतिलके सति विलासवती स्वनालेन स्फुटम् एकपुत्रजननी पश्चात् विधवा तथा दुःखिनी भवति) जो बायें कुच में सुन्दर तिल होय तो अपने नाल करिके प्रकट एक पुत्र को जननेवाली होके पीछे विधवा और दुखिया होती है।।८।।

गुह्यस्य कुंकुमाभस्तिलकः प्रान्तेऽथ दक्षिणे भागे ।
सा भवति भूपपत्नी नृपजननी जायते वापि ॥९॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः गुह्यस्य प्रान्ते अथ दक्षिणे भागे कुंकुमाभः तिलको भवति सा भूपपत्नी वा नृपजननी अपि भवति) जिस स्त्री की योनि के पास दाहिने ओर तिल हो वह राजा की पत्नी या माता होती है॥९॥

मशको लोहितवर्णो नासाग्रे दृश्यते स्फुटो यस्याः ।
सा भूपपट्टराज्ञी राजानं सूयते सूनुम् ॥१०॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः नासाग्रे लोहितवर्णः मशकः स्फुटः दृश्यते सा भूपपट्टराज्ञी वा राजानं सूनुं सूयते) जिस स्त्री के नाक के आगे के भाग में लाल रंग का तिल वा मस्सा प्रकट दीख पड़े सो राजा की पटरानी वा राजा पुत्र को उत्पन्न करे॥१०॥

विस्फुरित नासिकाग्रे यस्यास्तिलकः सकज्जलच्छायः ।
भृर्तघ्नी सा नारी विशेषतः पांसुला भवति ॥११॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः नासिकाग्रे सकज्जलच्छायः तिलकः विस्फुरति सा नारी भतृघ्नी वा विशेषतः पांसुला भवति) जिस स्त्री के नाक के आगे के भाग में काला तिल प्रकट होय सो स्त्री पति को मारे और विशेष करके वह व्यभिचारिणी होती है और खोटी होती है॥११॥

नाभेरधोविभागे मशको वा तिलकलांछने नार्याः ।
यस्या भवतः स्निग्धे सा रमणी वहति कल्याणम् ॥१२॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः नार्याः नाभेरधोविभागे मशकः वा तिलकलांछने स्निग्धे भवतः सा रमणी कल्याणं वहति) जिस स्त्री की टूडी के नीचे के भाग में मस्सा अथवा तिलक वा और कोई चिह्न चमकता होय तो सो स्त्री कल्याण को प्राप्त करनेवाली होती है॥१२॥

स्यातां गुल्फौ यस्याः स्फुटलांछनमशकतिलकसंयुक्तौ ।
सा धनधान्यविहीना दुःखवती जीवति प्रायः ॥१३॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः गुल्फौ स्फुटलांछनमशकतिलकसंयुक्तौ स्यातां सा धनधान्यविहीना प्रायः दुःखवती जीवति) जिस स्त्री के टकने में प्रकट चिह्न मस्सा वा तिल युक्त होय सो धनधान्यसे रहित बहुधा दुःखिया होकर जीती है॥१३॥

वामे हस्ते कंठे वा काये जायते ध्रुवं यस्याः ।
मशको यदि वा तिलकः प्राग्गर्भे सा सुतं सूते ॥१४॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः काये वामे हस्ते वा कण्ठे मशकः यदि वा तिलकः ध्रुवं जायते, सा प्राक् गर्भे सुतं सूते) जिस स्त्री के शरीर में बायें हाथ में वा कंठ में मस्सा वा तिलक निश्चय होय सो स्त्री पहले ही गर्भ में पुत्र को उत्पन्न करती है।।१४।।

मशकं तिलकं लांछनामुक्तस्थाने कृताशुभं यासाम् ।
अङ्गे पुनरपसव्ये सुदृशां क्लेशावहं बहुशः ।।१५।।

अन्वयार्थौ—(यासां सुदृशाम् उक्तस्थाने मशकं तिलकं लांछनम् अशुभं कृतम्) जिन स्त्रियों के कहे हुए स्थानों में मस्सा तिल और कोई चित्र होय तो अशुभ है और (पुनः अपसव्ये अङ्गे बहुशः क्लेशावहं भवति) फिर जो दाहिने अंग में चित्र होय तो अतिदुःख के करनेवाले होते हैं।।१५।।

अथ प्रकृतिलक्षणम्

प्रकृतिर्द्विविधा गदिता स्त्रीणां श्लेष्मादिका स्वभावाख्या ।
प्रथमा सापि त्रेधा द्वादशधा भवति पुनरन्या ।।१६।।

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां प्रकृतिर्द्विविधा गदिता श्लेष्मादिका च पुनः स्वभावाख्या, सापि प्रथमा त्रेधा पुनः अन्या द्वादशधा भवति) स्त्रियोंकी प्रकृति दो प्रकार की कही है। श्लेष्मादिक और स्वभाव, सो पहिली तीन प्रकार की है फिर दूसरी १२ प्रकार की होती है।।१६।।

नारीमतेऽस्ति प्रकृतिः सत्यप्रियभाषिणी स्थिरस्नेहा ।
बहुप्रसूतिं लभते उत्पलदूर्वाङ्कुरश्यामा ।।१७।।

अन्वयार्थौ—(नारीमते प्रकृतिः अस्ति, सा नारी स्थिरस्नेहा भवति) स्त्री के मत में स्वभाव है स्त्री स्थिर स्नेह अर्थात् स्थिरप्रीतिवाली होती है और (सत्यप्रियभाषिणी भवति) सच्ची और मीठा बोलनेवाली होती है और (उत्पलदूर्वांकुरश्याम बहुप्रसूतिं लभते) नीलकमल और दूब के अंकुर के समान श्याम रंग, बहुत जननेवाली होती है।।१७।।

स्निग्धनखररोमत्वङ्नारी सुविलोचना क्षमायुक्ता ।
सुविभक्तसमावयवा बहुसत्यापत्यवीर्ययुता ।।१८।।

अन्वयार्थौ—(स्निग्धनखररोमत्वक् सुविलोचना नारी क्षमायुक्ता भवति) चिकने हैं नख, रोम और त्वचा जिसके और सुन्दर नेत्रों करके युक्त ऐसी स्त्री क्षमावाली होती है और (सुविभक्तसमावयवा बहुसत्याषत्यवीर्ययुता भवति) जुदे

जुदे हैं बराबर हाथ पाँव आदि अंग जिसके ऐसी स्त्री बहुत सत्य, संतान और पराक्रमयुक्त होती है।।१८।।

अस्थूला सरसत्वक्प्रसूनतुल्यानुलेपना सुभगा ।
धर्मार्थिनी कृतज्ञा दयान्विता कमलपदा सुमुखी ।।१९।।

अन्वयार्थौ—(मोटी न होय, रसदार होय त्वचा जिसकी, फूल का सा है अनुलेपन जिसमें और धर्म से ही है प्रयोजन जिसमें, कहे को माननेवाली और दयावती, कमल के से हैं पाँव जिसके और सुन्दर है मुख जिसका ऐसी स्त्री अच्छी होती है इस श्लोक का अन्वय यथाक्रम है।।१९।।

प्रच्छन्ने धृतवेषा क्षुतृष्णाक्षमात्रपोपेता ।
मितवचनपानभोजनसमया क्ष्मातले पृथुलनयना ।।२०।।

अन्वयार्थौ—(क्ष्मातले पृथुलनयना नारी प्रच्छन्नधृतवेषा,क्षुत्तृष्णाक्षमात्रपोपेता मितवचनापानभोजनसमया स्यात्) पृथ्वी में बड़े नेत्रवाली स्त्री गुप्त धरे हैं अनेक वेष जिसने, भूख प्यास सहनशीलता और लज्जा इन चारों करिके युक्त प्रमाण के वचन अन्न जल समय पर है जिसके ऐसी होती है।।२०।।

साधारणसुरतेच्छा निद्रालुः शीतमांसलश्रोणिः ।
जलदजलाशयजलजकृतवांछा या भवेत्स्वप्ने ।।२१।।

अन्वयार्थौ—(साधारण है सुरत की इच्छा जिसकी, निद्रावती अर्थात् जिसको निद्रा अधिक होय, ठंडी है मांस से भरी योनि जिसकी और स्वप्न में (सोने में) मेघ और पानी के स्थान और पदार्थ बांछा करनेवाली होती है। इस श्लोक का अन्वय यथाक्रम है।।२१।।

योषित् पित्तप्रकृतिर्गौरी कृष्णाथवा हृष्टा ।
आताम्रनयनकररुहरसनापाणितलंतालुतला ।।२२।।

अन्वयार्थौ—(पित्तप्रकृतिः योषित् गौरी कृष्णा अथवा हृष्टा) पित्त के सुभाववाली स्त्री गोरे रंग वा काली प्रसन्न रहती है और (आताम्रनयनकररुहरसनापाणितलतालुतला भवति) नेत्र, नख, जीभ, हाथ की हथेली, तालु पाँव का तलुवा, ये जिसके लाल होते हैं वह अच्छी है।।२२।।

क्षणक्षणविकसच्चेष्टा अभिलषितशीतलमधुरसा मृद्वी ।
अथ विरलकपिलमूर्द्धजरोमा मेधावती प्रायः ।।२३।।

अन्वयार्थौ—(क्षणक्षणविकसच्चेष्टा) छिनछिन में खिले आते हैं देह व्यापार जिसके और अभिलषित शीतलमधुरसा प्यारा है शीत और मीठे रस जिसका

(मृद्वी) मुलायम है शरीर जिसका (प्रायः विरलकपिलमूर्द्धजरोमा मेधावती भवति) बहुधा जुदे जुदे भूरे रंग के बाल और रोम जिसके सो बुद्धिमती होती है॥२३॥

प्रियशुचिवासोमाल्या उपनाड्युष्णशिथिलमृदुगुह्या ।
अभिमानिनी शुचिरता विशदस्मितवल्लभा शूरा ॥२४॥

अन्वयार्थौ—(अस्मिन् श्लोकेक्रमान्वयः प्यारे हैं पवित्र कपड़े और माला जिसके फिर कैसी हैं वह उपनाड़ी (छोटी नसें) युक्त और गरम है गुदगुदी ढीली नरम योनि जिसकी गर्भवती और पवित्र बातों की चाहनेवाली निर्मल है हँसना प्यारा जिसका और जो शूरा है वह शुभ है॥२४॥

धृतवलिपलितक्षुत्तृट् तनुवीर्या मृदुलमोहनक्रीडा ।
किंशुकदिग्दाहतडिद्दहनादीन्पश्यति स्वप्ने ॥२५॥

अन्वयार्थौ—(धारण करी हैं सलवट और छींक, भूख, प्यास जिसने, थोड़ा है साहस जिसका मुलायम भोग जिसका वह टेसू के फूल और दिशाओं का जलना और बिजली आग आदि को देखती है॥२५॥

वनिता वातप्रकृतिः स्फुटितकचा भग्नपादतला ।
रूक्षा वै नखदशनाश्चलवृत्ता चञ्चलप्रकृतिः ॥२६॥

अन्वयार्थौ—(स्फुटितकचा भग्नपादतला) फटे टूटे हैं बाल और पांव के तलुवे जिसके और (वै इति निश्चयेन नखदशनाः रूक्षाः) रूखे हैं नख और दांत जिसके और (चलवृत्ता चञ्चलप्रकृतिः) चलायमान है आचरण और चञ्चल स्वभाव जिसका (वातप्रकृतिः वनिता ईदृशी भवति) वातप्रकृतिवाली स्त्री ऐसी होती है॥२६॥

अजितेन्द्रिया खराङ्गी गन्धर्वविलासहासकलहरतिः ।
बहुभोजनाऽल्पनिद्रा बहुलालापभ्रमणशीला ॥२७॥

अन्वयार्थौ—(नहीं वश में हैं इंद्रिय जिसके और खरदरा है अंग जिसका गाने और भोग हंसी कलह करने में है प्रीति जिसकी और बहुत भोजन और थोड़ा सोनेवाली बहुत बोलने और फिरने का है स्वभाव जिसका॥२७॥

धूसरशरीरवर्णा छायाविद्वेषमधुरसा शिशिरा ।
किंचिद्विवृताक्षमुखी शेते विलपति निशि त्रसति ॥२८॥

अन्वयार्थौ—(धूल के रंग के तुल्य हैं शरीर का अंग जिसका और छाया से वैर

और मीठे रस ठंडे को चाहनेवाली और थोड़ी खुली हुई आंख और मुख है जिसका रात में सोने में रोती डरती हुई विलाप करती है॥२८॥

वह्वम्ललवणतिक्तस्निग्धकषायप्रिया सुरतिकठिना ।
गोजिह्वाकर्कशतनुरोमा सुश्रोणिबिम्बयुता ॥२९॥

अन्वयार्थौ—(बहुत खट्टा, नमकीन, चरपरा, चिकना, कसैला ऐसे हैं स्वाद प्यारे जिसको और कमर के बिम्बयुक्त रति में कड़ी होती है॥२९॥

उद्यानवनक्रीडारतिरत्युष्णप्रिया स्थिरक्रोधा ।
तरुपर्वताधिरोहं स्वप्ने कुरुते न भोगमंना: ॥३०॥

अन्वयार्थौ—(बाग बगीचे और वन में खेलने वा जाने की है प्रीति जिसकी और बहुत गरम है प्रिय जिसके और स्थिर क्रोध है जिसका वह वृक्ष और पर्वतों पर चढ़ने का स्वप्न देखनेवाली और भोग में मन नहीं करे है॥३०॥

प्रायेणैषा प्रकृतिः शुद्धैव विलोक्यते स्फुटं क्वापि ।
भेदाः पुनरेतासां बहवोऽपि भवंति मनुजानाम् ॥३१॥

अन्वयार्थौ—(प्रायेण ऐषा प्रकृतिः शुद्धेव स्फुटं क्वापि विलोक्यते) बहुधा करके यह शुद्ध प्रकृति प्रकट नहीं देखी जाती है और (पुनः मनुजानाम् एतासां अपि बहवः भवंति) फिर मनुष्यों की इन्हीं प्रकृतियों के बहुत से भेद होते हैं॥३१॥

सुरविद्याधरगन्धर्वयक्षराक्षसपिशाचनरकपिभिः ।
अहिखरविडालसिंहैस्तुल्याऽन्यप्रकृतिरत्रैषा ॥३२॥

अन्वयार्थौ—सुर, विद्याधर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, पिशाच, नर, कपि, अहि, खर, विडाल, सिंह आदि के समान और भी प्रकृति है॥३२॥

अल्पाशिनी सुगन्धा समुज्ज्वला चारुमानसा शुद्धा ।
प्रियवसना तनुनिद्रा निर्दिष्टा सा सुरप्रकृतिः ॥३३॥

अन्वयार्थौ—(अल्पाशिनी सुगंधा) थोड़ा भोजन करनेवाली और अच्छी है गंध जिसमें और (समुज्ज्वला चारुमानसा शुद्धा) निर्मल कान्तियुक्त सुन्दर चित्त शुद्ध स्वभाववाली और (प्रियवसना तनुनिद्रा प्यारे हैं वस्त्र और थोड़ी है नींद जिसकी (सा नारी सुरप्रकृतिः निर्दिष्टा) सो स्त्री देवता की प्रकृतिवाली कही है॥३३॥

विद्याधरस्वभावा भवति कलागुणविचक्षणा शान्ता ।
चन्द्रानना सुभोगा मनोहरस्थानबद्धरतिः ॥३४॥

अन्वयार्थौ—(कलागुणविचक्षणा शांता) कला और गुण इनमें चतुर शान्त है चित्त जिसका और (चन्द्राननना सुभोगा) चन्द्रमा का सा है मुख जिसका, सुन्दर भोगवाली (मनोहरस्थानवद्धरतिः) सुन्दर स्थान में बांधी है प्रीति जिसने (ईदृशी नारी विद्याधरस्वभावा भवति) ऐसी स्त्री विद्याधर स्वभाववाली होती है।।३४।।

उद्यानवनासक्ता कलस्वरा गीतनृत्यरक्तमनाः ।
परिचितसुगन्धमाल्या गन्धर्वप्रकृतिरबला सा ।।३५।।

अन्वयार्थौ—(उद्यानवनासक्ता) बाग बगीचे और वन में है चित्त जिसका और (कलस्वरा गीतनृत्यरक्तमनाः) सुन्दर है शब्द, गीत और नृत्य में है मन जिसका (परिचितसुगंधमाल्या) सुगंध और माला से पहिचान करनेवाली (सा अवला गंधर्वप्रकृतिः ज्ञेया) सो स्त्री गन्धर्वस्वभाववाली जानिये।।३५।।

आरामजलकीडारता विभूषणपरायणा कान्ता ।
प्रायो यक्षप्रकृतिर्द्धनरक्षणकांक्षिणी रमणी ।।३६।।

अन्वयार्थौ—(आराम जलक्रीडारता) बाग बगीचे की सैर में तत्पर (विभूषणपरायणा) भूषण पहरने में तत्पर रहे (धनरक्षणकांक्षिणी रमणी) धन की रक्षा करने और चाहने और भोग करनेवाली (सा कान्ता प्रायः यक्षप्रकृतिर्भवति) सो बहुधा यक्षस्वभाववाली होती है।।३६।।

बह्वशना क्रुद्धमना हंति पतिं प्राणलग्नमप्युग्रा ।
सा राक्षसस्वभावा कटुकालापा दुराचारा ।।३७।।

अन्वयार्थौ—(बह्वशना) बहुत खानेवाली (क्रुद्धमनाः) लड़ने में है मन जिसका (प्राणलग्नम् अपि पतिं हंति) प्राण से लगे भी पति को मारनेवाली (उग्रा कटुकालापा दुराचारा) भयंकर और कडुवा बोलने और बुरे आचरणवाली (सा नारी राक्षसस्वभावा भवति) सो स्त्री राक्षसस्वभावाली होती है।।३७।।

शौचाचारभ्रष्टा रूपविहीना भयंकरा सततम् ।
प्रस्वेदमलोपेता भवति पिशाचप्रकृतिरशुभा ।।३८।।

अन्वयार्थौ—(शौचाचारभ्रष्टा) पवित्र आचरण से रहित (रूपविहीना) सूरत से बुरी (ससतं भयंकरा) निरंतर डर करनेवाली (प्रस्वेदमलोपेता) पसीना और मलकरिके युक्त (सा नारी अशुभा पिशाचप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री अशुभ पिशाचिनी स्वभाव की होती है।।३८।।

दानदयानियमरतिः पतिव्रताः देवगुरुकृताज्ञा च ।
कार्याकार्यविविक्ता नरस्वभावा भवति नारी ॥३९॥

अन्वयार्थौ—(दानदयानियमरतिः) दान दया और नियम में है प्रीति जिसकी (पतिव्रता देवगुरुकृताज्ञा च) पति के मानने और देव गुरु की करी है आज्ञा जिसने (कार्याकार्यविविक्ता) भले बुरे काम का विचार करनेवाली (सा नारी नर स्वभावा भवति) सो स्त्री मनुष्यस्वभाव की होती है॥३९॥

स्थैर्यं क्वापि न कुरुते समस्तदिग्वीक्षणेक्षणासक्ता ।
उत्फालगतिर्लुब्धा दुर्वेषा सा कपिप्रकृतिः ॥४०॥

अन्वयार्थौ—(क्वापि स्थैर्यं न कुरुते) कहीं ठहर न सके (समस्तदिग्वीक्षणे-क्षणासक्ता सब दिशाओं के देखने मे नेत्रों को फेरनेवाली (उत्फालगतिः) उछल कर चलनेवाली (लुब्धा) लोभवाली (दुर्वेषा) बुरे वेष की, खोटे रूपवाली (सा नारी कपिप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री बंदर के स्वभाववाली होती है॥४०॥

अन्यच्छिद्रन्वेषणपरायणा कुटिलगामिनी रौद्रा ।
धृतवैरा क्रोधरुचिरहिस्वभावा च वनिता स्यात् ॥४१॥

अन्वयार्थौ—(अन्यच्छिद्रान्वेषणपरायणा) औरों के दोष ढूंढ़ने में तत्पर (कुटिलगामिनी रौद्रा) टेढ़ी चाल और खोटे भयंकर स्वभाववाली (धृतवैरा) वैर को करनेवाली (क्रोधरुचिः) क्रोध में है रुचि (चाह) जिसकी (सा वनिता अहिस्वभावा स्यात्) सो स्त्री सांप के स्वभाववाली होती है॥४१॥

सहते परां विभूतिं खरमैथुनसेविनी मुसलनादा ।
अन्नेन येन केनचिदुपचितगात्रा खरप्रकृतिः ॥४२॥

अन्वयार्थौ—(परां विभूतिं सहते) दूसरे के ठाट को सहनेवाली (खरमैथुनसेवनी) बहुत जोर से भोग के चाहनेवाली अर्थात् गधे के से रमनेवाली (मुसलनादा) भयंकर बोलनेवाली (येन केन चित् अन्नेन उपचितगात्रा) किसी अन्नकरके मोटा हो गया है शरीर जिसका (सा नारी खरप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री गधे के स्वभाववाली होती है॥४२॥

छन्नं कुरुते पापं परपीडान्यस्तमानसा सततम् ।
स्त्री सापवादरक्षणपरा बिडालस्वभावा च ॥४३॥

अन्वयार्थौ—(या स्त्री छन्नं पापं कुरुते) जो स्त्री छिप के पाप करे (या स्त्री सततं परपीडान्यस्तमानसा) जो स्त्री दूसरे के मन को दुःख देनेवाली (या स्त्री

अपवादरक्षणपरा) जो स्त्री बुराई के साथ रक्षा में तत्पर (सा स्त्री बिडालस्वभावा भवति) सो स्त्री बिलाव के स्वभाववाली होती है।।४३।।

एकान्तस्थानरतिश्चिरेण मैथुननिषेवणस्था च ।
निद्रालसा गतभया सिंहप्रकृतिर्भवति युवतिः ।।४४।।

अन्वयार्थौ—(या स्त्री एकान्तस्थानरतिः) जो स्त्री एकान्त स्थान में रहने की इच्छावाली है (या स्त्री चिरेण मैथुननिषेवणस्था) जो स्त्री बहुत भोग करनेवाली (निद्रालसा) नींद और आलसवाली (गतभया) गया है भय जिसका (सा युवतिः सिंहप्रकृतिर्भवति) सो स्त्री सिंह के स्वभाववाली होती है।।४४।।

अथ मिश्रलक्षणम्

मण्डूकतुल्यकुक्षिर्भवति न्यग्रोधमण्डला युवतिः ।
सो सूते सुतमेकं सोऽपि पुनश्चक्रवर्ती स्यात् ।।४५।।

अन्वयार्थौ—(या युवतिः मंडूकतुल्यकुक्षिः तथा न्यग्रोधमंडला भवति) जो स्त्री के मेंढक की सी कोख और नीचे से हलकी ऊपर से भारी बड़ वृक्ष का सा आकार होय (सा एकं सुतं सूते) सो एक पुत्र को उत्पन्न करती है (पुनः सोपि सुतः चक्रवर्ती स्यात्) फिर वही पुत्र चक्रवर्ती राजा होता है।।४५।।

भालस्थले त्रिशूलं विलोक्यते दैवनिर्मितं यस्याः ।
तस्याः स्वामित्वं स्याद्भुवने वनितासहस्राणाम् ।।४६।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः भालस्थले दैवनिर्मितं त्रिशूलं विलोक्यते) जिस स्त्री के ललाट में दैव का बनाया हुआ त्रिशूल दीखे तो (तस्या भुवने सहस्राणां वनितानां स्वामित्वं स्यात्) तिस स्त्री को लोक में हजार स्त्रियों का मालिकपना होता है।।४६।।

या हरिणाक्षी हरिणग्रीवा हरिणोदरी हरिणजङ्घा ।
जातापि दासवंशे सा युवतिर्भवति नृपपत्नी ।।४७।।

अन्वयार्थौ—(या युवतिः हरिणाक्षी, हरिणग्रीवा, हरिणोदरी, हरिण जंघा स्यात्) जिस स्त्री की हिरण की सी आँख और हिरण की सी गर्दन और हिरण का सा पेट और हिरण की सी पिंडली होय तो (दासवंशे जातापि सा युवतिः नृपपत्नी भवति) वह टहलनी के भी वंश में उत्पन्न हुई होय सो भी स्त्री राजा की रानी होती है।।४७।।

मधुपिङ्गाक्षी स्निग्धा श्यामाङ्गी राजहंसगतिनादा ।
अष्टौ जनयति पुत्रान्धनधान्यविवर्धिनी तन्वी ॥४८॥

अन्वयार्थौ—(मधुपिंगाक्षी) शहद के से हैं नेत्र जिसके और (स्निग्धा श्यामांगी) चिकना सुन्दर है साँवला अंग जिसका और (राजहंसगतिनादा) राजहंसकी सी चाल और बोल जिसका (ईदृशी तन्वी धनधान्यविवर्द्धिनी) ऐसी स्त्री धन धान्य को बढ़ानेवाली (तथा अष्टौ पुत्रान् जनयति) वह आठ पुत्रों को उत्पन्न करे है॥४८॥

पीवरनितम्बबिम्बा पीवरवक्षोजमण्डका बाला ।
पीवरकपोलपाली सा सौभाग्यान्विता युवतिः ॥४९॥

अन्वयार्थौ—(या बाला पीवरनितम्बविम्बा) खूब भरे हुए मोटे फूले हैं कूले जिसके और (पीवरवक्षोजमण्डला) भरे हुए हैं कुचों के मंडल जिसके और (पीवरकपोलपाली) फूले हुए हैं कपोलों के हड्डे जिसके (सा युवतिःसौभाग्यान्विता भवति) सो स्त्री सौभाग्ययुक्त अर्थात् सर्व सुहागिनी होती है॥४९॥

रक्तनखतालुरसना रक्तोष्ठी रक्तपाणिपादतला ।
रक्तनयनान्तगुह्या धनधान्यसमन्विता वनिता ॥५०॥

अन्वयार्थौ—(रक्तनखतालुरसना रक्तोष्ठी रक्तपाणिपादतला रक्तनयनान्तगुह्या स्यात्) लाल नख और तालु, जीभ, लाल होठ, लाल हाथ, पाँव के तलुवा, लाल नेत्रों के अंत और योनि जिसकी लाल है (सा वनिता धनधान्यसमन्विता भवति) सो स्त्री धनधान्ययुक्त होती है॥५०॥

पृथुनयना पृथुजघना पृथुवक्षः पृथुकटिः पृथुश्रोणिः ।
पृथुशीला च पुरंध्री सुपूजिता जायते जगति ॥५१॥

अन्वयार्थौ—(पृथुनयना पृथुजघना पृथुवक्षाः पृथुकटिः पृथुश्रोणिः पृथुशीला पुरंध्री जगति सुपूजिता जायते) लंबे चौड़े नेत्र और लंबा चौड़ा कूले का आगा, बड़ी चौड़ी छाती, बड़ी चौड़ी कमर, बड़ी चौड़ी योनि, बड़ी उदारता दीखे, ऐसी स्त्री लोक में माननीय अर्थात् पूजने योग्य होती है॥५१॥

मृदुरोमा मृदुगात्री मृदुकोपा मृदुशिरोरुहा रमणी ।
मृदुभाषिणी अगण्यैः पुण्यैरासाद्यते सद्यः ॥५२॥

अन्वयार्थौ—(मृदुरोमा मृदुगात्री मृदुकोपा मृदुशिरोरुहा मृदुभाषिणी ईदृशी रमणी अगण्यैः पुण्यैः सद्यः आसाद्यते) नरम रोम, कोमल शरीर, थोड़े कोपवाली, कोमल बाल, मीठे बोलनेवाली, ऐसी स्त्री बड़े पुण्यों से शीघ्र ही मिलती

है।।५२।।

जानुयुगं जंघाद्वयमपि लग्नं स्यात् परस्परं यस्याः ।
उत्कृष्ठकामिनी या सा सौभाग्यान्विता रमणी ।।५३।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः जानुयुगं जंघाद्वयम् अपि परस्परेण लग्नं स्यात् या उत्कृष्टकामिनी सा रमणी सौभाग्यन्विता भवति) जिस स्त्री के दोनों घोटुओं के ऊपर के भाग जानु संज्ञक तथा आपस में दोनों जंघा लगी हों और जो श्रेष्ठ काम की चाह करनेवाली है सो स्त्री सौभाग्यवती अर्थात् अच्छे भाग्ययुक्त होती है।।५३।।

दीर्घमुखी दीर्घाक्षी दीर्घभुजा दीर्घमूर्द्धजा तन्वी ।
दीर्घांगुलिका प्राप्नोत्यायुर्दीर्घं सुखोपेतम् ।।५४।।

अन्वयार्थौ—(दीर्घमुखी दीर्घाक्षी दीर्घाभुजा दीर्घमूर्द्धजा दीर्घांगुलिका तन्वी सुखोपेतं दीर्घम् आयुः प्राप्नोति) बड़ा लंबा मुख, बड़े लंबे नेत्र। बड़ी लंबी बाहें, बड़े लबे बाल, बड़ी लंबी अंगुली हैं जिसकी ऐसी स्त्री सुख करके युक्त, बड़ी आयु पाती है।।५४।।

वृत्तमुखी वृत्तकुचा वृत्तप्रसृतोरुजानुगुल्फयुगा ।
वृत्तग्रीवानाभिर्वृत्तशिरा जायते धन्या ।।५५।।

अन्वयार्थौ—(वृत्तमुखी वृत्तकुचा वृत्तप्रसृतोरुजानुगुल्फयुगा वृत्तग्रीवानाभिः वृत्तशिरा नारी धन्या जायते) गोल मुख, गोल चूंची, गोल पसरे ऊरु, जानु और दोनों टकने, गोल गर्दन, टूंडी और गोल मस्तक है जिसका ऐसी स्त्री धन्य अर्थात् अच्छी होती है।।५५।।

व्यक्ता भवंति रेखा मणिबन्धे कण्ठदेशके नूनम् ।
पूर्णास्तिस्रो यस्या नृपस्य सा जायते जाया ।।५६।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः मणिबन्धे कंठदेश के व्यक्ताः पूर्णाः तिस्रो रेखा भवंति सा नूनं नृपस्य जाया जायते) जिस स्त्री के पहुँचे में और कंठ में प्रकट तीन रेखा पूरी होयँ सो निश्चय करके राजा की रानी होती है।।५६।।

उत्तप्तकनकरुचिरा तनुत्वचा सकलकोमलावयवा ।
लब्धसमुदायशोभा प्रायः श्रीभाजनं सुदृशी ।।५७।।

अन्वयार्थो—(या उत्तप्तकनकरुचिरा तनुत्वचा सकलकोमलावयवा लब्धसमुदाय शोभा सा सुदृशी प्रायः श्रीभाजनं भवति) जो स्त्री तपे हुए सोने के रंग और पतली खाल और संपूर्ण कोमल हैं हाथ, पाँव जिसके और पाई इकट्ठी शोभा जिसने सो स्त्री

बहुधा लक्ष्मी का पात्र अर्थात् भोगनेवाली होती है॥५७॥

पद्मिन्यथ हस्तिन्यथ शंखिन्यथ चित्रिणीति भेदेन ।
वनिता चतुष्प्रकारा क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ॥५८॥

अन्वयार्थौ—(वनिता चतुष्प्रकारा पद्मिनी हस्तिनी शंखिनी चित्रिणी इति भेदेन, क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः) स्त्रियों के चार प्रकार के भेद हैं–पद्मिनी १, हस्तिनी २, शंखिनी ३, चित्रिणी ४, तिनके क्रम से लक्षण हम कहते हैं॥५८॥

स्निग्धश्यामलकान्तिस्तिलकुसुमाकारसुभगनासा च ।
त्रिवलीतरङ्गमध्या वृत्तकुचा स्निग्धकृष्णकचा ॥५९॥
पद्ममुखी मधुगन्धा पद्मायतलोचना प्रियालापा ।
बिम्बोष्ठी हंसगतिर्द्धर्मरतिः पद्मिनी भवति ॥६०॥

अन्वयार्थौ—(स्निग्धश्यामलकान्तिः तिलकुसुमाकारसुभगनासा त्रिवलीतरंगमध्या वृत्तकुचा स्निग्धकृष्णकचा पद्ममुखी मधुगंधा मद्मायतलोचना प्रियालापा बिंबोष्ठी हंसगतिः धर्मगतिः सा नारी पद्मिनी भवति) सुन्दर चिकना साँवला है रंग जिसका और तिल के फूल के आकार सुन्दर है नाक जिसकी, त्रिवली की तरंग है बीच में जिसके गोल हैं कुच जिसके और सुन्दर काले बाल, कमल का सा है मुख जिसका, सुन्दर मीठी है सुगंध जिसमें, कमल के से हैं नेत्र जिसके, मीठा बोलनेवाली कुँदरूके से हैं लाल होंठ जिसके, हंस की सी है चाल जिसकी, धर्म में है प्रीति जिसकी सो नारी पद्मिनी नाम की होती है॥५९॥६०॥

स्थूलदशना सुमध्या गद्गदनादा मदोत्कटा चपला ।
ह्रस्वोरुभुजग्रीवाजङ्घा वादित्रगीतरतिः ॥६१॥
स्निग्धतररङ्गकेशी पीनोन्नतविपुलवृत्तकुचकलशा ।
मत्तमतङ्गजगमना मदगन्दा हस्तिनी भवति ॥६२॥

अन्वयार्थौ—(स्थूलदशना) बड़े मोटे हैं दांत जिसके (सुमध्या) सुन्दर है कमर जिसकी, (गदगद्नादा) गद्गद बोलनेवाली (मदोत्कटा चपला) सदा मतवाली, चंचल (ह्रस्वोरुभुजग्रीवाजंघा) छोटे हैं उरु और भुजा, गला, जंघा जिसके (वादित्रगीतरतिः) बाजे और गीत में है प्रीति जिसकी (स्निग्धतररंगकेशी सुन्दर रंग के से हैं बाल जिसके (पीनोन्नतविपुलवृत्तकुचकलशा) मांसीले ऊंचे और बड़े गोल हैं कुचकलश जाके (मत्तमतङ्गजगमना मतवाले हाथी की सी चाल है जिसकी, (मदगंधा सा हस्तिनी भवति) मद की सी सुगंध है जिसमें सो हस्तिनी होती है॥६१॥६२॥

विषमकुचा बिसगन्धा दीर्घप्रसृतोरुनासिकानयना ।
तनुकेशी खरचित्ता शंखरदा शंखिनी योषित् ।।६३।।

अन्वयार्थौ—(विषमकुचा बिसगंधा दीर्घप्रसृतोरुनासिकानयनातनुकेशी खरचित्ता शंखरदा सा योषित् शंखिनी भवति) ऊँचे नीचे हैं कुच जिसके और कमल के तंतु की सी गंध जिसमें, लंबे हैं हाथ के पंजे और ऊरु, नाक, नेत्र जिसके, छोटे और थोड़े पतले हैं बाल जिसके, तेज स्वभाव जिसका, शंख के से दांत जिसके ऐसी स्त्री शंखिनी होती है।।६३।।

तुङ्गपयोधरभारा विचित्रवस्त्रप्रिया चलालापा ।
सुक्षारगन्धनिचिता चित्राक्षी चित्रिणी गदिता ।।६४।।

अन्वयार्थौ—(ऊँचे बड़े कुचों के भारवाली, अनेक प्रकार के जो वस्त्र वह हैं प्रिय जिसको और चञ्चल है बोल जिसका, खारी गंध करके व्याप्त जिसमें, विचित्र हैं आंखें जिसकी सो स्त्री चित्रिणी कही है।।६४।।

कपिलविलोचनललनांकपिलकचांकपिलरोमराजिचिताम् ।
कपिलावयवां बालां सन्तः शंसन्ति न प्रायः ।।६५।।

अन्वयार्थौ—(भूरे हैं पिलाई लिये नेत्र और बाल जिसके, भूरा है रोमयुक्त शरीर जिसका, भूरे हैं हाथ पांव अंग जिसके ऐसी स्त्री की पंडित बहुधा प्रशंसा नहीं करते हैं अर्थात् अशुभ है। श्लोकान्वय यथाक्रम है।।६५।।

विपुलमुखी विपुलकचा विपुलाक्षी विपुलकर्णपदपृष्ठा ।
विपुलांगुलिका प्रायो भर्तृघ्नी जायते योषित् ।।६६।।

अन्वयार्थौ—(श्लोकान्वय यथाक्रम है) चौड़ा बड़ा है मुख जिसका, बड़े मोटे हैं बहुत बाल जिसके, बड़े चौड़े हैं भयंकर नेत्र जिसके और बड़े चौड़े हैं कान और पांव के पंजे जिसके, बड़ी हैं अंगुली जिसकी ऐसी स्त्री बहुधा पति को मारनेवाली होती है।।६६।।

कृष्णाक्षी कृष्णाङ्गी कृष्णनखा कृष्णरोमराजिकचा ।
कृष्णौष्ठतालुरसना सा नियतं कृष्णचरित्रा ।।६७।।

अन्वयार्थौ—(काली आंख, काला अंग, काले रोम और काले बाल बहुत जिसके और काले होंठ और तालु, जीभ जिसकी सो निश्चय करके खोटे चलन की होती है।।६७।।

लम्बललाटी लम्बग्रीवा लम्बोष्ठनासिका न शुभा ।
लम्बपयोधरबाला लंबस्फिग् लम्बरमणमणिः ।।६८।।

अन्वयार्थौ—(लंबललाटी लंबग्रीवा लंबोष्ठनासिका न शुभा, तथा लंब पयोधरबाला, लंबस्फिक् लंबरमणमणिः ईदृशी बाला न शुभा) लंबा ललाट, लंबी गर्दन, लंबे होंठ और नाक ये अच्छे नहीं हैं और लंबे कुच, लंबे कोख, लंबी है योनि में कली जिसके ऐसी स्त्री अच्छी नहीं है।।६८।।

निःसरति वदनकुहराल्लाला यस्याः सदा शयानायाः ।
स्मेरे किंचिन्नेत्रे सा बाला कथ्यते कुलटा ।।६९।।

अन्वयार्थौ—(शयानायाः यस्याः वदनकुहरात् लाला सदा निःसरति तथा किंचित् नेत्रे स्मेरे भवतः सा बाला सदा कुलटा कथ्यते) सोते हुए जिसके मुख से लार सदा निकले और थोड़े नेत्र जिसके खुले होयँ सो स्त्री व्यभिचारिणी अर्थात् खोटी कही जाती है।।६९।।

यदि नाभ्यावर्त्तवले रेखाहीनं पृथूदरं यस्याः ।
दुःखाव्द्याकुलचित्ता सा युवतिर्जायते सततम् ।।७०।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः नाभ्यावर्त्तवले पृथूदरं यदि रेखाहीनं स्यात् सा युवतिः सततं दुःखात् व्याकुलचित्ता जायते) जिस स्त्री की टूंडी के चक्र से ऊपर चौड़ा पेट जो रेखाहीन होय सो स्त्री निरन्तर दुःख से व्याकुल चित्तवाली होती है।।७०।।

प्रसभं प्रसरति बाष्पं प्रहसंत्या नेत्रकोणयोर्यस्याः ।
लाला च मुखात्तस्याः कौतस्त्या शीलरक्षा स्यात् ।।७१।।

अन्वयार्थौ—(प्रहसंत्याः यस्याः नेत्रकोणयोः प्रसभं बाष्पं प्रसरति तथा मुखात् लालापि निःसरति तस्याः शीलरक्षा कौतस्त्या स्यात्) हँसते हुए जिसके नेत्रों के कोने से बहुत जोर से आँसू गिरे और मुख से लार भी गिरे उसके शील की रक्षा कहां से होयं? अर्थात् उसकी चाल चलन अच्छा नहीं होय।।७१।।

युगपद्भवन्ति यस्याः दुर्गन्धाः श्वासमूत्रवपुर्ऋतवः ।
साक्षादेव कुठारी सा बंशविकर्तिनी वनिता ।।७२।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः श्वासमूत्रवपुर्ऋतवः युगपद् दुर्गन्धा भवंति, सा वनिता साक्षात् एवं वंशविकर्तिनी कुठारी भवति) जिस स्त्री के श्वास, मूत्र, शरीर और रज आदि सब में बुरी बास हो तो वह साक्षात् वंश अर्थात् कुल को काटनेवाली कुल्हाड़ी है।।७२।।

यस्याः स्फुटं हसंत्याः कपोलयोः कूपकौ स्याताम् ।
नयने नितान्तचपले सा भर्तृघ्नी भवत्यसती ।।७३।।

अन्वयार्थौ—(हसंत्याः यस्याः कपोलयोः स्फुटं कूपकौ स्याताम् तथा नयने नितांतचपले स्याताम् सा असती भर्तृघ्नी भवति) हँसते हुए जिसके कपोलों में प्रकट गढ ले होयँ और जिसके नेत्र चलते वा फड़कते होयँ सो स्त्री कुलटा भर्त्ता को मारनेवाली होती है॥७३॥

यान्त्याः स्वैरं यस्या दैववशात्पटपटायते वसनम् ।
सा सततमेव कलयति रमणी कल्याणवैकल्यम् ॥७४॥

अन्वयार्थौ—(यांत्याः यस्याः स्वैरं दैववशात् वसनं पटपटायते सा रमणी सततं कल्याणवैकल्यं कलयत्येव) चलती हुई जिस स्त्री के आप से आप दैवयोग से कपड़े फटफट करें सो स्त्री निरन्तर कल्याण को बिगाड़ती है॥७४॥

सर्वेऽस्थिसंधिबन्धा यस्या गमनेन विकटिकायन्ते ।
सुतमपि पतिं चिकीर्षति सा सङ्गतयौवनं युवतिः ॥७५॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः गमनेन सर्वेऽस्थिसंधिबन्धाः विकटिकायन्ते सा युवतिः संगतयौवनं सुतमपि पतिं चिकीर्षति) जिस स्त्री के चलने में आपस में हाड़ों के जोड़ बन्ध चटके सो स्त्री तरुण बेटे को भी पति चाहती है॥७५॥

अपराङ्गं रोमयुतं पूर्वाङ्गं रोमविरहितं यस्याः ।
भवति विपरीतमथवा भयंकरा सा पिशाची च ॥७६॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः पूर्वाङ्गं रोमविरहितं तथा अपरांगं रोमयुतम् अथवा विपरीतं भवति सा नारी भयंकरा च पुनः पिशाची ज्ञेया) जिस स्त्री के ऊपर का आधा अंग रोमयुक्त न होय और नीचे का अंग रोमयुक्त होय अथवा इधर होय उधर न होय सो स्त्री डरावनी और पिशाचिनी जानिये॥७६॥

फल्गुलप्रचारशीला निष्कारणदृङ्निरीक्षणप्रगुणा ।
निष्फलबहुलालापा सा नारी दूरतस्त्याज्या ॥७७॥

अन्वयार्थौ—(बिना काम घूमने का है स्वभाव जिसका और बिना काम आंख चलानेवाली और बिना काम व्यर्थ बहुत बात करनेवाली सो स्त्री दूर से ही छोड़ देने योग्य हैं॥७७॥

अतिह्रस्वमुखा धूर्ता दीर्घमुखा दुःखभागिनी वनिता ।
शुष्कमुखी वक्रमुखी सौभाग्यैश्वर्यसुखहीना ॥७८॥

अन्वयार्थौ—(बहुत छोटे मुखवाली स्त्री धोखा देनेवाली होती है और बड़े लंबे मुखवाली स्त्री दुःख भोगनेवाली होती है, सूखे और टेढ़े मुखवाली स्त्री सुहागपन

तथा धन और सुख से हीन होती है।।७८।।

यस्याः कपिला वृत्ता निरंतरा वपुषि रोमराजिः स्यात् ।
जाता पितृपतिगोत्रे सा भुवि भजते भुजिष्यात्वम् ।।७९।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः वपुषि रोमराजिः निरंतरा कपिला वृत्ता जाता स्यात् भुवि पितृपतिगोत्रे सा भुजिस्यात्वं भजते) जिस स्त्री के शरीर में रोमयुक्त पंक्ति बराबर, भूरे रंग की भौंरी वा चक्रयुक्त उत्पन्न हुई होय सो पृथ्वी में पिता के या पति के कुल में सो वह टहलनी का काम करती है।।७९।।

सततं मानविशिष्टा खरोच्चकटुकस्वरा स्फुरद्भ्रुकुटिः ।
स्वच्छन्दाचारगतिः सास्याद्रहिता निरंतरं लक्ष्म्या ।।८०।।

अन्वयार्थौ—(सततं मानविशिष्टा खरोच्चकटुस्वरा स्फुरद्भ्रुकुटिः या स्वच्छन्दाचारगतिः सा निरन्तरं लक्ष्म्या रहिता स्यात्) निरन्तर ही प्रकट तीक्ष्ण ऊंचा और कडुवा बोल जिसका और भौंह जिसकी फरका करें और अपनी इच्छा के अनुकूल आचार में चलना सो स्त्री सदा लक्ष्मी करिके रहित अर्थात् दरिद्रिणी होय।।८०।।

सोत्कण्टकांगुलीकं पाणितलपादतलद्वयं यस्याः ।
राजान्वयजातापि त्याज्या दूरादपि प्रमदा ।।८१।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः पाणितलं तथा पादतलद्वयम् सोत्कंटकांगुलीकं स्यात्) जिस स्त्री की हाथ की हथेली और पांव के तलुवे दोनों कांटि की भांति फटी खरदरी अंगुलियों सहित होय तो (राजान्वयजातापि) राजा के कुल में भी उत्पन्न हुई (सा प्रमदा दूरादपि त्याज्या) वह स्त्री दूर से ही छोड़ देने योग्य है।।८१।।

अतिह्रस्वा द्राघिष्ठाऽथवा तनिष्ठाङ्गना स्थविष्ठा वा ।
रूपिण्यति विश्वस्मिन् सा स्पष्टमनिष्टदा भवति ।।८२।।

अन्वयार्थौ—(या अंगना अतिह्रस्वा द्राघिष्ठा अथवा तनिष्ठा वा स्थविष्ठा भवति विश्वस्मिन् रूपिणी अपि सा स्पष्टम् अनिष्टदा भवति) जो स्त्री बहुत छोटी, लम्बी और बहुत पतली वा बहुत मोटी होय तो संसार में ऐसी रूपवती होय सो प्रकट विघ्न को देनेवाली होती है।।८२।।

पादौ यस्याः स्फुटितौ रोमशचिपिटांगुली सुगूढनखौ ।
कच्छपपृष्ठनखौ वा सा दुःखदरिद्रताहेतुः ।।८३।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः पादौ अस्फुटितौ रोमशचिपिटांगुली सुगूढनखौ वा कच्छपपृष्ठनखौ स्याताम् सा दुःखदरिद्रताहेतुर्भवति) पांव की फटी टूटी रोमयुक्त

चिपटी है अंगुली जिसकी और दबे हुए हैं गहरे नख जिसके या कछुवे की पीठ के से नख होंय तो वह स्त्री दुःख और दरिद्रता का कारण होती है।।८३।।

विकलाङ्गी व्याधियुता शुष्काङ्गी वामना तथा कुब्जा ।
नीचान्वयजा रमणी परिहरणीया सुरूपाऽपि ।।८४।।

अन्वयार्थौ—(विकलांगी) कुरूपा (व्याधियुता) रोगिणी (शुष्काङ्गी) सूखे अंगवाली (वामन) बौनी (कुब्जा) कुबड़ी (नीचान्वयजा) नीच कुल में उत्पन्न हुई (ईदृशी सुरूपाऽपि रमणी परिहरणीया) ऐसी सुन्दर रूपवती भी छोड़ने योग्य है।।८४।।

निशि सुप्ता या सततं पिनष्टि दशनान् परस्परं नारी ।
यत्किञ्चिदपि प्रलपति सा न च शस्ता सुलक्षणापि ।।८५।।

अन्वयार्थौ—(या नारी निशि सुप्ता दशनान् सततं परस्परं पिनष्टि यत् किंचित् अपि प्रलपति सा नारी सुलक्षणा अपि न शस्ता) जो स्त्री रात में सोते हुए निरंतर आपस में दांतों को पीसे और कुछ कुछ बोल उठै सो स्त्री सुलक्षणा अर्थात् अच्छे लक्षणवाली भी अच्छी नहीं है।।८५।।

काकमुखी काकाक्षी काकरवा काकजङ्घिका नारी ।
काकगतिस्तच्चेष्टा नूनं दारिद्र्यदुःखवती ।।८६।।

अन्वयार्थौ—(कौवे का सा मुख, कौवे की सी आंख, कौवै का सा बोल, कौवे की सी जांघ, कोवे की सी चाल और चेष्टा जिसकी है ऐसी स्त्री निश्चय करके दारिद्र्य करके दुःखवती है।।८६।।

सतत कोपाविष्टा स्तब्धाङ्गी चंचला महाबाहुः ।
अतिकृशकरपादयुगा न कदाचन मङ्गला प्रमदा ।।८७।।

अन्वयार्थौ—(निरंतरक्रोधवाली, कड़ा है अंग जिसका वह और चपल, लंबी भुजावाली वहुत सूखे से दुबले हैं हाथ पांव दोनों जिसके ऐसी स्त्री कभी भी मंगल अर्थात् शुभ को करनेवाली नहीं है।।८७।।

अंगुष्ठेन विरहिता यस्या करपदांगुल्यो मिलिताः ।
सा दारिद्र्यवती स्याद्युवतिर्यदि वा न दीर्घायुः ।।८८।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः अंगुष्ठेन विरहिताः करपदांगुल्योः मिलिताः स्युः सा युवतिः दारिद्र्यवती यदि वा दीर्घायुः न भवति) जिस स्त्री के अंगूठे के बिना हाथ पांव की सब अंगुली मिल जाय सो स्त्री दरिद्रिणी होवे और वह बड़ी आयुवाली नहीं अर्थात् थोड़ी आयु की होती है।।८८।।

कपिवक्त्रा कपिनेत्रा कपिनासा कपिकटिर्या च ।
कपिकर्णा रोमशापि प्रतीपकृज्जायते प्रायः ॥८९॥

अन्वयार्थौ—(बंदर का सा मुख, बंदर के से नेत्र, बंदर की सी नाक, बंदर की सी कमर, बंदर के से कान और बंदर के से बाल होंय जिसके वह स्त्री बहुधा उल्टे काम करनेवाली होती है॥८९॥

नग[1]वि[2]हगन[3]दीनाम्नी वृक्षलतागुल्मनामिकां नारी ।
नक्षत्रग्रहनाम्नी न रज्यते स्वैरिणी पत्या ॥९०॥

अन्वयार्थौ—(पर्वत, पक्षी, नदी इनके नामपर स्त्री का नाम होय अथवा वृक्ष और बेलि के वा घास फूल के और नक्षत्र और ग्रह नामवाली होय तो (ईदृशी स्वैरिणी नारी पत्या न रज्यते) ऐसी खोटी स्त्री पति के साथ प्रसन्न नहीं रहती अर्थात् पति को नहीं चाहती है॥९०॥

शक्रसुरासुरनाम्नी पुंनाम्नी गगननामिका नियतम् ।
भीषणनाम्नी रमणी स्वच्छन्दा जायते प्रायः ॥९१॥

अन्वयार्थौ—(इंद्र, देवता, दैत्य इनके नाम पर तथा पुरुष के नाम की अथवा आकाश के नाम की वा भयंकर नाम की होय तो (नियतं प्रायः स्वच्छन्दा जायते) निश्चय करिके बहुधा वह वेश्या के तुल्य हो जाती है॥९१॥

इह भवति मृगीवडवाकरिणीभेदेन कामिनी त्रेधा ।
तासां लक्ष्मधुना दिङ्मात्रमनूद्यते क्रमशः ॥९२॥

अन्वयार्थौ—(इह मृगीवडवाकरिणीभेदेन कामिनीत्रेधा भवति अधुना तासाम् लक्षणं क्रमशः दिङ्मात्रम् अनूद्यते) इस ग्रंथ में हरिणी, घोड़ी और हथिनी इन तीन भेदों करके स्त्रियां तीन प्रकार की होती हैं और तिनके लक्षण क्रम से दिशामात्र अर्थात् संक्षेप से कहे जाते हैं॥९२॥

यस्याः षडंगुलं स्यादष्टांगुलं वा सरोजमुकुलाभम् ।
नार्या वराङ्गमध्यं निगद्यते सा मृगी युवतिः ॥९३॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः नार्याः वराङ्गमध्यं षडंगुल वा अष्टांगुलं सरोजमुकुलाभम् स्यात् सा युवतिः मृगो निगद्यते) जिस स्त्री का भग छः अंगुल का अथवा आठ अंगुल का गहिरा कमल की कली सरीखा होय सो स्त्री मृगी तथा हरिणी कहाती है॥९३॥

---

१ पार्वतीगिरिजादिनामभाक् । २ हंसी-लक्ष्मणादिनामभाक् अथवा विनतादि नामभाक् । ३ गङ्गा-यमुना-नर्मदेत्यादिनामभाक् ।

यस्या नवदशकांगुलमेकादशांगुलं वा सा वडवा ।
यस्या द्वादशत्रिदशांगुलं यदि वा करिणी कथिता ।।९४।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः वराङ्गं नवांगुलं वा एकादशांगुलं स्यात्, सा नारी वडवा भवति यदि वा द्वादशत्रिदशांगुलं तदा करिणी सा कथिता) जिस स्त्री की योनि नव दश, एकादश अंगुल की हो वह वडवा (घोड़ी) कहलाती है और जिसकी बारह वा तेरह अंगुल की योनि हो वह करिणी (हस्तिनी) बोली जाती है।।९४।।

प्रायेण मृगीवडवाकरिणीनां जायते सह मृगाद्यैः ।
प्रीतिस्सहजा मनुजैर्यथाक्रमं संप्रयुक्तानाम् ।।९५।।

अन्वयार्थौ—(यथाक्रमं संप्रयुक्तानां मृगीवडवाकरिणीनां सहजा प्रीतिः प्रायेण मृगाद्यैः मनुजः सह जायते) जैसे क्रम से कही जो हैं हरिणी, घोड़ी, हथिनी, इनकी स्वाभाविक अच्छी प्रीति बहुधा करके मृग, घोड़ा, हाथी ऐसे ही मनुष्यों के साथ होती है अर्थात् जैसे को तैसा मिलने से उनकी प्रीति अच्छी होती है।।९५।।

कामस्य सततवसतिस्ततो जगति कामिनीति विदिता स्त्री ।
द्वादशवर्षादूर्ध्वं कामो विस्फुरति पुनरधिकः ।।९६।।

अन्वयार्थौ—(कामस्य सततवसतिः ततः जगति स्त्री कामिनी इति विदिता द्वादशवर्षात् ऊर्ध्वं पुनः अधिकः कामः विस्फुरति) स्त्री काम का निरंतर स्थान है, तिससे लोक में कामिनी इस नाम से प्रसिद्ध है बारह वर्ष के ऊपर फिर अधिक काम जगता है।।९६।।

तत्कारणं तु यौवनमनन्तरं सुभ्रुवो भवन्त्येते ।
छेकोक्तिनयनलीलानितम्बबिम्बस्तनोद्भेदाः ।।९७।।

अन्वयार्थौ—(तत्कारणं तु सुभ्रुवः अनंतरम् यौवनम् एते छेकोक्तिनयनलीला-नितम्बविम्वस्तनोद्भेदाः भवंति) तिसका कारण स्त्री का यौवन है ताके पीछे स्त्रियों को हाव भाव नेत्रों की अवस्था और ही हो जाती है तथा नितम्बबिंब और कुचों में और ही भेद हो जाते हैं।।९७।।

गर्भाधाने रजसः शुक्राधिक्येन योषितां तनया ।
हीनेन पुनस्तनयो भवति समत्वयोर्युगलम् ।।९८।।

अन्वयार्थौ—(योपितां गर्भाधाने अधिकेन रजसा हीनेन शुक्रेण तनया भवति अधिकेन शुक्रेण हीनेन रजसा तनयः । यदि समत्वयोर्युगलं भवति) स्त्रियों के गर्भाधान समय में जो रज तो अधिक होय और शुक्र न्यून होय तो पुत्री उत्पन्न होती है और शुक्र अधिक होय रज न्यून होय तो पुत्र उत्पन्न जानिये अथवा शुक्र और रज

बराबर होय तो नपुंसक होता है।।९८।।

नारीणामपि तद्वत्स्नेहः क्षेत्राणि संहतिर्ज्ञेया ।
तेषां यतो विशेषो वितर्कितः कोऽपि नास्माभिः ।।९९।।

अन्वयार्थौ—(नारीणाम् अपि स्नेहः क्षेत्राणि संहतिः तद्वत् पुरुषवत् ज्ञेया तेषां पुरुषाणां यथा कथितः तद्वत् ज्ञेया, यतः अस्माभिः विशेषः न कोऽपि वितर्कितः) स्त्रियों का स्नेह और क्षेत्र संहति पुरुषों की सी जानिये जैसे पुरुषों का कहा तैसे ही स्त्रियों का जानिये। यह हमने और विशेष करके नहीं कहा।।९९।।

शुभलक्षणाधिरूपाधिकापि विख्यातगोत्रजातापि ।
सौभाग्यभाग्यभागपि न शुभा दुश्चारिणी रमणी ।।१००।।

अन्वयार्थौ—(शुभलक्षणाधिरूपाधिका अपि विख्यातगोत्रजातापि नारी सौभाग्यभाग्यभागपि दुश्चारिणी शुभा न) शुभलक्षणवाली रूपवती, प्रसिद्ध कुल में उत्पन्न हुई ऐसी नारी सुहागपन और भाग्य इनकी भोगनेवाली भी यदि व्यभिचाणिी होय तो शुभ नहीं है।।१००।।

वृत्तं च लक्ष्म वृत्तं रूपं वृत्तं समग्रसौभाग्यम् ।
वृत्तं गुणादिकं यत्तद् वृत्तं शस्यते सुदृशाम् ।।१०१।।

अन्वयार्थौ—(सुदृशां वृत्तं च लक्ष्म रूपं समग्रसौभाग्यं वृत्तं यत् गुणाधिकं वृत्तं तत् शस्यते) स्त्रियों के अच्छे लक्षण, अच्छे रूप, अच्छे समस्त सौभाग्यों में जो उत्तम गुणादिक हैं, वे ही इनमें अच्छे समझे जाते हैं।।१०१।।

अपि दुर्लक्षणलक्ष्मा महार्थता शीलसंयुता जातिः ।
शीलेन विना वनिता न शुभा शुभलक्षणवृतापि ।।१०२।।

अन्वयार्थौ—(दुर्लक्षणलक्ष्मा अपि शीलसंयुता जातिः महार्थता तथा शुभलक्षणवृतापि वनिता शीलेन विना न शुभा) खोटे लक्षण करके भी और कुलक्षण करके युक्त भी शीलसंयुक्त जाति बड़े अर्थ की करनेवाली होती है और शुभलक्षण करके भी स्त्री विना शील के शुभ नहीं है।।१०२।।

संत्यपि यत्राकृतयस्तत्र गुणाः सततमेव निवसंति ।
रूपाधिका पुरंध्री वृत्तादि गुणान्विता प्रायः ।।१०३।।

अन्वयार्थौ—(यत्र आकृतयः संति तत्रैव गुणाः सततं निवसंति तथा वृत्तादिगुणान्विता अपि पुरंध्री प्रायः रूपाधिका शुभा भवति) जहां स्वरूप है तहां निरंतर गुण वसते हैं और (रूपाधिका) वहुत सुन्दर रूपवाली ही बहुधावृत्तादि गुणयुक्त होती है।।१०३।।

इति संस्थानाधिकारो द्वितीयः ।।२।।

शुभसंस्थानवृतादपि सुदृशां प्रायः प्रशस्यते वर्णः ।
येनैता वर्णिन्यस्तस्मात्तल्लक्षणं वक्ष्ये ।।१०४।।

अन्वयार्थौ—(शुभसंस्थानवृतात् अपि प्रायः सुदृशां वर्णः प्रशस्यते येन एताः वर्णिन्यो भवन्ति तस्मात् तल्लक्षणम् अहं वक्ष्ये) शुभआकार से भी बहुधा स्त्रियों का रंग प्रशंसा के योग्य है और जिस कारण से वे ही स्त्री उत्तम वर्णनीय होती हैं इस कारण इनके लक्षण मैं आगे कहता हूं।।१०४।।

पङ्कजकिञ्जल्काभः स्त्रीणां नवतप्तकनकभङ्गनिभः ।
चंपककुसुमसमानः स्निग्धोः गौरः शुभो वर्णः ।।१०५।।

अन्वयार्थौ—(पंकजकिञ्जल्काभः नवतप्तकनकभंगनिभः चंपककुसुमसमानः स्निग्धः गौरः स्त्रीणां वर्णः शुभो भवति) कमल के फूल की केसर का सा रंग, नये तपे हुए सोने के पत्र के समान सुन्दर गोरा रंग स्त्रियों का शुभ अर्थात् अच्छा होता है।।१०५।।

नवदूर्वाङ्कुरतुल्यः स्मेरश्यामोऽर्जुनप्रसूनाभः ।
कान्तः श्यामो वर्णः सौभाग्यं सुभ्रुवां तनुते ।।१०६।।

अन्वयार्थौ—(सुभ्रवां नवदूर्वाङ्कुरतुल्यः वर्णः स्मेरश्यामः अर्जुनप्रसूनाभः कान्तः श्यामः सौभाग्यं तनुते) स्त्रियों के नये दूब के अंकुर के तुल्य रंग और खिला हुआ श्याम, अर्जुनवृक्ष के फूल के तुल्य सुन्दर सांवला रंग सौभाग्य को फैलाता है अर्थात् बढ़ाता है।।१०६।।

शुद्धोऽपि मध्यमः स्यात्कृष्णः सुस्निग्धगजजलच्छायः ।
वायसतुण्डविडंबी पुनर्जघन्यो घनविरूक्षः ।।१०७।।

अन्वयार्थौ—(शुद्धोऽपि कृष्णः सुस्निग्धगजलच्छायः वर्ण मध्यमः वायसतुंडविडंबी पुनःघनविरूक्षः जघन्यो भवति) निर्मल भी सांवला रंग सुन्दर चिकना, हाथी और जल की सी कांतिवाला मध्यम है—और कौवे की चोंच के आकार कड़ा रूखा रंग जघन्य अर्थात् नीच होता है।।१०७।।

द्युतिमान् यो हरिबालतामिस्रनिभो नीलः स विवर्णः ।
श्यामासंनिभवर्णो लावण्यगुणाधिकं स्त्रीणाम् ।।१०८।।

अन्वयार्थौ—(यः द्युतिमान् हरिबालः तामिस्रनिभः नीलः वर्णः स विवर्ण भवेत् श्यामासन्निभवर्ण स्त्रीणां लावण्यगुणाधिकं तनुते) जो चमकदार सिंह के बाल के वा अंधेरी रात का सा नीला रंग बेरंग होता है और जो श्याम चिड़िया के तुल्य रंग है सो स्त्रियों की शोभा और गुणों की अधिकता को फैलाता अर्थात् बढ़ाता है।।१०८।।

प्रव्रजितापि प्रायो न पाण्डुराका भवेच्छुभाचारा ।
कपिलातिगौरवर्णा न शस्यते मिश्रवर्णापि ॥१०९॥

अन्वयार्थौ—(पांडुराका शुभाचारा न भवेत्, प्रायः प्रव्रजितापि स्यात्, कपिलातिगौरवर्णापि न शस्यते) सफेद चाँदनी के से रंगवाली अच्छी चलनवाली नहीं होती है, बहुधा वह वैरागिणी हो जाती है और कबरे चित्र विचित्र बहुत गोरे रंग के मिले हुए रंगवाली स्त्री अच्छी नहीं होती है॥१०९॥

इति वर्णाधिकारस्तृतीयः ॥३॥

अथ गन्धलक्षणम्

वरवर्णिन्यपि न शुभा गतगन्धा कर्णिकारकलिकेव ।
तस्या गन्धांस्तद्वत्तल्लणं ब्रूमहे तस्मात् ॥११०॥

अन्वयार्थौ—(गतगन्धा काणकारकलिका इव वरवर्णिन्यपि न शुभा तस्मात् तस्याः गंधान् तल्लक्षणं च वयं ब्रूमहे) गई है गंध जिसकी अर्थात् विना सुगंध कनेरकी सी कली जैसी ऐसी उजलेरंगवालीभी स्त्रीशुभ नहीं है तिस कारण से तिसका गन्ध और लक्षण हम कहते हैं॥११०॥

जातीचंपकविचिकिलशतपत्रीबकुलकेतकीतुल्यः ।
स्वेदश्वासादिभवः प्रशस्यते योषितां गन्धः ॥१११॥

अन्वयार्थौ—(जातीचंपकविचिकिलशतपत्रीबकुलकेतकीतुल्यःयोषितां स्वेदश्वासादिभवः गन्धः प्रशस्यते) चमेली, चपा, विचिकिल, सेवती, मौलशिरी और केतकी के फूल के तुल्य (इनकी भांति) स्त्रियों के पसीने और श्वास में सुगंध होय तो प्रशंसा के योग्य है॥१११॥

गन्धः सर्वाङ्गीणो मृगनाभीसन्निभो भवति यस्याः ।
सा योषिदग्रमहिषी विहीनरूपापि भूमिपतेः ॥११२॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः सर्वांगीणः गंधः मृगनाभीसन्निभो भवति विहीनरूपापि सा योषित् भूमिपते अग्रमहिषी स्यात्) जिस स्त्री के सब अंग की गंध कस्तुरी की सी होय वह कुरूपा भी स्त्री राजा की मुख्य पटरानी होती है॥११२॥

ऋतुमत्या अपि यस्या विलसति गंधस्तिलप्रसूनाभः ।
सुरभिद्रव्यसमानः सा सुभगत्वान्विता वनिता ॥११३॥

अन्वयार्थौ—(ऋतुमत्या अपि यस्याः सुरभिद्रव्यसमानः गन्धः तिलप्रसूनाभः

विलसति सा वनिता सुभगत्वान्विता भवति) रजोधर्म युक्त स्त्री की कोई भी सुगंधित पदार्थ के तुल्य वा तिल के फूल के तुल्य गंध होय सो स्त्री सुन्दर सुहागवती होती है।।११३।।

तुंबीकुसुमसुगन्धा कटुगन्धा या रसोनगन्धा या ।
सा न कदाचन गर्भं सुदुर्भगा कामिनी धत्ते ।।११४।।

अन्वयार्थौ—(या नारी तुंबीकुसुमसुगन्धा वा कटुगन्धा वा या रसोनगंध भवेत् साकामिनी सुदुर्भगा कदाचन गर्भं न धत्ते) जो स्त्री तूँवी के फूल की सी गंधवाली अथवा कड़वी गंधवाली लहसुनकीसी गंधवाली होय सो स्त्री कुलक्षणी कभी गर्भ को धारण न करे अर्थात् वह गर्भवती न होय।।११४।।

या हरितालीगन्धा मिश्रवसामांसपूतिसमगन्धा ।
अत्युग्रदुष्टगन्धाः सुभगा न सुरूपवत्योऽपि ।।११५।।

अन्वयार्थौ—(यः नार्यः हरितालीगंधाः वा मिश्रवसामांसपूतिसमगंधाः वा अत्युग्रदुष्टगंधाः ताः सुरूपवत्योऽपि सुभगाः न) जो स्त्री हरिताल की सी गंधवाली वा हाथीकी चर्बी और दुर्गंधित मांस के समान गंध वा बहुत बुरी सड़ी सी गंध जिसकी होय वे स्त्रियाँ स्वरूपवती भी सौभाग्यवती नहीं होती हैं।।११५।।

अथ आवर्तलक्षणम्

आवर्तो नारीणां प्रदक्षिणः पाणिपल्लवे व्यक्तः ।
धर्मधनधान्यकारी न जातु शस्तः पुनर्वामः ।।११६।।

अन्वयार्थौ—(नारीणां पाणिपल्लवे प्रदक्षिणःव्यक्तः आवर्तः धर्मधनधान्यकारी भवेत्पुनः वामः जातु न शस्तः) स्त्रियों की दाहिनी हथेली में प्रकट चक्र वा भौंरी होय तो वह धर्म, धन, धान्य की करनेवाली होय और फिर वो ही चक्र वा भारी बाईं हथेली में होय तो वह कभी अच्छी नहीं है।।११६।।

नाभ्या श्रुतियुगले वा दक्षिणवलिताः शुभास्त्वगावर्ता ।
चूडावर्तोऽपि पुनः प्रशस्यते दक्षिणः शिरसि ।।११७।।

अन्वयार्थौ—(नाभ्यां वा श्रुतियुगले त्वगावर्ताः दक्षिणवलिताः शुभाः पुनः शिरसि दक्षिणः चूडावर्तः अपि प्रशस्यते) टूँडी में वा दोनों कानों में चक्र वा भौंरी दाहिनी ओर झुकी हुई शुभ होती है फिर शिर में दाहिनी ओर झुका हुआ चक्र वा भौंरी प्रशंसा के योग्य है।।११७।।

दक्षिणभागे स्त्रीणामावर्त्तो भवति पृष्ठवंशस्य ।
सौभाग्यकरो व्यक्तो वाम विभागे पुनर्नशुभः ।।११८।।

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां पृष्ठवंशस्यः दक्षिणभागे व्यक्तः यदि आवर्त्तः भाग्यकरो भवति पुनः वामविभागे न शुभः) स्त्रियों के शरीर के दाहिने भाग में जो प्रकट भौंरी होय तो सौभाग्य की करनेवाली होती है और फिर वो ही भौंरी बाई ओर के भाग में होय तो अच्छी नहीं है।।११८।।

अन्तःपृष्ठं यस्या नाभिसमो भवति दक्षिणावर्तः ।
चिरजीविन्यास्तस्या बहून्यपत्यानि जायन्ते ।।११९।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः अन्तःपृष्ठं नाभिसमो दक्षिणावर्तो भवति, चिरजीविन्याः तस्याः बहून्यपत्यानि जायन्ते) जिस स्त्री के पीठ के मध्य में जो टूँडीकी भांति दाहिनी ओर भौंरी होय तो बहुत जीनेवाली होय और उस स्त्री के बहुत लड़का लड़की होती है।।११९।।

शकटाभो भगमूले यस्याः स्निग्धः प्रदक्षिणावर्तः ।
सा भवति नृपतिपत्नी पुत्रवती सुरभिसौभाग्या ।।१२०।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः भगमूले शकटाभः स्निग्धः प्रदक्षिणावर्तः भवति, सा सुरभिसौभाग्या पुत्रवती नृपतिपत्नी भवति) उस स्त्री की योनि के बीच मूल में छकड़े के समान सुन्दर दाहिनी ओर भौंरी होय सो प्रसिद्ध है सुहागपन जिसका सो पुत्रवती अर्थात् पुत्रवाली राजा की स्त्री होती है।।१२०।।

आवर्तः कटिमध्ये यस्याः संभवति गुह्यमध्ये च ।
पत्युरपत्यानामपि विपातनं वितनुते सापि ।।१२१।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः कटिमध्ये च पुनःगुह्यमध्ये आवर्तः संभवति, स स्त्री पत्युः तथा अपत्यानां विपातनं वितनुते) जिस स्त्री के कमर के और योनि के बीच में भौंरी दाहिनी होय सो स्त्री पति का और पुत्र पुत्रियों का नाश करे।।१२१।।

पृष्ठावर्तद्वितयं यस्याः सुव्यक्तमुदरवेधेन ।
सा हत्वा भर्तारं दुःशीला जायते प्रायः ।।१२२।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः उदरवेधेन सुव्यक्तं पृष्ठावर्तद्वितयं भवति सा नारी भर्तारं हत्वा प्रायः दुःशीला जायते) जिस स्त्री के उदर पर और पीठ पर दौ भौंरी प्रकट होयँ सो स्त्री पति के मारके बहुधा खानगी (कसबी) अर्थात् व्यभिचारिणी होती है।।१२२।।

दक्षिणवलितः स्त्रीणामावर्तः कण्ठकन्दले व्यक्तः ।
वैधव्यदुःखदौर्भाग्यदायको न प्रशस्यः स्यात् ॥१२३॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणाम् आवर्तः दक्षिणवलितः कण्ठकंदले व्यक्तो भवति स वधव्यदुःखदौर्भाग्यदायकः न प्रशस्यः स्यात्) स्त्रियों की भौंरी दाहिनी ओर झुकी हुई कंठदेश में प्रकट होय तो विधवापन और दुःख और बुरे भाग्य के देनेवाली है, प्रशंसा के योग्य नहीं है॥१२३॥

सीमन्तपथप्राप्ते ललाटमध्ये च जायते यस्याः ।
आवर्तः सुव्यक्तः सा दुशीलाऽथवा विधवा ॥१२४॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः सीमंतपथप्रांते ललाटमध्ये च आवर्तः सुव्यक्तः जायते, सा नारी दुःशीला अथवा विधवा भवेत्) उस स्त्री की मांग के अंत में संमुख ललाट में भौंरी प्रकट होय सो स्त्री खोटे चलन की विधवा होय॥१२४॥

मध्ये कृकाटिकाया वक्रावर्तः प्रदक्षिणो यस्याः ।
वर्षेणैकेन पतिं हत्वा सान्यं समाश्रयते ॥१२५॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः कृकाटिकायाः मध्ये प्रदक्षिणाःवक्रवर्तः स्यात् सा नारी एकेन वर्षेण पतिं हत्वा अन्यं समाश्रयते) जिस स्त्री की घेंटी के बीच में दाहिनी ओर झुकी हुई टेढ़ी भौंरी होय सो स्त्री एक ही वर्ष में पति को मारके दूसरे का आसरा पकड़े अर्थात् और के पास जाय॥१२५॥

एको द्वौ वा मस्तकमध्ये यस्याः प्रदक्षिणौ नियतम् ।
सा हन्ति पतिं पापा दशदिवसाभ्यन्तरेणैव ॥१२६॥

अन्वयार्थौ—(यस्याः मस्तकमध्ये एकः वा द्वौ नियतं प्रदक्षिणावर्तौ स्याताम् सा पापा स्त्रीदशदिवसाभ्यन्तरेणैवपतिं हन्ति) जिस स्त्री के मस्तक के बीच में एक वा दो निश्चय करके दाहिनी ओर भौंरी होय सो पापिनी स्त्री दश दिन के भीतर पति को मारती है॥१२६॥

कटयावर्ता कुटिला नाभ्यावर्ता पतिव्रता सततम् ।
पृष्ठावर्ता निन्द्या भर्तृघ्नी जायते योषित् ॥१२७॥

अन्वयार्थौ—(या नारी कटयावर्ता सा कुटिला, या नारी नाभ्यावर्ता सततं पतिव्रता, या योषित पृष्ठावर्ता सा निन्द्या वा भर्तृघ्नी जायते) जो स्त्री की कमर में भौंरी होय सो खोटे चलन की होय और जिस स्त्री की टूंडी में भौंरी होय सो निरंतर पतिव्रता और जिस स्त्री की पीठ में भौंरी होय स्त्री बुरी वा पति के मारनेवाली होती है॥१२७॥

अथ सत्त्वलक्षणम

आपद्यपि संपद्यपि मुक्तमना दुःखमनोत्सुकेयम् ।
अपगतविषादहर्षा हतशोकोत्साहनिःसत्त्वा ॥१२८॥

अन्वयार्थौ—(इमम् आपदि अपि मुक्तमनाः तथा संपदि अपिदुःखमनोत्सुका अपगतविषादहर्षा च पुनः हतशोकोत्साहनिःसत्त्वा) आपत्ति में छोड़ा है मन जिसने और संपत्ति में दुःखयुक्त मन की अभिलाषा करनेवाली और गया है दुःख और हर्ष जिसका और नष्ट हो गया है शोक और उत्साह जिसका ऐसी स्त्री पराक्रम रहित जानिये॥१२८॥

सत्त्वोपेता प्रायः सदया सत्या स्थिरा गभीरा च ।
कौटिल्यशल्यरहिताऽऽहितकल्याणा भवति नारी ॥१२९॥

अन्वयार्थौ—(प्रायःसत्त्वपेता नारी सदया सत्या स्थिरा गभीरा कौटिल्यशल्य रहिता आहितकल्याणा भवति) बहुधा शक्तियुक्त स्त्री दयासहित सच्ची स्थिर गंभीर, कुटिलतादि रहित, कल्याण करनेवाली होती है॥१२९॥

अथ स्वरलक्षणम्

नारीणामनुनादः शुभस्वरः कामलाकलामन्दः ।
श्रुतिपथगतापि नियतं जगतोऽपि मनः समादत्ते ॥१३०॥

अन्वयार्थौ—(नारीणाम् अनुनादः शुभस्वरःकामलाकलामन्दो भवति नियतं श्रुतिपथगता सती अपि जगतः मनः समादत्ते) स्त्रियों का बोल और अच्छा स्वर काम की कलाओं में थोड़ा होता है और ऐसे शुभ बोल युक्त स्त्री निश्चय कर शास्त्र के मार्ग में चलनेवाली हो तिसके जगत् के मन को पकड़ती है अर्थात् ग्रहण करती है॥१३०॥

वीणावेणुनिनादाः कोकिलहंसस्वराः पयोदरवाः ।
केकिध्वनयो भुवने भवंति ललना नृपतिपत्न्यः ॥१३१॥

अन्वयार्थौ—(वीणा और वंशी का सा है बोल जिसका और कोकिल और हंस का सा है स्वर जिसका और मेघ का सा और मोर का सा है बोल जिसका, ऐसी स्त्री लोक में राजा की रानी होती है अन्वय यथाक्रम है॥१३१॥

गतकौटिल्यमदीन स्निग्धं दाक्षिण्यपुण्यमकठोरम् ।
सकलजनसांत्वनकरं भषितमिह योषितां शस्तम् ॥१३२॥

अन्वयार्थौ—(इह योषितां शस्तं भाषितं गतकौटिल्यम् अदीनं स्निग्धं दाक्षिण्यपुण्यम् अकठोरं सकलजनसांत्वनकरं भवति) इस लोक में स्त्रियों का अच्छा बोल चाल कुटिलता और दीनतारहित सुन्दर मीठा चतुरता, पवित्रता, मुलायम, सब मनुष्यों को आनंद का करनेवाला होता है॥१३२॥

नारी विभिन्नकांस्यक्रोष्टुखरोलककाककङ्करवा ।
बहुदुःखशोकशङ्कावैधव्यव्याधिभाग्भवति ॥१३३॥

अन्वयार्थौ—(विभिन्नकांस्यक्रोष्टुखरोलूककाकरवा नारी बहुदुःखशोकशंकावैधव्यव्याधिभाक् भवति) फूटी, कांसी, गीदड़, गधा, उल्लू, कउबा, कंक (पक्षीविशेष) इनका सा बोल होय तो ऐसी स्त्री बहुत दुःख शोकशंका और विधवापन रोगव्यथा इनको भोगनेवाली होती है॥१३३॥

विस्फुटितश्च श्रोतुः स्वस्त्ययनकरः शुभस्वरो मधुरः ।
संक्रांताधरपल्लवसुधारसच्छद इव स्त्रीणाम् ॥१३४॥

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां विस्फुटितः संक्रांताधारपल्लवसुधारसच्छद इव मधुरः शुभस्वरः श्रोतुः स्वस्त्ययनकरो भवति) स्त्रियों का प्रगट लगा हुआहोठोंसे सुधारस की पत्र की भांति मीठा अच्छा बोल सुननेवाले का कल्याण करनेवाला होता है॥१३४॥

अथ गतिलक्षणम्

मत्तेन संनिभपदा मदमत्तमतङ्गहंसगतितुल्या ।
सुभगा गतिः सुललिता विलसति वसुधेशपत्नीनाम् ॥१३५॥

अन्वयार्थौ—(वसुधेशपत्नीनां मत्तेन संनिभपदा मदमत्तमतंगहंसगतितुल्या सुललिता सुभगा गतिर्विलसति) राजाओं की रानीकी, मतवाले मनुष्य के पांव की सी और मतवाले हाथी और हंस की सी चाल की भांति अच्छी सुन्दर चाल होती है॥१३५॥

गोवृषभनकुलमृगपतिमयूरमार्जारगामिनी नियतम् ।
सौभाग्यैश्वर्ययुता भाग्यवती भागिनी भवति ॥१३६॥

अन्वयार्थौ—(गाय, बैल, नौला, सिंह, मोर बिल्ली इनकी सी चालवाली स्त्री

निश्चय करके सुहागपन और ऐश्वर्ययुक्त भाग्यवती भोगनेवाली होती है।।१३६।।

मण्डूकघूकवृकबकजंबूकक्रोष्टुसरटकपिगतयः ।
दौर्गत्यदुःखसहिता जायन्ते युवतयः प्रायः ।।१३७।।

अन्वयार्थौ—(मेंढक, उल्लू, भेड़िया, बगुला, गौदुवा, गीदड़, करकेटा, बंदर इनकी सी चालवाली (प्रायः दौर्गत्यदुःखसहिता युवतयः जायन्ते) बहुधा बुरी गति और दुःख सहनेवाली स्त्रियां होती हैं।।१३७।।

ह्रस्वप्लुतानुविद्धा लसत्पदाभ्यन्तराबला बाह्या ।
स्तब्धा मन्दा विषमा लघुक्रम शोभना न गतिः ।।१३८।।

अन्वयार्थौ—(कुछ ऊपर को उछल के जो गति होय और शोभायमान पांव भीतर बाहर जिस चाल में होयँ और रुक रुक के थोड़ी कमती बढ़ती चाल और हल्के पड़ें पांव जिनमें (ईदृशी गतिः शोभना न) ऐसी चाल अच्छी नहीं हैं।।१३८।।

निःस्वा विलम्बितगतिर्विषमगतिविषममानसा योषित् ।
दासी कुरङ्गगमना कुलटा द्रुतगामिनी भवति ।।१३९।।

अन्वयार्थौ—(विलंबितगतिः निःस्वा भवति विषमगतिः योषित् विषमः मानसाः, कुरंगगमना दासी, द्रुतगामिनी कुलटा भवति) धीरे चलनेवाली स्त्री दरिद्रणी होती है और कमती बढ़ती चालवाली ऐसी स्त्री तीक्ष्ण मनवाली होती है और हिरण की सी चालवाली स्त्री दासी होती है और शीघ्र चलने वाली स्त्री खोटी व्यभिचारिणी होती है।।१३९।।

अथ छायालक्षणम्

छादयति लक्षणानि स्त्रीणामग्रे तदुच्यते छाया ।
लावण्यं सौभाग्यं तां लक्षणवेदिनो ब्रुवते ।।१४०।।

अन्वयार्थौ—(स्त्रीणां लक्षणानि छाया छादयति तत् अग्रे उच्यते, च पुनः लक्षणवेदिनः सौभाग्यं लावण्यं तां ब्रुवते) स्त्रियों के लक्षणों को छाया ढ़क देती है उसको आगे कहते हैं और लक्षण के जाननेवाले जो हैं सो इन लक्षणों को सुन्दर सौभाग्य शोभा कहते हैं।।१४०।।

वस्त्वतिरिक्तं किञ्चन महाकवीनां यथा गिरा स्फुरति ।
अंगे दक्षा तद्वन्मनोहरा लवणिमा छाया ।।१४१।।

अन्वयार्थौ—(किंचन वस्त्वतिरिक्तं महाकवीनां यथा गिरा स्फुरति तद्वत् स्त्रीणाम् अंगे छाया दक्षा लवणिमा मनोहरा भवति) कुछ वस्तुओं के सिवाय व्यंगरूप बड़े कवीश्वरों को जैसे वाणी फुरै है तैसे ही स्त्रियों के अंग में कांति चतुरता नमकीनी शोभा मन की हरनेवाली होती है।।१४१।।

सौभाग्यं छायैव प्रमुखा निखिलेषु लक्ष्मसु स्त्रीणाम् ।
यदभावे भुवि वनिता पांचालीवन्न भोगार्हा ।।१४२।।

अन्वयार्थौ—(निखिलेषु लक्ष्मषु स्त्रीणां छाया एव प्रमुखा सौभाग्यम्) संपूर्ण चिह्नों वा लक्षणों में स्त्रियों की छाया जो है सोई मुख्य सौभाग्य की करनेवाली है और (भुवि यदभावे वनिता पांचालीवत् भोगार्हा न भवति) लोक में बिना छाया के स्त्री व्यभिचारिणी की भांति भोगने के योग्य नहीं होती है।।१४२।।

चित्तचमत्कृतिजननी हृदि संतापं तनोति जगतोऽपि ।
या दृष्टापि स्पष्टं सा छाया शस्यते सदृशाम् ।।१४३।।

अन्वयार्थौ—(चित्तचमत्कृतिजननी। या स्पष्टं दृष्टा सती अपि जगतः हृदि सन्तापं तनोति सा सुदृशाम् ईदृशी छाया प्रशस्यते) चित्त को प्रसन्न करनेवाली और जो स्पष्ट देखने पर भी जगत् के हृदय को संताप करे तो स्त्रियों की छाया प्रशंसा के योग्य है।।१४३।।

यस्याः सर्वाङ्गीणा विराजते हंत लवणिमा छाया ।
चित्रमिदं सा जगति माधुर्यं समधिकं धत्ते ।।१४४।।

अन्वयार्थौ—(यस्याःसर्वांगीणा लवणिमा छाया हंत विराजते सा छाया जगति माधुर्यं धत्ते इदं समधिकं चित्रम्) जिन स्त्रियों के सब अंग की अच्छी छाया आनंद की देनेवाली शोभायमान है सोई छाया जगत् में मीठेपन को धारण करती है, यह बहुत बड़ा अचरज है।।१४४।।

यदि सौभाग्यच्छायालङ्करणा विलसति ध्रुवं बाला ।
रूपेण लक्षणैर्वा प्रयोजनं जगति किं तस्याः ।।१४५।।

अन्वयार्थौ—(यदि बाला सौभाग्यच्छायालंकरणा ध्रुवं विलसति, तस्याः रूपेण वा लक्षणैः जगति किं प्रयोजनम्) जो स्त्री छाया ही भूषण करके निश्चय शोभायमान है उस स्त्री का रूप और लक्षण करके जगत् में क्या प्रयोजन है?।।१४५।।

रूपाकारविहीने शुभलक्षणविरहिते नियतमङ्गे ।
सौभाग्यमस्ति यस्याः सा ललना दुर्लभा भुवने ।।१४६।।

अन्वयार्थौ—(यस्याः अंगे रूपाकारविहीने तथा शुभलक्षणविरहिते सति सौभाग्यम् अस्ति, इह भुवने सा ललना नियतं दुर्लभा भवति) जिस स्त्री का अंग रूप आकार और शुभ लक्षणरहित होते हुए भी सौभाग्ययुक्त है ऐसी स्त्री निश्चय करके इस लोक में दुर्लभ होती है।।१४६।।

यदि लावण्यच्छायाछन्नं शुभलक्ष्मयुक्तमङ्गं स्यात् ।
तद्द्वयसंयोगेन श्रृतदुग्धे शर्कराक्षेपः ।।१४७।।

अन्वयार्थौ—(जो लावण्यरूप छायागुप्त और शुभ लक्षणयुक्त अंग होय तो उन दोनों के संयोग करके जैसे औटाये दूध में मिश्री का डाल देना तैसे ही जानिये। अन्वय यथाक्रम है।।१४७।।

यत्रोक्तं पूर्वस्मिन्नौचित्यं तन्नरेऽपि तारावत् ।
यद्यस्मिन्नपि पुनः सकलं तन्नरवदभ्यूह्यम् ।।१४८।।

अन्वयार्थौ—(यत्र पूर्वस्मिन् नरे उक्तम् तत् पुनः तारावत् न औचित्यं यदि अस्मिन् पुनः न उक्तं तत् सकलं नरवत् अभ्यूह्यम्) जैसे कि पहिले नरप्रकरण में जो कहा सो फिर कहना तारों की भाँति उचित नहीं है और जो इस नारी प्रकरण में फिर नहीं कहा सोई वह बस नर प्रकरण की भाँति जानना चाहिये।।१४८।।

सामुद्रिकतिलकाख्यं पुरुषस्त्रीलक्षणं प्रपंचभयात् ।
दिङ्मात्रमत्र गदितं सापि समुद्रोक्तिरपि नान्या ।।१४९।।

अन्वयार्थौ—(पुरुषस्त्रीलक्षणं प्रपंचभयात् सामुद्रिकतिलकाख्यम् अत्र यत् दिङ्मात्रं गदितम् सा समुद्रोक्तिः अपि अन्या न) पुरुष और स्त्रीके लक्षणोंवाली सामुद्रिक की टीका बढ़ जाने के भय से यह दिशामात्र ही कहा है सो भी समुद्र का कहा हुआ है अर्थात् किसी दूसरे का नहीं है।।१४९।।

इति श्रीमहत्तमश्रीनरसिंहात्मजदुर्लभराजविरचितेसामुद्रिकतिलकापरनाम्नि पुरुषस्त्रीलक्षणे वर्णाद्यधिकारश्चतुर्थः ।।४।।

अथ कविवृत्तान्तकथनम्

अत्रास्ति कोऽपि वंशः प्राग्वाटाख्यस्त्रिलोकविख्यातः ।
नृपसंपदि वृद्धौ वा चालम्बनयष्टिरभवद्यः ।।१।।

अन्वयार्थौ—(अत्र कः अपि त्रिलोकविख्यातः प्राग्वाटाख्यो वंशः अस्ति यः नृपसंपदि वा वृद्धौ आलंबन यष्टिः अभवत्) इन तीनों भुवनों में प्रसिद्ध है नाम

जिसका ऐसा कोई एक प्राग्वाटाख्य वंश है और जो वंश राजा की संपत्ति वा समृद्धि में सहारे के लाठी हुआ॥१॥

आसीतत्र विचित्रश्रीमद्वाहिल्लसंज्ञया ज्ञातः ।
व्ययकरणपदामात्यो नृपतेः श्रीभामदेवस्य ॥२॥

अन्वयार्थौ—(तत्र विचित्रश्रीमद्वाहिल्लसंज्ञया ज्ञातः श्रीभामदेवस्यनृपतेः व्येयकरणपदामात्यः आसीत्) तहां चित्र विचित्र लक्ष्मी करके युक्त वाहिल्ल संज्ञा से जाना जाय जो सो श्रीभामदेव राजा का व्ययकरण मंत्री होताभया॥२॥

समजनि तदङ्गजन्मा प्रथितः श्रीराजपाल इति नाम्ना ।
प्रतिपक्षद्विपसिंहः श्रीनरसिंहः सुतस्तस्य ॥३॥
श्रीमान् दुर्लभराजस्तदपत्यं बुद्धिधाम सुकविरभूत ।
यं श्रीकुमारपालो महत्तमं क्षितिपतिं कृतवान् ॥४॥

अन्वयार्थौ—(तदङ्गजन्मा श्रीराजपालः इति नाम्ना प्रथितः प्रतिपक्षद्विपसिंह श्रीनरसिंहः तस्य सुतः समजनि, श्रीमान् बुद्धिधाम सुकविः दुर्लभ राजः तदपत्यम् अभूत, श्रीकुमारपालः महत्तमं यं क्षितिपतिं कृतवान्) उसके अंग से जन्म जिसका सो श्रीराजपाल नाम करके प्रसिद्ध है सो शत्रुरूप हस्तियों को सिंह के तुल्य श्रीनृसिंह उसका पुत्र हुआ, सो लक्ष्मीवान् और बुद्धि का घर अच्छा कवि दुर्लभराज नाम से प्रसिद्ध होता भया और श्रीकुमारपाल उसको राजा करता भया॥३॥४॥

प्रक्षालयितुं मलमिव वाणी मज्जति चतुर्विधाम्बुधिषु ।
यस्य विलासवती गजतुरंगशकुनिप्रबंधेषु ॥५॥
तेनोपज्ञातमिदं पुरुषस्त्रीलक्षणं तदनु कविता ।
तस्यैव सुतेन जगद्देवेन समर्थयांचक्रे ॥६॥

अन्वयार्थौ—(गजतुरंगशकुनिप्रवन्धेषु चतुर्विधाम्वुधिषु मलं प्रक्षालयितुम् इव यस्य विलासवती वाणी मज्जति, तस्यैव सुतेन जगद्देवेन इदं पुरुषस्त्रीलक्षणम् उपज्ञातं तदनु कविता उपज्ञाता इव समर्थयांचक्रे हाथी, घोड़े, शकुनि, इनके जो प्रबंध कहिये शास्त्रों में चारों दिशा के जो समुद्र की भाँति मल के धोने को जिनकी चमत्कारी वाणी गोता मारती है उसके पुत्र जगद्देव ने यह पुरुष स्त्री के हैं लक्षण जिसमें ऐसा आद्य ज्ञान वर्णन किया है तिसके पीछे कविता वर्णन करके इनको आर्या छंद में बनाया॥५॥६॥

अहमपि परेऽपि कवयस्तथापि महदन्तरं परिज्ञेयम् ।
ऐक्यं रलयोरिति यदि तत्किं कलभायते करभः ॥७॥

सुललितपदा सुवर्णा सालंकारा सुदुर्लभा साऽऽर्या ।
एकाप्यर्थसुरम्या किं पुनरष्टौ शतं चैताः ।।८।।

अन्वयार्थौ—(अहम् अपि परेऽपि कवयः संति, तथापि महदन्तरंपरिज्ञेयम् यदि रलयोः ऐक्यम् इति तत् किं करभः कलभायते? सुललितपदा सुवर्णा सालंकारा अर्थसुरम्या एकापि सा आर्या सुदुर्लभा अष्टौ शतम् एताः किं पुनः वक्तव्यम्) मैं भी कवि हूं और भी कवि हैं तो भी बड़ा अन्तर समझना चाहिये, क्योंकि जो रकार और लकार की एकता है तो क्या करम (ऊंट) कलभ (हाथी) हो जायगा? सुन्दर है पद जिसमें और सुन्दर ही हैं अक्षर जिसमें और अलङ्कार सहित अर्थ करके सुन्दर आर्या एक भी बनाना कठिन है और जो वे आठ सौ ऐसे अर्थ सहित होंय तो फिर क्या कहना है।।७।।८।।

परहृदयाभिप्रायं परगदितार्थस्य वेत्ति यः सत्त्वम् ।
सत्त्वं भुवने दुर्लभसम्भूतिः सुकविरेवैकः ।।९।।
नृस्त्रीलक्षणपुष्पां स्रजमेतां सुरभिवर्णगुणगुंफाम् ।
मृगराजसभाविख्याता अपि सन्तः कुरुत कण्ठस्थाम् ।।१०।।

अन्वयार्थौ—(यः परगदितार्थस्य हृदयाभिप्रायं वेत्ति, ससत्त्वम् तथा भुवने सत्त्वं दुर्लभम् एकः सुकविः एव सम्भूतिः हे मृगराजसभाविख्याताः सन्तः अपि पुरुषा एतां नृस्त्रीलक्षणपुष्पां सुरभिवर्णगुंफां स्रजं कण्ठस्थां कुरुत) जो दूसरे के कहे हुए प्रयोजन को जान ले सोई सत्त्व है और लोक में सत्त्व ही दुर्लभ है और एक सुन्दर कवि है यही सम्भूति है हे सिंहसभा के विख्यात पंडितो! इस पुरुष स्त्री के लक्षणरूप हैं पुष्प जिसमें और सुगन्धित रंगवाले इन गुणों करके गुथी हुई माला को कण्ठ में स्थित करो।।९।।१०।।

इति सामुद्रिकशास्त्रे कविवृत्तान्तकथनम्

सामुद्रिकभाषेयं राधाकृष्णेन निर्मिता रम्या ।।
लब्ध्वा साहाय्यं वै विदुषो घनश्यामनाम्नश्च ।।१।।
गिरिवेदनवक्ष्माभिः प्रमिते संवत्सरे सुपौषे च ।।
मेचकपक्षे रुचिरे दुर्गातिथियुतरवेर्वारे ।।२।।
अर्गलपुरवरनगरे कालिन्दीतीरसंस्थिते रम्ये ।।
नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं पूर्णं जातं हि लोकेऽस्मिन् ।।३।।

समाप्तोऽयं ग्रंथः

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाडी, मुंबई - ४०० ००४.

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११ ०१३.

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि. ठाणे - महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास,
चौक - वाराणसी (उ.प्र.)

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बँक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS